॥ श्रीमन्निकुंज विहारिणे नमः ॥

श्री

श्री १०८ श्री सरस माधुरी जी महाराज

रचित—

श्री सरस सागर

प्रथम भाग

प्रकाशक—

पण्डित राधेश्याम शर्म्मा

(सर्व अधिकार रक्षित हैं)

मुद्रक—

दी जयपुर प्रिंटिंग वर्क्स चौड़ा रास्ता जयपुर ।

प्रथम वार ५००

सन् १९३६

मूल्य २)

श्री सरस सागर

श्री १०८ श्री स्वामी श्री सरसमाधुरी शरणजी, महाराज

(जयपुर)

॥ श्रीमन्निकुंजविहारिणेनमः ।

आवश्यक निवेदन

परमप्रिय गुरु भाइयो तथा बहिनो ।

लीजिये आज आपके ही कृपा बल से आपकी आज्ञा कार्य्य रूप में परिणित हुई अर्थात् श्री सरस सागर का प्रथम भाग जो गुरु महिमा, गुरु परम्परा, श्रीमत शुकाचार्य महाप्रभो तथा श्री श्याम चरण दासाचार्य्य के चरितामृत, महिमा, स्तोत्र, वधाई, लीला इत्यादि का अपूर्व भंडार है आपके आस्वादन तथा आनंद वर्धन के लिये तय्यार होकर आज परम मांङ्गलीक दिन श्रीमत वेदव्यास जयंति तथा श्री गुरु पूर्णिमा के सुअवसर पर आपके भेंट किया जाता है ।

बधाई है ! बधाई है !! बधाई है !!!

श्री वाणी जी को एकत्र कर मुद्रण कराने की सेवा आपने इस विनीत को सौपी ।

यह विनीत इस "महान कार्य्य को भली भांति करने में असमर्थ होता यदि निम्न लिखित महानुभाव इस विनीत का हाथ न बटाते और समय २ पर उत्साह न बढ़ाते ।

१ श्री शुक सम्प्रदाय भूषण परम प्रेमी विद्वद्वर श्रीमान मास्टर साहिब गंगाबख्शजी गुप्ता बी. ए. असिस्टेण्ड हैड मास्टर महाराजा हाई स्कूल जयपुर आपने प्रूफ संशोधन का कार्य्य बड़ी कुशलता से किया और समय समय पर अपनी बहुमूल्य सम्मिति प्रदान करते रहें । आप के निरीक्षण तथा देख रेख में सारा कार्य्य हुआ ।

२ श्री गुरु सेवा परायण प्रेमी भाई श्री रामनारायणजी ठेकेदार । आपको श्री वाणी जी के मुद्रण की बड़ी भारी उत्कंठा थी और आपकी आर्थिक सहायता तथा दौड़ धूप अत्यन्त सराहनीय है ।

३ श्रीहरि गुरु कृपा भाजन प्रेमी भाई श्री मोहनलालजी चौधरी। आपने ही विनीत को इस सेवा के लिये उत्साहित किया और आपके ही आग्रह तथा पुनः आग्रह से बाणीजी के संग्रह का काम आरम्भ हुआ जिसमें आपने पद पदांत एकत्र करने में श्री बाणीजी की भारी सेवा की।

४ श्री गुरु महाराज के परम लाडिले भक्त शिरोमणि प्रेमी भाई एम. वाइ. सनम। आपने श्री महाराज का जीवन चरित्र जो संकीर्तन पत्र के विशेषांक के लिये लिखा था उसको इस पुस्तक में संमिलित करने की सहर्ष अनुमति दी और समय २ पर सम्पादन तथा मुद्रण और विषय सूची तय्यार करने के विषय में अपनी बहुमूल्य सम्मति प्रदान करते रहे।

५ प्रियवर चि० बाबू बालकृष्ण श्रीवास्तव। आपने प्रेस कापी तय्यार करने, प्रेस में जाकर छपाई के काम की देख रेख करने तथा अन्य आवश्यक कार्य्यों में बड़ी दौड़ धूप की। आपका परिश्रम अत्यन्त सराहनीय है।

छोटी अवस्था में आपका ऐसा परिश्रम और दृढ़ता आपके अत्यन्त कृपा पात्र और होनहार होने की सूचना दे रहे हैं।

मैं उपरोक्त महानुभावों का विशेषकर आभारी हूँ और आपकी कृपा व सहायता के बल पर आशा करता हूँ कि श्री बाणीजी के और भाग भी इसही प्रकार समस्त सरस समाज के आनन्दार्थ यथा समय प्रकाशित हो सकेंगे।

मैं श्रीमान श्रृद्धेय विद्या भास्कर पण्डित श्री सूर्यनारायणजी शर्मा आचार्य प्राफेसर महाराजा कालेज जयपुर का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ कि आपने इस ग्रन्थ के प्रस्तावना लिखने में अपना बहुमूल्य समय देकर समस्त सरस समाज को अपना आजन्म आभारी बना लिया।

प्यारे भाइयो तथ बहिनो यह आपकी "सम्पति" आपके ही भेट है।

"बाणी श्री महाराज की श्री महाराज स्वरूप"। पठन कीजिये आनन्द लीजिये और इस दीन के इस तुच्छ सेवा के बदले श्री गुरु महाराज की चरण कमलों की रति की भिक्षा सप्रेम प्रदान कीजिये।

प्रेम का भिखारीः—

जुगल माधुरी शरण।

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना

परम भक्त स्वर्गीय पं० शिवदयालजी वकील, जिनका कि उपनाम "सरस माधुरी" था, एक बड़े ही सरल, विनीत, मधुरभाषी, दयालु और भावुक भक्त थे। आप श्रीशुक सम्प्रदाय के अनुयायी और श्री श्यामचरणदास जी के परम उपासक थे। आप न केवल भक्त ही थे वरन् आपकी कविता भी बड़ी ही सरस और भावपूर्ण होती थी। आपने श्री प्रेम मंजरी के अवतार श्री श्याम चरणदासजी की एहलौकिक लीला का वर्णन बहुत ही मधुर और विविध भांति के छन्दों में किया है। आपने अपने निवास स्थान में ही एक महल में श्री शुकदेवजी तथा श्री चरणदासजी के चित्र विराजमान कर रखे थे और प्रतिवर्ष वैशाख कृष्णा अमावस्या को श्री शुकदेवजी का तथा भाद्रपद शुक्ला तृतीया को श्री चरणदासजी का जन्मोत्सव मनाया करते थे। इन उत्सवों में प्रायः जयपुर के सभी भक्तजन पधारा करते थे और पूर्ण उत्साह तथा भक्ति भाव से भगवल्लीला का रसा स्वादन किया करते थे। इन्हीं उत्सवों के अवसरों पर पं० शिवदयालुजी (सरस माधुरी जी) अपनी अनूठी और भावभरी कविताओं तथा राग रागनियों के गायन तथा लीलाभिनय के द्वारा उपस्थित प्रेमी भक्तों के हृदयों में आनन्दामृत का प्रवाह बहाया करते थे। लोग इतने तन्मय हो जाया करते थे कि कई बार तो सुधबुध विसरजाने का सा अनुभव हुआ करता था। इन उत्सवों में कई बार इन पंक्तियों के लेखक को भी संम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वास्तव में सच्चे भाव से किये हुए इन उत्सवों में अपूर्व ही आनन्द आया करता था।

पं शिवदयालुजी योग्य शिष्यों को मन्त्रोपदेश भी दिया करते थे और आप के शिष्यों में केवल अन्ध विश्वास वाले लोग ही न थे वरन् प्रायः शिक्षित और विचारशील भद्र पुरुष थे। उदाहरणार्थ स्वर्गीय प्रोफेसर हरिनारायणजी तोसनीवाल बी. ए. वर्तमान महाराजा कालेज के इंगलिश के प्रोफेसर मुन्शी गोविंदप्रसादजी श्री वास्तव बी. ए. मास्टर गंगावक्सजी बी. ए. आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

अस्तु। स्व० पं० शिवदयालुजी की रचनाएँ, फुटकर रूप से इधर उधर लिखी थीं। परन्तु संग्रहरूप से उनको पढ़कर लाभ उठाने की सुविधा अभी तक न थी। अब बड़े हर्ष की बात है कि उनके कृपापात्र शिष्य परम भक्त, सदाचारी और साहित्य प्रेमी मुन्शी गोविंदप्रसादजी श्री वास्तव बी. ए. ने (प्रोफेसर महाराजाज् कालेज जयपुर) ने उन रचनाओं को क्रमवद्ध प्रकाशित करने का निश्चय किया है जिनका कि यह प्रथम भाग मुद्रित होकर आज गुरु पूर्णिमा के परम मांगलिक दिन में आप लोगों के कर कमलों में सुशोभित होने योग्य होगया है। इसको यदि प्रोफेसर साहब की ओर से इस अवसर पर अपने गुरु महाराज की सेवा में श्रद्धाञ्जली समर्पण करना कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

स्वर्गीय सरस माधुरीजी महाराज वकील होने के कारण उर्दू फारसी तो अच्छी जानते ही थे परन्तु हिंदी पर भी आपका अच्छा अधिकार था। इसका प्रमाण आपकी रचनाएँ ही हैं। उदाहरणार्थ इस संग्रह में से यहां दो रचनाएँ उद्धृत की जाती हैं।

ग़ज़ल (उर्दू)

तुम्हारा नाम है रनजीत रनके जीत क़ामिल हो।
अगर करदो महर मुझ पर तो मुश्किल सब मेरी हल हो॥
तुम्हारा आसरा एक दीदे दिलवर का वसीला है।
मयस्सर हो अगर मुझको तो जलवा ख़ास नाज़िल हो॥
हो हासिल मुद्दआ दिलका जो कोई तुमसे हो वासिल।

अगर हो आपसे ग़ाफ़िल वो ग़ाफ़िल हरिसे ग़ाफ़िल हो॥
मरहमत कर दिया हरि ने तुम्हें आचार्य का मनसब।
निगाहे महर हो जिस पर उसे फिर क्या न हासिल हो॥
यही है आरजू मेरी रहे सर पर चरन साया।
शबाना रोज़ दिल मेरा हरी के जप में शाग़िल हो॥
सरापा जिस्म यह मेरा ख़ताओं से भरा अज़हद।
अगर करदो नज़र रहमत सरस ख़िदमत के क़ाबिल हो॥

बरस गांठ पद (हिन्दी)

बरसगांठ रनजीत लाल की ऐसे ही नित आवो।
पुर नारी हिल मिल के सारी रंग बधाई गावो॥
नाच नाच नाना गति लेके लालन लाड लडावो।
दरसन कर श्री मुरली सुत के अपने नैन सिरावो॥
प्रेम सहित पलना में ललना लालन झमक झुलावो।
किलकन, हँसन निहार प्यार कर परमानँद प्रगटावो॥
अपनो तन, मन, धन अर्पन कर छबि लखि बलि बलि जावो।
सरस माधुरी आनँद मंगल अमरलोक पद पावो॥

ये दो रचनायें केवल आदर्श के तौर पर यहां उद्धृत कर दी हैं परन्तु एसी २ और इससे भी बढ़ कर अनेक सरस रचनायें इस संग्रह में पाठकों को पढ़ने को मिलेंगी। इस संग्रह को प्रकाशित कर सरस माधुरीजी के शिष्यवर्गों ने तथा प्रोफेसर श्रीवास्तवजी ने गुरु भक्ति, सहृदय संतोष, सम्प्रदाय रहस्य प्रकाश और साहित्य सेवा के कार्य एक साथ ही किये हैं।

स्वर्गीय पं० शिवदयालुजी मुझ पर भी बड़ी कृपा रखा करते थे। उनकी निरभिमानिता, सरस भाषण, विनीत भाव और वत्सलता तत्काल चित्त को आकृष्ट कर लिया करती थीं उनकी भोली भाली मूर्ति अब तक भी मेरी आंखों के सामने घूमती सी प्रतीत होती है। ऐसे महात्मा की रचनाओं का पुस्तकाकार में प्रकाशन देख मुझे बड़ा ही संतोष और हर्ष हुआ है। मैं आशा करता हूं कि इस ग्रन्थ का भक्त लोगों में बड़ा ही आदर होगा।

सरस माधुरी की रचना का, संग्रह यह अति पावन है।
एक एक पद इसका सचमुच, भक्त हृदय हुलसावन है॥

लेखक:—

पं० सूर्यनारायण शर्मा आचार्य।
प्रोफेसर, संस्कृत हिंदी
महाराजा कालेज, जयपुर

श्री १०८ श्री सरस माधुरी शरण जी का चरितामृत

लेखक:—

[श्री एम. वाई. सनम H. S. B., F. T. S., F. R. S., H. M. B., मुसलमान वैष्णव भक्त]

आपका शुभ नाम शिवदयालु है। आपका जन्म स्थान मन्दसोर (ग्वालियर) है। आपका प्राकट्य गौड़वंशीय ब्राह्मण कुल में हुआ। आपका जन्म श्रावण कृ० ३० बुधवार सम्वत् वि० १६१२ को हुआ। आपकी माता का नाम श्रीपारवती और आपके पिता का नाम पं० घासीराम था। आपके घर में सदा से श्री शुक (श्री चरणदासीय) सम्प्रदाय की कंठी तिलक की परम्परा चली आती थी। आपकी माता जी परम साधु सेवी थीं और संत महात्माओं में परम श्रद्धा रखती थीं। और श्री ठाकुर जी साक्षात्कार था। जब आपकी ५ वर्ष की अवस्था थी तब आपको से बहादुरपुर जो (अलवर से ५ कोस पर है) भेज दिया गया। वहां पर आपकी ननसाल थी और श्री शुक सम्प्रदाई (श्री चरणदासी) संत दण्डोतीरामजी का स्थान और श्री बिहारी जी का मन्दिर था। वहां अच्छे अच्छे संत पधारा करते थे और आनन्द से सत्संग हुआ करता था। आठ वर्ष की अवस्था से आपको साधु-सेवा और सत्संग का रंग चढ़ गया था। आप सन्तों की सेवा में जाया करते थे। उनके दर्शन और सेवा से अपने को कृतकृत्य समझते थे। माता जी से भोजन इत्यादि ले जाते और सन्तों को समर्पण कर देते थे। आपने वहां पर हिन्दी उर्दू का बोध कर लिया था। माता जी ने आग्रह करके आपका विवाह भी कर दिया था।

श्री गुरु मिलन और दीक्षा की उत्कंठा।

आपको ८ वर्ष से १५ वर्ष तक श्री गुरुदर्शन मिलन, शरणागति और दीक्षा की परम उत्कण्ठा रही। श्री गुरु शरण प्राप्ति के निमित्त आप बहुत घूमे और अनेक स्थानों में आपका देशाटन रहा। परन्तु सच्ची जिज्ञासा और हार्दिक उत्कण्ठा कभी निष्फल नहीं जाती। श्री गुरुदेव सदा अन्तर्यामी हैं। वह सच्चे शिष्य को विना अपनाये हुए नहीं रहते, कभी भी सच्चे गुरुदेव की कमी नहीं है। सच्चे जिज्ञासु और प्रेमी नहीं मिलते हैं। चूंकि आप को सच्ची लगन थी इस लिये आपको श्री १०८ श्री बलदेवदासजी महाराज मिले। इन महात्मा का जन्म ब्राह्मण कुल में व्रज-भूमि में हुआ था। इनके भाई की सगाई

होने वाली थी परंतु इन्होंने अपनी माता से कह दिया था कि छ महीने पीछे करना। इस ही बीच में उनका परमधाम गमन हो गया। इस चमत्कार से इनको ज्ञानोदय हो गया और यह विरक्त होकर एक जाट के लड़के के साथ साधु-मण्डली में मिल गये। साधु मण्डली के संग यह द्वारिका धाम पहुँचे और वहां श्री रणछोड़ जी के दर्शन को गये। वहां पर राज भोग का समय था। राज भोग समर्पण कर दिया गया। अवसर पाकर यह बालक तो थे ही हरि मन्दिर में प्रवेश कर गये। वहां परम मोहनी रूप ५ वर्ष के बालक भगवान के दर्शन हुये कि भोग पा रहे थे। उस आनन्द को नेत्रों और हृदय में भर लिया। भोग विसर्जन होने पर आप भी बाहर निकल आये। रात्रि को स्वप्न हुआ कि दिल्ली नगर के पास लुकसर ग्राम है। वहां पर मेरा चरणदासीय सन्त परम भक्त ठाकुरदास है उनके शिष्य हो। इस स्वप्न के आधार पर साधु मण्डली सहित दिल्ली होते हुये लुकसर पहुँचे और श्री १०८ श्री ठाकुरदास जी के शिष्य हो गये और मन्त्र-दीक्षा ली और वैष्णवी वेष धारण किया। आपको भगवद् भोग समर्पण करने का कार्य सौंपा गया। और ज्ञान ध्यान और नवधा प्रेम भक्ति के लक्षणों का सब अनुसन्धान करा दिया गया। जब श्री १०८ श्री ठाकुरदास जी श्री गोलोक को पधार गये तो उनके स्थान पर आप महन्त बने। मगर आपने इस झंझट में पड़ना पसन्द न किया अपने छोटे गुरुभाई को स्थान का काम सौंप कर आप स्वतंत्रता पूर्वक विचरने लगे। आप चारों धामों में भ्रमण किया करते थे और कभी कभी बहादुरपुर (अलवर नगर से पांच कोस) के चरणदासीय सम्प्रदाय के स्थान श्री विहारी जी महाराज के मन्दिर में आप पधारा करते थे ऐसे ही किसी सुअवसर पर श्री सरस माधुरी जी ने श्री बलदेवदास जी महाराज से श्री चरणशरण प्राप्ति की प्रार्थना की और उन्होंने इनकी प्रार्थना को अंगीकृत करके सहर्ष और सप्रेम मंत्र दीक्षा दी और कण्ठी तिलक प्रदान किया। और श्री शुकदेव (श्री श्याम चरणदासीय) सम्प्रदाय के सिद्धान्त और मार्मिक ध्यान, अभ्यास, प्राणायाम और प्रेमलक्षणा भक्ति का स्वरूप बतला दिया। और प्रेम से छका दिया और रस वैराग उत्पन्न कर दिया। और रस सम्बन्धी निकुंज नाम "श्री सरस माधुरी शरण" प्रदान किया। श्री प्रिया प्रीतम को लीला और धाम और सेवा का अनुभव और साक्षात्कार आंखों और हृदय में भर दिया जिससे रसानन्द और प्रेमानुभव और माधुर्य भाव से आप परिपूर्ण हो गये। इन सब लक्षणों को

आप अपनी सरस वाणी और प्रेममयी कविता से झलकाते रहे। आपके एक एक पद से रसानुभव और प्रेमानन्द और ध्यान साक्षात्कार झलकता है। आपके पदों में प्राचीन रसिक महात्माओं और व्रज के प्रेमियों की प्रभा दीख पड़ती है। नवीन खड़ी बोली की गज़ल, थियेटर की चाल और पुराने स्थाई रागों की भरमार आपके पदों में है। आपने "श्री शुकदेव सम्प्रदाय सिद्धान्त चन्द्रिका" एक प्रमाणिक और सिद्धान्त की पुस्तक लिखी है। आपके पदों और छद्म लीलाओं का बहुत बड़ा संग्रह है। आपके परिश्रम और सम्मति से श्री शुक सम्प्रदाय की निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और मिल सकती हैं:—

(१) श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस बम्बई से श्रीमद् श्यामाश्याम चरणदासाचार्य रचित श्री भक्तिसागर।

(२) नवलकिशोर प्रेस लखनऊ से (१) श्री भक्तिसागर, २ श्री स्वामी रामरूपजी रचित 'मुक्तिमार्ग (३) श्री सहजोबाई रचित 'सहज प्रकाश' (४) श्री रामरूप जी रचित श्रीमद् चरणदास जी का पद्य चरितामृत 'श्री गुरुभक्त प्रकाश'।

(३) आपने श्री कृष्ण प्रेमी भक्तों के नित्य पाठ के लिये (१) नित्य पाठ संग्रह संस्कृत, (२) नित्य पाठ संग्रह भाषा, प्रकाशित किये-जिसमें नित्य पाठ करने के योग्य पदों का अनूँठा सँग्रह है।

'श्री सरस सागर' से निम्नलिखित भाग और सँग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

(१) श्री सरस चौरासी, (२) श्री सरस शतक, (३) श्री सरस माला, (४) श्री सरस झूलन-मलार सँग्रह, (५) श्री होली बसन्त सँग्रह, ६) श्री सरस मंजावलि, (७) श्री सरस निकुँज विलास, (८) श्री सरस आरती सँग्रह, (९) श्री मीरा लीला, (१०) श्री अष्टयाम (११) श्री गुरु महिमा और विनय के पद।

आपकी समग्र वाणी के छपने का प्रबन्ध हो रहा है। उसका प्रथम भाग रसिक प्रेमी भक्तों के हित प्रकाशित किया जाता है।

लौकिक रहन सहन और आजीविका

आपने अपना जीवन निर्वाह बहादुरपुर की थानेदारी से किया। पीछे आप अलवर को छोड़ कर जयपुर पधार आये थे और वहां पर आपने विकालत को लौकिक जिवन के निर्वाह के साधन का हेतु बना लिया था। आप अपने रस वैराग को इस रीति से आजन्म पालन करते रहे कि प्रवृत्ति और निवृत्ति का प्रवाह श्री गंगा

और श्री यमुना की मिली जुली धारा के समान दीख पड़ता था। आपको साधु सेवा का चसका वचपन से ही था। आप स्वयं तम्बूर लेकर बड़े प्रेम से रस गान किया करते थे और आपका कोकिला के समान मधुर कंठ था। बड़े प्रेम से श्री युगल सरकार के सन्मुख आप अपने पदों का कीर्तन करते थे। आपको पद कीर्तन करते हुए ८-८, १०-१० घंटे हो जाते थे। आपके पदकीर्तन में प्रेमियों को प्रेम मूर्छा आते और विह्वल होकर नृत्य करते आंखों से देखा है। रोमाञ्च और अश्रुपात तो सहज ही हो जाया करते थे। साजिन्दों के साथ तवला, सारंगी, हारमोनियम के साथ पदकीर्तन किया करते थे। आपकी पहली स्त्री और दो सन्तान हरि शरण होगये। श्री गुरुदेव के आग्रह से आपने दूसरा विवाह किया। लौकिक प्रथा और धर्म शास्त्र की मर्यादा के लिये आप लौकिक जीवन गृहस्थाश्रम के रूप से व्यतीत करते रहे। दूसरी धर्म पत्नी से आपके सुपुत्र श्री राधेश्याम शरण जी उत्पन्न हुए। ४५ वर्ष की अवस्था में दूसरी धर्म पत्नी का भी परलोक गमन होगया। आपकी संतति में से श्री राधेश्याम शरण जी विद्यमान हैं। वैष्णवी परम्परा और श्री ठाकुर सेवा और मन्त्र दीक्षा का पद अधिकार भी आपको मिला। आपकी सुशीलता और अतिथि और साधु सत्कार भी सराहनीय हैं, आप प्रेम की मूर्ति हैं।

आपका शुभ स्थान श्रीसरस कुञ्ज, दरीवा पान, जयपुर में विख्यात है। निकुञ्ज को देख कर श्री वृन्दावन धाम का स्मरण होता है श्री प्रिया प्रीतम (श्री राधाकृष्ण) हरि मंदिर में विराजमान हैं, दोनों ओर श्री शुकदेव भगवान और श्री श्यामचरणदास महाराज विराजमान हैं। साक्षात् श्री गोलोक की आभा की झलक पड़ती है। रासमंडल अष्ट सखियों के परिकर के चित्र से गोलोक सुशोभित हो रहा है। उत्सव पर श्री प्रिया-प्रीतम अपने परिकर सहित श्री सरस कुञ्ज में आ विराजते हैं उसके सन्मुख श्री रास स्थल है। श्री कृष्ण सम्बन्धी सब उत्सव परमोत्साह के साथ मनाये जाते हैं। परन्तु जिस धूम धाम से दोनों श्री आचार्य जन्म जयन्ति मनाये जाते हैं वह अपूर्व है। श्री मन्महाभारत के मोक्ष धर्म (भीष्म पर्व) के ३२५वीं अध्याय के अनुसार श्री वेदव्यास के पुत्रेष्टी यज्ञ से अरणी मथत करते समय अग्निकुण्ड से, किशोर रूप श्री शुकदेव भगवान का तेजस्वी आविर्भाव वैशाख कृष्ण अमावस्या सोमवार (सोमोती अमावस्या) को हुआ। इस जन्मोत्सव को श्री महाराज ४५ वर्ष से बड़े समारोह से करते रहे हैं। उक्त जन्म वधाई, पदकीर्तन, जन्म लीला नाटक और रासलीला का

आनन्द रहता है। ब्रज के प्रसिद्ध महात्मा और दूर दूर के प्रेमी इकट्ठे होते हैं। प्रेम और आनन्द की भरमार हो जाती है।

इस ही धूमधाम से भाद्रपद शुक्ला की तृतीया को श्री शुकदेव भगवान के नाद पुत्र शिष्य और श्री शुक सम्प्रदाय के प्रवर्तकाचार्य्य का जन्मोत्सव भी बड़े समारोह से मनाया जाता है। इन दोनों उत्सवों पर परम अलौकिक रस और आनन्द वरसता है। ब्रज के रसिक महात्मा और दूर दूर के प्रेमी रसिक सम्मिलित होते हैं। दोनों जन्म जयन्ति के दिन बड़ी विशाल वैष्णवों की भोजन पंक्ति होती है। उस रस को वही जानते हैं जिन्होंने इस रस और आनन्द का पान किया है। दास ने भी उस आनन्द का आस्स्वादन किया है। आप को प्राचीन महात्माओं और ब्रज के रसिक महात्माओं की वाणी और चित्रों के संग्रह की उत्कंठा थी। आपके पुस्तकालय में पांच सो छः सो पुस्तकों का संग्रह है और इतना ही महात्माओं के चित्रों का संग्रह है। यह दर्शनीय संग्रह है। आपने श्री महाप्रभु श्रीगौरांग और श्री निम्बार्क भगवान और श्रीहितहरीवंश के जन्मोत्सवों पर स्वरचित जन्मवधाई के पदों की भेट की है। आप ब्रजधाम में अधिक वास किया करते थे। ब्रज के रसिक महात्मा आप से भली भांति परिचित हैं और थे। इस ही प्रकार आप श्रीकृष्णप्रेम भक्ति का प्रचार करते रहे। पद कीर्तन और रस भावना की गंगा और यमुना वहादीं। सहस्त्रों जीवों को श्री कृष्ण सम्मुख कर दिया। श्री सरस परिकर का विस्तार होने लगा। जब आपने समझा कि अब इस लौकिक लीला को समाप्त करें तो संकेत से आपने गोलोक गमन की सूचना देदी। अपने जीवन के ७१ वर्ष में प्रिया प्रीतम का नाम स्मर्ण करते हुए और ध्यान में मग्न नेत्र खुले हुए ७ बजे सायंकाल को आपने पयान किया। आपके गोलोक गमन की तिथि शनिवार मार्गशीर्ष शु० १४ सम्वत् १९८३ तदनुसार १८ दिसम्बर १९२६ है आपके वियोग ने श्री सरसपरिवार को परम दुखित करदिया। आपका अन्त्येष्टी संस्कार बड़े धूम धाम से हुआ आपकी अर्थी पर शयन के, और चिता आरोहित विग्रह के चित्र लिये गये थे। आपके शवविग्रह के साथ सहस्त्रों मनुष्य थे। आपका विग्रह तेजस्वी अग्नि में अन्तर्धान होगया।

श्री गुरु-भक्त शिरोमणि भगवानदासजी दास को भार्गव के स्थान पर अलवर में १९११ में जब आप विराजमान थे उस समय प्रथम दर्शन का अवकाश मिला था। जब से ही श्री चरण कमल हृदय में विराजमान कर

लिये थे और छवि नेत्रों में भरली थी। आप से विनयपूर्वक प्रार्थना करने पर आपने मंत्र प्रदान किया और अपनी पद शरण में ले लिया। ११ दिसम्बर १९११ का महा मङ्गलीक दिन था यह दिन आजन्म नहीं भूलूंगा। श्री १०८ श्री सतगुरु की असीम दया कृपालुता और वात्सल्यता का कहां तक गुणानुवाद करूं कि मुझ जैसे नीच और पतित को शरण्य बनाकर दीनबन्धु और पतितपावन नाम को सार्थक कर दिया।

आपके ही परिश्रम और उद्योग से श्री दीनानाथ जी भक्त की रास मंडली जयपुर में स्थापित हुई श्रीमान स्वर्गीय जयपुर नरेश और श्री किशन नरेश आपका बड़ा आदर किया करते थे आप उत्सवों के अवसर पर प्रायः किशनगढ़ भी जाया करते थे। आपके परिवार में अच्छे २ महानुभाव कथा कीर्तन, सन्त सेवा, भजन भावना का आनन्द ले रहे हैं और अन्य जीवों को कृतार्थ कर रहे हैं।

आपके शिष्य वर्ग हर जाति और फिरके में पाये जाते हैं कुछ उन में से विरक्त होकर वानेधारी सन्त हैं जो अधिकतर श्री वृन्दावन वास करते हैं।

श्री रूप माधुरी जी आपके परम कृपा पात्र शिष्य श्री वृन्दावन के स्थान धारी महात्माओं में से हैं। आप बाल ब्रह्मचारी हैं। आपने श्री गोपाल मन्त्र के महिनों दूध पान करके कई अनुष्ठान किये हैं और कर रहे हैं। आप श्री सरस कुंज जुगलघाट श्री वृन्दावन में निवास करते हैं। आपके सतसंग से अनेक स्त्री पुरुषों को परम लाभ हो रहा है। आपकी स्वरचित ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुके हैं।

॥ श्रीः ॥

॥ गुरु महिमा ॥

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
१	अमरभये सतगुरु के उपदेश	१४
२	अरज सुनो श्री सतगुरु दयाल	४
३	आरती श्री गुरु की करिये	५०
४	आरती श्री गुरुदेव तुम्हारी	२५
५	उठ प्रभात श्री सतगुरु सुमिरो मन मेरे	५
६	क्या तारीफ करूँ सतगुरु की······	४५
७	कर मन आरती सतगुरु की	२५
८	कहा कहूँ गुरु कृपा की बात	२१
९	गये गुरुदेव परम निज धाम	५२
१०	गये मोहि छांड़ अकेले धाम	५२
११	गुरुदेव गुसैंया बैंया गहो जी मोरी आय के	२२
१२	गुरुदेव दयाल दया करिये	४७
१३	गुरुन की मूरति मंगल करनी	२३
१४	गुरुन की सुन्दर सूरत प्यारी	३
१५	चरन कमल गुरुदेव नमामी	७
१६	जगत में है गुरु हरि अवतार	१०
१७	जब गुरु कृपा दृष्टि कर हेरें······	४५
१८	जय गुरुदेव दयानिधि देवा	१
१९	जय जय जय गुरुदेव हमारे	३७
२०	जय जय श्री सतगुरु महाराज	४८

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
२१	जाग परी मैं गुरु की जगाई	४२
२२	जीवन मुक्त भये जो प्रानी	४४
२३	जो जन शरन गुरुन की आवे	८
२४	दया कर सतगुरु दरस दिखायो	२८
२५	दियो श्री गुरु ने यह निज ज्ञान	३७
२६	धनि धनि श्री सतगुरु सुखदाई	२६
२७	धनि सतगुरु वलदेव हमारे	२२
२८	नमो जय जय श्री सतगुरु देव	१८
२९	नमो नमो गुरुदेव चरन को	७
३०	नमो नमो गुरुदेव गुसाँई	७
३१	नौका म्हाने लागो छो जी गुरुदेव	१२
३२	प्यारे नँदलाल से मिलादो गुरू······	३६
३३	परतिय पर धन से डरूँ···दोहा	२
३४	पुन्य पूरव ले सतगुरु पाये	४१
३५	पूर्ण प्रेम मयं मुनिवरं······ श्लोक	३
३६	प्रेम का प्याला सतगुरु प्याया	१८
३७	वनाई वनी गुरुन की वात	१६
३८	वलिहारी जाऊँ प्यारे गुरू की······	४६
३९	वलिहारी मेरे मुरशद की दम्पति इश्क लगाया है	४५
४०	विगड़ी मेरी बनादो वन्दे नवाज़ मुरशद	३१
४१	वंदों गुरुपद पद्म जहाज़	८
४२	भजो मन गुरु गोविंद पद भाई	१०
४३	भरोसो श्री सतगुरु को भारी	२१
४४	मन तू ले सतगुरु को सरना	२३
४५	मिले हमें श्री गुरु आनँद रासी	१४
४६	मुझे मिले मुरशद कामिल······	३८
४७	मैं वारी जाऊँ श्री गुरु की	४८
४८	मोको सतगुरु ने समझायो	२८

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर

॥ गुरु परम्परा ॥

॥ श्री वेद व्यास भगवान ॥

श्री शुकदेवजी महाराज बधाई तथा विनय

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
६०	जय शुक सखी स्वामनी मोरी	२०३
६१	जागे भाग हमारे हेली	९२
६२	जित देखूँ सुख रूप मई है	१६६
६३	जिन्होंने श्री शुक तत्व पिछानो	१६६
६४	जुगल की झांकी अति कमनी	२७८
६५	जुगल के अंग छाई अलसान	२९२
६६	जो जन मुनिराज चरन भी शरन भाव कर आवेंगे	२३१
६७	जो जन शुक मुनि ध्यान धरें	१६७
६८	जो जन श्री शुक के गुन गावे	१६७
६९	जो शुकदेव नाम लौ लावे	१९३
७०	जो शुक मुनि नाहिं प्रगटातो	१७२
७१	ढाढन नांचे रंग भरी	१४६
७२	तुमतो वेदव्यास के लाल शुकदेव मुनी मतवाले	१८७
७३	तुमसी तुम शुक सखि अलवेली	२०२
७४	तेज पुन्ज में विराजे शुकदेव	१८६
७५	तेरी सुंदर छवि सुखदाई शुक मुनि नैनन मांहि बसाई	१५७
७६	तेरो सुन्दर श्याम सरूप शुकमुनि मन को मोहन हार	१३८
७७	थारा श्याम चरन पर वारी शुकमुनि दासी छू में थारी	१६५
७८	दर्शन देहु कराय व्यास जू दर्शन देहु कराय	२३७
७९	दिन आज महा मन भावन है जन्मोत्सव परम सुहावन है	२३६
८०	देख सखी शुकदेव महामुनि भूतल प्रगटायोरी	१२४
८१	देर से दरे दौलत पै सदा देते हैं	२१२
८२	धन धन जो जन निष्कामी	१९५
८३	धन्य दिवस आज श्याम भूतल में जावेंगे	२२३
८४	धन्य वैषाख मांस मावस तिथि	९४
८५	नमो नमो शुक मुनि सुख रासी	१६९
८६	नांचे गावे सुरनारी सकुमारी सब वारी वारी जावें	२०८
८७	नांचो नवेली मिल सारी बजावो गावो दे दे कर तारी	२४२

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर

॥ श्री श्याम चरणदास आचार्य महिमा बधाई ॥

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
१४१	मेरे श्री श्याम चरनदास आस तेरी	४४४
१४२	मंगल आरती करो रनजीता	४७६
१४३	मंगल मय आज दिवस अतिही मन भायो	३७१
१४४	मंगल मूरत मुरली नंदन	४६७
१४५	यही है मेरे मनमें दृढ विश्वसा	४३०
१४६	रखें इष्ट रनजीतलाल को रसिक अनन्य कहावें	३७६
१४७	रनजीता की जन्म वधाई नारि नवेली गावें	३७५
१४८	रनजीता जनम की वधाई भली मन भाई भली सुखदाई भली	३७६
१४९	रनजीत जगत गुरु कृपा कर अमरापुर से जग आये हैं	४२५
१५०	रनजीता प्यारा दरश तुम्हारा मन भावना	४२६
१५१	रनजीतजी दरश दो छवि के दिखाने वाले	४३५
१५२	रनजीता प्यारा कुंजो का लाला	४४७
१५३	रस रंग वधाई छाय रही सुकुमारी सखी मिल गाय रही	३५२
१५४	राय मैं तुमरे घर को आयो	३४२
१५५	रँगीली म्हारे आज की घरियां	३४५
१५६	रँगीली वधाई आज वाजे	३४६
१५७	रँगीली वधाईयां वाजे री श्री मुरलीधर दरवार	३६७
१५८	रोशन है नाम विश्व में रनजीत तुम्हारा मनजीत तुम्हारा	४३३
१५९	ललन झूलो पलना सुकुमार	३८१
१६०	ललन रनजीता प्यारो री श्री मुरलीधर वारो	४११
१६१	ललन रनजीता पलना झूलें	४७३
१६२	लालन रनजीता का पलना क्या सजा निरखो अली	३९७
१६३	व्यास पुत्र शुकदेव कुमार दर्शन दीने	४२३
१६४	विनय कर जोर करू सुनलो रनजीत कुमार	४१६
१६५	विनय मोरी सुनो श्यामचरन दास जी	४१६
१६६	श्याम चरन ही दास श्री शुकदेव के शिष्य ध्याइये	३१८
१६७	श्याम चरन दास आचारज खास मुकुट मणि हो सरताज हमारे	३३२
१६८	,, ,, ,, ,, ,, जन्मतीज आज है	३४६

पुरनारी पाठ

५५६

श्री प्रेम मंजरी अवतार लीला । ४८०

श्री शुक मुनि श्यामचरणदासाचार्य्य प्रथम मिलन लीला । ४९५

युग्मदरशन लीला। ५०९

श्रीराम सखीजी की लीला। ५२३

फुटकर पद

नम्बर	प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नम्बर
१९	शुक मुनि चरण दास बलिहारी	५४४
२०	श्याम चरण दासी जय कहिये	५४६
२१	श्री मत शुक मुनी के रटे	५५२
२२	श्री शुक मुनि मंगल करन (दोहा)	५५४
२३	श्री शुक मुनि मोको निज कर जानो	५५७
२४	श्री शुक मुनि करो चरण की चेरी	५५७
२५	श्री शुक मुनि के परम प्रिय (सवैया)	५५६

श्रीशुकदेव मुनि　　　　　　　　श्रीश्यामचरणदासजी
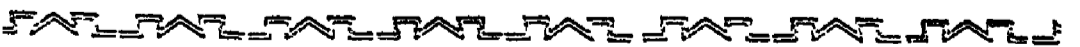
❀ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ❀

॥ श्री सरस सागर ॥

॥ श्री गुरु महिमा ॥

॥ दोहा ॥

मङ्गल निधि आनंद निधि, रिद्धि सिद्धि सुख साज।
श्री गुरु चरण सरोज रज, सब विधि पूरण काज ॥ १ ॥
गुरु पद पद्म हिय धरें, मन बच क्रम कर नेह।
ताहि कछू दुरलभ नहीं, दंपति करत सनेह ॥ २ ॥
श्री गुरु चरण सरोज रज, दृग अंजन करि देख।
बिलसन विहरन विपिन वर, नव निकुंज सुख पेख ॥ ३ ॥
श्रीवृन्दावन सुख अमित, हिय फुरे तब आय।
जब कृपाल करुणा उदधि, श्री गुरु करें सहाय ॥ ४ ॥
श्री गुरु पद्म पराग सों, जितो बढै अनुराग।
मन मधुकर तितनो लहै, सुख सौरभ को भाग ॥ ५ ॥
भरम वासना त्याग मन, मधुप परम सुख लेह।
श्री गुरु चरण सरोज रज, पल पल बढै सनेह ॥ ६ ॥
सरस माधुरी रस सदा, पीवो रसिक सुजान।
करहु निरंतर नेह युत, गुरु पद पंकज ध्यान ॥ ७ ॥

॥ श्री गुरु महिमा ॥

परतिय, परधन तें डरूँ, करूँ भक्ति निसकाम।
सरस माधुरी को यही, दीजे गुरु गुन धाम ॥ १ ॥
आस भरोसो आपको, बनो रहै दिन रैन।
हीय बढे विश्वास यह, श्री सतगुरु सुख दैन ॥ २ ॥
दया, क्षमा अरु दीनता, करो दास को दान।
कपट कुटिलता मेटदो, श्री गुरु कृपा निधान ॥ ३ ॥
श्री दम्पति के नामको, सुमरूँ दिन अरु रैन।
रसिकन के सत्संग बिन, चित में परे न चैन ॥ ४ ॥
दर्शन दम्पति करन की, रहे चटपटी चित्त।
चाह चौगुनी उर बढ़े, सेव चरण की नित्त ॥ ५ ॥
श्री सतगुरु पद में बसत, पुष्कर और प्रयाग।
तीरथ तन पातक हरें, गुरु पद दें अनुराग ॥ ६ ॥
गंगोदक तें है अधिक, गुरु चरणोदक जान।
पाप हरें निर्मल करें, रीझ मिलें भगवान ॥ ७ ॥
श्री गुरु चरणन की करें, सब ही तीरथ सेव।
कृपा करें जापर हरी, सो समझे यह भेव ॥ ८ ॥
ध्यान मूल गुरु मूर्ति है, गुरु पद पूजा मूल।
मंत्र मूल गुरु के वचन, मुक्ति कृपा अनुकूल ॥ ९ ॥
श्रद्धा धर विश्वास कर, सतगुरु पद पर प्रीत।
सरस माधुरी हरि मिलें, धाम बसें जगजीत ॥ १ ॥

हरि के नाम सहस्त्र सम, श्री गुरु को इक नाम ।
समझें ज्ञानी गुरुमुखी, जाप करें निशि याम ॥ ११ ॥
श्री गुरु के इक नाम सम, नहीं सहस्त्र हरिनाम ।
पारस सम कंचन नहीं, समझ अर्थ अभिराम ॥ १२ ॥
गंगा नहावे एक बेर, नदिया बेर हजार ।
तुले न गुरु के नाम सम, हरि को नाम विचार ॥१३॥
श्री सतगुरु के ध्यान सम, तुले और नहिं ध्यान ।
श्री हरि सूरत ध्यान तें, श्री गुरु ध्यान प्रधान ॥१४॥
श्री गुरु मूर्ति रोम प्रति, रमें राधिका श्याम ।
नाम रूप लीला अमित, और अनेकन धाम ॥१५॥
नाम रूप धन के धनी, सतगुरु साहूकार ।
शिष्यन को बांटें सदा, भर भण्डार अपार ॥१६॥
सरस माधुरी गुरुन के, गुण को अन्त न पार ।
गणपति शेष महेश श्रुति, गिनत गिनत गये हार ॥१७॥
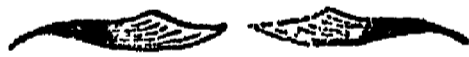
पूर्णं प्रेम मयं मुनिवरं प्रत्यक्ष सर्वेश्वरम्,
चंदन भाल विराजितं श्रीयुतं पीतांबरैः शोभितं ।
तुलसी माल विभूषितं सुरुचिरं सिंहासने संस्थितम्,
शिष्यानां वरदं प्रसन्न वदनं श्री सद्गुरुं नौम्यहम् ॥१॥

वन्दे गुरुं जगद्वन्द्यं वेद वेदान्त पारगम् ।
मायातीतं महात्मानं परमानन्द कारणम् ॥२॥

॥ राग कल्याण ॥

श्री गुरु सब विधि पूरन काम ॥

चार पदारथ देत दयानिधि दानी दंपति नाम ॥ १ ॥
रसिकन को दैं प्रेम सुधारस निज वृन्दावन धाम ।
सरस माधुरी कृपा गुरून की दरसें श्यामा श्याम ॥ २ ॥

॥ पद राग काफ़ी ॥

श्री सतगुरु स्वामी वलदेवा ॥

परम पूज्य प्रणातारत भंजन, दंपति सुख संपति के देवा ।
रंग महल निज धाम निवासी, रस रासी जानत रस भेवा ।
सरस माधुरी जोर दोउ कर, जाचत जुगल चरण की सेवा ।

॥ राग खमाच ॥

हमारे गुरु परम कृपा के रूप ॥

लियो बसाय चरण छाया में, लगे न अब जग धूप ॥ १ ॥
दम्पति ध्यान दियो अवलंबन, काढी भव तम धूप ॥ २ ॥
सरस माधुरी के निज, स्वामीश्री वलदेव अनूप ॥ ३ ॥

॥ राग काफी ॥

अरज सुनो श्री सतगुरु दयाल ।

श्रीबलदेव कृष्ण के भैया, शरणागत जन के प्रतिपाल ॥

मूरत गौर माधुरी तुमरी, सुन्दर मुख अरु नैन विसाल ।
पीत बसन धारण कर राखे, श्रीतिलक मस्तक गल माल ॥
सुन्दर बाहु दोऊ तिन ऊपर, अंकित छाप मनोहर जाल ।
हस्त कमल दोऊ अति अद्भुत, मोसिर ऊपर धरो कृपाल ॥
चरन जुगल अति अरुण कमलवत, सो मेरे जीवन धन माल ।
ध्यान करूं तिनको हित चित दे, दूर करन जम भय अरू काल ॥
तिन परताप परम पद पायो, दरसन लगे लाडलीलाल ।
प्रेम भक्ति दीनी कृपा करि, सब विधि मोकों कियो निहाल ॥
बल देवा गुरु बल अपनो कर, जगत सिंधु सों मोहि निकाल ।
सरस माधुरी शरण राखिये, जान आपनो बाल गोपाल ॥

॥ राग भैरवी ॥

उठ प्रभात श्री सतगुरु सुमरो मन मेरे ।
मंगल सब भांति होंहिं सफल काज तेरे ॥
अष्ट सिद्धि नवों निद्धि चरनन के नेरे ।
भुक्ति मुक्ति मन बांछित चहिये सो लेरे ॥
नवधा अरु प्रेम परा-शुभ गुन सब चेरे ।
त्रिविध ताप कटे पाप अमरपुर बसेरे ॥
अपनो तन मन धन, सब श्री गुरु को देरे ।
सरस माधुरी उमंग, कृपा दृष्टि हेरे ॥

॥ राग भैरवी ॥

मोहि भरोसो श्री गुरु ही को ।

सब विधि गुरू सहायक जनके, भयनहिं मोकों पाव रती को ॥

साक्षात श्री हरि गुरु राजे, सब संदेह गयो है जीको ।

दृढ विश्वास भयो मन मेरे, पायो अवसर अति ही नीको ॥

सरवस धन गुरुदेव दयानिधि, और जगत सब लागत फीको ।

सरस माधुरी समरथ स्वामी, वेग मिलावे प्यारी पीको ॥

॥ राग कल्याण ॥

हमारे गुरु परम कृपा की खान ।

अपने चरण शरण में लीयो, दीयो नाम निज दान ॥ १ ॥

जनम मरण के बंधन काटे, दे कुठार दृढ़ ज्ञान ।

सरस माधुरी सार बतायो, श्री दम्पति को ध्यान ॥ २ ॥

॥ राग काफी ॥

हमारे स्वामी सतगुरु दीनदयाल ।

अभय हस्त मस्तक मम राखो, दीनो भव दुख टाल ॥१॥

महा मन्त्र निज कान सुनायो, कीनो मोहि निहाल ।

सरस माधुरी ध्यान बतायो, श्री राधा नँदलाल ॥२॥

॥ राग कालंगड़ा, भैरवी, बिलावल, पीलू ॥

नमो नमो गुरु देव चरन को।

काटन करम फंद दुख दारून, नवका है भव सिन्धु तरन को ॥
दरशन करत कामना पूरन, कलिमल संकट कोट हरन को।
जो जन चरण शरण चल आये, धन तिनके पितु मात वरन को ॥
सरवोपर गुरू देव गुसाईं, राधा रमन मिलात नरन को ॥
सरस माधुरी शरणागत के, मेटत है जग जन्म मरन कों ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

चरण कमल गुर देव नमामी।

दीन मलीन हीन सवही विध, आयो शरण तुम्हारी स्वामी ॥
महा पतित पामर पर निंदक, मोह लोभ बस क्रोधी कामी।
अधम उधारन विरद संभारो, पार उतारो अन्तर जामी ॥
पतितन पावन करन कृपा निधि, मैं पापी सबहिन में नामी।
अब तो नाथ निवाहैं वनि है, सरस माधुरी हरिपुर धामीं ॥

॥ राग बिलावल ॥

नमो नमो गुरु देव गुसाईं।

चरण सरोज जुगल रज पावन, परसत मिटत विकार मन मांही ॥
निरमल होय बासना नासत, प्रेम प्रकाश प्रगट झलकाई।
दरसत सहज दयानिधि दम्पति, संपति सर्वोपर सुखदाई ॥

होत निहाल निहारत छिन में, तन मन मोद विनोद बढाई ।
सरस माधुरी केलि कुंज की, नैनन निरखत रहत सदाई ॥

॥ राग कल्याण ॥

वंदो गुरु पद पद्म जहाज ।

दृढ विश्वास धार जो बैठे, पूरन हो सब काज ॥
पहोंचे जाय परम पद मांही, जहां दम्पति रस राज ।
सरस माधुरी सुखनित विलसे, हिल मिल सखी समाज ॥

॥ राग झंझोटी ॥

जो जन सरन गुरुन की आवै ।

गत मत पलट जात ताही छिन काग हंस हो जावै ॥
सत संगत शुचि मान सरोवर तहां तुरत चल जावे ।
तजै अभक्त अकर्म कर्म शुभ मोती चुग चुग खावे ॥
पांचों प्रेत परे चरनन में मन इंद्री पलटावे ।
नौधा भक्ति करे निसिबासर गोविंद के गुण गावे ॥
गुरु मुख होय तजे मन मुखता तब प्रभु के मन भावे ।
याविधि जो रहनी बनि आवैताही श्याम अपनावे ॥
परालब्ध फल भोग भली विधि संचै मूल नसावे ।
क्रियमान नित करे कीरतन हरि अर्पे हुलसावे ॥

सहज होय निशकर्म भर्म तज, संशय शोक मिटावे।
चिंता चाह विसार वासना, सुख संतोष समावे॥
निर्भय हो भगवंत भरोसे, तृष्णा सकल नशावे।
दृढ विश्वास आस ईश्वर की, प्रेम प्रीत लो लावे॥
कांपत काल कृष्ण भक्तन सों माया सीस नवावे।
सरस माधुरी श्याम राधिका, कृपा गुरुन सों पावे॥

॥ पदराग अलैया ठुमरी ॥

जय गुरुदेव दयानिधि देवा, श्री बलदेव नाम बलिहारी।
दियो कृपा कर रस निकुंज को, त्रिविधि ताप तनकी सब टारी॥
भयो सुदृढ़ विश्वास भरोसो, अवश्य मिलेंगे प्रीतम प्यारी।
सरस माधुरी ध्यान गुरुन को, है सब ही बिधि मंगलकारी॥

॥ श्री गुरु वंदना पद ध्यान वर्णन ॥

गुरून की सुंदर सूरत प्यारी।
गौर बरन शोभा मन लोभा, पीत बसन तन धारी॥
श्रीमुख शरदचंद छबिनिंदित, त्रिविधि ताप जग हारी।
मस्तक श्री तिलक राजत है, भृकुटी अति सुखकारी॥
जुगल ध्यान नैना रंग राते, छाई प्रेम खुमारी।
मन्द हसन मनको मोहत है, चमकत चोंप उजारी॥

हस्त कमल माला तुलसी की, रसना नाम उचारी ।
चरन कमल कोमल अति अद्भुत, प्रेम भक्ति दातारी ॥
सरणागत संसृति दुख टारन कहा पुरुष कहा नारी ।
सरस माधुरी मङ्गल मूरति निश दिन नयन निहारी ॥

॥ श्री गुरु गोविन्द महिमापद ॥

भजो मन गुरु गोविंद पद भाई ।

श्रीगुरू सम नहीं हितू जक्त में, सुनो सकल चितलाई ॥
जीवत रक्षा करै जीव की, कर्म कलेश नशाई ।
सुख सों रहे गहे गुरु मत को, दुख दरिद्र नशजाई ॥
गुरु मुखियन की गति मति पलटे, उज्ज्वल बुद्धि अधिकाई ।
ऊँची पदवी पाय परम अति, धनधन लोक कहाई ॥
गुरु को ध्यान परम पद दाता, साखि पुरानन गाई ।
सरस माधुरी जुगल कृपा कर, लेवे कण्ठ लगाई ॥

॥ राग ठुमरी ॥

जगत में हैं गुरु हरि अवतार ।

गुरु तें अधिक न और पदारथ, आगम कहत पुकार ॥
गोविंद ही गुरु रूप प्रगट हो, आये नर तन धार ।
अति कृपाल करुणा की मूरति, जीव करत भव पार ॥

जिन जिन शरण चरण गुरु लीनी, कहा पुरुष कहा नार ।
प्रेम भक्ति कर भये कृतारथ, मिले युगल सरकार ॥
हाजिर रहे हुक्म में गुरु के, भुक्ति मुक्ति फल चार ।
अष्ट सिद्धि नवनिधि खड़ी नित, सेवत गुरु दरबार ॥
तारन तरन हरन दुख संश्रृति, श्रीगुरु परम उदार ।
सरस माधुरी ध्यान गुरून को, जीवन प्रान अधार ॥

॥ पद ॥

रटो मन नाम गुरू दिन रैन ।

ध्यान धरो हिय गुरु मूरति को, जो चाहो चित चैन ॥
सेवा करो भाव भक्ति सों, सुनो बचन सुख दैन ।
करो दरश श्री गुरु स्वामी को, सफल करो निज नैन ॥
सुरतरु काम धेनु चिन्तामणि, गुरु सम तनक तुलैन ।
गुरु दाता विज्ञान ज्ञान के, प्रेम भक्ति के ऐन ॥
जीवन मुक्त होय जग माहीं, दम्पति मिलै सुखेन ।
सरस माधुरी कटे कर्म सब, मिटें मोह मद मैन ॥

॥ पदराग जिला झंझोटी ॥

श्री गोविंद गुरु बनिआये, ज्ञान दृष्टि सेजाने ।
गोबिंद हूते अधिकी महिमा, गुरु की वेद बखाने ॥
सरस माधुरी कोई गुरु मुखी, गुप्त भेद पहिचाने ॥

॥ अभिलाष बिनयपद ॥

श्री गुरू ऐसी कृपा कीजे ॥

जासों द्रवैं जगतपति जनपर, सो शुभ लच्छण दीजे ॥
सत्य प्रेम प्रगटे घट मांही, कपट कुटिलता छीजे ।
मिले सयाकर जुगल बिहारी, नयन रूप रस पीजे ॥
मन मेरो अनुराग रंग में, नित्य निरंतर भीजे ।
सरस माधुरी की यह विनती, सहस्र कान सुन लीजे ॥

॥ राग मांढ ॥

नीका म्हाने लागो छो जी गुरु देव ।

अजी थांकी अधम उधारन टेव ॥

बलि बलि जावां झांकी ऊपर, करांजी भलीविधि सेव ।
निस दिन निरखां मन में हरषां, यो म्हाने बर देव ॥
गुण अपार नहीं बरन सकां म्हे, थे छो अगम अभेव ।
सरस माधुरी बिनय हमारी, यह सरवन सुनलेव ॥

॥ पद ॥(राग रसिया, तमाशे की चाल तथा सोरठ)

सतगुरु श्याम सनम दरसाया ।

जलवा जग में रोशन जिसका, भीतर बाहर छाया ॥

निरगुन सरगुन सिफ़्त है उसकी, वेद नेति कहि गाया ।
सब से गुप्त भेद है जिसका, अद्भुत जिसकी माया ॥
वली औलिया आदिक सारे, खोजत खोज हिराया ।
पीर पैग़म्बर पच पच हारे, कोई गुरुमुख ने पाया ॥
मोमिन मुनी मोन गह बैठे, ज्ञान ध्यान बिसराया ।
इश्क़ प्रेम से पैयत प्यारा, सो सबने छिटकाया ॥
परमतत्व पुरुशोत्तम प्यारा, परसे पर कहलाया ।
परम धाम में बसत सदा सो, संतन के मन भाया ॥
अर्शबरीं पे आसन उसका, नूर ज़हूर सुहाया ।
महल महारोशन सांई का, जग मग जोत सवाया ॥
सुलतानुल अज़कार अनाहद, बाजा बजत सुनाया ।
सुन कर धुन मदहोश भया मन, सुख के सिन्धु समाया ॥
बाग़ बहार चार सू सुन्दर चमन अजूब लखाया ।
चौसठ खंभ भवन मन भावन, दमक चमक चमकाया ॥
हूर परी पैकर से आला, सखी समाज सवाया ।
साज बीन मिरदंग राग धुन, रंग रास सरसाया ॥
सिंहासन सुबहानी जिस पर, जलवागर हरि राया ।
मोहन की मन हरन स्वामिनी, नैन निरख हुलसाया ॥
मुरशद हुवे महरबां जिस पर, जिस जा सो पोंहचाया ।
रहे हुज़ूर हमेशा खुश दिल, ख़ादिम क़दम कहाया ॥
दोज़ख़ जन्नत त्याग बखेड़े, जहां जाय घर छाया ।
सरस माधुरी बांके बिहारी, हँस कर कण्ठ लगाया ॥

॥ पद ॥

श्री गुरू अधम उधार पतित पावन सरकार ॥
शरणागत प्रतिपाल दयानिधि करदें भव के पार ।
लिये में निज उरधार ॥
सेवा किये मिलत सब ही सुख भक्ति मुक्ति फल चार ।
भरें पूरण भण्डार ॥
जोग जज्ञ तीरथ बृत संजम जप तप नेम अचार ।
दिये चरणन पर वार ॥
सरस माधुरी श्याम राधिका मिलि हैं भुजा पसार ।
करेंगे हिये को हार ॥

॥ पद राग ठुमरी ॥

मिले हमें श्री गुरु आनँद रासी ॥
जुगल लगन में नित्त निरन्तर, दम्पति करत खवासी ।
रुचि लखि सेवा करत कृपा,निधि अतुलित प्रीति प्रकासी ॥
मो पर मया करी निज जन गन, दरसाया रसरासी ।
सरस माधुरी रसिक शिरोमणि, अमरलोक के बासी ॥

॥ पद ठुमरी ॥

अमर भये सतगुरु के उपदेश ।
संशय शोक रोग मानस को रह्यो नहीं लवलेश ॥

जुगल भजन भरपूर भरो उर दियो सहचरी भेश ।
महल भावना मगन कियो मन छको दरस आवेश ॥
लीला ललित निहार रैन दिन एक तैं एक विशेष ।
सरस माधुरी रस मतवारो प्रमुदित रहूँ हमेश ॥

॥ पद ॥

सतगुरु अजर अमर पुर दीनों ।
संशय शोक मिटाये सारे, कियो प्रेम रंग भीनों ॥
विषे विकार छुड़ाये छिन में, भय भ्रम सब हर लीनों ।
परमानँद दे कियो प्रफुल्लित, मिटे ताप अब तीनों ॥
जीवन मुक्त महा सुख विलसूं, रहूं ध्यान लव लीनों ।
सरस माधुरी अमृत पीयो, उपजो नेह नवीनों ॥

॥ पद ॥

हमतो श्री गुरुदेव मनावें ।
गुरु ते अधिक न और पदारथ, परगट वेद पुरान बतावें ॥
गुरु के चरण कमल को तज के, औरन को नहिं सीस नवावें ।
भक्ति भक्त भगवन्त अङ्ग गुरु, इनही के गुनगन नित गावें ॥
शरणागत रक्षक जन पालक, यही भरोसो मन में लावें ।
सदा सहाय करें सेवक की सङ्कट, कोट कलेश मिटावें ॥

कृपा समुद्र लखे श्री सतगुरु,आश्रित जन की आस पुरावैं ।
गुरु मूरति को ध्यान धरत ही,गौर श्याम हिय दौरे आवैं ॥
निसि दिन नाम रटे मुख गुरू को,तनमन में अति ही पुलकावैं ।
सरस माधुरी परम धाम में टहल महल दम्पति की पावैं ॥

॥ पद राग श्याम कल्याण ॥

बनाई बनी गुरून की बात ।

बिलसूं सम्पति दम्पति सजनी, मगन रहूं दिन रात ॥
जा धन को तरसत सुर मुनि जन, ब्रह्मादिक ललचात ।
सो किरपा कर दीनो स्वामी, हरष न हृदय समात ॥
परमानन्द रह्यो परि पूरन, रोम रोम सब गात ।
छकन छकी रह गई जकीसी, और न कछू सुहात ॥
जुगल नाम अमृत सों मीठो, पीवत नाहिं अघात ।
सरस माधुरी छबि दृग छाई, सो सुख कह्यो न जात ॥

॥ गजल ताल क़ौवाली ॥

गुरु श्याम सनम से मिलादो मुझे ,
जरा दरशन उनका करादो मुझे ॥
बाँसुरी वाला वो नंद का लाला ।
दिखा झांकी उसकी जिलादो मुझे ॥

बांके बिहारी ने मुझको बिसारी ।
कहीं उसका पता तो बता दो मुझे ॥
जादू भरी सी हैं आँखें पिया की ।
अदा उसकी अनोखी लखा दो मुझे ॥
चंद सा मुख है मनोहर उसका ।
अजी मंद हँसन में फंसादो मुझे ॥
गोल कपोल अलक घुंघरारी ।
गिरधारी के गरवे लगादो मुझे ॥
सरस यह माधुरी शरण तुम्हारी ।
बिहारी के रंग में रचादो मुझे ॥

॥ राग सोरठ ॥

श्री बलदेव गुरु बलिहार ॥

जयति जै मुख बोल निश दिन देहु तन मन वार ।
जान निबल सुबल कृपा कर कियो प्रभू उद्धार ॥
डूबते संसार सागर लियो आप निकार ।
दे जुगल की भक्ति प्रेमा कर दियो मतवार ॥
लगन लागी प्रीति जागी लख जुगल सरकार ।
सरस माधुरि छकी छबि में देख के दीदार ॥

॥ पद ॥

प्रेम का प्याला सतगुरु प्याया।

पीवत ही तन मन मगनाया रोम रोम रस छाया ॥
दरसी जोरी जुगल माधुरी दरशन कर हुलसाया।
गद गद कंठ नयन जल धारा सुख के सिंधु समाया ॥
जाको जस चारों वेदन में नेति नेति कर गाया।
सो प्रतच्छ पुरशोत्तम प्यारा साच्छात् दरसाया ॥
रहूँ सदा आनँद में माता भय अरु भर्म गंवाया।
भई प्रतीत प्रिया प्रीतम की चित चंचल घर आया ॥
संशय सोग रोग सब नाशे नाम रूप लौलाया।
सरस माधुरी सकल विकल तज परमानँद पद पाया ॥

॥ पद ॥

नमो जैजै श्री सत गुरु देव।

गुरु ब्रह्मा गुरू विष्णु सदा शिव वेद कहत यह भेव ॥
गुरु ही गणपति जान शारदा सुर सब ही लखि लेव।
सरस माधुरी सार ज्ञान यह गुरु पद पंकज सेव ॥

॥ पद ॥

हमारे गुरु रसिक शिरोमणि स्वामी ।
रसिक राधिका श्याम नाम के नेही अति निष्कामी ॥
ध्यान परायन गुन गन गायन अमर लोक निज धामी ।
सरस माधुरी प्रेम परा के मारग के अनुगामी ॥

॥ पद ॥

हमारे गुरु संतन के सरताज ।
सेवत श्यामा श्याम सलोने मंडन रसिक समाज ॥
धामअरु नाम रूप लीला बिन और न कोई काज ।
अमरलोक आनंद भवन में अविचल रहे विराज ॥
शरणागत पालक जन रक्षक भगवत धर्म जहाज ।
सरस माधुरी रस में माते जय जय जय महाराज ॥

॥ पद ॥

हमारे गुरु रसिक शिरोमणि राय ।
दंपति संपति में मन दीने सेवत प्रीति लगाय ॥
जुगल ध्यान ग़लतान रैन दिन और कछू न सुहाय ।
रंग महल में रहत निरंतर गुन गावत हुलसाय ॥
उज्ज्वल रस आनंद अलौकिक रोम रोम रह्यो छाय ।
सरस माधुरी शरण चरण की निरख रूप बलिजाय ॥

॥ पद ॥

हमारे गुरु दंपति रसिक अनन्य ।

जुगल लाडली लालन के बिन मानत नाही अन्य ॥

रस निधान ग़लतान प्रेम में अतुलित गुन सौजन्य ।

सरस माधुरी ऐसे गुरु की शरण भये जे धन्य ॥

॥ पद ॥

श्री गुरु चरण शरण जब आया ।

अभय हस्त मम मस्तक धरके कृपा करी अपनाया ।
संस्कार कर पंच महा प्रभु वैष्णव धर्म दृढाया ।
शरणागति षट् विधि समझाई सुनकर मन मगनाया ॥
स्वसरूप अरु पर सरूप का भेद मोहि दरसाया ।
ईश जीव माया तीनों का तत्व अनूप लखाया ॥
सेवक सेव्य भाव दे स्वामी अति विश्वास बढाया ।
सेवा दई मानसी सुंदर सहचरि रूप बनाया ॥
श्री बृन्दावन रंग महल में अविचल वास बसाया ।
सरस माधुरी दम्पति छवि में अति ही मोहि छकाया ॥

॥ पद ॥

भरोसो श्री सतगुरु को भारी ।
दीन दयाल दया के सागर शरणागत भय हारी ॥
जुगल मंत्र को जाप बतायो सेव मानसी प्यारी ।
इष्ट बताये प्रेम प्रीत कर राधा सरस बिहारी ॥
रसकी रीत प्रगट कर भाखी सो दृढ कर उर धारी ।
लगन लगाय लाडली लालन करी रूप मतवारी ॥
दरस कराये करुणा करके श्री दंपति सुखकारी ।
सरस माधुरी शरण चरण की जोरी जुगल निहारी ॥

॥ पद ॥

कहा कहूं गुरु कृपा की बात ।
निश दिन रहूं प्रेम रंग राची परम प्रफुल्लित गात ॥
नाम धाम लीला स्वरूप तज मन कहुँ अंत न जात ।
छिन छिन छबि दरसत दंपति की प्रगट कहत सकुचात ॥
सोवत जागत जुगल बिहारी नैनन में झलकात ।
सरस माधुरी रस बिन सजनी और न कछू सुहात ॥

॥ राग पीलू बरवा ॥

सतगुरु देव दयानिधि आये ।
भक्ति प्रकाशन प्यारी प्रीतम जगमांही कर प्रीत पठाये ॥

रसिकन के हित रस निकुंज को करुणा कर अपने संग लाये।
तारन तरन हरन दुख दारुन पापी अनगिन पार लगाये ॥
शरन चरण की लीनी जिन ने निश्चय जुगल विहारी पाये।
सरस माधुरी अधम अनेकन परम धाम मांही पहुँचाये ॥

॥ पद राग कालंगड़ा ॥

धनि सत गुरु बलदेव हमारे।

करुणा कृपा दृष्टि मोपे करि दरसाये विनप्रान पियारे ॥
रटत रहों रसना सो निशदिन राधेश्याम नाम इक सारे।
सरस माधुरी रस विहार सुख निरखूँ नित ही संग तुम्हारे ॥

॥ पद चाल नाटक में ॥

गुरु देव गुसैयां बैयां गहोजी मेरी आयके।

यह संसार समुद्र अगम है, नैया पड़ी यामे जायके।
जावे ना डुवायके ॥ १ ॥
काम क्रोध कछ मच्छन घेरी रहै है प्राण घबराय के।
इन्हों से लो वचाय के ॥ २ ॥
मन मल्लाह महा मतवारो जाने नहीं ये चलाय के।
रही मैं डरपाय के ॥ ३ ॥
कृपा पवन संचारो स्वामी दीजिये पार लगाय के।
कहूं मैं सिर नाय के ॥ ४ ॥

शरण जान वेगी सुधि लीजे दीजे जी नहीं बिसराय के।
दया हिये लाय के ॥ ५ ॥
जुगल बिहारी प्रीतम प्यारी दीजिये द्रगन दिखाय के।
सेऊँ मैं सुख पाय के ॥ ६ ॥
सरस माधुरी शुक परिकर में लीजिये धाम बसाय के।
रहूं मैं गुन गाय के ॥ ७ ॥

॥ पद ॥

गुरुन की मूरति मंगल करनी।
ध्यान किये कलिमल सब नाशें त्रिविधि ताप तन हरनी ॥
चरण रेणु चिंतामणि जैसी चिंतत फल अनुसरनी।
चार पदारथ प्रेम भक्तिदा सब विधि पोषन भरनी ॥
गुरु मुखियन की संपति येही पल छिन नाहिं बिसरनी।
किरपन के धन ज्यों नित निरखें गिन २ चौकस धरनी ॥
महिमा गुरू अधिक गोविंद तें बेद प्रगट कहि बरनी।
सरस माधुरी निज दासन को भवसागर हित तरनी ॥

॥ राग कल्याण व बरवा ॥

मन तू ले सतगुरु को सरना।
चरण चारू चिंतामणि जिनके सब विधि मंगल करना ॥
संसय सोक सकल दुख नांसै मिटै जनम अरु मरना।
अमर होय अमरा पद पावे नहीं काल से डरना ॥

गोविंद को गुरुदेव मिलावैं वेदन में यह वरना।
प्रेम भक्ति कर कल मल धोवे होवे तारन तरना॥
गुरु गुरु रटैं कटैं सब संकट पल छिन नहीं बिसरना।
सरस माधुरी गुरु मूरति को ध्यान हिये नित धरना॥

॥ राग कल्याण भंझोटी ॥

श्री गुरु पद पंकज रज पावन।
अंजन कर अति प्रेम प्रीतसों दृग दुख दोष नशावन॥
दिव्यदृष्टि हो दरसत तिहि छिन कुंज केलि मन भावन।
सरस माधुरी मिलैं मयाकर श्यामा श्याम सुहावन॥

॥ पद ॥

शरण हम ऐसे गुरु की पाई।
जिन मन जीत कियो बस अपने चिंता चाह मिटाई।
पांचो इन्द्रिन के रस तज के प्रभु सों लगन लगाई।
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद ममता मार भजाई॥
तीनों गुण तज भजे जुगल वर प्रेम भक्ति लौ लाई।
गद गद कण्ठ नयन जल धारा हरि पद सुरति समाई॥
सदा रहत गलतान ध्यान में देह दसा बिसराई।
सरस माधुरी नाम दान दे लियो मोहि अपनाई॥

॥ आरती श्री सत गुरुदेव राग आसावरी ॥

कर मन आरती श्री सतगुरु की ।

मिटे ताप तिरविध जग जुर की ॥

धरे ध्यान सत गुरु मूरति को मिले मोज ताहि अमरापुर की ।
जन्म मरन चौरासी के दुख नरक अगन नाशे सब धुर की ॥

अजर अमर हो आनन्द पावै करै टहल नित परमेसुर की ।
श्री बलदेवदास चरणन में सरस प्रणाम जोर दोऊ कर की ॥

॥ दूसरा पद राग आसावरी सारंग ॥

आरती श्री गुरू देव तुम्हारी , करत नसै भव बाधा सारी ।
चरण शरण जो तुम्हरी आयो, त्रिबिधि ताप तिनकी तुम टारी ॥

बिमुख जीव हरि सनमुख कीने, जन्म मरन दुख दियें निवारी ।
मंत्र राज निज दान दियो प्रभु, इष्ट बताये कुंज बिहारी ॥

दई महल की टहल मानसी, कीनो उज्ज्वल रस अधिकारी ।
परा परम पद दियो दया निधि, शरणागत वत्सल सुखकारी ॥

विषयानँद बिष सम दरसायो, ब्रह्मानन्द निरस अति भारी ।
परमानन्द प्रेम पद पायो, महिमा गावत रसना हारी ॥

श्री स्वामी बलदेवदास प्रभु, गुन अनन्त नहिं सकूं उचारी ।
सरस माधुरी दोऊ कर जोरत, नमो नमो जय जय बलिहारी ॥

॥ पद राग खमाच ॥

श्री गुरु चरण कमल सिर नाऊँ ।

तिनके ध्यान ज्ञान गुण प्रगटत, रस लीला पद सरस बनाऊँ ॥

सुनत गुनत गावत मन भावत, परम परा पद निश्चय पाऊँ ।

सरस माधुरी शरण कृपा बल, बृज लीला दम्पति गुण गाऊँ ॥

॥ राग सोरठा ॥

हमारी अब सब विधि बन आई ।

नित्त निकुंज महल की सेवा, श्री गुरू देव बताई ॥

निज सम्बन्ध भावना भीने, करै सरस सिवकाई ॥

छके रहें छवि जुगल माधुरी, सुख बरनो नहिं जाई ॥

श्री शुक सखी चरण की दासी, परि कर मांहि मिलाई ।

अपनी ज्ञान प्रान सम पोषत, रंग रली दरसाई ॥

श्री बल देवी सखी स्वामिनी, तिनके चरण सहाई ।

सरस माधुरी शरण गहे की, सब विधि बात बनाई ॥

॥ राग सोरठा ॥

धनि धनि श्री सतगुरु सुखदाई ।

धनि यह जन्म सुफल भयो मेरो, चरण शरण में पाई ॥

तीन लोक तिरगुन के ऊपर, तेज पुंज छबि छाई ।
बिन रवि ससि अद्‌भुत उजास जहां, जग मग जोति सुहाई ॥
अनहद नाद जहां घन गरजें, अमृत झरी लगाई ।
बरसे हीरा मानिक मोती, मोज महा दरसाई ॥
परम सुन्न के पार परम पद, काल जहां नहिं जाई ।
शिव ब्रह्मादिक को जो दुरलभ, ऐसी ठोर दिखाई ॥
सत चेतन आनन्द अमरपुर, मोहि तहां पहुँचाई ।
बिन संजम साधन बिन करनी, लीला कुंज लखाई ॥
चारों मुक्त जहां कर जोरे, रूप निरख ललचाई ।
रास विलास हुलास निरन्तर, नित आनन्द बधाई ॥
कुंज विहारन लालबिहारी, नयन सेन समझाई ।
वचन अगोचर यह सुख सजनी, श्यामा दियो जनाई ॥
छाय रह्यो रस रोम रोम में, नैनन झलक्यो आई ।
गूंगे को सुपनों ज्यों सजनी, मुख सूं सकूं न गाई ॥
अनगिन सखी सहचरी सनमुख, करे जुगल सिवकाई ।
फूल रह्यो फूलन सों श्री वन, ऋतु बसन्त मन भाई ॥
दृढ़ विश्वास भयो मन मेरे, लई मोहि अपनाई ।
सरस माधुरी विरद भरोसे, श्री बलदेव सहाई ॥

॥ राग सोहनी ॥

सत गुरु मोज महल की दीनी ।
सुरत निरत को खेल सिखायो; मन इन्द्री बस कीनी ॥

उज्ज्वल रस सब रस को सागर, बुध गागर भर लीनी ।
चार पदारथ चाह मिटाई, भई जुगल आधीनी ॥
श्री शुकसखी चरण की दासी, देखी जित रंग भीनी ।
तिनके संग रंग रस लूटूं, निरखूं केल नवीनी ॥
नित आनन्द अमरपुर मांही, दुविधा दुरमति छीनी ।
श्री बलदेव गुरू करुणा निधि, सरस शरण निज लीनी ॥

॥ राग सोहनी ॥

मोकों सतगुरु ने समझायो ॥

मन को मोर मोह माया से, प्रभु के ध्यान लगायो ।
इंद्री बिषयभोग विष त्यागे, अमृत प्रेम पिवायो ॥
दई महल की टहल मानसी, नित्त निकुंज बसायो ।
हाजिर रहूं हजूर जुगल के, रूप निरख मगनायो ॥
तिरगुन तज चौथो पद परसो, जन्म मरन बिसरायो ।
निरभय भयो गयो दुख दारुन, सुख के सिंधु समायो ॥
श्री बलदेव भेव निज दीनो, वेद नेति जो गायो ।
सरस माधुरी रंग रसीलो, नैनन मांही छायो ॥

॥ राग रसिया ॥

दया कर सतगुरु दरस दिखाये ।

अमर लोक अभिराम धाम में जित जा दरशन पाये ॥

अति प्रसन्न आनन्द मगन मन, पीत बसन छबि छाये।
माला तिलक मनोहर बाना, मंद मंद मुसकाये॥
संतन के जहां ठाठ भागवत, पाठ करत दरसाये।
तिन्हैं निरख नयनन जल धारा, प्रेम प्रवाह बहाये॥
करुणा निधि अधमन उद्धारन, दृढ विश्वास बढाये।
सरस माधुरी के मन मांही, निश दिन रहत समाये॥

॥ राग आसावरी ॥

सतगुरु ने निज ज्ञान दियो, वो विमुख जनों से कहना क्यारे।
हीरा नाम हरी धन पाया, फिर कोड़ी कर गहना क्यारे॥
परमानंद सरस रस पीया, और विषय मैं बहना क्यारे।
ध्यान धरा प्यारी प्रीतम का, और किसी का चहना क्यारे॥
लाभ हुआ जब प्रेम भक्ति का, ज्ञान जोग में लहना क्यारे।
सरस माधुरी छबि में अटके, जगके खटके सहना क्यारे॥

॥ होरी का पद राग सोरठ ॥

होरी खेलत सरस सत गुर के संग।
जहां बरस रह्यो आनद को रंग॥
ज्ञान ध्यान की केशर घोरी पिचकारी छूटत उमंग।
भाव भवन में खेलन लागी छिरके पिय प्यारी के अंग॥

बुध विवेक डफ ढोलक बाजै, प्रेम प्रीत की वीणा चंग ।
पांच पचीसों गावन लागी, मारि कियो मन को मृदंग ॥
सुरत निरत सखी नांचन लागी, गुनातीत गति ताथिलङ्ग ।
माया काल मूरछा खाई, कायर हो भाग्यो अनंग ॥
अमर नगर में धूम भई है उलट, वहे जहां जमुना गंग ।
जीवन मुक्त मिल्यो फल फगुवा, सरस माधुरी जीता जंग ॥

॥ श्री गुरु महिमा की मांझ ॥

रसिक शिरोमणि गुरू हमारे, तिन रस रीत सिखाई ।
दे संबंध नाम सेवा सुख, कुंज केलि दरसाई ॥
निरखे मोज महल के मांहीं, करें जुगल सिवकाई ।
सरस माधुरी शरण कृपाबल, महा परम निध पाई ॥ १ ॥
जब गुरु कृपा दृष्टि कर हेरें, वस्तु हिये में दरसे ।
भाविक भजन भाव सुख बिलसे, जक्त जीव सब तरसे ॥
भूले देह गेह सुध सबही, तब दंपति पद परसे ।
सरस मधुरी अगम अगोचर, मोज महारस सरसे ॥ २ ॥

॥ होरी काफी ॥

श्री गुरु के गुण गावे, जुगल के जो मन भावे ॥
हरि गुरु एक समझ कर सज्जन, निस दिन लगन लगावे ।

सेवे चरण कमल श्रद्धा कर, अहंकार छिटकावे।
दीनता चित्त में लावे ॥ १ ॥

धन्य भाग अपने कर जाने, नित नव भाव बढावे।
रहे सदा ग़लतान ध्यान में, प्रेम पदारथ पावे।
प्रिया पिय कण्ठ लगावे ॥ २ ॥

प्रीत रीत युत करे महोत्सव, सर्वस भेट चढावे।
आज्ञा भंग करे नहि कबही, कर जोरे शिरनावे।
सकल सुख सम्पति पावे ॥ ३ ॥

गुरु के वचन वेद कर समझे, निश्चय निज उर लावे।
प्रानन से प्यारे गुरु जाने, अमरलोक को जावे।
जहां से बहुर न आवे ॥ ४ ॥

जीवन मुक्त होय जग जीवे, धन धन लोक कहावे।
सरस माधुरी रंग महल बस, हिय मांही हुलसावे।
निरख छबि बलिबलि जावे ॥ ५ ॥

॥ राग भैरवी ॥

बिगड़ी मेरी बनादो बन्देनवाज मुरशद।
घनश्याम से मिलादो, बन्देनवाज मुरशद ॥ १ ॥

उलफ़त का जाम भरदो, अलमस्त मुझको करदो ।
बेख़ुद मुझे बनादो, बन्देनवाज़ मुरशद ॥ २ ॥

निश दिन लगन लगादो, दिल की कली खिलादो ।
दरूपति दरस करादो बन्देनवाज़ मुरशद ॥ ३ ॥

पजमुर्दा हो रहा हूं, सुध बुध को खो रहा हूं ।
सोता हूं तुम जगादो, बन्देनवाज़ मुरशद ॥ ४ ॥

सिजदा में कर रहा हूं, और ध्यान धर रहा हूं ।
सरसे क़दम लगादो, बन्देनवाज़ मुरशद ॥ ५ ॥

प्यारा वो नंदलाला, सब जक्त का उजाला ।
जलवा जरा दिखादो, बन्देनवाज़ मुरशद ॥ ६ ॥

तिशंना तड़फ रहा हूं, दम गम के भर रहा हूं ।
शीरीनी लब चखादो, बन्देनवाज़ मुरशद ॥ ७ ॥

तेरी ही शरण में हूं, तेरे ही चरण में हूं ।
दासी सरस बनादो, बन्देनवाज़ मुरशद ॥ ८ ॥

॥ होरी राग काफी ॥

श्री गुरु हुवे सहाई, फाग लीला दरसाई ॥ १ ॥

सुरत सुहागन अति बड़ भागन अनुभव से समझाई ।
दे गागर अनुराग रंग की अपने संग लगाई ।
ति सखी मोहि मिलाई ॥ २ ॥

सुखमन कुंज गली अति सीधी, सोइ निज राह बताई।
चली चाव सों सहज जहां में, बात भली बनि आई।
महा मन में मगनाई ॥ ३ ॥

परम प्रकाश उजास अनूपम, तेज पुंज छवि छाई।
ताके पार अमरपुर पिय को, जहां मोहि पहुंचाई।
निरख मन मोद बढ़ाई ॥ ४ ॥

ऋतु वसन्त जहां रहत निरन्तर, ललित लता सुखदाई।
फूले फूल अनेक रंग के, फूली अंग न माई।
देख निज दृगन लुभाई ॥ ५ ॥

नाना कुंज पुंज रस की जहां वसत सखी समुदाई।
बीच बन्यो रँग महल मनोहर, राजत जुगल जहांई।
बजत अनहद अधिकाई ॥ ६ ॥

मच रह्यो खेल मंजु मन्दिर में, अबीर गुलाल उड़ाई।
चलत प्रेम पिचकारी चहुं दिसि, केशर रंग भराई।
भीजत हरखाई ॥ ७ ॥

श्री शुक सखी श्याम चरन्दासी, मिली हिये लिपटाई।
सरस माधुरी सतगुरु के संग, अद्भुत मौज मनाई।
हुलस यह होरी गाई ॥ ८ ॥

॥ श्री सतगुरु महिमां को पद राग कड़खा ॥

साधो सतगुरु ब्रह्म बलदेव मेरा ।

अवतरे जक्त में संत बपुधार के,
दास पदवी लई जग उजेरा ॥ १ ॥

आदि अबिगति सही सेस होकर वही,
धरन धर सीस ब्रह्मा उसारा।
दूसरी देहधरि चीर सागर विषे,
आपही विष्णु पौढ़े पियारा ॥ २ ॥

घटत जब धर्म और बढत अपराध तब,
जुगल वपुधार के प्रगट होई।
राम अवतार में लच्मण होय पुन,
कृष्ण अवतार बलदेव सोई ॥ ३ ॥

अमर निज लोक में नित्त लीला करे,
संग श्री राधिका श्याम नामी।
सखी बहुतक लिये प्रेम रस कों पिये,
ब्रह्म बलदेव गुरुदेव स्वामी ॥ ४ ॥

ब्रह्मबल शक्ति और प्रकृति माया वही,
अखिल ब्रह्मांड आधार जानों।
त्रिगुण मय जीव में चेतना तासुकी,
साक्षीरूप बलदेव मानों ॥ ५ ॥

एक सों बहुत निज होंन इच्छाकरी,
ब्रह्म से पुरुष माया उपाई।
होय महतत्व ओंकार तिरगुन रचे,
विष्णु विधि शंभु सृष्टि रचाई ॥ ६ ॥

बिरंच पैदा करै विष्णु पोषे भरे,
शंभु संहार करता कहावें।
ब्रह्म बलदेव बहु भांत लीला करैं,
आपने मांहि आपही समावें ॥ ७ ॥

सच्चिदानंद बलदेव गुरुदेव हरि,
अचल निज रूप बहूरूप सोई।
प्रलय उत्पत्ति संसार की ता विषे,
लहर दरियाव ज्यों लीन होई ॥ ८ ॥

वार और पारसों रहित बलदेव गुरु,
अगम और निगम नहिं भेद जानें।
रहे ठाडे सोऊ हाथ जोरें दोऊ,
नेति नेति कह बखानें ॥ ९ ॥

बहुत साधू सती अमित जोगी जती,
ब्रह्म बलदेव धर ध्यान ध्यावें।
रैन दिन खोजना करैं बहु कष्ट कर,
बिना सत भाव नहि पार पावें ॥१०॥

रूप वलदेव गुरू दूरसों दूर वहु,
निकट सों निकट अति पास कहिये ।
दृष्टिकर दिव्य देखे जभी भावसों,
तभी ततकाल अति सुगम लहिये ॥११॥

भक्ति के भाव बिन चित्तके चाव बिन,
किये वहु जतन नहीं नैन दरसें ।
गुरु मुखी संत गुनवंत विरले कोई,
सोई वलदेव गुरु जाय परसें ॥१२॥

तत्व वेत्ता मुनी परम ज्ञानी गुनी,
जतन और जुक्त कर वहु थकावें ।
भर्म कर दूर भरपूर देखें सदा,
समझ की सैंन से नजर आवें ॥१३॥

गुप्त और प्रगट वलदेव व्यापक कला,
विना वलदेव नहिं और दूजा ।
दसों दिस गुरू वलदेव पूरन प्रभू,
ज्ञान कर ध्यान धर करूँ पूजा ॥१४॥

मन विषे धार परतीत निश्चै कोई,
ब्रह्म वलदेव गुरुदेव गावें ।
जन्म और मरन की सहज फांसी कटै,
परम पद नाम निज धाम जावें ॥१५॥

मिले परब्रह्म में रहें आनन्द में,

लीन हो भाव दूजा नसावें।

काल जम फांस में फेर आवे नहीं,

मुक्ति सायुज्य बलदेव पावें॥१६॥

ब्रह्म बलदेव गुरु भेव कहां लो कहूं,

रहूं सिर नाय तिनके चरन में।

दास शिवदयाल निज जान जन आपनों,

करो मोहि लीन आपने बरन में॥१७॥

॥ स्तुति पद ॥

जय जय जय गुरुदेव हमारे।

श्री बलदेव दयाल कृपा निधि परमारथ हित नर वपुधारे॥
गोर बरन मन हरन करन सुख मृदु मुसकन नैना रतनारे।
श्री तिलक तुलसी गल माला पीत वसन सुन्दर तन धारे॥
लिये उवार जगत जल निधि ते मोसे अधम अनेक उबारे।
त्रिविधि ताप संताप मिटावन सरस माधुरी चरण तुम्हारे॥

॥ राग श्याम कल्याण ॥

दियो श्री गुरु ने यह निज ज्ञान।

ताहि समझ संशय सब नाशे अपनी परी पिछान॥१॥

तीनों तन अरु तीन अवस्था ये माया कृत मान ।
तू चेतनतुरिया किशोर नित यह निश्चय मन जान ॥२॥
तीन लोक से प्रथक अमायक सो तेरो अस्थान ।
प्रीतम तेरो सरस बिहारी ताही से रति ठान ॥३॥
नाम रूप लीला चिन्तन कर धाम धार दृढ़ ध्यान ।
रास बिलास निहार निरन्तर करहु प्रेम रस पान ॥४॥
यही जोग संजम जप तप व्रत त्याग बिराग बिधान ।
सरस माधुरी छबि दंपति में रहिये नित ग़लतान ॥५॥

॥ ग़ज़ल ॥

मुझे मुरशद मिले कामिल जिन्हों की सिफ़त आला है ।
सरापा नूर की मूरत बदन सांचे में ढाला है ॥१॥
मनोहर चांद सा चहरा तिलक मस्तक पै है धारन ।
सजा सर पर जरद साफ़ा गले तुलसी की माला है ॥२॥
मधुर मुसकान है मुख की रसीली नैंन की चितवन ।
नजर भरके जिसे देखा उसी पै जादू डाला है ॥३॥
सुहावन पीत अँग गाती, हृदय पर हार फूलों के ।
बंधा है कटि पै पीताम्बर, अजब ढँग का निराला है ॥४॥
लगा के पद्म आसन को, बिराजे आप बाघम्बर ।
करों में ले सुमरनी को, रटे राधे गुपाला है ॥५॥

चरण कोमल कमल जैसे, जिन्हों का ध्यान है मन में ।
है सरवस धन यही मेरे, जनम अरु मरन टाला है ॥६॥
खिला कर सीत परसादी, किया पालन दया करके ।
सरस बलदेव सतगुरु ने, पिलाया प्रेम प्याला है ॥७॥

॥ ग़ज़ल ॥

प्यारे नंदलाल से मिलादो गुरु मुझे उसकी जुदाई गवरा नहीं ।
दिखलादो जरा अजी हाय मरा देखा मैंने वो प्रानों का प्यारा नहीं॥
बांकी झांकी बिहारी की दिलमें बसी,
अदा ऐसी नहीं मैंने देखी कहीं ।
चुभी नजर कटारी कलेजे मेरे,
थमे आखों से अश्कों की धारा नहीं ॥
फिरी सारे जहां में मैं ढूंढ सनम,
पता उसका कहीं ना मिला है मुझे ।
महबूब मोहन मेरे मन में बसा,
अब जाता वो मुझसे बिसारा नहीं ॥
मुख मंद हसन है वो जादू भरी,
और नैनों की सैनों से बींधी खरी ।
हाय हाय हरी ने यह कैसी करी,
मुझे जख़मी किया और मारा नहीं ॥
ऐसे जीने से अबतो है मरना भला,
नहिं मुझसे मेरा दिलदार मिला ।

करा दर्श सनम मुझे दीजे जिला,
जाता दर्द जिगर का सहारा नहीं ॥
कीजे जीसे तरस करा दीजे दरस,
रही सरस तुम्हारे चरण को परस ।
दिखा उसकी अदा करो दिल को हरश,
सिवा आपके और है चारा नहीं ॥

॥ पद ॥

श्री सतगुरू ने कृपा करके सुमिरन सार बताया है ।
जाके जपे जगत प्रति पालक परमातम दरसाया है ॥ १ ॥
तिरदेवा तरसे दरशन को जहां न जावत माया है ।
तिरगुन पार परम पद प्रभु को जहां मोहि पहुंचाया है ॥ २ ॥
महल मानसी सेवा देकर दम्पति रूप लखाया है ।
गौर श्याम छवि छटा छबीली ताके मध्य छकाया है ॥ ३ ॥
रहूं जहां लवलीन रैन दिन मन मेरा मगनाया है ।
जो सुख अगम जोग जप तप से गुरू कृपा से पाया है ॥ ४ ॥
अमित जुगन का बिछड़ा अपना प्यारा मुझे मिलाया है ।
सरस माधुरी रस का आनन्द नैनों में झलकाया है ॥ ५ ॥

॥ चादर झीनी रामझीनी, इसकी धुन में पद ॥

श्री गुरु अविनाशी सुख रासी जिनकी चार मुक्ति हैं दासी ।
अड़सठ तीरथ हैं चरणन में जग से सहज उदासी ।
अति अनन्य रसिकाधिराज हैं अमर लोक के बासी ॥ १ ॥

रिद्धि सिधि नव निद्धि द्वार पर परी रहैं अनयासी ।
निस कामी निजधामी स्वामी राधाकृष्ण उपासी ॥
रहैं हुजूर महल में हरदम दंपति करत खवासी ।
मरज़ीदान श्याम श्यामा के परमानंद बिलासी ॥
चौरासी जमदंड काल की काट देत हैं फांसी ।
अजर अमर करदें दासन को प्रेमानंद प्रकासी ॥
तारन तरन अधम उधारन नित्य निकुंज निवासी ।
सरस माधुरी शरण चरण की निशदिन हिये हुलासी ॥

॥ पद ॥

पुण्य पूरबले सतगुरु पाये ।
जिनकी शरण अभय भये जग में जुगललाल गुन गाये ॥
दृढ कर गही भक्ति अनपायनि मन निश्चल थिरथाये ।
भटकत नहीं भरम में कब ही गुरु गोविंद रिझाये ॥
वेद शास्त्र को सार सर्व पर समझ हिये हुलसाये ।
हरि धन लेकर धनी भये हम दुख दारिद्र नसाये ॥
भरम भटकना सारी छूटी हरि छबि लखि मगनाये ।
अनुभव होत अमित लीला गुन सुख के सिंधु समाये ॥
रैन दिवस सोवत अरु जागत तन मन में पुलकाये ।
सरस माधुरी मगन भावना चरणदास कहलाये ॥

॥ पद ॥

लाभ नर देह गुरु मोहि दीनो ।

मंत्र सुनाय मिटाय कर्म गति कौवा हंसा कीनो ॥१॥
दृढ़ विश्वास दियो करुणा कर भर्म तिमिर सब छीनो ।
जुगल माधुरी छकन छकाकर कियो मोहि रंग भीनो ॥२॥
मौज महल मानसी मगन मन सदा रहै लव लीनो ।
लोक भोग फीको मोहि लागे परम तत्व तव चीनो ॥३॥
रटना लगी नाम की निश दिन उपजो नेह नवीनो ।
सरस माधुरी तुरिया पद पा मिटे ताप अव तीनों ॥४॥

॥ पद राग श्याम कल्याण ॥

जाग परी मैं गुरु की जगाई भरम नींद में उमर गुमाई ।
ज्ञान भान जब उदय भयो तव आतम परमातम सुध पाई ॥
सुरत निरत आ मिली सुहागिन तिनसों मैं मिलके बतराई ।
ध्यान मानसी धार प्यार कर कुंज पिया की मैं पहुंचाई ॥
कंचन जटित मनोहर मन्दिर सिंहासन की छवि अति छाई ।
गौर सांवरी सुंदर जोरी नैंनन सों मोहि दई दिखाई ॥
दंपति छवि में छकी सखीरी परमानन्द हिये प्रगटाई ।
रास रंग कौतूहल लखके हिये मांहि अति ही हरषाई ॥
श्री शुक सखी श्याम चरण दासी खास खवासी में दरसाई ।
सरस माधुरी पाय परम सुख निज सेवा कर मन मगनाई ॥

॥ तमाशे की चाल में पद ॥

श्री सत गुरु महारज हमारे सभी सुधारे काज ॥
जबसे शरण चरण की लीनी गये सकल दुख भाज ।
रहूं मानसी ध्यान मगन मन हिल मिल रसिक समाज ॥
दीन जनन के दुख के भंजन भक्तन के सिरताज ।
शरणागत प्रति पालक हो तुम सदा गरीबनवाज़ ॥
पतितन पावन करन दयानिधि प्रगटे धर्म जहाज़ ।
सरस माधुरी कहत जोर कर सब विधि तुम को लाज ॥

॥ राग भैरवी ॥

श्री सतगुरु मोपे कृपा करो ।
प्रभु प्रेम भक्ति मेरे हिये में भरो ।
दीजे अचल वास बृन्दवन त्रिविधि ताप भव वेग हरो ॥
मन में बसे बिहारी विहारन यह बिनती मम हृदय धरो ।
सरस माधुरी मूरति तुमरी नैनन तैं नहि नेक टरो ॥

॥ राग परभाती ॥

हरि मिलने का मारग प्यारे गुरु विन हाथ न आवेगा ।
चाहे जितनी कर चतुराई रीता ही रह जावेगा ॥

पूरब पश्चिम दच्छिण उत्तर फिर फिर उमर वितावेगा ।
गुरु की कृपा होय तव गोविंद घर बैठ ही पावेगा ॥
पोथी थोथी बिन गुरु गम के पढ़ पढ़ मग़ज़ भकावेगा ।
बीजक बांचे मिले न माया भेदी भेद बतावेगा ॥
बिन गुरु ज्ञान भानु के प्रगटे कबहु न तिमिर नसावेगा ।
सरस माधुरी मौज महल की सतगुरु सहज दिखावेगा ॥

॥ राग परभाती ॥

जीवन मुक्त भये जो प्रानी जिन पाया गुरु ज्ञाना है ।
ग़र्क रहें गोविंद गुन मांही किया प्रेम रस पाना है ॥
सतगुरु ने निज मंत्र सुनायो सो सांचा कर माना है ।
तिलक भाल तुलसी गल माला सुन्दर पहिना बाना है ॥
मगन मानसी सेवा में नित सोई अधिक सयाना है ।
सरस माधुरी रंग महल तज अन्त कहूं नहिं जाना है ॥

॥ मांझ ॥

श्री स्वामी बलदेवदास प्रभु मेरे गुरु सुखदाई ।
लियो उबार जगत जल निधि तें करके कृपा महाई ॥
चरण शरण अपनी ले मोकों रस रहस्य समझाई ।
सरस माधुरी सेव मानसी श्यामा श्याम बताई ॥

॥ मांझ ॥

जब गुरु कृपा दृष्टि कर हेरें वस्तु हिये में दरसे।
भावक भजन भाव सुख बिलसे जक्त जीव सब तरसे॥
भूले देह गेह सुध सब ही तब दंपति पद परसे।
सरस माधुरी अगम अगोचर मौज महा मन सरसे॥

॥ मांझ ॥

बलिहारी मेरे मुरशद की दम्पति इश्क़ लगाया है।
माया से मन को सुरझाके अलक सनम उरझाया है॥
मृत्यु लोक के बासी जिय को अमरलोक पहुंचाया है।
सरस माधुरी सेवा देके छबि में खूब छकाया है॥

॥ मांझ ॥

क्या तारीफ़ करूँ सतगुरु की इतनी अक़्ल न मेरी।
हाथ जोर सिरनाय निरन्तर रहूं चरण की चेरी॥
जय जय जय बलिहार बोल मुख कहूं शरण प्रभु तेरी।
सरस माधुरी सनम मिलाया नेंक करी नहिं देरी॥

॥ रसिया की चाल में ॥

श्री गुरु शरणागत प्रत पाल कृपा कर काटे माया जाल।
श्री गुरु मन्त्र सुनायो स्वामी संशय दीनें टाल।
ध्यान मानसी मगन कियो मन ऐसे दीन दयाल॥

सुरत शब्द साधन विधि सारी समझाई प्रतपाल ।
अजपा जाप जुगत बतलाई जप जी भयो निहाल ॥
जाग्रति स्वप्न सुशुप्ति अवस्था समझाई तत्काल ।
तुरिया पद पहुंचाय प्रेम सो पल पल करत सँभाल ॥
सहजानंद समाधि सिखाई ऐसे बुद्धि विशाल ।
सर्व मई सारे दरशाये जुगल लाडलीलाल ॥
जीवन मुक्त कियो कृपा कर जग दुख दीने टाल ।
सरस माधुरी मेट दिये सब जन्म मरण जंजाल ॥

॥ रसिया ॥

श्री मत सतगुरु परम सुजान बिनय यह सुनिये कृपा निधान ।

दंपति संपति सुख राशी देओ दया कर दान ।
नौधा भक्ति बनें निशवासर धरूँ निरन्तर ध्यान ॥
प्रेमा भक्ति मिले परिपूरन परा प्रगट हो ज्ञान ।
पुलकत तन मन नैंन नेह जल झलके परम प्रधान ॥
रसिकन को करूँ संग रंग सों गाऊँ गुण गन गान ।
भूलूँ देह गेह सुधि सारी रहै न अनुसंधान ॥
दर्शें जुगल दसहु दिश मोकों करत मंद मुसकान ।
बसे छबीली छवि हिय मेरे अति शोभा की खान ॥

मन इन्द्री स्थिर चित करके करूँ रूप रस पान।
मतवारो हो मगन रहूँ नित मेरे जीवन प्रान॥
मैं बलि जाऊँ चरण कमल पर करो विरद की कान।
सरस माधुरी शरण आपकी दवो दीन जन जान॥

॥ श्याम कल्याण ॥

गुरुदेव दयाल दया करिये।

अमरलोक से आप पधारे हस्त कमल मम सिर धरिये॥
श्री हरिनाम दान दे स्वामी जन्म मरन दुख को हरिये।
प्रेमा भक्ति पदारथ देके परिकर में मोकों बरिये॥
लगन लाडली अरु लालन हिय मांहि मेरे भरिये।
सरस माधुरी टहल महल दे नयनन सों नांहीं टरिये॥

॥ श्याम कल्याण ॥

श्री गुरु अमरलोक से आये।

प्रेम भक्ति प्यारी प्रीतम की जीवन को देने लाये॥
पतित जनन के पार करन को जग में श्यामा श्याम पठाये।
जिन जिन शरण चरण की लीनी जुगल बिहारी जिन्हें मिलाये॥
जीवन मुक्त किये जीवन को दंपति दासन दास बनाये।
सरस माधुरी वसे धाम में जुगल लाडिलीलाल लड़ाये॥

॥ तमाशे की चाल जंगला धुन ॥

जै जै श्री सतगुरु महाराज हमारे सभी सुधारे काज ।

जब से शरण चरण की लीनी गये सकल दुख भाज ।
रहूँ मानसी ध्यान मगन मन हिल मिल रसिक समाज ॥

दीन जनन के दुख के भंजन भक्तन के सिरताज ।
शरणागत प्रतपालक हो तुम सदा गरीबनवाज़ ॥

पतितन पावन करन दयानिधि प्रगटे धर्म जहाज़ ।
सरस माधुरी कहत जोर कर सब विधि तुमको लाज ॥जै०

॥ शब्द ॥

मैं वारी जाऊँ श्री गुरु की जिन दियो है दान निज नाम ॥

चरण शरण में ले मोहि स्वामी किये सब पूरन काम ।
पिय प्यारी छबि हिये निहारी भूलो तन धन धाम ॥

भई भावना सिद्ध सहज ही निरखे श्यामा श्याम ।
सहज समाध सुरति जहां लागी पायो मन विश्राम ॥

नित नव लीला नवल कुंज में होत रहत निशियाम ।
हरष निरख हृदय हुलसत है पाई भूली ठांम ॥
झिल मिल ज्योति उद्योत अनूपम अनगिन महल मुकाम ।
सरस माधुरी सत चित् आनंद अद्भुत अति अभिराम ॥

॥ शब्द ॥

बलिहारी जाऊँ प्यारे गुरु की जिन कियो है भर्म भय दूर ॥

सुरत समेट एक घर कीनी पहुँची जुगल हुजूर ।
रंग महल में जाय बसी जहां झिल मिल झिल मिल नूर ॥
दस प्रकार के न्यारे न्यारे बाजें अनहद तूर ।
अन्तरलोक में आनंद अति ही मन भयो चकना चूर ॥
रास विलास होत जहां नित ही मेरी जीवन मूर ।
सखी समाज सकल सेवा में राग रंग भर पूर ॥
स्वयं प्रकाश उजास अनूपम नहीं चन्द नहिं सूर ।
सरस माधुरी गुरू शरण बिन भटकत डोलें कूर ॥

॥ शब्द ॥

शरण गुरुदेव लई मेरा जन्म मरण दुख नासा ।

सुरत स्वांस मिल एक भये जब सोहं शब्द प्रकासा ।
रोम रोम आनँद रस छायो पायो ब्रह्म विलासा ॥
भृकुटी में दीपावलि देखी तारागन बहु भासा ।
जागी ज्योति महल त्रिकुटी में जाको अधिक उजासा ॥
गरजै गगन दामिनी दमके हो रह्यो अधिक तमासा ।
नूर घटा में मोती बरसें षट ऋतु बारह मांसा ॥

इडा पिंगला और सुषमनां तिरवेणी वहे स्वासा ।
तेज पुंज के पार अमर पुर जाय किया जहां वासा ॥
नूर फूल नाना विधि फूले ऋतु वसंत रहे खासा ।
महक रही मकरन्द माधुरी रंग महल के पासा ॥
नूर रह्यो भरपूर चहुँ दिशि नूर धरणि आकासा ।
स्वामी नूर नूर के सेवक निरखत हुयो है हुलासा ॥
नूरहि सखी समाज सुहावन होत नूर नित रासा ।
सरस माधुरी मौज मगन मन भयो अचल विश्वासा ॥

॥ शब्द ॥

सखीरी जागे हैं मेरे भाग शरण सतगुरु की लई ।

दियो दान निज नाम श्याम को दुरमति बिसर गई ।
रहूं सदा ग़लतान ध्यान में हो गई प्रेम मई ॥
लीला रास बिलास गगन में दरसी नई नई ।
नवल लाडिलीलाल निहारे छबि हिय मांहि छई ॥
आठों पहर रहूँ मतवारी निरख रूप रिझई ।
सरस माधुरी सम्पति दम्पति श्री गुरुदेव दई ॥

॥ आरती ॥

आरती श्री गुरु की करिये निज छबि उर धरिये ॥

अमरलोक से आप पधारे पतित उधारन नर तन धारे।
शरण आये जोई जन तारे जन्म मरण हरिये ॥
अभय हस्त मस्तक पर धारो कृपा दृष्टि कर मोहि निहारो।
अधम उधारन विरद तुम्हारो, निज जन अनुसरिये ॥
अष्ट जाम सेवा चित धारूँ, रसना दम्पति नाम उचारूँ।
जुगलचंद की नख शिख शोभा, नयनन में भरिये ॥
ध्यान मानसी में प्रभु आवो, दरशन अपने नाथ करावो।
अब विलम्ब नहिं नेंक लगावो, मेरी ओर ढरिये ॥
जुगल बिहारीलाल मिलावो, अपने सँग प्रिया पिय लावो।
अब स्वामी मोहे मत तरसावो, टारे नहिं टरिये ॥
भाव रूप में सुरति रमावो, निज वृन्दाबन बास बसावो।
टहल महल मोसों करवावो, परिकर में बरिये ॥
श्री बलदेव दया अब कीजे, प्रेम भक्ति में यह मन भीजे।
सरस माधुरी की सुधि लीजे, जग से निसतरिये ॥

॥ राग जिला झझोटी ॥

हमतो श्री गुरु हरि कर मानें।

श्री गोविंद गुरू बनि आये ज्ञान दृष्टि सों जानें ॥
गोविंद हूँ तें अधिकी महिमाँ गुरु की वेद बखानें।
सरस माधुरी कोई गुरु मुखी गुप्त रीति पहिचानें।

॥ राग गारा ॥

गये गुरुदेव परम निज धाम ।

कर जीवन कल्याण कृपा निधि निरमोही निश्काम ॥
साढ़ सुदी नौमी दिन मङ्गल चढ़े दिवस युग जाम ।
उन्नीस्से अट्ठावन पावन संवत् विक्रम नाम ॥
माया काल रहित चौथे पद जित श्री श्यामाँ श्याम ।
मिले जाय श्री शुक परिकर में अमरलोक निज ठाँम ॥
ऋतु बसंत संतत सुखदाई तहां शीत नहिं घाँम ।
रंग महल निज टहल करें नित लखें केलि अभिराम ॥
चरणदासि के चरण शरण नित ठाकुर अलि गुण ग्राम ।
प्राण समान जान नित पोषत सरस माधुरी बाम ॥

॥ ठुमरी ॥

गये मोहि छाँड़ अकेले धाम ।

ता दिनसों तन मन दुख दूनों तलफति हों निशिजाम ॥
कोंन सुनें मेरी मन बतियां हे गुरु पूरन काम ।
करे सहाय कोंन प्रभु तुम बिन रहूं कलेजो थाम ॥
फिरूँ बिलखती विरह बावरी जपूँ तुम्हारो नाम ।
सरस माधुरी की सुधि लीजे श्री सतगुरु गुण ग्राम ॥

गुरु परम्परा

॥ पद ॥

श्री नारद वीणाधर स्वामी ।

प्रेम भक्ति मूरति तन पुलकित विद्यागान शिरोमणि नामी ॥
नाचत बांध घूँघरू पायन दंपति रीझ रहत अनुगामी ।
सरस माधुरी नाद स्वाद स्वर देहु करौं तुम चरण नमामी ॥

॥ पद ॥

श्री मत वेदव्यास सिर नाऊँ ।

हाथ जोरि बहु विधि निहोरि के निज मस्तक तुम पद परसाऊँ ॥
देहु असीस दया कर मोकों श्री दंपति के गुण गण गाऊँ ।
सरस माधुरी कृपा कीजिये संतत प्रेम भक्ति बर पाऊँ ॥

॥ पद ॥

महर्षि भृगुजी की बलिहारी ।

वरुण यज्ञ में ब्रह्मा जू सें प्रगट भये प्रभू आनन्दकारी ॥
अग्नि कुंड तें उत्पति तिनकी जग में महिमां भारी ।
रची संहिता अधिक अनूपम त्रिकालज्ञ सुखकारी ॥
सुर नर मुनि जन जस गावत हैं शोभा अपरंपारी ।
सरस माधुरी श्याम राधिका प्रेम भक्ति दातारी ॥

॥ पद ॥

जय जय च्यवन ऋषी भृगु नंदन ।
मात पुलोमा प्राण पियारे संत जनन के चित चंदन ॥
श्री राजा सर्यात सुकन्या तापति प्रभु आनंद के कंदन ।
अश्वनि कुमारन भाग यज्ञ में पायो तुम वल पाप निकंदन ॥
दूसर कुल के परगट करता आगम महिमाँ कहत सुछंदन ।
सरस माधुरी चरण कमल रज करत जोर दोऊ कर वंदन ॥

॥ राग कालंगड़ा, श्यामकल्याण ॥

जय श्री शोभन भक्त भूपवर ।
च्यवन वंश अवतंश प्रभाकर रासिक शिरोमणि जक्त उजागर॥
सहचरी भाव माँहि नित भीनें निशि दिन सेव मानसी तत्पर।
प्रगट मिले श्री कुंज विहारी लिये लगाय हितसों अपने गर॥
दियो वरदान मुदित मन ह्वै प्रभु लेंहु अंश अवतार तुमह्व घर।
अष्टम पीडी में प्रगटाऊँ आऊँ मैं ही संत रूप धर॥
भृगुऋषि वंश प्रशंसित करिहों हरि हों कलिके मल निश्चय कर।
श्री शुकदेव संप्रदा थापों प्रेम भक्ति लहैं जग नारी नर॥
यों कहि अंतर ध्यान भये हरि मूंदे नयन ध्यान धर निरभर।
सत दिवस में त्याग देह कों जाय मिले दंपति की परिकर॥

सरस माधुरी की यह विनती सहस कान दै सुनिये दयाकर।
कुंज महल की टहल जुगल पद दीजिये जान अपनी अनुचर॥

॥ ग़ज़ल ॥

हमारे रामरूपा तुम परम प्राणों से प्यारे हो।
सरापा प्रेम की मूरति मेरे नैनों के तारे हो॥

तुम्हारा नाम गुरु भक्ता जगत में जाबजा रोशन।
गुरू भक्ति को करके तुम हुये मशहूर सारे हो॥
बसे हो दिल में तुम मेरे बसाया मुझको निज दिल में।
नहीं मैं तुम से न्यारा हूं नहीं तुम मुझसे न्यारे हो॥
रमे हो मुझमें तुम हरदम, रमाया मुझको तन मन में।
तुम्हारे हम हमारे तुम, नहीं जाते बिसारे हो॥
किया तुमने मुझे वश में, फँसाया इश्क के रस में।
मोहब्बत में गया फँस मैं, मेरे जीवन अधारे हो॥
गले मेरे से लग जावो, लगावो मुझको सीने से।
रसिक तुम माधुरी रस के, मेरे दिलबर दुलारे हो॥
चलें अब खास ख़िलवत में, करें रस रंग की बतियाँ।
लिपट हँस हँस लगें छतियाँ, बहुत दिन में निहारे हो॥
हो तुम महबूब लासानी, नहीं है शक शुभा इस में।

सरस शुक मुनि चरण दासा के शिष्य तुम जग उजारे हो ॥

॥ श्री रामरूप गुरु भक्तानंदजी धाम यात्रा पद ॥

श्री स्वामी रामरूप सुखदाई ।
चरणदास आचारज के शिष्य शोभा कही न जाई ॥
गुरु भक्ती में परम परायन लीने तिन्हें रिझाई ।
श्री गुरु भक्ति प्रकाश नाम शुभ पुस्तक आप बनाई ॥
गुरु भक्तानंद नाम दूसरो गुरु दीनो हरषाई ।
किये दिवान प्राण सम प्यारे शोभा सब जग छाई ॥
देश देश रामत कर अनगिन दीने जीव चिताई ।
प्रेम परा भक्ती दंपति की दशों दिशा फैलाई ॥
अठारह सौ सेंतालीस संवत विक्रम कहे सुनाई ।
जेठ सुदी बारस को तन तज धाम गये रसिकन के राई ॥
शुक परिकर में रहत प्रेम सों पदवी सहचरी पाई ।
सरस माधुरी जुगल बिहारी सेवत प्रीति लगाई ॥

॥ श्री परम गुरुदेव प्रार्थना बंदना के पद ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

नमो परम गुरु श्री ठाकुर दासा ।
समदरशी शीतल उदार चित प्रेम भक्ति पूरन परकासा ॥
सुरत निरत निज ध्यान धारना जुगल चरण की करत उपासा ।
लाल लाडिली मगन भावना सेवा अष्टकाल सुख रासा ॥

परम धाम निज लोक अमरपुर तहां निरंतर करत निवासा ।
दुलरावत जुग जोरी किशोरी निरखत नैंनन जुगल विलासा ॥
श्री शुकदेव संप्रदा नीकी चरणदास द्वारा अति खासा ।
तिनके बावन शिष्य बड़भागी श्री स्वामी रामरूप रस रासा ॥
रामकृपाल दास तिन ही के बिहारीदास मेटन भव त्रासा ।
तिनके शिष्य आपहो गुरु मुखजीवन की मेटी जम फांसा ॥
श्री बलदेवदास गुरु मेरे तिन कृपा यह भेद सुभासा ।
सरस माधुरी जान अपनों राखो जुगल चरण के पासा ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

नमो परम गुरु प्राण प्यारे ।

श्री ठाकुरदास नाम अति अद्भुत अमरलोक सें आप पधारे ॥
हरि आज्ञा अनुकूल प्रगट भये जग के जीव बहुत निस्तारे ।
कृष्ण नाम निज दान दियो नित अगनित कुल जग के उद्धारे ॥
स्वास स्वास प्रति नाम निरंतर पान कियो अमृत निरधारे ।
नौधा में अति निपुण अनूपम पूरन प्रेम भक्ति में भारे ॥
तुरियातीत परम वैरागी ध्यान धारना लच्छण सारे ।
ज्ञानी गुनी शिरोमणि सब के निशि दिन शीलशृंगार सिंगारे ॥
उनतीसों लच्छण परिपूरन परम वैष्णव जग उजियारे ।
लगन लगाई पिय प्यारी सों छके दरश रस नित मतवारे ॥

काम अरु क्रोध मोह मद मत्सर लोभ आदि शत्रु हानि डारे।
पांच पचीसों अरु तीनों गुण सकल जीत मंगल विस्तारे ॥
श्री बलदेव दास गुरु मेरे तिनके तुम नैंनन के तारे ।
सरस माधुरी शरण तिहारी तुम जीवन धन प्राण हमारे ॥

॥ राग भैरवी ॥

श्री ठाकुरदास दयाल परम गुरु रहे तुम्हारो निश दिन ध्यान ।
गोर वरन मन हरन मनोहर सिर टोपी फैंटा जु सुहान ॥
तिलक शिल मिली ज्योत भाल पर दिस अधिक शोभा की खान।
नैंन विशाल माल गल तुलसी मंद मधुर मुख की मुसकान ॥
तेज प्रताप परम परिपूरन मुख शोभा शरदिंदु समान ।
मेटन पाप तापत्रय जन के करन सकल विधि सुख कल्यान ॥
द्वादस तिलक सकल अंग शोभित पीत दुकूल सो दिस महान ।
आसा ले पद्मासन बैठे सुरत धरी त्रिकुटी अस्थान ॥
बागंबर आसन पर राजत कंज सरिस जुग पद पहिचान ।
मम गुरुदेवन देव परम गुरु शिवदयाल बलदेव के प्रान ॥

॥ राग आसावरी ॥

मेरी अरज परम गुरुदेवा दीन होयकर तुम्हें सुनाऊँ ।
ध्यान देहु मोहि जुगल चरणको निशदिन पिय प्यारी गुन गाऊँ॥

संत रसिक हरि भक्तन के नित निकट निरंतर बासो पाऊँ।
सेवा अष्ट जाम अति नीकी हरष करूं आनँद बढाऊँ ॥
रहूं समीप सदा प्रिया पिय की निंजकर दंपति अंग सजाऊँ।
हाजिर रहूं हुजूर महल में नैनन निरख हिये हुलसाऊँ ॥
श्री शुक सखी चरण की दासी तिनके नित ही संग रहाऊँ।
सेवा सुख संपति सर्वोपर पाय ताहि रंग रली मनाऊँ ॥
जन्म अनेक गये या सुख बिन यह दुख तुम बिन काहे सुनाऊँ।
अबके बांह गहो प्रभु मेरी हा हा खाय चरण सिर नाऊँ ॥
श्री ठाकुरदास दयाल दयाकर तुमरो दासन दास कहाऊँ।
बलदेवा को जान उबारो भव सागर में बहुर न आऊँ ॥
सरस माधुरी शरण रावरी निशि दिन तुमरी कृपा मनाऊँ।
परिकर जुगल बसाय विरद लखि बारंबार चरण बलि जाऊँ ॥

॥ राग आसावरी ॥

और किसी सें काज न मेरो आस परम गुरु तेरी है।
विरद तिहारो अधम उधारन काहि लगाई देरी है ॥
अमित पतित तुम पार किये प्रभु अबके बिरियाँ मेरी है।
भूले नांहि बनेगी स्वामी तुमरे हाथ-नवेरी है ॥
भवसागर दरियाव अगम तहां नाव जरजरी मेरी है।
भर्म भँवर के बीच परी है पांचों मच्छन घेरी है ॥

बल्ली ज्ञान कृपा चंपू ले आव विनय कर टेरी है।
पार लगा हरिपुर पहुंचावो यह अवसर नहीं फेरी है ॥
श्री ठाकुरदास उपास चरण बलदेव दया सों हेरी है।
सरस माधुरी अधम जनन की तुमही व्याधि नवेरी है ॥

॥ धाम यात्रा पद ॥

परम गुरु ठाकुरदास हमारे।
ज्ञान ध्यान दंपति परिपूरन निज जन के रखवारे ॥
संत महंत मुकटमणि स्वामी शील शृंगार सिंगारे।
मगन मानसी सेवा में नित रहे जगत से न्यारे ॥
सुन्दर रूप अनूप सुहावन रसिकन के दृग तारे।
तन मन बचन सकल सुखदाई जीव अनेकन तारे ॥
उन्नीस से अरु तीस संवत्सर आश्वनि कृष्ण पक्ष लखि प्यारे।
बारस तिथि को निज तन तज के अमरलोक को आप पधारे ॥
सेवें सुरुचि श्याम श्यामा को सहचरि रूप अनूपम धारे।
सरस माधुरी छवि पिय प्यारी निरखि नैंन सर्वस निज वारे॥
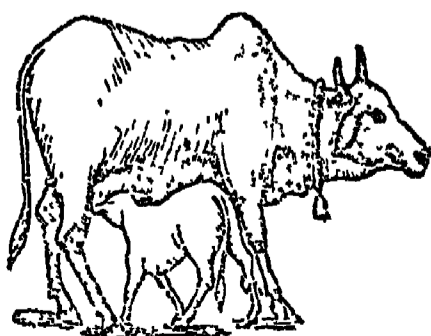
श्री मतवेदव्यास भगवान महिमा
तथा जन्म बधाई ।

॥ दोहा ॥

श्री मत वेदव्यास जू कृष्णकला अवतार ।
ऋषी पराशर पुत्र है प्रगटे अवनि मझार ॥

धन्य मातु शुभ लच्छणी सत्यवती गुण धाम ।
भये तनय तिन कूख ते अति सरूप तन श्याम ॥

शुभ दिन है सखि आज को पून्यों परम पुनीत ।
मास अषाढ सुहावनो शुक्ल पच्छ रस रीत ॥

धर्म सनातन वैष्णव ताहि प्रचारन काज ।
आचारज है अवतरे ऋषि मुनि जन सिरताज ॥

भुवन चतुर्दश लोकत्रय घर घर मङ्गल चार ।
गुणि गँधर्व गावन लगे नचत अप्सरा नार ॥

बीन मृदंग बजावहीं सारंगीरु सितार ।
मधुर मधुर मुहचंग धुनि मन की मोहन हार ॥

वरषत अमृत मेघ जल नहनी परत फुहार ।
लता पता तरु बेलि बन भूमि भई हरियार ॥

बोलत विविधि विहंग वर शुक पिक सारस जोर ।
पारावत अरु हंस वर नचत विपिन में मोर ॥

फूलन फूल्यो बन सबे गुंजत मधुकर वृंद ।
त्रिविधि पवन पावन बहत छुई सरस मकरंद ॥

ऋषी पराशर आश्रम शोभा को नहिं पार ।
कदलि थंभ रोपे सुभग स्वस्तिक रचे संवार ॥

ध्वज पताक तोरन सजे, बांधी बंदन माल ।
बजे दुन्दुभी भेरि शुचि, सहनाई सुर ताल ॥
अमित यूथ ऋषि मण्डली, आय गई तिह काल ।
वेद ऋचा बोलत सबहिं, मानो बाल मराल ॥
भीर भई अति भवन में, गह मह मङ्गलचार ।
बंदीजन विरदावली, बोलत विविधि प्रकार ॥
मागध सूत सुहावनी, कीरत कुल करतूति ।
बोलत वर वंशावली, प्रगटत विमल विभूति ॥
चौक चारु पूरे रुचिर, सरस अजिर के बीच ।
केसर चन्दन की सखी, भई सलौनी कीच ॥
अतर तरातर सब किये, छिरके नीर गुलाब ।
पान मिठाई ऋतु सुफल, बटत चौगुनी चाव ॥
ऋषि पत्नी आईं सकल, लेकर कंचन थाल ।
मंगल द्रव्यादिक धरे, गावत गीत रसाल ॥
सरस माधुरी लाल को, वदन इन्दु लखि नैंन ।
जन्म बधाई विविधि वर, गाई आनँद दैंन ॥

॥ छन्द ॥

जय जय श्री वेदव्यास जक्त गुरु गाइये ॥
मदन मनोहर रूप निरख हुलसाइये ॥
ऋषी पराशर सुवन को लाड़ लडाइये ॥
सत्यवती के कुँवर की बलि बलि जाइये ॥

जाइये बलि कुँवर की पुनि प्रेम में पुलकाइये ॥
गोद में ले मोद सों मन मुदित दिन दुलराइये ॥
प्रेम भक्ति के प्रदाता चरण शीश नवाइये ॥
सरस रस की माधुरी सेवा महल की पाइये ॥

॥ बधाई चाल झूमका ॥

नवल बधाइयां हो, पराशर ऋषी के दरबार ।
गावें ऋषि नारियां हो, नाचें चतुर दे कर तार ॥
हुआ सुत परम सुन्दर हो, सलौना श्याम तन सुकुमार ।
सत्यवती मातु लै गोदी, पिवावत दुग्ध कर बहु प्यार ॥

॥ झूमका ॥

प्यार कर मन मगनावें, पालने झमक झुलावें ।
डोर गहि देवें झोटा, सहज लखि लालन छोटा ॥

॥ अंतरा ॥

लखें लालन छगन छोटा, खिलावें ख्याल विविधि प्रकार ।
करें कल केलि मिल कामिन, उतारें नोंन राई वार ॥
नचें कमला सी कर झुरमट, बजें पायल पगन झुनकार ।
बधाई गीत मिल गावें, मनोहर मुदित मङ्गलचार ॥

॥ झूमका ॥

मनोहर मंगल गावें, सकल मिल लाल रिझावें ।
बसन भूषन तन साजें, नारि सुर लखि मन लाजें ॥

॥ अंतरा ॥

लजाईं नार सुरपुर की, निरखि के केलि मंगल साज ।
नगारा झांझ सहनाई, रहे हैं बाजने बहु बाज ॥
घटा नभ में भली छाई, रह्यो रस मेघ सुन्दर गाज ॥
परम शुचि मोद की घड़ियां, सलोनो सोहनो दिन आज ॥

॥ झूमका ॥

गाज सुन सुंदर आली, छटा छवि देख निराली ।
बुलबुलें बहु विधि बोलें, परस्पर करत कलोलें ॥

॥ अंतरा ॥

कलोलें बुलबुलें भारी, रमोला लाल ललित अपार ।
बरन बहु रंग हैं तिनके, फुदक बैठत तरुन की डार ॥
चमन चारों तरफ प्यारा, परम आनँद बाग बहार ।
समय सोहन निरख भामिन, चली आईं ऋषिन की नार ॥

॥ झूमका ॥

ऋषिन की नारीं आईं, दूध दधि कीच मचाई ।
छिरक रहि केशर चंदन, करें कर जोर सुबंदन ॥

॥ अंतरा ॥

करें कर जोर के बंदन, हसें किलकें करें कौतूल ।
विमानन बैठ सुर नभ में, करें जैजैति सब सुख मूल ॥

कल्प तरु फूल बरसावें, रहे हैं देह की सुधि भूल ।
मगन आनँद मन मांही, विधाता जान निज अनुकूल ॥

॥ झूमका ॥

जान अनुकूल विधाता, सकल आनँद रस माता ।
त्रिविधि मारुत सुखदाई, पपैया टेर लगाई ॥

॥ अंतरा ॥

लगाई टेर चातक ने भई सब भूमि हरियारी ।
घटा छाई चहुं दिशि में लता लहकत ललित प्यारी ॥
खिले हैं फूल नाना विधि विहंगम बोल सुखकारी ।
भ्रमर रहे गुंज मदमाते मनो अनहद की गति धारी ॥

॥ झूमका ॥

अनाहद बाजे बाजें, अली सुन्दर सज साजें ।
थाल कंचन कर लाई, विविधि विधि पान मिठाई ॥
झुगुलिया टोपी भाई, करा कंचन लै आई ।
धरे ले भेट लालन के संजोयो दीप चौमुख थार ।
करी लै आरती हिलमिल लुटाये विपुल मोती वार ॥
अशीसें सकल मिल सुंदर खसो नहिं नहात तनको बार ।
बढो प्रति दिन कला शशि ज्यों कहें बिधना सों गोद पसार ॥
सरस की माधुरी दासी असीसत मुदित बारंबार ।
बजत बधाईयां हो पराशर ऋषी के दरबार ॥

॥ भाँड बधाई ॥

शादियां भली वे खुशवख्तियां भली वे ।
आवो गुनी जन गावो रस रंग की रली वे ॥

शादियां सुरंगी सुनों भांडदेव आये अजी वाह वा है।
नक्ल नोंक झोंक के ख़जाने भर लाये अजी वाह वा है॥
निरख के समाज महा मन में मगनाये अजी वाह वा है।
वाजे बीना मृदंग डफ ढोलक मुहचंग अजी वाह वा है॥
रहे मोद मन रांचे सुखानँद में नांचे अजी वाह वा है।
लखें लाल मुख राजी भये प्रसन्न समाजी अजी वाह वा है॥
कहें पराशर लाल जीवो जुग जुग खुशहाल अजी वाह वा है।
माता सत्यवती रानी जीवो लाल सुखदानी अजी वाह वा है॥
श्री मत व्यास भगवान प्रगटे आचारज आन अजी वाह वा है।
करें वेद के विभाग लहें संत अनुराग अजी वाह वा है॥
कथें भारत सुजान सुनें साधू सुखदान अजी वाह वा है।
रचें भागवत पुरान करें जीव प्रेम पान अजी वाह वा है॥
जीव अनंत उधारें काज भक्तों के सारें अजी वाह वा है।
लेवें वेदव्यास नाम मिलें ताहि श्यामा श्याम अजी वाह वा है॥
पावें कुंज में विश्राम बसें बृन्दावन धाम अजी वाह वा है।
धन्य है आसाढ मास तिथि पूनों सुख रास अजी वाह वा है॥
फूले फिरें भक्त वृंद, भयो मन में आनँद अजी वाह वा है।
नाँचे गावें मगनावें, नाना भाव ले वतलावें अजी वाह वा है॥
छिरके दही दूध हर्द भये तनके वस्तर जर्द अजी वाह वा है।
हास्य रस को उपजावें तन मन में पुलकावें अजी वाह वा है॥

देवें आपस में ढेल,रपटें परें करें केल, अजी वाह वा है ।
वस्त्र भूषण लुटावें,कोई लेवे को धावें, अजी वाह वा है ॥
कोइ कोइ सों छिनावें, धूम धक्का मचावें,अजी वाह वा है ।
भयो आनँद अपार, लहै शेष नहीं पार, अजी वाह वा है ॥
ऋषी पराशर जान,कियो सबको सनमान, अजी वाह वा है ।
दिये हीरा मोती दान,रथ बाजी गज जान अजी वाह वा है ॥
दिये भूषन वस्त्र अन्न,किये सर्व को प्रसन्न, अजी वाह वा है ॥
सरस माधुरी अपनाई,नित्य धाम में बसाई, अजी वाह वा है ।
महा मन में मगनाई, यह भाँड बधाई गाई,अजी वाह वा है ॥

॥ आशीर्वाद को पद ॥

चिरजीवो पराशर लाल । असीसत ऋषि मुनि बाल ॥
सत्यवती सुत सदा रहो खुश नहात खसो नहिं बाल ॥
चंद्रकला ज्यों बढो रैंन दिन रसिकन के प्रतिपाल ॥
करो प्रकाश वैष्णव मारग मगन रहो सब काल ॥
सुलभ करो सेवा को मारग कुंजन केलि रसाल ॥
रसिक जनन को आन मिलावो सहज लाडिली लाल ॥
सरस माधुरी शरण चरण की नाचत देकर ताल ॥

॥ पद ॥

बोलो बोलो रसिक मम प्रान । व्यास जय जय भगवान ॥

नांच गाय हुलसाय चाय चित लै लै सुंदर तान ।
श्री कृष्ण आचारज वपु धर अवनि अवतरे आन ॥
करें विभाग चार वेदन को भारत रचें सुजान ॥
गावें परम संहिता सुंदर श्री भागवत पुरान ॥
नवधा प्रेमा परा रसमयी भक्ति करें प्रभु दान ॥
चौरासी जम दंड विसर जिय पावें पद निरवान ॥
विषयानंद त्याग जिय जग के करें प्रेम रस पान ॥
गहो शरण सुत सत्यवती की जो चाहत कल्यान ॥
सब धर्मन शिरमौर यही पथ निश्चय लीजे मान ॥
मिलें लाडिली लाल मया कर दें निज दर्शन आन ॥
सरस माधुरी बसे महल में छवि दंपति ग़लतान ॥

श्री निकुंज महल भाव संबंधी बधाईयों के अनुक्रम में बोलवे के दोहा ॥

श्री रंगा मम स्वामिनी, रंग महल में वास ।
रहत निकट दंपति सदा, रंग रस करत प्रकास ॥

रंग रहस्य बहु विधि जहां, होत रहत सब काल ।
ताकी निज अधिकारनी, श्री रंगा नव बाल ॥

रंग उमंग अभंग नित, रंग महल में होत ।
ते सब ही ताही समय, रंगा करत उदोत ॥

रंग रली कुंजन भली, अली करत अनुराग ।
श्री रंगा के संग सों, सहचरि लहत सुहाग ॥
सोई प्रगटी करके कृपा, वेद्व्यास वपु धार ।
आचारज ह्वै अवतरी, आई अवनि मझार ॥
बरनैं लीला रस मई, नित्य निकुंज विहार ।
परम हंस रच संहिता, निस्तारें संसार ॥
जय जय जय कर जोरि के, ध्यान हृदय निज धार ।
सरस माधुरी पद कमल, बंदत बारंबार ॥

॥ पद ॥

प्रगट भये वेदव्यास भगवान ।
साढ सुदी पूरणिमा शुभ दिन सुंदर सुख की खान ॥
परम पूज्य श्री ऋषी पराशर दीने बहु विधि दान ।
कंचन रत्नादिक विप्रन दे कियो विविधि सनमान ॥
सत्यवती माता मन आनँद सो नहि होत बखान ।
जिनकी कूँखि अवतरे स्वामी कृष्णकला प्रभु आन ॥
गावन लगे बधाई गंधर्व नचत अप्सरा जान ।
सुर नर मुनि जन मन हरषाने उत्सव कियो महान ॥
करें विभाग चार वेदन को भारत रचें सुजान ।
गावें परम संहिता सुंदर श्री भागवत पुरान ॥
भगवत धर्म करन स्थापन आये कृपा निधान ।
आचारज शिरमौर जगत गुरु तिन सम और न आन ॥

दीजे प्रेम भक्ति दंपति की निज जन अपनो जान ।
सरस माधुरी रंग महल की सेवा जीवन प्रान ॥

॥ पद ॥

पराशर घर श्री हरि प्रगटाये ।
भगवत धर्म सनातन थापन आचारज ह्वै आये ॥
पद्धति प्रचुर जगत गुरु जिनकी सकल लोक यश छाये ।
वेदव्यास भगवान विदित प्रभु संतन के मन भाये ॥
को अस जग मतिमंद अधम नर जाहि न लगत सुहाये ।
सरस माधुरी रसिक मुकटमणि जन्म कर्म गुण गाये ॥

॥ पद ॥

पराशर पूर्व पुन्य प्रगटायो ।
जिनके ग्रह जगदीश ईश हरि व्यास पुत्र ह्वै आयो ॥
सत्यवती शुभ लच्छनि मैया जिनके सुत उपजायो ।
गोद मोद भर लै लालन को प्रीति सहित पय प्यायो ॥
स्वयं विष्णु ह्वै व्यास अवतरे सुयश सकल जग छायो ।
मुनि गंधर्व अप्सरा हिल मिल सबन समाज रचायो ॥
विविधि भांति उत्सव शुभ कीनों सरस सोहिलो गायो ।
थिर चर सकल लोक आनंद मय मंगल मोद मनायो ॥
भये प्रफुल्लित भूतल वासी प्रेमानंद बढायो ।
मास अषाढ परम पावन शुचि नेह मेह बरसायो ॥

सागर नदी तड़ाग बाग वन लागत परम सुहायो।
ऋषि मुनि मुदित महान भये मन मनहु पर्म धन पायो ॥
हरष बधाई अलियन गाई भयो सकल मन भायो।
सरस माधुरी के हिय माही परमानंद समायो ॥

॥ राग भैरवी ॥

व्यास पूर्णिमा शुभ दिन आज।
गुरु को पूजत सकल वैष्णव हिलमिल करत समाज ॥
हेतु यही सर्वज्ञ जगत गुरु प्रगट दिवस सुख साज।
द्वै पायन कर भाव भक्ति युत करत धर्म शुचि काज ॥
सिद्धि होत सब मन वांछित फल कलिमल जावत भाज।
अनुभव उदय होय लीला रस श्री दंपति सिरताज ॥
गुरु यश गान करो हरषत हिय विविधि बजावो बाज।
सरस माधुरी मुखसों बोलो जय जय गुरु महाराज ॥

॥ राग आसावरी ॥

पराशर यह प्रसाद मैं पाऊँ।
तुमरे सुवन व्यास लालन के जन्म कर्म गुण गाऊँ ॥
रहों सदा ग़लतान ध्यान में दासन दास कहाऊँ।
वाणीमय अमृत तव सुत को पी निज हिय हरषाऊँ ॥
निरखों छवि नव अंग मनोहर अपने नैंन छकाऊँ।
सरस माधुरी पद पंकज तज अंत कहूं नहि जाऊँ ॥

॥ राग सोरठ ॥

बंदों पद श्री मत वेदव्यास।
नित भजों भाव कर हिय हुलास ॥

कलि तम मेटन को ज्ञान भान, किये प्रगट लियो अवतार आन।
मुनिराज महा प्रभो करुणा रास ॥१॥
निज मातु बचन लीने सुमान, उत्पन्न किये त्रिय पुत्र जान।
कियो भरत खंड उद्धार खास ॥२॥
कलि मंद बुद्धि जीवन निहार, किये वेद भाग बहु विधि प्रकार।
ज्यों जीव तरें भव विन प्रयास ॥३॥
कियो धर्म निरूपण विविधि रीत, नाना पुराण गाथा पुनीत।
हरि कथा अमित गाये विलास ॥४॥
दिये वेद विरोधी मत जनाय, रचि सूत्र वाद मत दियो मिटाय।
कियो अन्य अंधतम मत को नास ॥५॥
जिनके प्रभाव अर्जुन सुमान, मधि स्वर्ग लई विद्यास्त्र जान।
कौरव सेना कीनी विनास ॥६॥
किये दिव्य नेत्र संजय को दान, वृत्तान्त युद्ध तिन लियो जान।
करी पूरण प्रभु धृतराष्ट्र आस ॥७॥
धृतराष्ट्र मृतक सुत दिये दिखाय, मन मोह महा तिनको मिटाय।
गांधारी दुख कियो नास ॥८॥
गुण गण समुद्र महिमा अपार, कहै सरस माधुरी किहि प्रकार।
करि कृपा करो चरणन को दास ॥९॥

॥ राग ठुमरी ॥

बधाई वेदव्यास सुखदानी ।
श्री रंगा शुभ नाम धाम में प्रगटी भूतल आनी ॥
प्रेम रंग सरसात महल में बोलत अमृत बानी ।
उपजत प्रेम रंग दंपति को सो सेवा मनःमानी ॥
जुगल रंग की मूरति जानो दंपति की हित दानी ।
करन कृतारथ जीव जक्त के यह इच्छा जिय ठानी ॥
रंग महल रंग वृष्टि करन को आई परम सयानी ।
नाम धाम लीला सरूप गुन सरसेगो हम जानी ॥
परसो चरण चारु नैंनन सो वार पियो अलि पानी ।
सरस माधुरी रूप रास लखि बिनही मोल बिकानी ॥

॥ बधाई ॥

रंगीली बजत बधाई माई ।
श्री रंगा स्वामिनि अभिरामनि प्रगट भई है आई ॥
करो सोहिलो हिल मिल सजनी आनंद हिय हरषाई ।
साज बजावो नाचो गावो नाना भाव बताई ॥
फूल वृष्टि करिये मुद भरिये बाँटो पान मिठाई ।
जय जय बोल बलैयां लै लै निरखो नैंन अघाई ॥
ऋषि पराशर पुन्य उदय भयो वेदव्यास सुत पाई ।
सत्यवती माता मन प्रमुदित पय प्यावत पुलकाई ॥

सुर समूह सब बैठ विमानन रहे गगन में छाई ।
फूल कल्पतरु भर भर झोरी निज कर झरी लगाई ॥
जक्त गुरु जग जीव उबारन आये जन सुखदाई ।
सरस माधुरी भुवन चतुर्दश सुजस भयो अधिकाई ॥

॥ पद ॥

सखी वेद्व्यास प्रगटाये हैं ।
ऋषी पराशर मन मगनाये मंगल साज सजाये हैं ॥
सत्यवती माता हिये हरषी जिनके सुत कहलाये हैं ।
कुल नारी हिल मिल के सारी गाये गीत बधाये हैं ॥
स्वर्ग माहिं सुर बैठ विमानन नभ मांहीं आ छाये हैं ।
भेरि दुंदभी वाद्य बजाये फूल फूल बरसाये हैं ॥
जान जन्म दिन सकल जक्त गुरु मुनि जन जुर कर आये हैं ।
जय जय धुनि दशहों दिशि छाई भये सबन मन भाये हैं ॥
भयो समाज सर्व भूमंडल परमानंद छकाये हैं ।
सरस माधुरी द्वै पायन के दर्शन कर हरषाये हैं ॥

॥ पद ॥

प्रगटे श्री वेद्व्यास धन्य दिन अली री ।
नीको आषाढ मास पूनों तिथि सुख की रास ।
सत्यवती हिय हुलास कामना फलीरी ॥
पुन्य पुंज मुनि प्रधान पराशर सुलेहु मान ।
बिप्रन गो दान दई दुग्ध की भलीरी ॥

सद्न द्वार नवल नार स्वास्तिक विरचे सँवार।
छिरके चंदन सुचारु डगर अरु गलीरी॥

युवति यूथ मिल अपार मंगल भर द्रव्य थार।
करके श्रृंगार गात सोहिलो चलीरी॥

निरखि नैन भई निहाल ललन रूप फँसी जाल।
सरस माधुरी सुबाल भाग की बलीरी॥

॥ पद॥

सुमरों श्री वेद्व्यास जगत गुरू कृपाला।
शुक मुनि महाराज राज संतन प्रतिपाला॥

आचारज संप्रदाय श्याम चरणदास खास।
शिष्य स्वामी रामरूप करत जन निहाला॥

राम ही कृपाल की कृपा को नित चाहत हूं।
बिहारीदास दंपति को दें मिलाय हाला॥

परम गुरु गुन समुद्र स्वामी श्री ठाकुरदास।
रहत जुगल पास होत निरखि छवि निहाला॥

श्री मत बलदेव दास तिनके चरणन की आस।
जपत सरस माधुरी तिन नाम की नित माला॥
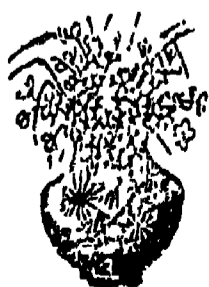
श्री शुकाचार्य जन्मोत्सव, बधाई तथा विनय पद ।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ॥

॥ दोहा ॥

वेदव्यास के प्रगट भये, जा विधि शुक मुनि आन ।
ताको कारन मुख्य जो, सो अब करूँ बखान ॥

॥ चौपाई ॥

सतयुग त्रेता गयो विताई । द्वापर युग लीला कहुँ गाई ॥
श्री मत वेदव्यास भगवाना । जिनको सुयश नहीं जग छाना ॥
चार विभाग वेद के कीने । और सूत्र सुन्दर रच दीने ॥
श्री मत भारत ग्रंथ बनायो । पंचम वेद नाम जिहिं पायो ॥
भेद वरण आश्रम के गाये । निवर्त प्रवर्त मारग समझाये ॥
मुक्ति सुमारग कियो बखान । कियो सकल जग को कल्यान ॥
परम हंस संहिता बनाई । नाम भागवत परम सुहाई ॥
महा पुरान कहावत सोई । सर्वस धन वैष्णवन को जोई ॥
ऐसे वेदव्यास सुखदाई । पुत्र कामना मन में आई ॥
सुमेरु शिखर पर जाय विराजे । हेत पुत्र तप साज सुसाजे ॥
कठिन उग्रतप वृत यह लीना । पवन अहार मात्र ही कीना ॥
धरा समान धीर्यता जामें । जल ज्यों निर्मलता होय तामें ॥
तेज अग्नि सम दिप्त जासु में । व्यापक गुन सम पवन तासु में ॥
वृहद् व्योम के सम गुन चहिये । ताकी आदि अंत नहिं लहिये ॥
विष्णु समान सतोगुण धारी । रूपवान सम कृष्ण बिहारी ॥
ऐसे सुत प्रगटन के काजा । दृढ वृत नेम तपस्या साजा ॥

॥ दोहा ॥

तप आरंभ कीनो जहां, तहां शिवा त्रिपुरारि ।
पार्षद निज गन संग ले, विराजत हैं तिहिवार॥

राज ऋषी अरु ब्रह्म ऋषी, जान सुथल शिरमौर ।
भजन भावना करन हित, रहत एक ही ठौर ॥

॥ चौपाई ॥

यम अरु वरुण इन्द्र को जानों । वायु कुवेर अग्नि पहिचानों ॥
अष्ट वसू सूरज अरु चंदा । पृथ्वी सहित सुसप्त समंदा ॥
पर्वत सकल मनुज तन धारे । गुन गँधर्व अप्सरा सारे ॥
नारद मुनि चौरासी सिद्धा । आठों सिद्धि नवों सब निद्धा ॥
सबहि धन धन कहने लागे । तप दृढ देख व्यास अनुरागे ॥
तेज तपस्या जटा जु चमके । जों ज्वाज्वल्य अग्नि तिमि दमके ॥

॥ दोहा ॥

पीत पुष्प माला पहर, ललित गौरजा कन्त ।
मनु संध्या फूली सरस, मधि शशि शोभावन्त ॥
देख उग्र तप व्यास प्रभु, शिव अति भये कृपाल ।
सनमुख ठाडे होय के, बोले वचन रसाल ॥

॥ चौपाई ॥

जैसा सुत मांगा सोई दीना । सकल मनोरथ पूरन कीना ॥

रहैं भजन हरि में लवलीना। प्रेम परा भक्ती रंग भीना ॥
रसिकाचारज सतगुरु स्वामी। महा प्रभू उर अन्तरयामी ॥
श्री कृष्ण लीला गुण सागर। वरनें श्री भागवत उजागर ॥
वृज भक्तन की महिमा गावें। हरि सेवा मारग प्रगटावें ॥
नौधा प्रेमा परा सुभक्ति। परानुरक्ति कहैं कर जुक्ति ॥
नाम धाम लीला अरु रूप। चतुर उपासन कहै अनूप ॥
वृज निकुंज लीला सुख सार। गावें दंपति नित्य विहार ॥
उज्ज्वल रस रसिकन दें दान। दैवी जीव उधारें आन ॥
पतितन पावन अधम उधारन। जीव अनंत जक्त के तारन ॥
स्वयम् कृष्ण पुरुषोत्तम रूप। प्रगटें भूतल परम अनूप ॥
वासुदेव व्यापक भगवाना। सोई अवतरे तुम्हारे आना ॥
अग्नि कुण्ड वेदी में आन। प्रगटें प्यारे श्याम सुजान ॥
अग्नि कुमार यज्ञ अवतार। जिनको रूप अलौकिक सार ॥
जिनके रूपरु नाम अनंत। सोई आप प्रगटे भगवंत ॥
दृढ कर थापें भगवत धर्म। मूल उखारें सकल अधर्म ॥
पुष्ट परत्व प्रचारन हार। वेदन महिमां सकें उचार ॥
शान्त दास्य वात्सल्य सरूप। और सख्य रस परम अनूप ॥
सब रस को राजा शृंगार। सो वरने कर कृपा अपार ॥
ऐसो भगवत धर्म बखानें। जाको सर्व वैष्णव मानें ॥
धर्म अनन्य दृढ़ावें सार। हरि सन्मुख जिय होंहि अपार ॥

॥ दोहा ॥

महादेव के सुन वचन, व्यास लह्यो आनंद ।
रोम रोम फुल्लित भये, प्रगट्यो परमानंद ॥
तप पूरन लख आपनों, सफल मनोरथ जान ।
उठ आनँदयुत हर्ष हिय, आश्रम पहुँचे आन ॥
मगन महा आनंद में, करें हरी गुन गान ।
परो प्रेम में पुलक तन, धरें मानसी ध्यान ॥

॥ चौपाई ॥

रहें व्यास निज आश्रम जाई । सोमवती मावस तिथि आई ॥
शुभ वैशाख मास पहिचानों । सोमवार सुन्दर दिन जानों ॥
डेढ़ पहर दिन जब ही आया । होम करन मन उत्सव छाया ॥
अग्नि होत्र वेदी रच तामें । समधि सुहावन राखी जामें ॥
और सोंज घृत आदि घनेरी । वेदव्यास लै बैठे नेरी ॥

॥ दोहा ॥

अरनी मथने ही लगे, अग्नी प्रगटन काज ।
नाम घृताची अप्सरा, लखी गगन महाराज ॥
रूप अनूपम जासुको, लखो व्यास निज नैन ।
मोहित ह्वै व्याकुल भये, तन मन उपज्यो मैन ॥

॥ चौपाई ॥

लखा अप्सरा मन में जब हीं । शुकी रूप धारा उन तब हीं ॥

नैंन कटाक्ष काम के बानां । लगे व्यास मन विकल महानां ॥
वीर्य निकस वेदी के मांहीं । गिरा अग्नि प्रगटी वहि ठांही ॥

॥ दोहा ॥

वेदी ही के मध्य में, प्रगटे अग्नि स्वरूप ।
मूर्ति श्री शुकदेव मुनि, नख सिख व्यासहि रूप ॥
किशोर अवस्था ह्वै गये, तुरतहि ले अवतार ।
अति सुन्दर तन सांवरे, मानहु कृष्ण मुरार ॥

॥ चौपाई ॥

दिव्य देह अनुपम अविकारी । ज्योति रूप सुंदर सुखकारी ॥
चंद बदन शोभा सु अपारी । शिर केशावलि घूंघर वारी ॥
नीलोत्पल दल श्याम सरूपा । नव योवन अंग अंग अनूपा ॥
कुटिल अलक मुख कमल विराजे । मनु अलि अवलि मनोहर राजे
भाल विशाल तिलक गोरोचन । भृकुटी कुटिल कमल दल लोचन
श्रवण सुहावन उन्नत नासा । बिंबाधर मुख मंद सुहासा ॥
कंबु कंठ ग्रीवा अति प्यारी । वक्षस्थल की शोभा भारी ॥
उदर अनूपम त्रिवली राजें । नाभि गहरि कटि केहरि लाजें ॥
भुज अजानु अनूप सुढारी । पृथु नितंब जंघा छवि भारी ॥
पिंडली गोल गुल्फ अति सोहन । रती मदन के मनको मोहन ॥
चरण चारु पंकज सम राजें । कोमल, अरुण अधिक छवि छाजें ॥
पद्मासन सिंहासन राजें । सूर्य समान तेज तनु भ्राजें ॥

॥ दोहा ॥

सुमेरु तरहटी शुभ जहां, तहां प्रगटे मुनिराज ।
वेदव्यास आश्रम वहां, परम रम्य सुख साज ॥

॥ चौपाई ॥

शुभ सुंदर पत्नी तिहि वारी । महा मनोहर मंगलकारी ॥
शुक मुनि दरशन हित चल आये । चहूं ओर आकर मँडराये ॥
तोता हरियल हँसहि जानों । सारस अरु पिक को पहिचानों ॥
नीलकंठ अरु मोर महाई । नांचन लगे पंख फैलाई ॥
पारावत बहु रंग सुहाई । बोलन में मन लेंहि चुराई ॥
बुलबुल बिबिधि तरुन में बोलें । आपस में मिल करत कलोलें ॥
हरित विपिन बेली अधिकाई । लता पता तरु अति छविछाई ॥
ऋतु बसंत सम शोभा पाई । फूल रही नाना फुलवाई ॥
गुंजत भ्रमर मत्त मगनाई । त्रिविधि समीर वहत सुखदाई ॥
झरत जहां जल के बहु झरना । मिष्ट महा मुनिजन मनहरना ॥
जान सुअवसर जन्म ऋषिगन । भये दरश कर परम मुदित मन ॥
जगमग चौमुख दीप जुराई । कनक थाल धर मन मगनाई ॥
अंग अंग शुक मुनि पर वारी । जय जय जय बोले बलिहारी ॥
पुनि न्यौछावर मणिगन कीने । करि दंडवत परम सुखलीने ॥
स्तुति हिल मिल हर्ष उचारी । पुष्पांजलि अर्पी सु अपारी ॥

॥ दोहा ॥

श्री गंगा शुक मुनि जनम, सुन कर हिय हुलसाय।
वेदव्यास भगवान को, दई बधाई आय ॥
रूप चतुर्भुज सोहनो, गौर वरन मनहार।
नख सिख सज शृंगार वर, छबि को अंत न पार ॥
गंगाजल झारी लई, मुनि असनान कराय।
सेवा कर करकमल सों, चंदन तिलक लगाय ॥
कमल पुष्पमाला गले, मुदित दई पहिराय।
विनय करी बहु प्रीति कर, हिय में अति हर्षाय ॥
लखि लोचन छबि मुदित है, अतिशय भई प्रसन्न।
नयनन छायो प्रेम जल, कहि जय जय धन धन्न ॥
पवन देवता स्वर्ग सें, कल्पवृक्ष के फूल।
बरसाये बहु रङ्ग के, अति सुगंधि अनुकूल ॥
दंड कमंडल अति सुघर, मृगछाला मनहार।
नभ से आई मुनि निकट, मन रंजन तिहि बार ॥

॥ चौपाई ॥

राजा इंद्र स्वर्ग तें आये। दरशन कर मन मोद बढ़ाये ॥
अस्तुति कर हिय में हरषाये। कर दंडवत परम सुख पाये ॥
दिव्य वस्त्र अपने संग लाये। प्रेम पुलक तन भेट चढ़ाये ॥
यूथ अप्सरा आय सुभागी। बहु बिधि नाचन गावन लागी ॥

बाद्य ताल सुर सकल सुहाये। लय अरु ताल मिलाय बजायें॥
गुन गावन गंधर्वहु आयें। भेरि दुन्दुभी शंख बजायें॥
श्री शङ्कर अरु गिरजा रानी। समय सुमंगलमई पिछानी॥
जन्मोत्सव कीनो आरंभा। रोपे नाना कदली थंभा॥
आश्रम द्वारन वंदन माला। बांधी बहु बिधि हरित विशाला॥
धुजा पताका अमित सजाये। मोतिन के शुभ चौक पुराये॥
द्वारन सरस साथिये सोहन। सुंदर रचे सकल मन मोहन॥
घृत दीपक बहु दिये जुराई। अष्ट गंध की धूप कराई॥
छिरके आश्रम केसर चंदन। अतर अनेकन भांति सुगंधन॥
मंडप जरी चंदोवा ताने। निरख नयन हरिजन हरषाने॥
फ़रश गलीचा दिये बिछाई। बैठ ऋषि मुनि वृंद लुभाई॥
फूल माल चहुँ दिशि लटकाई। महक महांन तहां प्रगटाई॥
मागद सूत भाट वंदी जन। करें प्रशंसा व्यास पुलक तन॥
वंशावलि कुल कीरति गावें। सुन मन वेदव्यास मगनावें॥
पाट पटंवर हीरा मोती। मनि मानिक बहु जगमग जोती॥
भूषण वसन विविधि रंग नाना। दिये सवन को कर सनमाना॥
मन इच्छा पूरन सब कीनी। हरष अशीस सबन मिल दीनी॥
वेदव्यास प्रभु तुमरो लाला। चिरजीवो संतन प्रतपाला॥
ऋषि मुनि भूसुर आदि जुरे जन। लख उत्सव अति भये मुदित मन
चंदन तिलक ललाट लगाई। पुष्पमाल सब गल पहराई॥
अतर अंग सब दिये लगाई। बांटे मेवा पान मिठाई॥

वंशावली श्री शुकदेवजी महाराज की

॥ दोहा ॥

श्री मत गुरु बलदेव प्रभु, तिन पद उर धर ध्यान।
श्री शुक मुनि वंशावली, निज मुख करों बखान ॥

सुनो रसिक हरिभक्त सब, प्रेमी जन गुनवंत।
चरणदास आचार्य पथ, आश्रित संत महंत ॥

श्री मन्नारायण प्रभो, लक्ष्मी पति भगवान।
तिनकी नाभी तें भयो, कमल प्रगट पहिचान ॥

तासु कमल तें जानिये, उपजे ब्रह्मा जान।
करता सब संसार के, तिन सम और न आन ॥

श्री वशिष्ट तिनके तनय, जानत सब संसार।
श्री रघुनंदन के गुरू, महिमा को नहिं पार ॥

शक्ति ऋषी तिनके सुवन, निपुन वेद व्युत्पन्न।
तपोनिधी ज्ञाता बड़े, सद्गुण गन सम्पन्न ॥

तिनके पुत्र पुनीत अति, ऋषी पराशर जान।
धर्म सनातन प्रवर्त कर, रचिता विष्णु पुरान ॥

जिनके वेदव्यास जू, हरि करुणा अवतार।
करता भारत भागवत, वेद विभाग उदार ॥

श्री शुकदेव महामुनी, स्वयं कृष्ण भगवान।
आचारज ह्वै अवतरे, वेदव्यास घर आन ॥

धर्म भागवत विस्तरन, प्रगटे हरि मुनि रूप ।
परम हंस चूड़ामणी, अद्भुत अधिक अनूप ॥
करन परायन परीक्षित, गावें कृष्ण चरित्र ।
प्रेम परा विस्तार प्रभु, करि हैं जक्त पवित्र ॥
सुने गुने गायन करे, शुक वंशावलि कोई ।
भक्ति स्वतंत्रा को लहे, दंपति वल्लभ होई ॥
श्री मत भारत भागवत, तिनके मत अनुसार ।
सरस माधुरी ने कही, वंशावलि उच्चार ॥

॥ पद ॥

जागे भाग हमारे हेली ।
शुभ वैसाख मास मावस तिथि प्रगटेंगी शुक अलि अलवेली ।
गावो उमँग वधाई हँसि हँसि हिल मिल के सब सखी सहेली ।
पावोगी सब प्रेम पदारथ पराभक्ति सुंदर मन मेली ॥
दंपति आप कृपा कर पठई प्रगट करन कुंजन कलि केली ।
सरस माधुरी श्री वन वीथिन छावेगी आनँद की वेली ॥

॥ पद ॥

हमारे माई महा महोत्सव आयो ।
श्री वृंदाबन कुंज निकुंजन हिल मिल अलिन सोहिलो गायो ॥
प्रगट होन दिन व्यास सुवन को निपट निकट नियरायो ।
लता पता तरु डार पात में परमानंद प्रगट है छायो ॥

जो सुख अगम जोग जप तप सें कृपा साध्य प्रगट दरसायो ।
परिकर निकर प्राप्त शुभ अवसर श्री श्यामा अरु श्याम दिखायो
है है सुलभ महल को मारग यथा भाव जाके मन भायो ।
सरस माधुरी रहसी डोलत तन मन नैंन मोद सरसायो ॥

॥ पद ॥

रस को मेह सखी बरसेगो ।
प्रगटेंगे श्री शुक मुनि स्वामी रस निकुंज हिय में सरसेगो ॥
रसिक समूह रहस रंग भीने तिनको अति आनंद दरसेगो ।
सरस माधुरी के मस्तक सों व्यास सुवन युग पद परसेगो ॥

॥ पद ॥

आज समाज महा मन भायो ।
श्री शुकदेव जन्म उत्सव को घर घर मंगल मोद बधायो ॥
शुभ वैशाख मास मन मोहन कुंज निकुंज पुंज रस छायो ।
रसिकाचारज प्रगट होन को समय सुहावन अति नियरायो ॥
फूले फिरें रसिक रंग भीने रंकन मनो महाधन पायो ।
सरस माधुरी रस बरसेगो रोम रोम आनंद उमगायो ॥

॥ पद ॥

आज समाज सुहावन माई ।
श्री शुक रसिक मुकट मणि प्रगटन समय सुभग अति ही नियराई

हिल मिल के सुर पती अनगिन मंगल मोद बधाई गाई ।
फिरत उमाही व्यास भवन में बांटत हैं हँस पान मिठाई ॥
केसर चंदन लेपन करिके फूलमाल सबहुन पहिराई ।
सरस माधुरी मगन भई मन संत सभा लखि हिय हुलसाई ॥

॥ कवित्त ॥

श्री मन्नारायण की नाभि तें कमल भयो कमल तें प्रगटे श्री ब्रह्मा महाराज हैं ॥ ब्रह्मा के श्री वशिष्ट पुत्र अति पुनीत भये तिनके भये शक्ति ऋषी धर्म के जहाज हैं ॥ शक्ती के सुवन श्री पराशर जानिये जू तिनके तनय वेद व्यास परायन पर काज हैं ॥ वेदव्यास जू के स्वयं कृष्ण शुकदेव मुनि प्रगटे सरस माधुरी सो रसिकन सिरताज हैं ॥

॥ कवित्त ॥

धन्य वैसाख मास मावस तिथि सुख की राशि धन्य सोमवार वार सुरनर मुनि जान्यो है ॥ प्रगट भये स्वयं कृष्ण मुनि को सरूप धार वेदव्यास के कुमार ऋषिन कह बखान्यो है ॥ वयस है किशोर चित्त चोर रसिक चूड़ामणि मुनिन माँझ महामुनि संतन पिछान्यो है ॥ कहै सरस माधुरी सुअंग श्याम सुख को धाम शुकाचार्य सर्व पूज्य मेरो मन मान्यो है ॥

॥ कवित्त ॥

प्रगटे अयोनिज नहि आये गर्भ माता के होम अग्नि कुंड द्वार दरश दिखायो है ॥ जन्मत जिन जीत लई माया बिन ही प्रयास स्वयं सुइच्छा मय रूप दरशायो है ॥ थिर चर सुर नर मुनीस मुदित भये दरशन कर परम तेज तरुण सम त्रिभुवन में छायो है ॥ कहैं सरस माधुरी शुकदेव प्रताप सेती सुख ही सुख छायो दुख जक्त को नसायो है।

॥ कवित्त ॥

प्रगट जो न होते शुकदेव आय भूतल में कौन श्री कृष्ण जू के गुन गन गावतो ॥ प्रेम परा भक्ती महारानी की महिमां को सर्वोत्तम भाव जक्त मांहि को जनावतो ॥ गोपिन के प्रेम की प्रसंशा सब विश्व मांहि ऐसो और कौन हो सो सबन को सुनावतो । कहैं सरस माधुरी रहस्य केलि कुंज ललित बिना मुनि राज नहीं जीव कोऊ पावतो ॥

॥ सवैया ॥

आये आचारज रूप को धार के श्री शुक संकट कोटि हरेंगे ।
तच्छक सर्प को त्रास मिटाय के राजा परीच्छित मुक्ति करेंगे ॥
श्री भागोत सुनाय महामुनि जक्त में भक्ति भंडार भरेंगे ।
सर्स कहे कालि काल कराल में गोपद ज्यों भव सिंधु तरेंगे ॥

॥ सवैया ॥

जन्म लियो शुकदेव महामुनि श्री गंगा अभिशेष करायो ।
इन्द्र ले वस्त्र अमूल्य अलौकिक दंड कमंडल भेट चढ़ायो ॥
नारद नाचत बीन बजाय के गंधर्व राग सलोनो सुनायो ।
नित्तत उरबसी आदि अनेकन सर्स सुहावनो रंग जमायो ॥

॥ सवैया ॥

श्री शुकदेव दयाल से दूसरे देखे सुने नहिं और मुनी हैं ।
त्यागी विरागी तपस्वी अनेकन जोगी जपी बहु ज्ञानी गुनी हैं ॥
माया ठगे सब की मति को मुनिराज बचे यश गावें दुनी हैं ।
याही ते सर्स भये भव में महिमा बहु भांति कवीन भनी हैं ॥

॥ दोहा ॥

बन गवने शुकदेव मुनि पीछे वेदव्यास ।
वृक्षन मिल बोले बचन कियो मोह को नास ॥

॥ सवैया ॥

ले सन्यास चले शुकदेव जु देख के व्यास विरह उपजायो ।
हे मम पुत्र पुकार पुकार के हेत जनाय लडाय बुलायो ॥
कानन वृक्ष प्रवेश कियो अरु उत्तर दे संदेह मिटायो ।
ऐसे मुनी को प्रणाम करूँ कहे सर्स तिहूं पुर में यश छायो ॥

॥ दोहा ॥

घोर अँधेरे में परे, जग के जीव पिछान ।
अध्यातम दीपक मुनी, कियो प्रकाश पुरान ॥

॥ सवैया ॥

घोर अंधेरे परे जिय जानिके आतम ज्ञान को दीप जरायो ।
सार श्रुतीन को तत्व प्रकाश पुरान अनूप भागोत सुनायो ॥
हैं गुरुदेव समस्त मुनीन के तीनहुं लोकन में यश छायो ।
सरस कहै कर जोर श्री शुकदेव के मैं शरणागति आयो ॥

॥ दोहा ॥

श्री शुक पद सु प्रणाम मम, स्वयम् कृष्ण अवतार ।
सकलाचारज पूज्य प्रभु, मंत्र प्रचारन हार ॥

॥ सवैया ॥

श्री शुक कृष्ण स्वयम् अवतार अनूपम रूप अलौकिक धारो ।
सर्वाचार्य सु पूज्य महा प्रभु मंत्र सुराज प्रचारन हारो ॥
ब्रह्म सरूप मुनीन में भूप सनातन भगवत धर्म उचारो ।
सरस कहे कर जोर निहोर के व्यास लला को प्रणाम हमारो ॥

॥ पद सोरठ ॥

व्यास जू मानों वचन हमारो ।
प्रगट भयो तुमरे पुरुषोत्तम पतित उधारन हारो ॥

कलि मल हरन करन जग पावन आचारज वपुधारो ।
भगवत धर्म प्रचारन कारन संत रूप अवतारो ॥
श्याम वरन शोभा को सागर शुक मुनि जक्त उजारो ।
पूरन ब्रह्म विश्व में व्यापक सो भयो पुत्र तुम्हारो ॥
रसिक शिरोमणि मदन मनोहर भक्तन को रखवारो ।
सरस माधुरी मूरत लालन जीवन प्रान आधारो ॥

॥ पद राग झूमका ॥

बजत बधाईयां हो श्री वेदव्यास के दरबार ।
हुआ सुत सोहना हो सलोना कृष्ण के अनुहार ॥
आई ऋषि नारियां हो गावत गीत मंगलचार ।
जुरे सब लोग मगन हो गुनी सब गावें दे दे तार ॥

॥ झूमका ॥

गुनी दे ताली नांचें, रंग आनँद के रांचें ।
कहै शुक लाला जीवो, दूध अमृत ज्यों पीवो ॥
खुशी हो घूमर घूमें, लला की टूंडी चूमें ।
मगन हो मंगल गावें, दान बहु विधि सों पावें॥

॥ अंतरा ॥

पावें पट दान मोती वे जावें मन फूलते घर मांहि ।

पहिर भूषण वसन सुंदर झमकते अंग अंग सुहाहि ॥
परस्पर प्रेम सों सब ही करें कलि केलि मृद मुसिकांहि।
धन धन आज का दिन ये दानी कोऊ तुम सम नांहि ॥

॥ झूमका ॥

व्यास ने दान मँगाया, सुकंचन झड बरसाया।
सुभागी माता तूरी, करी मन इच्छा पूरी ॥
पराशर कुल उजियाला, प्रकट भये शुक मुनि लाला।
सांवरो सुंदर बाला, निरख छवि भये निहाला ॥

॥ अंतरा ॥

आई भागीरथी गंगा, नहवाये शुक मुनी हरषाय ।
पवन ने कल्प वृक्षन के, दिये हैं फूल बहु बरषाय ॥
स्वर्ग से अप्सरा आई, लगी नृतन अधिक हुलसाय।
सकल गंधर्व जुर आये, लगे गावन सुजस सुख पाय ॥

॥ झूमका ॥

वीन ले नारद आये, नृत्य कर मन मगनाये।
दुंदभी देव बजाये, संख ध्वनि वाद्य सुहाये ॥
इन्द्र ले वस्तर आये, मुनी के भेट चढ़ाये।
अमरगन ऋषी सुधाये, स्तुती कर मगनाये ॥

॥ अंतरा ॥

मगन हो आरती कीनीं, जगाई जोति जगमग थार।

हरष मन मोद कर सबने उतारी सुभग अंगन वार ॥
कहैं जय जय सकल सुर मुनि समर्पत भेंट कहि बलिहार।
दई परदक्षणा हिल मिल करी दंडवत बारंबार ॥

॥ झूमका ॥

करे शुक मुनि के दरशन, लगे चरनन को परसन ।
लगी पुष्पांजलि बरषन, भई सबके हिय हरषन ॥
निरख छबि नांहि अघावैं, विनय बहु भांति सुनावें ।
रसिक कर प्रेम रिझावें, सुफल मन वांछित पावें ॥

॥ अंतरा ॥

कियो उत्सव जनम शुकको, हरष मन पारवती त्रिपुरार।
मगन आनँद मन में हो, बँधाई महल वंदनवार ॥
मनोहर रूप कर दरशन, भये मन मुदित नयन निहार।
सरस माधुरी मूरति लई, शुक देव उर में धार ॥

॥ पद ॥

सखी उदमादियां हो, बधाई देत मन खुश हाल ।
हुआ सुत सोहना हो, सलोना व्यास के शुकलाल ॥
विपिन में शादियां वे, करो ऋषि ज़ादिया कुल रीत ।
वारो नोन राई वे, गावो सब मिलके मँगल गीत॥

॥ झूमका ॥

सखी सब मंगल गावें, गुनी जन चोहल मचावें।

बजावें ढोलक झांझे, मजे सों गावें मांझे ॥
सुनावें तान अछूती, सुभागी मात सपूती ॥
लला केदरश करावो, हमारे नैंन सिरावो ॥

॥ अंतरा ॥

लला की बलाईयां वे, परो खारे समंदर जाय ।
करो दिन रैन खुशियां वे, खिलावो कुंवर कंठ लगाय ॥
रहो दिन रैन राज़ी वे, लड़ावो नित प्रति शुक लाल ।
यही बिनती हमारी वे, खसो नहाते नही कोई बाल ॥

॥ झूमका ॥

लला के दरश करावो, खुशी का खत दिलवावो ।
खुलाये खास ख़जाने, लुटाये माल अमाने ॥
दान ले भये सुचीते, गुनी जन हुये नचीते ।
हरष हँस हँस के नांचे, प्रेम के रंग में रांचे ॥

॥ अंतरा ॥

बजे घर व्यास नौबत बे, घुरें नभ मेघ सरस निशान ।
छये सुर गगन मांही हो, करें कल लाल गुन गन गान ॥
तुम्हारे भाग पूरन हो, नहीं जग में है तुम सम आन ।
सुनावें सोहिले तुमको, सुनो श्री व्यासजी भगवान ॥

॥ झूमका ॥

स्वयम् श्री कृष्ण पधारे, संत को रूप सुधारे ।
अगिन तें प्रगटे प्यारे, यही हैं इष्ट हमारे ॥

13.5.0

रसिक आचारज जानों, कृपा के सिंधु पिछानों।
इन्हे ईश्वर कर मानों, विनय कर जोर बखानों॥

॥ अंतरा ॥

करो कर जोर विनती वे, धरो हृदय में इनको ध्यान।
तरो संसार सागर सें, सुनो अमृत वचन निज कान॥
मिलो अवसर भलो सजनी, नहीं है धन्य तुम सम आन।
लखो निज नैंन झांकी को, छकाओ अपने तन मन प्रान॥

॥ झूमका ॥

दरस कर ध्यान लगावो, निरखि छवि बलि बलि जावो।
इन्हों के गुन गन गावो, विनय कर इन्हें रिझावो॥
परम पद निश्चय पावो, जगत में फिर नहिं आवो।
हरष आनंद मनावो, महल की सेवा पावो॥

॥ अंतरा ॥

पावो सेवा महल की हो, जहां नित होत रास विलास।
रहो नित संग दंपति के, उमँग आनँद हिये हुलास॥
करो नित केलि कुँजन में, मधुर श्री राधिका के पास।
सरस छवि माधुरी निरखो, लहो वृन्दाविपिन नितवास॥

॥ बधाई हेली ॥

बजत बधायो री हेली वेदव्यास के।
अति मन भायो री हेली आनंद रास के॥

रास आनंद की मिली वैसाख मांस सुहावनो ।
ऋतु बसंत पुनीत अति ही कृष्ण पक्ष मन भावनो ॥

तिथि अमावस्या अनूप सोम दिन सुंदर महा ।
डेढ़ पहर चढ़े दिवस प्रगटे प्रभो अति सुख लहा ॥

जुर मिल आवोरी हेली हिय हुलसाईये ।
मंगल गावोरी हेली मन मगनाईये ॥

मगनाइये करके महोत्सव मोतिन चौक पुराईये ।
कलश कंचन चारु कदली थंभ सरस सजाइये ॥

रचो सुंदर साथिये शुभ बंदन माल बँधाईये ।
जन्म-दिन श्री शुकाचारज प्रेम अंग पुलकाईये ॥

नव निकुंज उज्ज्वल रस मूरति वपु धर्यो ।
सुंदर श्यामल गात निहारत मन हर्यो ॥

मन हर्यो श्री सुख सखी रंग महल ते आई अली ।
प्रेम कर दंपति पठाई होंहिगी अब रंग रली ॥

रसिक जन मन में मगन भये आस बेली शुभ फली ।
सरस रस आनंद उल्हयो हिय कमल कलिका खिली ॥

जोरी गोरी श्यामल लाड़ लड़ाय है ।
लीला गुन गन जुगल सुजस सुचि गाय हैं ॥

गाय हैं भागोत रस पुनि पंच जग प्रगटाय हैं ।
शांत दास्य वात्सल्य सख्य श्रृंगार भावक पाय हैं ॥

परा भक्ति प्रभाव पूरन सिंधु को उमगाय हैं।
सर्व पर माधुर्य रस सरिता अनूप वहाय हैं॥
नृत करोरी हेली हिल मिल आय के।
भाव बतावोरी हेली साज बजाय के॥
बजाय के बीना मृदंगन ताल सुरन मिलायके।
गाय जन्मोत्सव बधाई मुदित रीझ रिझायके॥
सरस माधुरी छवि छटा लखि लेहु नयन छकायके।
चूकिये नहिं दाव सजनी शुभ सुअवसर पायके॥

॥ हेली ॥

मंगल गावोरी हेली हिल मिल आय के।
देहु बधायो री हेली श्रवन सुनाय के॥
सुनाय देवहु वेदव्यासहिं यह बधाई शुभ भली।
प्रगट भये शुक मुनि महा प्रभु खास दंपति की अली।
सुख सखी प्रिय नाम जिनको धाम सें हित कर चली।
कुंज केलि दृढाय हैं दुलराय हैं लालन लली॥
सुख सरसावोरी हेली चित में चौगुनो।
भाग्य सराहोरी हेली सब मिल आपनो॥
आपनो बड़ भाग्य मानो शरण शुक मुनि की रहो।
गह अनंन्य अखंड दृढ़ ब्रत जयति जय मुख सों कहो॥
मंजु महल निकुंज में सिवकाइ दंपति की चहो।
राखिये विश्वास उर दृढ फल सुमन वांछित लहो॥

महिमा गाओरी हेली शुक मुनिं राज की।
बलि बलि जावोरी हेली अलि सिरताज की॥
अली जन सिरताज आज सुसमय धन्य सुहावनी।
कुंज सुख की बेलि फूली फली मन की भावनी॥
श्याम सुंदर रूप रस निधि मूर्ति मन ललचावनी।
रति मदन मद मर्दनी नित नैन हृदय बसावनी॥
सोहिलो गावोरी हेली उमँग बढाय के।
चौक पुरावोरी हेली सुकर बनाय के॥
सुकर मोतिन चौक पूरो साथिये द्वारन धरो।
करो मिलि दधि केलि कादो खेल रसके विस्तरो॥
रसिक जन छतियन लिपट आनँद के रस में ढरो।
परम प्रेमानंद पूरन अघट निज हिय घट भरो॥
हिय हुलसावो री हेली दरशन पाय के।
तन पुलकावो री हेली सुख सरसाय के॥
सरसाय के सुख सकल विधि सों रीझ देहु बधाइयां।
गोद मेवा सों भरो बांटो री पान मिठाइयां॥
सरस माधुरी फूल वृष्टि करो हिय हरषाइयां।
अतर अंग लगाय अलियन करो मन की भाइयां॥

॥ बधाई ॥

प्रगटे श्री शुकदेव लला, पूरन पुरुषोत्तम सुकला।
रूप आचारज धार लला, हरि हैं भूतल भार लला॥

नव निकुंज से आये लला, श्यामा श्यास पठाये लला ।
महा प्रभु मन हरन लला, सुंदर श्यामल बरन लला ॥
वंश पराशर भान लला, वेद व्यास के प्रान लला ।
मातु सुभागी सुवन लला, मंगल चौदह भुवन लला ॥
जन्म अयोनिज लियो लला, सब जग को सुख दियो लला ।
वेदी अगनी मध्य लला, उपजे समरथ सद्य लला ॥
श्री सुख सहचरी खास लला, रंग महल में वास लला ।
जुगल विहारी पठाई लला, नव निकुंज रस लाई लला ॥
गिरि सुमेरु अति सुथल लला, जल झरना झरें अमल लला ।
लता ललित तरु छाई लला, फूली फली सुहाई लला ॥
त्रिविधि समीर सुहाई लला, ऋतु वसंत सरसाई लला ।
गुंजत मातें भृंग लला, सुन मन होंहि उमंग लला ॥
बोले विविधि विहंग लला, नाना विधि बहु रंग लला ।
सारस हंस चकोर लला, नाचत वन में मोर लला ॥
षोडश वर्ष किशोर लला, श्याम वरन चित चोर लला ।
श्री मुख चंद प्रकाश लला, निरख होत दुख नाश लला ॥
घुंघरारे शिर वार लला, अंग अंग सुकुमार लला ।
सुन्दर भाल विशाल लला, श्री तिलक छवि जाल लला ॥
नासा श्रवन सुढार लला, अति अद्भुत मनुहार लला ।
प्यारे कलित कपोल लला, दरपन से दोउ गोल लला ॥

अधर बिंब अनमोल लला, मंद हँसन मृदु बोल लला।
चिबुक चारु मन बसन लला, हीर पंक्ति से दशन लला॥
कंबु कंठ सुख सार लला, ग्रीवा छवि सु अपार लला।
वक्षस्थल सु उतंग लला, कटि सूक्षम सुठि जंघ लला॥
चरण चारु सम कंज लला, लाल वरण मृदु मंजु लला।
नख शिख सोहन छवी लला, रसिकन के मन फवी लला॥
सत चित आनंद रूप लला, रसिकाचारज भूप लला।
तन द्युति परम प्रकाश लला, निरख मदन मद नाश लला॥
गंगा दरश दिखाये लला, गंगोदक अन्हुवाये लला।
इन्द्र भूप चलि आये लला, वस्त्र सुदिव्य चढ़ाये लला॥
श्री नारदजी चलि आये लला, प्रमुदित नाचे गाये लला।
स्वर्ग अप्सरा आई लला, नृत्तत भाव बताई लला॥
गुनि गंधर्व अपार लला, कीनो सुयश उचार लला।
गौरी और त्रिपुरारी लला, उत्सव कियो अपार लला॥
रचे साथिये द्वार लला, बाँधी बँदनवार लला।
धुज पताक रंगदार लला, सजे महल आगार लला॥
सुर समूह चलि आये लला, फूल फूल बरषाये लला।
ऋषि मुनि जुरे अपार लला, जय जय कहत पुकार लला॥
जग मग वाती बार लला, धर कंचन के थार लला।
श्री अंगन पर वार लला, आरति रहे उतार लला॥
अगर और अष्ट गंध लला, उठत धूप मकरंद लला।
पीत पुष्प की माल लला, दई प्रभु गल डाल लला॥

अस्तुति करें अनंत लला, हिल मिल संत महंत लला ।
अष्ट अंग परनाम लला, करें चरण अभिराम लला ॥
श्री भागोत मुख गावें लला, परीक्षित नृपहि सुनावें लला ।
तक्षक त्रास मिटावें लला, परम सुधाम पठावें लला ॥
श्री शुक ध्यान लगावें लला, भव बंधन छुट जावें लला ।
अमरलोक पद पावें लला, भूतल बहुर न आवें लला ॥
श्री शुक यश मुख गावें लला, पराभक्ति पद पावें लला ।
श्री शुक शरणें आवें लला, तिन्हें दंपति अपनावें लला ॥
श्री शुक रटन लगावें लला, युग वर दरश दिखावें लला ।
परिकर मांहि मिलावें लला, सहचरी रूप पावें लला ॥
दिन प्रति युगल लड़ावें लला, सेवा कर हुलसावें लला ।
छवि युग मांहि छकावें लला, पलपल में पुलकावें लला ॥
नित नव रास विलास लला, देखें बढे हुलास लला ।
सरस माधुरी दासि लला, रहे प्रिया पिय पास लला ॥

॥ भाँड बधाई ॥

भला वे आज बाजे छे रंग बधाईयाँ सुन सखि वे शुभदिन आइयाँ
भाग भले श्री वेदव्यास के प्रगटे सुत सुख दाइयाँ ॥
मुनि गंधर्व गाय गुन बहु विधि लेले तान सवाइयाँ ॥
श्री नारद ले वीन बजावत लै सुरताल मिलाइयाँ ॥
नाचत नारि अप्सरा अनगिन नाना गति उपजाइयाँ ॥

श्री गंगा आय चावसों लालन हरष नहवाइयाँ ॥
इन्द्र आय सिरनाय चरण में वस्त्र सुभेट चढाइयाँ ॥
बैठ विमान गगन सुर छाये पुष्प रहे बरसाइयाँ ॥
मागध सूत भाट बंदी जन वंशावली सुनाइयाँ ॥
जाचक सकल अजाचक हुये लेले दान अघाइयाँ ॥
स्तुति करत ऋषीश्वर सबही चरन कमल चित लाइयाँ ॥
सरस माधुरी महा महोत्सव मन वांछित फल पाइयाँ ॥

॥ भाँड बधाई ॥

शादियाँ भली वे खुशवक्तियाँ भली वे ।
आवो गुनी जन गावो मेरे रंग की रली वे ॥

शादियां सुरंगी सुनो भाँडदेव आये अजी वाह वा है ।
नकल नोंक झोंक के खजाने भरलाये अजी वाह वा है ॥
गावते बजावते रिझावते सुहाये अजी वाह वा है ।
मांगते महाराज व्यास कुंवर के बधाये अजी वाह वा है ॥
बोलते असीस शुकलाल चिरजीवो अजी वाह वा है ।
रहो खुशहाल सब काल व्यासलाल अजी वाह वा है ॥
देख मुख चंद हुआ मन में आनंद अजी वाह वा है ।
गये दुख द्वंद लखि आनंद के कंद अजी वाह वा है ॥
हर्द जर्द दही दूध रंगे ऋषि राज अजी वाह वा है ।

बैठे हैं भट्ट चट्ट संतन के ठट्ट अजी वाह वा है ।
वेद धुनि गान बजें नभ में निशान अजी वाह वा है ॥
वर्षते सुर फूल यह घड़ी सुख मूल अजी वाह वा है ।
फूले भक्त आज गये पाप पुंज भाज अजी वाह वा है ॥
धर्म को प्रकाश बढे पुन्य पुंज रास अजी वाह वा है ।
प्रेमा भक्ति को प्रचार करे जीव उद्धार अजी वाह वा है ॥
खाने आवाद होवे दौलत ईजाद अजी वाह वा है ।
हुआ दिल शाद पूरी मन की मुराद अजी वाह वा है ॥
संत अवतार धार आये कृष्ण आप अजी वाह वा है ।
इनको जपै जाप मिटे संसृति ताप अजी वाह वा है ॥
गावें भागवत पुरान करें जीव प्रेम पान अजी वाह वा है ।
सरस माधुरी विलास नित कुंज में निवास अजी वाह वा है ।
मिले वृंदावन वास प्रिया प्रीतम के पास अजी वाह वा है ॥

॥ पद राग बहार ॥

मुनि राज आज प्रगटाये री ।
श्री शुकदेव श्याम सुन्दर वर अमरलोक तें आये री ॥
जग जीवन उद्धारन कारन दंपति आप पठाये री ।
वेद्व्यास भगवान जगत गुरु तिनके कुँवर कहाये री ॥
केसर चंदन भवन लिपाये मोतिन चौक पुराये री ।

बांधी बंदनवार द्वार पर स्वास्तिक शुभग रचाये री ॥
जन्म सुनत सबही ऋषि मुनि जन हिल मिल हित सरसाये री।
करन लगे वेद ध्वनि बहु बिधि हिय में हर्ष बढाये री ॥

ब्रह्मानंद मगन नर नारी थिरचर चित हुलसाये री।
परमानंद प्रेम पद दाता तिनके दरशन पाये री ॥

गुनि गंधर्व अप्सरा अनगिन सुर पुर तज कर धाये री।
साज बाज ले संग रंग सों नाच गाय मगनाये री ॥

जुगल निकुंज रहस रस दाता तिनको आन रिझाये री।
बैठ विमान अमर गण अनगिन फूल फूल बरसाये री ॥

जय जय धुनि दसहों दिशि छाई छवि लखि द्दगन छकाये री।
सरस माधुरी रस निकुंज को रसिकन के हित लाये री ॥

॥ बधाई राग परभाती, भैरवी व सोरठ ॥

तर्ज (राधे प्यारी भान दुलारी सखियां सारी आती हैं।)

शुभ वैशाख मास मावस तिथि श्री शुक मुनि प्रगटाये हैं।
साक्षात श्री कृष्ण कृपा कर वेदव्यास ग्रह आये हैं ॥

भये अयोनिज अग्नि कुंड तें सुन्दर श्याम सुहाये हैं।
वयस किशोर तेज सम सूरज अमित अनंग लजाये हैं ॥

गिरि सुमेरु की सुभग तरैटी नाना वृक्ष सुहाये हैं ।
लता पता बेली बहु फैली हरित सघन तरु छाये हैं ॥
ऋतु बसंत बन फूलन फूलो लोचन लखि ललचाये हैं ।
त्रिविधि समीर बहत सुखदाई झरना जल झर लाये हैं ॥
कोकिल कीर कपोत कलापी कोमल शब्द सुनाये हैं ।
सारस हंस चकोर चहूं दिश आय आय दरशाये हैं ॥
निर्मल नीर सरोवर शोभित तिन में कमल खिलाये हैं ।
गुंजत फिरत भृंग मदमाते थिर चर मन मगनाये हैं ॥
श्री गंगा गंगाजल झारी लेकर मुनी न्हवाये हैं ।
सुर पति दिव्य वस्त्र ले आये हित कर भेट चढ़ाये हैं ॥
नृत्य करत नारद मुनि आये वीणा सरस बजाये हैं ।
नाचन लगी नारि अप्सरा गंधर्व मंगल गाये हैं ॥
ऋषि मुनि जोगी और तपस्वी दरशन कर हुलसाये हैं ।
करी आरती अति आनंद सों अस्तुति कर हरषाये हैं ॥
झांझ झालरी भेरि शंख ध्वनि करके हिये सिहाये हैं ।
समय सुअवसर जान देव गन गगन पुष्प बरषाये हैं ॥
बैठि विमान रहे लखि उत्सव सुरपुर सुरत भुलाये हैं ।
करत प्रणाम प्रेम सूँ सब मिल सुख के सिंधु समाये हैं ॥
गिरि के शिखर महल निज माहीं गिरजा शिव पुलकाये हैं ।
करीं बधाई धूम धाम सूं मंगल साज सजाये हैं ॥

बंदनवार बँधाई द्वारन मोतिन चौक पुराये हैं।
अतर अरगजा केसर चंदन चहुँ दिश को छिरकाये हैं॥
जय जय ध्वनि दसहों दिश छाई भये सकल मन भाये हैं।
सरस माधुरी दरश परस कर मन वांछित फल पाये हैं॥

॥ पद राग झंझोटी ॥

प्रगट भये आज महा मुनि राज।
परम हंस चूड़ामणि स्वामी रसिकन के सिरताज॥
जुगल माधुरी रस मतवारे मंडन संत समाज।
भक्तन के सरबस जीवन धन पूरन कीने काज॥
परम दयाल दया के सागर भगवत धर्म जहाज।
भव सागर से पार करन को आये श्री महाराज॥
नव किशोर चित चोर छबीले रस मूरति सुख साज।
सरस माधुरी कहत जोर कर सब विधि तुमको लाज॥

॥पद राग सारंग, भैरवी, कालंगड़ा, कहरवा व काफी॥

प्रगट्यो री शुक मुनि वर प्यारो।
श्याम सुँदर सोहन मन मोहन श्रीमत वेदव्यास को वारो॥
वयस किशोर कमल दल लोचन दुख मोचन दीनन रखवारो।
ब्रह्म रूप सत्चित आनँद घन नृपति परीक्षित तारन हारो॥

निगम कल्पतरु को फल अद्भुत श्री भागोत परम रस भारो।
ताको जस विस्तारन कारन महि मंडल में आ अवतारो ॥
निज मुख कथन करन प्रेमामृत देवी जनन करन निस्तारो।
करुणा सागर रसिक उजागर गावत जस जाको जग सारो ॥
आचारज है कारज सारे सुफल फलो सखी भाग हमारो ।
सरस माधुरी जोर दोऊ कर नैनन निरखि ध्यान हिये धारो ॥

॥ बधाई राग देव गंधार ॥

श्री शुकदेव व्यास के नंदन आचारज प्रगटाये हैं ।
जुगुल बिहारी नव निकुंज सें भूतल तिन्हें पठाये हैं ॥
बृन्दावन निज रंग महल में सखि वपु सुन्दर पाये हैं ।
अष्ट नाम और अष्ट सेव और अष्ट शृंगार धराये हैं ॥
कुंज मंगला नाम सुख सखी अरुण वस्त्र तन छाये हैं ।
सेवा गान सुयश दोउन को रस बस युगल रिझाये हैं ॥
कुंज शृंगार मध्य सुखदा जू पीत वस्त्र पहिराये हैं ।
बीन बजावन सेवा करके श्री दंपति दुलराये हैं ॥
अल्हादनि सखि फूल कुंज में चंदन वसन वनाये हैं ।
व्यजन करन सेवा सुख लूटत इक टक नयन लगाये हैं ॥
कुंज प्रमोद नृत्य की सेवा हाव भाव दरसाये हैं ।
वस्त्र मलागीरी तन धारें सब सखियन मन भाये हैं ॥

कुंज हिंडोल नाम कलनैना वस्तर हरे सुहाये हैं।
सेवा गान मलार राग धुनि लै सुरताल मिलाये हैं ॥
आनंद नाम कुंज आनंदा नीलाम्बर झमकाये हैं।
गीत विवाह विनोद गाय के प्रीतम प्रिया लडाये हैं ॥
सेवा कुंज चंपई बागा तन में अति छवि पाये हैं।
रस पुंजा है नाम रास में ललित मृदंग बजाये हैं ॥
प्रेम प्रकाश निकुंज मंजु में वसन गुलाब सजाये हैं।
प्रेम प्रभा शुभ नाम मदन उद्दीपन क्रम सरसाये हैं ॥
सयन कुंज में वसन विचित्रित प्रमुदा नाम कहाये हैं।
रत्ता कुंज अधिकार सेव जित करके मन मगनाये हैं ॥
गुप्त प्रगट लीला अधिकारिनि प्रेम रंग बरसाये हैं।
उज्ज्वल रस आराधक अनुदिन वरनत वेद थकाये हैं ॥
सोई मुनिराज महा प्रभु प्यारे दर्शन आन दिखाये हैं।
सरस माधुरी भाग्य मान धनि चरण कमल उर ध्याये हैं ॥

॥ राग परज तथा पंजाबी धुन में ॥

जन्मोत्सव मंगल दिन आली अति उत्तम मन भायो री।
श्री मत वेदव्यास जगत गुरू सुत शुक मुनि प्रगटायो री ॥
गगन वरन मन हरन करन सुख आचारज है आयो री।
स्वयं प्रकाश सच्चिदानंद घन तेज तरुण सम छायो री ॥

त्रिभुवन को तम दूर करन करुणा सागर उपजायो री।
रसिक कंज दरशन कर फूले लखि लोचन सुख पायो री॥
मुनिजन जुरे महोत्सव कारन हिल मिल लाल लड़ायो री।
गुनि गंधर्व अप्सरा आदिक नृत्य गान सरसायो री॥
ऋषि पत्नी रचि धरे साथिये मोतिन चौक पुरायो री।
ध्वजा पताका तोरन रोपे सुंदर साज सजायो री॥
बंदनवार द्वार प्रति बांधी सुरुचि सोहिलो गायो री।
कुल की रीति प्रीति युत कीनी सुख समुद्र उमगायो री॥
पशु पत्नी सरवर अरु तरुवर बन उपवन सुख छायो री।
विधि शिव शेष शारदा सुरपति सुर समूह चलि आयो री॥
मागध सूत भाट बंदीजन सुंदर विरद सुनायो री।
जय जय बोल विविधि भांतिन सों वचनामृत वरषायो री॥
कोऊ कहै यह श्री शुक आली मुनिवर रूप बनायो री।
रस पद्धति के प्रगट करन हित दंपति इन्हें पठायो री॥
कोउ कहै यह निकुंज को सूवा मनुज होय दरशायो री।
गुप्त निकुंज केलि रस रसिया रसिकन के हित लायो री॥
कोउ कहै कीर प्रिया बेसर को लागत परस सुहायो री।
मोहन मानो मुनि बन आयो सो हमरे मन भायो री॥
कोउ कहै आप कृष्ण करुणा कर संत रूप दरशायो री।
करन परायन नृपति परीच्छित दरशन आन दिखायो री॥

कोउ कहै महा पुरान भागवत प्रगट करन को धायो री ।
सुन गुन लहै निकुंज महल सुख कलि जिय हेत जनायो री ॥
कोउ कहै वेद्व्यास तप को फल साक्षात दरशायो री ।
गुरु मुनियन को महा मुनीश्वर निश्चे नयन लखायो री ॥
कोउ कहै यह श्रृंगार मूर्ति हैं श्याम तेज तन पायो री ।
रसिकन जीवन प्रान परम धन छवि लखि हिये बसायो री ॥
कोउ कहै गौर श्याम रंग रैनी उज्ज्वल रस उमगायो री ।
सोइ प्रगटो भूतल भागन बस प्रेम चंद्र झलकायो री ॥
कोउ कहै स्वसुख वृज बनितन को नरवर ठाठ बनायो री ।
कोउ कहै तत्सुख नव निकुंज को यों सुख नाम धरायो री ॥
कोउ कहै कुंज सभा को मंडन सोइ आ मनुज कहायो री ।
श्री हरि धर्म ध्वजा अस्थापन इन दृढ नेम धरायो री ॥
कोउ कहै निगम कल्पतरु तोता दंपति रस फल खायो री ।
सोइ फल श्री भागवत तोर धर पटक संत अघायो री ॥
कोउ कहै युगल लाल सैया सुख उमँग चल्यो अतुरायो री ।
नव निकुंज से निकस रूप धर भावक हृदय समायो री ॥
कोउ कहै भाजन युग विहार रस अति उज्ज्वल सु भरायो री ।
भक्त अनन्य रसिक चसकन को हिय संपुट भर लायो री ॥
रूप अमित धर रसिक जनन को युग युग मांहि छकायो री ।
कलि मल हरन करन पावन जग त्रय विधि ताप नसायो री ॥

भक्ति विराग जोग तप संयम हरि मारग मुख गायो री।
किये कृतारथ जीव जगत गुरु अविचल धाम बसायो री॥
शरणागति जन रक्षक स्वामी वेद पार नहिं पायो री।
नित्य बिहारी नाम धाम लीला सरूप लौ लायो री॥
सर्व पूज्य सर्वेश्वर सद्गुरु हृदय ध्यान धर ध्यायो री।
सरस माधुरी महा प्रभु मन निशि दिन भोर समायो री॥

॥ बधाई चाल रसिया ॥

बधाई बाज रही प्रगटे शुकदेव दयाल।
स्वयं कृष्ण आचारज बनके,
अरी के आये रसिकन के प्रतिपाल॥
श्यामवरन मनहरन महाप्रभु,
अरीके नखशिख मूरत मदन गोपाल॥
निरखोरी नैंनन भर हेली,
अरी के नाचो गावो दे करताल॥
ऋषी मुनी मन में हरषाने,
अरी के छवि को लखि के हुये निहाल॥
जो जन शुक मुनि के गुन गावें,
अरी के तिनपै दंपति ह्वें कृपाल॥
ध्यान धरे शुक मुनि हिरदय जो,
अरी के जिनको मिलें लाडिली लाल॥
श्री बृन्दावन कुंज बसें नित,
अरी के निरखें रास विलास रसाल॥

सरस माधुरी सेव सखी वपु,
श्री के पहुँचे रङ्ग महल ततकाल ॥

॥ पद राग कहरवा ॥

मेने सुनी वधाई आज, शुक मुनि प्यारे की ॥
स्वयं कृष्ण अवतार धार कर,
आये रसिकन काज व्यास दुलारे की ॥
शोडष वर्ष श्याम सुंदर तन,
मुनियन के सिरताज जग उज्यारे की ॥
श्री भागोत भान प्रगट कर,
सारे सबके काज अधम उधारे की ॥
जग जीवन उद्धारन कारन,
आये हैं महाराज जन निस्तारे की ॥
सरस माधुरीरूप नयन लखि,
जय जय कहो सब गाज गुरू हमारे की ॥

॥ पद ॥

वधाई लागे आज प्यारी ।
प्रगटे आय श्याम सुन्दर घन शुक मुनि को वपु धारी ॥
शुभ वैसाख मास मावस तिथि अति ही आनंद कारी ।
सोमवार को पहर चढ़े दिन दरश दिये शुभकारी ॥

कियो समाज सकल ऋषि मुनि मिल वेद ध्वनि उच्चारी।
आय अप्सरा निरतन लागी आनंद भयो अपारी॥
देव दुंदभी हरष वजाये जय जय कहि वलिहारी।
संतन के मन मोद भयो है गावत दे दे तारी॥
रसिकाचारज आय अवतरे प्रेम दान दातारी।
सरस माधुरी रस निकुंज को मांगत गोद पसारी॥

॥ पद राग पीलू वरवा ॥

वधाई वेद व्यास घर वाजे।
आय अवतरे श्री पुरुषोत्तम रूप संत को साजे॥
स्वर्ग मांहि हरषाने सुर सव मंगल साज समाजे।
वरसत सुमन समूह सवै मिल घन ज्यों नौवत गाजे॥
पोहमी भई प्रफुल्लित सगरी दुख दरिद्र दुर भाजे।
सुकृत उदय भये भक्तन के पूरे सव मन काजे॥
सुन्दरता लखि शुक मुनिवर की कोट काम रति लाजे।
सरस माधुरी के सरवस धन रसिकन के सिरताजे॥

॥ पद राग काफी व आसावरी ॥

आज मैं शुकमुनि दरशन पाया। मेरा मन आनँद मांहि समाया
जाका जस बहु भांति वेदने नेति नेति कह गाया।
सो पुरुषोत्तम संत रूप धर वेदव्यास घर आया॥

पांच तत्व त्रिगुण से न्यारे परम तत्व की काया।
अग्नि होत्र उत्पति हूये माता ने नहिं जाया॥
जाकी ज्योति जगत में जगमग सब ही विश्व समाया।
सचर अचर के अंतरयामी जिन बस कीनी माया॥
काल कर्म गुन आज्ञाकारी त्रिदेवा सिर नाया।
ऋषि मुनि देव दरश को तरसें सो मेरे मन भाया॥
सरस माधुरी कहत जोर कर सुन त्रिभुवन के राया।
देओ महल दंपति पद सेवा करो आपनी दाया॥

॥ पद राग खम्माच व ठुमरी ॥

(गोपालजी ने कृपा करी महाराजा) (नाथ कैसे गज को फंद छुड़ायो.की चाल में)

सुहाई सखी सुंदर आज बधाई।
वेद व्यास को सुकृत सफल भयो शुक मुनि प्रगटे आई॥
कियो सकल ऋषि नार सोहिलो हिल मिल मंगल गाई।
गगन विमान बैठ सुर सब ही फूलन को बरसाई॥
स्वर्ग लोक तें रंभा आई नाचत भाव बताई।
भये प्रफुल्लित भूतल वासी हरष न हृदय समाई॥
संत अनंत सकल जुर मिलके करत महोत्सव माई।
रसिक करत जय जय ध्वनि मुख सों हिये हेत सरसाई॥
भक्ति कल्पतरु करुणा सिंधू त्रिभुवन पति सुखदाई।
आये संतरूप धरि स्वामी पतितन करन सहाई॥

प्रेम परा पद को जो मारग सबहिन दें‌ह जनाई ।
सरस माधुरी कुंज महल में निज जन दें पहुँचाई ॥

॥ वधाई राग सोरठ ॥

वेद व्यास को देवोरी वधाई ।
धन धन रानी मात सुभागी तुमरे कुँवर भयो सुखदाई ॥
श्याम वरन मन हरण रँगीलो रसिक शिरोमणि प्रगटे आई ।
शोभा सदन मदन मन मोहन मनो मनोहर कुँवर कन्हाई ॥
आनन इंदु अनूप प्रकाशत मृदु मुसिकन अमृत वरपाई ।
शीतल किये हृदय संतन के वचनामृत प्या तृषा मिटाई ॥
दशों दिशा में सुख सरसानो दुख निर्मूल भयो समुदाई ।
उदय कियो भागोत दिवाकर सोवत दीनो जक्त जगाई ॥
चारों मुक्ति फिरें संग चेरी रिधि सिधि निरखन को ललचाई ।
सुर नर मुनि दरशन को तरसें ऐसी निधि भागन सों पाई ॥
चार पदारथ वसें चरण में ध्यान किये अघ जांहि नसाई ।
होत पवित्र परस सब तीरथ पद पंकज महिमां अधिकाई ॥
भक्त कल्पतरु करुणा सागर वेद विमल जिनको जस गाई ।
संत रूप अवतार धार प्रभू पतित जनन की करी सहाई ॥
जय जय वानी बोल अमर गन बैठ विमान रहे नभ छाई ।
सुखमा सदन वदन लखि शुक मुनि सरस माधुरी वलि वलि जाई

॥ बधाई राग सोरठ ॥

वेद व्यास के बारे श्री शुक मुनि मतवारे री।
कृष्ण कृपा कर संत रूप धर धरनि पधारे री ॥
वयस किशोर श्याम तन सुंदर रूप उजारे री।
छके प्रेम रस में निश दिन नैंना रतनारे री ॥
महा पुरान भागवत अमृत मुख उच्चारे री।
तक्षक त्रास मिटाय परीक्षित छिन में तारे री ॥
कलियुग में सतयुग विस्तारें जिय निस्तारे री।
मारग मुक्ति सुलभ कर स्वामी पतित उबारे री ॥
चरण दास आचारज के गुरु इष्ट हमारे री।
सरस माधुरी दरस परस कर तन मन वारे री ॥

॥ बधाई राग सोरठ ॥

श्री शुक मुनि महाराज प्रगट भये निरखन चालो री।
मन भायो फल पायो हेली दिन छै बालो री ॥
धूप दीप नैवेद्य और ऋतु फल मँगवालो री।
करो आरतो वार फेर जल इत उत डालो री ॥
चरन प्रछाल लेय चरणामृत भव भय टालो री।
फेर कहां यह औसर आली सुरत सँभालो री ॥

बीन मृदंग सरस सारंगी साज बजालो री।
आनँद रंग उमंग बधाई हिल मिल गालो री॥
प्रीति प्रतीत भाव भक्ति कर तिन्हें रिझालो री।
सरस माधुरी सांवरी मूरति हिये बसालो री॥

॥ बधाई राग ठुमरी ॥

देख सखी शुकदेव महामुनि भूतल में प्रगटाये री॥

सुन्दर श्याम काम मद गंजन, नैंन कमल दल अद्भुत रंजन।
बांकी झांकी भव भय भंजन, मोरे मन अति भाये री॥
सर पर बाल सजे घुँघरारे, अति कारे कटि लों लटकारे।
गोल कपोल नासिका सोहन, लागत परम सुहाये री॥
मंद हँसन है मन को मोहन, वक्षस्थल है अतिशय सोहन।
बाहु विशाल चाल अलबेली, मद गज निरखि लजाये री॥
चरन सरोज सलोने पावन, पतित जनों के पाप नसावन।
ध्यान करत बहु रोग मिटावन, हिय के मांहि बसाये री॥
सखी सरूप धाम में राजें, सेवें जुगल अधिक छवि छाजें।
मारग प्रेम प्रकाशन कारन, श्यामा श्याम पठाये री॥
रस निकुंज जग में विस्तारें, अनगिन जीवन को उद्धारें।
जन्म मरण दुख सबके टारें, आचारज ह्व आये री॥
मिलि है रंग महल में वासा, श्री दंपति की सेवा खासा।
सरस माधुरी हरष निरखि के, मुनिवर के गुन गाये री॥

॥ बधाई राग माँड ॥

सखी री श्री शुकदेव दयाल मुनी म्हांने प्यारो लागे हे ॥

सुन्दर श्याम काम मद मोचन लियो अवनि अवतार।
संतन की रक्षा के कारन जीव करन उद्धार ॥
निरखि मुख दुख सब भागे हे ॥१॥

रस निकुंज विस्तारन कारन आये जक्त मझार।
आचारज ह्वै प्रगटे प्यारे रसिकन के सरदार ॥
भाग हमरे भल जागे हे ॥२॥

सफल फली मन कामना जी नांशे सकल विकार।
उदय भये सुकृत जन्मन के यह निश्चय निरधार ॥
सबहि सुर नर अनुरागे हे ॥३॥

दरशन कर प्रसन्न भये री आनँद बढ़ो अपार।
नाँचत नारी अप्सरा जी गावत मङ्गल चार ॥
ऋषी सब रस में पागे हे ॥४॥

परमानंद परम उज्ज्वल रस रंग महल अधिकार।
सरस माधुरी मिले मया कर दंपति नित्य विहार ॥
यही अविचल वर मांगे हे ॥५॥

॥ बधाई राग खम्मांच

जन्म बधाई बाजे छै।
श्री शुक मुनि प्रगटे सजनी शुभ दिन आजे छै ॥

दशों दिशा में मंगल उमग्यो छवि अति छाजे छै।
वेदव्यास घर घन ज्यों नोवत सुन्दर गाजे छै॥
निरखि रूप अनुपम मुनिवर को रति पति लाजे छै।
ऋषि मुनि मगन भये इह अवसर कियो समाजे छै॥
विप्र वृंद मिल वेद उचारत हिल मिल राजे छै।
सरस माधुरी महा महोत्सव सब सिरताजे छै॥

॥ पद राग सोरठ ॥

सखी री धन्य दिन है आज।
प्रगट भये शुकदेव स्वामी रसिक जनन सिरताज॥
कीजिये हिल मिल मनोहर मुदित प्रेम समाज।
साज सुभग मिलाय वहु विधि बीन ढोलक बाज॥
भाग अपने भल सराहो नचो तज कुल लाज।
पहिर कर भूषन वसन अंग सजो सुन्दर साज॥
उदय सुकृत भये आली गये दुख सब भाज।
सरस लह्यो आनँद भारी रंक पा ज्यों राज॥

॥ पद राग सोरठ ॥

आज उमाहो हेली हिल मिल श्री शुकमुनि को दरशन करस्यां।
निरखि नैंन मुख व्यास सुवन को परमानंद हिये निज भरस्यां॥

जीवन मुक्त जगत उजियारो ब्रह्म रूप तिनके पद परस्यां।
अमरलोक निज धाम बसें नित सहजहि भव सागर ने तरस्यां ॥
श्री राधा वर कुंज विहारी तिनकी कृपा प्रान पति वरस्यां।
सरस माधुरी छवि मुनिवर की हरष हुलस मन मांही धरस्यां ॥

॥ पद राग भैरवी, सोरठ ॥

प्रगटे हैं श्री शुक देव मुनि बाजे हैं रंग बधाईयां।
श्री व्यास को सुकृत उदय ऋषि नारि मंगल गाईयां।
मगन मन माता सुभागी धन्य भाग बड़ाईयां।
चौक मणि मोती पुराये कुंभ कलस धराईयां ॥
द्वार बंदन माल मालन बांध हिये हुलसाईयां।
कलश ध्वज तोरन पताका चहूँ ओर सजाईयां ॥
गगन छाये देव गन बरसे सुमन हरषाईयां।
अप्सरा गंधर्व नृतत साज बाज बजाईयां ॥
भार भूतल को हरन सुख करन जन समुदाईयां।
पतित पावन दीन बन्धु दयाल दरश दिखाईयां ॥
श्याम वरन सरूप सुन्दर निरखि नैंन लुभाईयां।
सरस मूरति माधुरी लखि लाल की बलिजाईयां ॥

पद राग सोरठ, कालंगड़ा, आसावरी व भैरवी।

शुक मुनि देव दया निधि आये।
रंग महल तें रसिक प्रिया पिय प्रेम प्रकाशन हेत पठाये ॥

प्रगट होत ही ऋषि मुनि सब ही निरखन मुनिवर को मिल धाये ।
नैन निहार श्याम सुंदर वपु पुलक प्रेम तन मन तृप्ताये ॥
संत महंत सबहि शोभा लखि स्तुति करत हिये हरषाये ।
शीश नवाय चरण रज वंदत मंगल आनँद बाद्य बजाये ॥
धन धन भाग सराहत अपने भये सकल सखि मन के भाये ।
सरस माधुरी रस के दाता तिनके दरशन कर सुख पाये ॥

॥ पद ॥

(गेंद तक मारी सांवरिया) की धुन में ॥

शुक मुनि श्याम सलोनांरी सखी रूप रिझोनां ॥
श्याम घटा सी जटा सीस पर मुख मयंक समलोनारी ॥
बयस किशोर चोरचित चंचल चितवन में थाके टोनारी ॥
चाल चलत मतवाली आली मनु मराल को छौनारी ॥
निरखि नैंन छबि नार अप्सरा छकी सकल गहि मोनारी ॥
ब्यास दुलारा प्रीतम प्यारा ऐसा हुवा न होनारी ॥
सरस माधुरी रही ठगी सी नांहि सुहावत भोनारी ॥

॥ गजल ॥

क्या मनोहर मूरती, मुनिराज की मन की हरन ।
है सलौनी सोहनी सूरत, अजब श्यामल वरन ॥

चंद सा चहरा प्रकाशित, सर पै घुंघरारी जटा।
छा रही अद्भुत छटा, चहरे पै आनँद की करन॥
प्रेम मतवारे नशीले, नेंन मद्हर मैन के।
नासिका सुंदर मधुर, मुसकन हरन जी की जरन॥
ध्यान इनका जो धरें, संताप और दुख को हरें।
सहज भव सागर तरें, नहीं होवे फिर जीवन मरन॥
परम पावन कंज से, कोमल चरन तारन तरन।
सरस दंपति दरस देवें, जो रहें इनकी शरन॥

॥ राग माँड ॥

ओजी रे म्हारा शुकमुनि प्यारा नीका म्हांने लागो छो मुनिराज

श्याम वरन मन मोहनां गल फूलांरी माल।
भाल तिलक श्री सोहनां सिर घुंघरारे वाल॥
माधुरी मूरत मन हरन सूरत सुंदर श्याम।
या छवि म्हारे मन बसे निस दिन आठों जाम॥
घुंघरारी कारी जटा सुंदर सोहत सीस।
मुख मयंक की छवि छटा मोहत बिस्वा बीस॥
अमरलोक से आप पधारचा धरके संत सरूप।
धर्म चलावन कारनें थे कीनों रूप अनूप॥
जो जन शरन चरन की आवें कर मन में विश्वास।
सरस माधुरी दरशन पावें अमर नगर हो वास॥

॥ पद गजल राग बिहाग ॥

मांगने वाले चलो मांगे दुवा आज की रात ।
प्रगटा महबूब मुनिराज यहां आज की रात ॥
भक्ति का भान उदे आज हुवा व्यास के घर ।
करलो दरशन प्यारे भक्तो चलो आज की रात ॥
सुमेरु बन में खिला प्रेम का गुंचा सोहन ।
झूमती फिरती यहां बादेसबा आज की रात ॥
व्यास आश्रम में प्रगट आन हुवे नंद लला ।
गा रही गान ऋषि नारी यहां आज की रात ॥
हैं मगन मन में महाराज श्री वेद व्यास ।
लेलो जो कुछ जिसे चहिये यहां आज की रात ॥
सबही म्होताज चले आवो गिरि सुमेरु तले ।
सदक़ा हरि नूर का मिलता है यहां आज की रात ॥
दौड़ कर आवो यहां द्वार खुला मुक्ती का ।
पोंहचो निज धाम सरस काम बना आज की रात ॥

॥ ग़जल ॥

जन्मे हैं व्यास के घर बनके मुनी हरि प्यारे ।
नाम शुक श्याम वरन शोभा है अपरंपारे ॥

वर्ष शोडष की वयस चंद्सा मुख है सोहन।
छबि को नैंनों से निरख सबही हुवे मतवारे॥
जीव के उद्धार की उर धार दया कर किरपा।
रूप आचार्य्य हो अवनी में आप अवतारे॥
प्रेमा भक्ती का करें दान कृपा खान हमें।
देवें निज धाम बने काम मिटें दुख सारे॥
सर्स दंपति की हमें बख़शें महल की सेवा।
खास रस रास का सुख देवेंगे जग उजियारे॥

॥ गज़ल ॥

जै जै शुकदेव मुनी व्यास के घर अवतारे।
कृष्ण हैं आप हमें प्रानों से बढ कर प्यारे॥
श्याम सुंदर है वरन मन का हरन मंद हँसन।
सोहनी मोहनी छवि नैंना प्रेम मतवारे॥
सिर पै घुंघरारी जटा श्याम घटा सी छाई।
चंद से मुख की छटा देख छके सुर सारे॥
नारि सुरपुर की निरख रूप हुई बलिहारी।
नाच कर गान सुना तान को तन मन वारे॥
ब्रह्म हो आप परिब्रह्म भी हो आप तुम्ही।
सब में व्यापक हो प्रभु और सबों से न्यारे॥

पूज्य हो सबके जगत के हो तुम्ही आचारज ।
गुरु हो मुनियों के हो रसिकों के प्रान आधारे ॥
दीजे बरदान कृपा खान सरस आप हमें ।
होके निज दास रहें ख़ास चरण के लारे ॥

॥ ग़जल ॥

श्री शुक मुनि का प्रगटाना मुबारक हो मुबारक हो ।
आचारज रूप धर आना मुबारक हो मुबारक हो ॥
छटा मुख चंद की झांकी निराली लख अदा बांकी ।
निरख छवि नैंन बल जाना मुबारक हो मुबारक हो ॥
सरापा श्याम सूरत पर निछावर कर दिया तन मन ।
मदन छबि देखि लज़ियाना मुबारक हो मुबारक हो ॥
दरस मुनिराज का करके दृगन में रूप रस भरके ।
मगन मन मस्त होजाना मुबारक हो मुबारक हो ॥
बजा के बीन सारंगी पखावज की परन चंगी ।
बधाई गान का गाना मुबारक हो मुबारक हो ॥
पुलक तन प्रेम उमगाना नयन जल नेह का छाना ।
निरत कर भाव बतलाना मुबारक हो मुबारक हो ॥
जनम उत्सव का सुख लख के सफल हमने जनम माना ।
सरस हँस फूल बरसाना मुबारक हो मुबारक हो ॥

॥ पद ॥

आज बधावरा माई आज बधावरा ।
धन बैशाख मांस मावस तिथि प्रगटे शुक मुनि साँवरा ॥
आचारज श्री हरि बनि आये वेदव्यास के कुंवर कहाये ।
ऋषि नारिन मिल मंगल गाये चित में सब के चावरा ॥
सुर समूह सब ही चलि आये बैठ विमान गगन में छाये ।
जै जै बोल फूल बरसाये मन में करो उछावरा ॥
इन्द्र अप्सरा सँग ले आये नाच गाय सुन भाव बताये ।
उत्सव देख अधिक मगनाये तन मन कियो नौछावरा ॥
दसों दिशा में आनँद छायो परमानंद प्रेम प्रगटायो ।
सरस माधुरी रस उमगायो उर में उपज्यो भावरा ॥

॥ ग़जल ॥

श्याम तन सतचित घन व्यास के नन्दन प्यारे ।
शुकमुनी राज महाराज प्रेम मतवारे ॥
आये निज धाम से आचार्य रूप धर स्वामी ।
धर्म परचार करन पाप हरन औतारे ॥
माधुरी मन की हरन मूरत सुंदर सूरत ।
सोहनी मोहनी छब देख छके सुर सारे ॥
अप्सरा नृत्त करैं गान में लैं तान नई ।
मंद मुसकान निरख हर्ष के तन मन वारे ॥

धन्य बैशाख है ये माँस बदी तिथि मावस ।
जिसमें प्रगटे हैं हरी ख़ास मनुज तन धारे ॥

संत भक्तों को बतावेंगे महल का मारग ।
पल में पहुंचावें जुगल पास जगत उजियारे ॥

हर्ष आनन्द सरस रस में मगन हैं हरिजन ।
करके परनाम चरन जै जै बचन उच्चारे ॥

॥ ग़ज़ल ॥

शुक मुनि का जन्म उत्सव मनको लुभा रहा है ।
हर तर्फ प्रेम पूरन आनंद छा रहा है ॥

बांका है जो बिहारी रस रास लीला धारी ।
मुनि रूप हो दिगंबर दरशन दिखा रहा है ॥

झांकी परम है प्यारी मन की हरन अपारी ।
रवि चंद मुख पै वारी चित को चुरा रहा है ॥

तन श्याम खूब सूरत श्रृंगार रस की मूरत ।
लख के मदन बदन छवि मन में लजा रहा है ॥

ऐसा हुआ न होना जैसा ये व्यास छौना ।
चितवन में इसके टौना आंखें मिला रहा है ॥

नख सिख है रूप सागर सब विश्व में उजागर ।
नयनों में नित सरस के मुनिवर समा रहा है ॥

॥ राग गरवी ॥

सलोना शुक वेद व्यास लाला ।
म्हारारे स्वामी प्रगट्या छो बाला ॥
श्याम अंग अति सुंदर थांको ।
केश सिर पर सोहैं काला ॥
भाल श्री तिलक सज्यो सोहन ।
नैंन सर मैंन हैं मतवाला ॥
कपोलन अलक कुटिल नीकी ।
नासिका है अति ही आला ॥
मंद मुसकावन मन भावन ।
हँसन में जादू पढ़ डाला ॥
कंठ में कंबु सद्रश रेखा ।
गले में पुष्पन की माला ॥
भुजा आजानु अनूपम हैं ।
उच्च वच्छस्थल छबि जाला ॥
उदर त्रिय रेख त्रिवेनी समान ।
नाभि गंभीर भँवर डाला ॥
केहरी सम कटि अति प्यारी ।
जुगल जंघा कदली वाला ॥
चरण दोऊ अरुण कमल जैसे ।
सरस संतन के प्रतपाला ॥

॥ पद ॥

चलो वेदव्यास दरबार शुकमुनि जन्मे वहां

॥ अंतरा ॥

प्रगट हुये हैं हरी संतरूप धर अवतार ।
है श्याम अंग साक्षात मानो नंद कुमार॥
प्रकाश मान है मुख चंद सा अजब मनहार ।
विशाल भाल है नयनों में भरा प्रेम अपार॥
अनुपम उनका है दीदार ॥ शुक० ॥

ललित कपोलों पै हैं जुलफें छुटी छल्लेदार ।
सुढार नासा है और सरपै हैं घुंघरारे बार ॥
वह मुख की मंद हँसन जादू सा पढ़ देवें डार ।
रसीली चितवन को देख के न रहै नेंक क़रार॥
हमारा है जीवन प्राण अधार ॥ शुक० ॥

है नख से शिख लों अजब जिस्म जिनका सजधज दार ।
मानों विधना ने रचा हाथ से सांचे में ढार॥
माधुरी मनकी हरन शोभा छाई अपरम्पार ।
जो देखता है वही देता है तन मन धन वार॥
सरस मुख जय जय कहै बलिहार ॥ शुक० ॥

॥ ग़ज़ल ॥

गावोरी मंगल बधाई आली जनम का दिन आज शुकमुनी का।
करो महोत्सव सकल सहेली परम है प्यारा हमारे जी का॥
रचोरी आश्रम के द्वार स्वास्तिक सजावो सुंदर सदन सुहावन।
बजावो बाजे मृदंग बीना मिला है औसर हमें ये नीका॥
करोरी दरशन दृगन सें सारी नचोरी छवि लख बजावो तारी।
सलोनी सूरत पै जावो वारी लखोरी मुख सब रसिक पती का॥
जो इनको ध्यावें वो धाम जावें जुगल बिहारी का दर्स पावें।
महल में सेवा को कर लडावें होवे मनोरथ सफल सभी का॥
सरस आचारज रूप धारन किया है स्वामी जगत को तारन।
धरम प्रचारन पतित उबारन अधम उधारन है प्रन जती का॥

॥ ग़ज़ल ॥

प्रगट हुवा है परम मनोहर जगत का जीवन ये व्यास लाला।
है श्याम सुंदर सरूप इसका सलोना मानों मदन गुपाला॥
जटा हैं घुंघरारी कारी सिर पर है चंद सा मुख आनंद कारी।
अलक कपोलों पै छूटी न्यारी रसीली चितवन से जादू डाला॥
है चोर चित का किशोर मूरत मदन मनोहर है प्यारी सूरत।
हुवा न होना नहीं है ऐसा रसिक आचारज जगत उजाला॥
शरन में इनके जो जीव आवें जुगल बिहारी जिन्हें मिलावें।
अमर नगर में उन्हें बसावें हैं ये दया निधि परम कृपाला॥
दिखावें दंपति की नित्य केली बसें महल में बनें सहेली।
सरस परस पर हो मन की मेली निरख के छबि नैंन हो निहाला॥

॥ पद रसिया ॥

तेरो सुन्दर श्याम सरूप शुक मुनि मन को मोहन हार ॥
नख सिख सोहन विश्व विमोहन मानों नंदकुमार ।
प्रेम भरी मद मांती चितवन भई कलेजे पार ॥
मंद हँसन मन हरन तुम्हारी जीवन प्रान आधार ।
निरख छकीं सुर नारी सारी तन मन दीने वार ॥
मदन मनोहर सूरत तेरी मूरत रस शृंगार ।
स्वर्ग अप्सरा सकल मगन भई दई मोहनी डार ॥
भक्तन के मन भावन हो तुम संतन के सरकार ।
प्रेमिन के प्रीतम हो प्यारे रसिकन के रिझवार ॥
निस दिन बसो दृगन में मेरे आचारज अवतार ।
सरस माधुरी शरण तुम्हारी विनवत वारंवार ॥

॥ पद ग़जल ॥

शुक मुनि छटी का उत्सव अति ही आनँद कारी ।
ऋषियों की नारि हिल मिल गावें वधाई सारी ॥
नांचे कोई नवेली कुल लोक लाज पेली ।
सुंदर सकल सहेली हँसि हँसि बजावें तारी ॥
शुक लाल दर्श करके नैनों में रूप भर के ।
जै जै धुनी उचर के जावें लला पै वारी ।
आये अमर नगर से मुनि रूप धार मोहन ।
है श्याम रूप सोहन शोभा भई है भारी ॥

आचार्य हो जगत गुरू गावेंगे भागवत को ।
सुनके नृपत परीक्षित पावैं जुगल बिहारी ॥

कलि मल कलेश टारन कीना है रूप धारन ।
हरिं भक्ति को प्रचारन आये जगत मँझारी ॥

इनकी शरन जो आवें निज धाम को वो जावें ।
सेवा सरस महल की सौंपैं स्वजन निहारी ॥

॥ दोहा ॥

सव उत्सव से है छटी, छटी शुक मुनी नाम ।
नवल वधाई गा रहीं, ऋषि पत्नी अभिराम ॥

॥ राग सोरठ ॥

सुन सखी शुक मुनि की छटी ।
दिना छै के भये मुनिवर दिन वढ़े निशि घटी ॥
गावें ऋषि नारी बधाई नचें नट अरु नटी ।
पान अरु मिष्ठान मेवा महोत्सव में वटी ॥
स्वर्ग रंभा भई भेली दरस दृग चटपटी ।
सरस दरशन कर मुदित भई विरह विपता कटी ॥

॥ ग़जल धुन नाटक ॥

वेदव्यास के बधइयाँ छाय रही रे ॥

प्रगट हुआ है प्रान धन शुकदेव लाल है ।
मुख चंद सा मनोहर दिलकश जमाल है ॥

मूरति किशोर चित की चोर अति रसाल है।
रसिकों का प्रान प्यारा अति ही कृपाल है॥
मैं तो लख के सुरतिया लुभाय रही रे॥ वेदव्यास०॥

सर पर हैं श्याम चिकने सुंदर सलौने बाल।
केसर का श्री तिलक है शोभायमान भाल॥
नैंना हैं अति नुकीले जिनमें हैं डोरे लाल।
नासा सुढार मंद हँसन है छवी का जाल॥
मेरी गति मति इसी में फँसाय रही रे॥ वेदव्यास०॥

श्रृंगार रस की मूर्ति है शुक मुनी का रूप।
सुर नारी अप्सरा गन निरखें खड़ी सरूप॥
ललचाय रति रही है देखी है छवि अनूप।
लज्जित हुये हैं अति ही मन में मदन से भूप॥
प्यारी सूरत हिये में समाय रही रे॥ वेदव्यास०॥

श्री भागवत पुरान मुनी मुख से गायँगे।
मारग अनूप प्रेम का स्वामी बतायँगे॥
इनके चरण के ध्यान में जो चित लगायँगे।
पर धाम श्यामा श्याम सेवा निश्चय पायँगे॥
सरस माधुरी मुनीरा शरण आय रही रे॥ वेदव्यास०॥

॥ राग मांढ ॥

होजी हो म्हारा शुकमुनि प्यारा व्यास का दुलारा म्हां का राज ॥
श्याम सुंदर सम सोहनां जी सुन्दर परम सुजान ।
रसिकांरा मन मोहना जी म्हांका जीवन प्रान ।

हो जी हो अँखिया रा तारा मंडन संत समाज ॥१॥
स्वयम् आप हरि ने धर्यो जी आचारज शुभ रूप ।
सुर नर सब सेवा करें संत शिरोमणि भूप ॥

होजी हो प्यारा जग उजियारा मुनियांरा सिरताज ॥२॥
परम हंस चूड़ामणी जी भगवत धर्म जहाज ।
नृपति परीक्षित तारिया जी कीना पूरन काज ॥

हो जी हो थे इष्ट हमारा म्हांकी थांने लाज ॥३॥
नैंनां में म्हांके बसो जी हिये विराजो आन ।
सरस माधुरी आप पर जी वारत तन मन प्रान ॥

हो जी हो म्हां पे किरपा कीजो दरशन दीजो आज ॥४॥

॥ ग़जल ॥

हुवे प्रगट श्री शुकमुनि बधाई है बधाई है ।
हुवा आनंद त्रिभुवन में बधाई है बधाई है ॥

श्री मत व्यास के नंदन रसिक जन भक्त चित चंदन ।
आचारज रूप नँद नंदन बधाई है बधाई है ॥

सलोनी सांवली सूरत मनोहर माधुरी मूरत ।
निरख नैना छके छवि में बधाई है बधाई है ॥
सफल माना जनम हमने दरस करके हुवा खुश दिल ।
मिलेगा कुंज रस हम को बधाई है बधाई है ॥
मिलावेंगे जुगल हमको बसावें वास वृन्दावन ।
हमारे भाग हैं धन धन बधाई है बधाई है ॥
परम उत्साह छाया है महोत्सव मन में भाया है ।
अजब आनंद पाया है बधाई है बधाई है ॥
सरस छवि माधुरी निरखें अमर गन हिये में हरषें ।
सुमन आकाश से बरसें बधाई है बधाई है ॥

॥ बधाई राग खमांच

शुक मुनी महा प्रभु स्वयम् आप श्याम हैं ।
प्रगटे महाराज आज वेदव्यास धाम हैं ॥
आचारज रूप धार करें प्रेम का प्रचार ।
तारें संसार सकल ऐसे गुन ग्राम हैं ॥
सत चित आनंद रूप मूरति मन हर अनूप ।
निरख के सरूप लजित कोटि रती काम हैं ॥
दीन बंधु हैं दयाल करुणा सागर कृपाल ।
करत हैं निहाल देत सेवा अष्ट जाम हैं ॥
संसृति संताप हरन मेट देत जन्म मरन ।
सरस माधुरी शरण करत पद प्रणाम हैं ॥

॥ पद ॥

आज भलो दिन धन्य घरी प्रगट हुवे शुकदेव हरी ॥

व्यास मनोरथ पूरन कीनो, पुत्र होय तिनको सुख दीनों।

आचारज हो कृपा करी ॥१॥

कलियुग में सतयुग विस्तारन, प्रेम भक्ति को करन प्रचारन।

मुनिवर अनुपम देह धरी ॥२॥

नृपति परीक्षित कथा सुनावें, श्री भागोत कृष्ण गुण गावें।

प्रेम पियूष लगावें झरी ॥३॥

जो जन सुनें श्याम गुन गाथा, जन्म मरन मिट होंय सनाथा।

पावे वासा अमर पुरी ॥४॥

परम धाम सँग प्रीतम प्यारी, सेवा कर सुख लूटें भारी।

सरस माधुरी रंग भरी ॥५॥

॥ गजल ॥

शुक मुनी राज जनम दिन का ये जलसा भारी।

जै जै बलिहार रहे बोल सकल नर नारी ॥

अप्सरा स्वर्ग की गाती हैं सभी प्रेम भरी।

नांचती भाव बताती हैं बजा कर तारी ॥

लख के शुकलाल का मुख मोही रती और अनंग।

चंद से मुख को निरख भूले हैं सुध बुध सारी ॥

कृष्ण करतार दया धार बनें आचारज।
तारें संसार के जीवों को करें भव पारी॥
देवें निज धाम जिन्हें शरण आवें में जो जीव।
सर्स दंपति की मिले सेवा सहज सुखकारी॥

॥ सारठ ॥

वेद्व्यास के दुलारे प्यारे शुक मुनी सिरताज।
हुवे आप ही आचार्य रूप कृष्ण महाराज॥
लिया अवनी अवतार करें प्रेम का प्रचार।
करें भक्ति नर नार तुमें सब की है लाज॥१॥
देवें जुगल नाम दान करें जक्त का कल्यान।
दया कृपा के निधान सारो संतों के काज॥२॥
चरण शरण में जो आवें परा भक्ती को पावें।
श्यामा श्याम को लडावें करें हिल मिल समाज॥३॥
इष्ट मिष्ट हो हमारे तन मन ये तुम पै वारे।
सरस माधुरी मनोरथ सारे पूरे हुवे आज॥४॥

॥ दोहा ॥

श्री शुक मुनि राजवर, आचारज अवतार।
भूतल प्रगटे आप हरि, भक्ती करन प्रचार॥
भव सागर के तरन को, श्री भागवत पुरान।
कही परीक्षित हित प्रभू, धर्म जहाज़ बखान॥
पढ़ें सुनें कर प्रेम जो, पोंहचें पद निरवान।
सरस माधुरी छबि लखें, रहैं ध्यान ग़लतान॥

॥ पद ॥

व्यास जू सुकृत कौन सो कीनो ।

ताके किये जगत पति तुम को यह सोहन सुत दीनो ॥

सुंदर श्याम कमल दल लोचन प्रेम माँहि रंग भीनो ।

शोडष वर्ष किशोर चोर चित मनहु कृष्ण सम चीनो ॥

विधि हरि हर हरषे मन माँही लखि के रूप नवीनो ।

सरस माधुरी शुक प्रगटत ही छयो लोक सुख तीनो ॥

॥ पद ॥

व्यास जू तुम सम धन्य न और ॥

प्रगट भयो तुमरे घर लालन सकल मुनिन सिर मौर ॥

श्याम अंग शोभा निधि सुंदर रसिकन को चित चोर ॥

घुंघरारे वर बार वदन विधु अद्भुत वयस किशोर ॥

कमल नैंन मृदु बैंन मनोहर केसर चंदन खौर ॥

सरस माधुरी छवि कों लखि के मुदित भयो मन मोर ॥

॥ ढाढी की बधाई ॥

ऋषि पराशर कुल को ढाढी शुक मुनि जन्म सुनत हरषायो ।

वेद व्यास महाराज सदन में देन बधाई को उठ धायो ॥

धन धन धन श्री मात सुभागी ह्वै मन मुदित सोहिलो गायो ।

सुन वंशावलि श्री द्वैपायन दियो दान सनमान सवायो ॥

भूषन वसन अमोल मँगाये प्रीति सहित ताको पहिरायो ॥

सरस माधुरी कियो अयाचक नौधा भक्ति अभय पद पायो ।

॥ बधाई ढाढन ॥

हूँ ढाढन श्री व्यास तिहारी पुत्र जन्म सुन धाई आई ।
सफल मनोरथ श्री पति कीनों लै हूँ तुम से हरप बधाई ॥
कृष्ण कला पूरन पुरुषोत्तम प्रगट भयो सुंदर सुख दाई ।
ज्ञान ध्यान जो कुछ तुम कीनो ताको फल ऐसो सुत पाई ॥
प्रेम परा भक्ती को मारग जग में सब को देंहि बताई ।
जीव अनंत उबार जक्तसों परम धाम में देंहि पठाई ॥
मुनियन में सिरताज रसिकवर तिन को दरशन कर सुख पाई ।
सरस माधुरी कुंज महल की मिल हैं टहल जुगल सुखदाई ॥

॥ पद ॥

मोहि निज घर को ढाढी जान ॥
लाल जन्म सुनि जाचन आयो सुनो व्यास भगवान ॥
प्रेम भक्ति में लेहों बधाई देहु दया कर दान ॥
सरस माधुरी निरखों शुक मुख यह निश्चय मन मान ॥

॥ बधाई ढाढिन ॥

ढाढन नांचे रंग भरी नांचे नांचे रे वेद व्यास दरबार ॥१॥
श्री शुकदेव महा प्रभु प्रगटे रसिकाचारज नर तन धार ॥२॥
नव निकुंज रस की लीला को दरशावें कर कृपा अपार ॥३॥
उदय करें भागवत दिवाकर दूर करें भय भ्रम अंधियार ॥४॥
गावें गुन राधा गोविंद के बृज वनितन को नित्य विहार ॥५॥
जन्म बधाई सुन मैं आई तज के धाई सब घर बार ॥६॥

नख शिख लों पहरूँगी वस्तर सारी लहँगा ज़री पल्लेदार ॥
ज़ेवर जटित जवाहर जगमग अरु लेउँगी मैं मोतिन को हार ॥
पचमनिया पचलरी रतन की नथ नई लेऊँगी मैं झलकेदार ॥
पायल पायजेब पग बजनी बिछिया अनवट बड़े मज़ेदार ॥
सरस माधुरी मनसा मेरी पूरन करो भरो भंडार ॥

॥ बधाई, (राम रंग बरसेगो की चाल में) ॥

श्री वेद व्यास दरबार बधाई बाजे आज भली
हां हां बधाई बाजे आज भली ॥

श्री कृष्ण करुणा कर आये द्वै पायन के कुँवर कहाये।
हिल मिल के ऋषि नार करें रस रंग रली ॥
कोई नाचे कोई गावे कोई भली विधि भाव बतावे।
जय जय कहें बलिहार अनेकन आय अली ॥
जान सु अवसर परम सुहायो संतन प्रेम समाज रचायो।
पायो परेमानंद खिली हिय कमल कली ॥
केसर रंग उमंग भराये चोवा चंदन अतर मँगाये।
सब के अंग लगाय छिरक दिये डगर गली ॥
कृपा करें श्री शुक मुनि राई जुगल विहारी देंहि मिलाई।
सरस माधुरी बेलि मनोरथ सुफल फली ॥

॥ बधाई राग कान्हरा ॥

हमारे आज बधाई भारी।
प्रगट भये शुकदेव महा प्रभु आनँद मंगल कारी ॥

भूषन वसन साज घर घर ते जुर आईं ऋषि नारी ।
व्यास भवन में आय चाव सों नाचत दे कर तारी ॥
गावत गीत प्रीति प्रगटावत भई प्रेम मतवारी ।
लालन को लखि रूप अनूपम बोलत मुख वलिहारी ॥
मणि माणिक न्यौछावर करके राई नोंन उसारी ।
जुग जुग जीवो वेदव्यास सुत सरस असीस उचारी ॥

॥ वधाई ॥

व्यास जू के प्रगटे सुत सुखदाई ।
सुंदर श्याम वरन मनमोहन चंद्र वदन छवि छाई ॥
घुंघरारे सिर बाल सलोंने अलक कपोल सुहाई ।
कमल नयन नासा अति नीकी मंद मंद मुसकाई ॥
नवल किशोर चोर चित प्यारे अँग अँग सुंदरताई ।
पद पंकज की शोभा लखि के मन मधुकर मगनाई ॥
नाम जपें शुक मुनि जो मुख से संकट कोटि नसाई ।
ध्यान किये तें कलिमल सारे सहजहि जात बिलाई ॥
मिलें मयाकर कुंज विहारी कृपा करें मुनिराई ।
सरस माधुरी हिये हरष के गाई जन्म बधाई ॥

॥ बधाई चाल रसिया ॥

बधाई बाजे रंग भरी श्री वेदव्यास दरबार ।
कृष्ण निज करुणा करके अरी कि प्रगटे मुनिवर को वपु धार॥

नाम शुक सखी रंग महल में,
अरी कि भूतल भेजी जुगल सरकार।
ऋषि मुनि मन में मगन भये सब,
अरी कि उत्सव कीनो जन्म अपार॥
धुजा पताका तोरन रोपे,
अरी कि द्वारे बांधी वंदन वार।
आय अप्सरा नृतन लागीं,
अरी कि गावें हिल मिल मंगलचार॥
बैठ विमान गगन सुर छाये,
अरी कि कर रहे फूलन की बौछार॥
मागध सूत भाट वन्दी जन,
अरी कि पावत दान मान सतकार॥
देत असीस सकल हिय हरषत,
अरी कि जुग जुग जीवो शुकदेव कुमार।
सरस माधुरी लख लालन छवि,
अरी कि बोलत मुख जय जय बलिहार॥

॥ राग विहाग ॥

लाल तेरो सुखी रहो जिजमान।
तेज प्रताप रैंन दिन प्रगटो सुनों व्यास भगवान॥
शुक मुनि कुँवर सदा चिरजीवो संतन को सुख दान।
आचारज सिरमौर जगत गुरू रसिक जनन को प्रान॥
सुख सों रहो सुवन यह तुमरो जब लों जग शशि भान।
सरस माधुरी मूरति मुनिवर अतुलित कृपा निधान॥

॥ पद असीस ॥

व्यास तेरो चिरजीवो शुकदेव।

बढो सुजस जग में दिन दूनों यह असीस सुन लेव।
सकल मुनिन सिरमौर रसिकवर लहे न कोऊ भेव।
वसे दृगन छवि सरस माधुरी यही सोहि वर देव॥

॥ पद असीस ॥

व्यास तेरो सुखी रहो सुख लाल।

वयस किशोर बनी रहो नितही नहात खसो जि न वाल॥
तेज प्रताप अधिक पर पूरन संतन को प्रतपाल।
जगमग रहो जगत में महिमा सूरज सम सब काल॥
सुंदर श्याम काम मद सोचन चितवनि नैंन विशाल।
सरस माधुरी मूरति मुनिवर निरखत भयो निहाल॥

॥ श्री शुक सखी यूथेश्वरी जू को ध्यान मंगल छंद ॥

जयति जयति शुक सखी सरस अभिरामनी।
यूथाधिप रस भरी अलिन की स्वामिनी॥
युगल अंगजा अति अनूप वपु रावरो।
प्रीतम के उनहार सुहावन साँवरो॥
सुहावन अति सांवरो षोडष बरष रसनिधि महा।
परम पूरन प्रेम प्रमुदित छवि अतुल कहिये कहा॥
दीजिये युग चरण रति रखिये निकट नव कुंज में।
सरस रस की माधुरी हिल मिल रहै अलि पुंज में॥

॥ छंद ॥

जयति जयति शुक सखी शरन निज राखिये ।
मेरे अवगुन अमित न चित अभिलाखिये ॥
पतितन पावन विरद अपन प्रति पारिये ।
अधम उधारन वान न भूल विसारिये ॥
भूल नाहि विसारिये आश्रित चरन निज शरन को ।
देहु युगल मिलाय तुम मेटो विरह दुख जरन को ॥
कान दे सुनिये विनय पूरन करो मन आस जू ।
सरस कर सेवा प्रिया पिय रहे तिनके पास जू ॥

॥ छंद ॥

जयति जयति शुक सखी लखी तुम सम नहीं ।
भई न है नहि होई और त्रिभुवन मही ॥
शुकाचार्य वपु धार परीक्षित तारियो ।
भगवत धर्म सनातन जग विस्तारियो ॥
विस्तारियो जग जस सरस रस बृज बधू वरनन कियो ।
प्रेम पंथ प्रवर्त कर परधाम पद जीवन दियो ॥
श्रवन कर भागवत जस जीवन लह्यो निज धाम को ।
सरस रस की माधुरी नित लखत श्यामा श्याम को ॥

॥ छंद ॥

जयति जयति शुक सखी सुनो वलि कान दे ।
जुगल लाडिली लाल प्रेम प्रिय दान दे ॥

रहों सदा ग़लतान ध्यान आनँद भरी ।
गाऊँ लीला ललित लगाऊँ रस झरी ॥

लगाऊँ रस की झरी सुनि रीझ पिये प्यारी जबे ।
देंहि अधरामृत प्रसादी पाय प्रमुदित हों तबे ॥

सरस रस की माधुरी मांती रहों रस रंग में ।
करों सिवकाई सदाई आप परिकर संग में ॥

॥ इति ध्यान मंगल संपूर्णम् ॥

॥ बधाई राग मूँगा ॥

सखी सब आवो बजावो गावो बधाई म्हारे आज भली
एरी हां बधाई म्हारे आज भली ॥

सखी री रंग महल तें आई प्रगटाई शुक देव अली एरी हां॥
सखी री श्यामाँ श्याम पठाई करेंगी रस रंग रली एरी हां॥
सखी री धर आचारज रूप कुंज सें सुघर चली एरी हँा ॥
सखी री रसिकन को अपनावें मिलावें दोऊ लाल लली एरी हां॥
सखी री निरख रूप रस भूप खिली हिय कमल कली एरी हां ॥
सखी री धन निज भाग विचारो निहारो छवि प्रान पली एरी हां
सखी री सरस माधुरी वारी हमारी मन आस फली एरी हां

॥ राग सोरठ ॥

सखी री आज की धन्य घरी।

प्रगट भई यूथेश्वरी शुक अली आनँद भरी ॥

घटा प्रेम उमंग छाई लगी अमृत झरी।

भाव अंकुर उग्यो अद्‌भुत बेलि मनसा फरी ॥

मधुर फल रस पान कीनो कृपा सत् गुरु करी।

सरस माधुरि मगन मन शुकदेव छवि उर धरी ॥

॥ राग सोरठ ॥

सखी री आज दिवस पुनीत।

प्रगट भई शुक अली स्वामिनि जुगल की निज मीत ॥

शुकाचारज नाम जगमें धरयो रूप अतीत।

प्रेम पंथ प्रवर्त करि हैं करो सत्य प्रतीत ॥

कीजिये सब सोहिलो मिल गाय मंगल गीत।

नचो नाना गति सु ले ले तजो तन मन भीत ॥

मिले नित्य निकुंज सेवा यथा जैसी रीत।

सरस रस की माधुरी छवि छको होय नचीत ॥

॥ मलार, दादरा, सारंग ॥

जय जय शुक स्वामिनी निकुंज की निवासनी ॥

रूप की सलौनी अति लोनी ललना अनूप,

जुगल रसिक भूप कुंज केलि की प्रकाशनी ॥

वय किशोर भामिनी सुसेव्य कंत कामिनी,
श्री राधे गुन गामिनी सुमंद मंद हासनी ॥
रास के विलासी रस रासी संग रहत सदा,
प्रीति सहित सेवा करत दंपति उपासनी ॥
सरस माधुरी सुजान सुनिये करुणा निधान,
दीजे रस भक्ति दान वृन्दावन वासनी ॥

॥ सोरठ, मलार, सारंग ॥

श्री शुक सखी नाम सुखदाई ॥

निश्चय मिले निकुंज महल सुख रटिये रसिक प्रीति लौ लाई ॥
पहुँचे जाय जुगल परिकर में दंपति ताहि लेंहि अपनाई ॥
सरस माधुरी छवि नित निरखे लाल लाडिली लेइ रिझाई ॥

॥ भैरों, भैरवी ॥

जय जय शुक सहचरी सलौनी गुन रासी ॥
श्याम सदृश रंग अंग रहत प्रिया संग संग,
मुदित मन उमंग रसिक राधिका उपासी ॥
राधा गुन गान बान राधा ही जिवन प्रान,
राधा को ध्यान संग राधिका विलासी ॥
राधा मुख चंद की चकोरी निशि भोरी तुम,
राधा मुसकान मंद अमृत की प्यासी ॥

सरस माधुरी सुजान दीजे रस कुंज दान,
जानो निज मोहि चरणदासिन की दासी ॥

॥ भैरवी, सोरठ विहाग ॥

श्री शुक सखी की बलिहार ॥
श्याम सुंदर अंग जिनको कृष्ण के उनहार ॥

श्याम सों श्यामाँ बनी तुम रसिक अति रिझवार ।
देख तुमको मुदित प्यारी करत पिय सम प्यार ॥
रहत हो नित संग राधे करत केलि अपार ।
रास रंग विलास बिलसत देत तन मन वार ॥
गुप्त मंजु निकुंज लीला करत युग सरकार ।
तुम बिना अलि और को तहां है नहीं अधिकार ॥
नेंक करुणा कर कृपा निधि दया दृष्टि निहार ।
सरस रस की माधुरी को देहु नित्य विहार ॥

॥ भैरवी, सोरठ, विहाग ॥

लेवो मोहे शुक सखी अपनाय ।
त्राहि त्राहि पुकार टेरत परूँ तुम्हरे पाय ॥
करो ऐसी कृपा स्वामिनि जुगल देहु मिलाय ।
रहों तिनके संग नित ही सेऊँ हिय हुलसाय ॥
तुम बिना मन को मनोरथ कौन पुरवे आय ।
सरस दोउ कर जोर विनवत जन्म बीत्यो जाय ॥

॥ राग सारंग दादरा व ठुमरी ॥

श्री शुक सखी भजे सुख पावे।

बिन सुख भजन नहीं सुख सपनें मन तू समझ अंत मत जावे॥
बिन सुख शरन कोट विधि कोउ कबहु न ठौर ठिकानो पावे।
सुख को छाड़ चहै सुख कोऊ सब में सो नर मूढ़ कहावे॥
सुख सागर गंभीर परम शुचि तामें प्रेम सहित जो नहावे।
दुख निर्मूल होत ताही छिन सुख ही सुख सब दिशि दरसावे॥
स्वःसुख बृज बनितन को जीवन तत्सुख निज निकुंज छवि छावे।
सुख सों परे परत्व नहीं कुछ सद् ग्रंथन मांही झलकावे॥
कुंज केलि सुख रास रंग सुख सबही में सुख मुख्य कहावे।
सुख आधार सकल लीला रस यह रस रीति रसिक कोउ पावे॥
लौकिक और अलौकिक दोऊ सब जग सुख ही को ललचावे।
टहल महल सुख प्रेम प्रीति सुख परा परम सुख ही सरसावे॥
सुख सिद्धान्त सर्व पर कहियत नेति नेति कर वेदहु गावे।
सरस माधुरी उज्ज्वल रस सुख श्री सतगुरु बलदेव बतावे॥

॥ राग कालंगड़ा, पीलू, वरवा ॥

जय जय श्री शुक सखी सुहावन॥

दंपति संग रंग सों राजत जीवन मूरि जुगल मन भावन॥
लाड़ लड़ावत लाल लड़ैती छिन छिन रहस रंग उपजावन॥
सरस माधुरी शरन सलौनी कुंज केलि लीला दरसावन॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

श्री शुक सखी परम सुखदायक।

प्रेम परा पद देत दयाकर जो जन नित प्रति रटत सुभायक ॥

मंगल करन अमंगल नाशन रसिक जनन के सदा सहायक।

सरस माधुरी रस प्रमोद प्रद मेटत शूल सकल जग मायक॥

॥ आरती ॥

आरती कर शुक चरन अली की। प्यारी श्यामा छैल छली की।

श्यामल गौर किशोर शुभगतन नखशिख भूषन भांति भली की॥

कुंज महल बासिन सुख रासिन मुख मृदु हासिन कंज कली की।

शरन चारु चिंतामणि चिंतत मिलत मौज रस रंग रली की॥

निरखे केलि सुरति निशि बासर दंपति संपति लाल लली की।

सरस माधुरी छवि पर वारी बलिहारी बिब प्रेम पली की॥

॥ पद ॥

श्री शुक चरन शरन जो आये॥

सोई सुकृती सज्जन सर्वोपरि मुनिवर के मन भाये॥

सफल करी नर देह आपनी धन धन लोक कहाये॥

सरस माधुरी श्री मत दम्पति अपने प्रियतम पाये॥

॥ राग रसिया ॥

तेरी सुंदर छवि सुखदाई, शुक मुनि नैनन मांहि बसाई॥

(अंतरा)

श्याम वरन मन हरन तुम्हारो अँग अँग सुँदर ताई।
रूप दिगंवर धारो प्यारो अनुपम आप कन्हाई॥
सीस जटा घुंघरारी कारी शोभा कही न जाई।
मुख मयंक परिपूरन प्यारी रूप चांदनी छाई॥
नैंन कमल दल नेह भरे नासाह परम सुहाई।
मंद हसन मोहत सब के मन चितवन चंचलताई॥
भुज आजानु निरख मन हरषो नाभि परम गहराई।
त्रिवली उदर त्रिवेणी मानो कटि कोपीन लगाई॥
चरण चारु चिंतामणि जैसे नख दुति दमक महाई।
सरस माधुरी के सरवस धन तिनमें सुरति समाई॥

॥ पद ॥

(तमाशा की चाल में)

इष्ट हमारा प्यारा आप छो शुकदेव मुनीश्वर।
इष्ट हमारा प्यारा प्रभुजी अमरलोक से आया।
वेदव्यास घर प्रगट हुआ जी आचारज कहलाया।
ब्रह्मरूप व्यापक हो सारे तुम्हें न व्यापी माया जी ॥शुक॰॥
नृपति परीक्षित मुक्त कियो तुम तक्षक त्रास मिटाई।
सात दिवस भागवत सुनाकर दियो हरिधाम पठाई।
हो सर्वज्ञ नियंता सब के महिमा जग में छाई जी ॥शुक॰॥

श्याम चरण के दास शिष्य कर भगवत धर्म चलाया।
कलियुग में हरि भक्ति प्रचारी सतयुग कर दरसाया।
ज्ञान उदय कियो भान आपने सोवत जक्त जगाया जी॥शुक.॥

महा मुनीश्वर जक्त गुरु तुम रसिकन के सरताज।
ऋषियन में हो परम ऋषिश्वर मंडन संत समाज।
भक्तन के मन भावन हो तुम भगवत धर्म जहाज जी॥शुक.॥

जो जन जग में प्रेम प्रीत कर तुमरो ध्यान लगावें।
नाम जपें निश वासर मुख से जुगल जिन्हें अपनावें।
सरस माधुरी शरण तुम्हारी सेवा महल की पावें जी॥शुक.॥

॥ पद ॥

स्वयम् श्री कृष्ण शुक मुनि हो आचारज जग कहाये हैं॥
परम उज्ज्वल जुगल रस कुंज का रासिकों को लाये हैं॥

पिलावें भागवत अमृत परीक्षित को कृपा कर के।
प्रचारन प्रेम की महिमां प्रभू भूतल में आये हैं॥

उपासन नाम लीला धाम अरु हरि रूप की दे के।
शरन में आये हैं जो जन उन्हें दम्पति मिलाये हैं॥

सुनाके भागवत सब को पतित पावन करें अनगिन।
दया कर के अधम अति ही परम पद में पठाये हैं॥

यशोदा नंद गोपी ग्वाल सँग गोपाल प्यारे नें।
चरित्र जग में किये जितने उन्हें गा के सुनाये हैं॥

सनातन धर्म भगवत का प्रगट सूरज किया स्वामी।
पड़े सोते अविद्या में जिन्हें हित कर जगाये हैं॥
लगन जीवन जुगल में जो मगन दरशन के अभिलाषी।
उपासी श्याम श्यामा के सरस छबि में छकाये हैं॥

॥ पद ॥

आचारज श्री शुकदेव हमारे।
स्वयम् कृष्ण करुणा के सागर वेदव्यास के वारे॥
रामानुज निम्बारक माधव विष्णु स्वामि वपु धारे।
एक सों होत अनेक रूप प्रभु भगवत धर्म प्रचारे॥
श्रुति पुराण कवि कोविद् जिनकी महिमा वरनत हारे।
सरस माधुरी सब में व्यापक अरु सबहिन से न्यारे॥

॥ पद ॥

श्री शुक स्वयम् कृष्ण सुख रासी।
आचारज हो अवनि अवतरे अमरलोक के बासी॥
सुन्दर श्याम काम मद मोचन माया जिनकी दासी।
सरस माधुरी महा मधुर रस देत निकुंज बिलासी॥

॥ पद ॥

जै जै शुक मुनी मन हरन।
पतित पावन दुख नशावन अधम जन उद्धरन॥
श्याम अंग अनंग छबि हर कृष्ण के से वरन।
रसिक जन मन मोद कारी कुंज रस हिय भरन॥
भक्त त्राता प्रेम दाता द्वंद संकट दरन।
सरस श्री दंपति मिलावें रखें अपनी शरन॥

॥ राग सोरठ ॥

शुक मुनि मूरति की बलिहारी सांवरी सुंदर सूरत प्यारी ॥

शरद चंद मुख मदन मनोहर सीस जटा घुंघरारी ।
नैंन विशाल प्रेम मदमाते मंद हँसन पर वारी ॥

ललित कपोल गोल अति लौंने अलकें छुट रहि कारी ।
श्रवन नासिका है अति नीकी चित्त चुरावन हारी ॥

कंबु कंठ उन्नत वक्षस्थल त्रिवली उदर मँझारी ।
कृसि कटि केहरि मान विमर्दन जंघा अधिक सुढारी ॥

पिंडली परम पुनीत सुहावन गोल गुल्फ़ रुचिकारी ।
चरण अरुण पंकज सें शोभित मन मधुकर सुखकारी ॥

श्याम सुअंग अनंग लजावन रूप राशि छवि भारी ।
जो जन ध्यान धरें उर अंतर पावें प्रेम अपारी ॥

नख शिख सोहन विश्व विमोहन रसिकन प्राण अधारी ।
सुर नर मुनि जन छके निरख छवि शोभा अपरंपारी ॥

जन्म समय आये दरशन को पारवती त्रिपुरारी ।
श्री नारद नांचें रंग राचे वीना निज कर धारी ॥

इन्द्र अप्सरा गन सँग लेकें नृत्य कियो मनहारी ।
श्री गंगा शुक आन न्हवाये ले जल कंचन भारी ॥

कल्पवृक्ष के सुमन सुगंधित पवन देव तिहँवारी ।
वरषाये हरषाये मन में धन निज भाग विचारी ॥

स्वयं कृष्ण आचार्य रूप हो आये अवनि मँझारी।
प्रेम भक्ति के दान करन को प्रगटे जग हितकारी॥
देवें वास निकुंज महल में जहां श्री जुगल विहारी।
रास विलास होत जहां नित ही शरद वसंत वहारी॥
दीजे दान प्रान पति मोकों मांगूं गोद पसारी।
सरस माधुरी छके जुगल छवि रहै प्रेम मतवारी॥

॥ ग़ज़ल ॥

श्री शुक मुनी मिलने की आरज़ू है॥
लखूं बांकी झांकी यही जुस्तजू है॥१॥

श्री कृष्ण औतार आचार्य धारा।
नहीं ऐसा कोई सनम ख़ूबरू है॥२॥
हमारे हैं स्वामी मददगार हामी।
करें पार वेड़ा इन्हीं में ये ख़ू है॥३॥
इन्हीं पै ही विश्वास सच्चा हमारा।
इन्हीं की तरफ दिल हमारा रज़ू है॥४॥
मिलावें सरस हमको दंपति दया निधि।
यही इनकी महिमां प्रगट चारसू है॥५॥

॥ पद ॥
(रसिया की चाल में)

शुक मुनि अमरलोक तें आये स्वामिनि श्यामां आप पठाये।

आचारज धर रूप आप हरि अपने दरस दिखाये ।
रस निकुंज रसिकन देने को रसिया सँग निज लाये ॥
वेदव्यास भगवान जगत गुरु तिनके कुँवर कहाये ।
वयस किशोर श्याम सुंदर वपु निरख अनंग लजाये ॥
अतिशय सोहन विश्व विमोहन रसिकन के मन भाये ।
थिर चर सकल लोक में व्यापक सबमें सहज समाये ॥
सुर नर संत महंत मगन मन दरशन कर हरषाये ।
सरस माधुरी रसिक शिरोमणि जिनके गुण मुख गाये ॥

॥ राग भैरवी तथा सोरठ ॥

जग में भगवत की भक्ती को प्रगटा दिया शुक मुनि प्यारे नें।
संसार में धर्म सनातन को फैला दिया शुक मुनि प्यारे नें ॥

॥ अंतरा ॥

ऐसे रसीले के वारी बलिहारी मैं वारंवारी ।
दरशन उस कृष्ण कन्हैया का करवा दिया शुक मुनि प्यारे नें ॥
सप्ताह सुनाकर श्री हरि की गोकुल के बसैया गिरधर की ।
किया जीवन मुक्त परीक्षित को करुणां कर शुक मुनि प्यारे नें ॥
प्रेमा भक्ती प्रभु को प्यारी बसमें जिसके श्री बनवारी ।
सब साधन त्याग करो इसको समझा दिया शुक मुनि प्यारे नें ।
कलि नाम कीरतन श्रुति सारा इसही के किये हो भव पारा ।
भगवत मिलने का यह मारग दरसा दिया शुकमुनि प्यारे नें ॥
हो कृष्ण अनंन्य भजे जोई नरनारी होवे जो कोई ।
पापी अधमी पावन होई यह गा दिया शुक मुनि प्यारे नें ॥

इक प्रेम प्रभू को है प्यारा इसके वस हो लें अवतारा ।
रक्षा करें अपने भक्तों की फ़रमा दिया शुक मुनि प्यारे नें ॥
जय बोलो व्यास दुलारे की मुनिराज प्रेम मतवारे की ।
सीधा रस्ता अमरापुर का बतला दिया शुक मुनि प्यारे नें ॥
कहै सरस माधुरी चरण शरण मुनिराज सहा प्रभु मनके हरन ।
पोंहचा दिया दंपति परि कर में श्री शुकमुनि व्यास दुलारे नें ॥

॥ राग गजल ॥

श्री कृष्ण श्याम सुंदर रसिकों का प्राण प्यारा ।
उसही ने व्यास के घर आचार्य रूप धारा ॥
जोगी जन जिसको ध्यावें ज्ञानी न पार पावें ।
वेदों ने नेति नेती उसही को कह पुकारा ॥
जब ही हो धर्म हानी दुख पावें विश्व प्रानी ।
मरियाद अपनी बिगड़ी उसही को आ सँवारा ॥
गुन हैं अनंत जिसमें माया है जिसके वसमें ।
लीला अनेक उसकी जिसका न वार पारा ॥
अनगिन औतार धारे भक्तों के दुख निवारे ।
दासों से अपने दम भर होता नहीं है न्यारा ॥
निज प्रेम की प्रशंसा जग में प्रगट करन को ।
मुनिराज बनके वोही भूतल में खुद पधारा ॥
शुकदेव सर्व व्यापी तेजस्वी है प्रतापी ।
चरनदास को दरस दे किया शिष्य जग उजारा ॥

है इष्ट मिष्ट सोहन रति काम मन विमोहन।
सरस माधुरी को इनके चरणों का है सहारा ॥

॥ पद ॥

(तर्ज मनड़ो मोह लियो छै म्हारो)

थारा श्याम वरण पर वारी शुकमुनि दासी छूँमैं थारी ॥

कृपा करके दरशन देवो, मानो विनय हमारी ।
हाथ पकड़ कर रास दिखावो, थे छो रास बिहारी ॥
मैं नोकर चरणारो थारो, थे छो भक्त उधारी ।
चरण दास को शिष्य कियो है, पूरे हो अवतारी ॥
भवसागर से पार लगावो, नाव पड़ी मझधारी ।
गुरू गोविंद हो आप हमारे, सांचे कृष्ण मुरारी ॥
गल में हार फूलन को सोहे, सूरत लागे प्यारी ।
वेदव्यास के लाल कहावो, तुम दीनन हितकारी ॥
सिंहासन पर आप विराजो, चितवन की छवि न्यारी ।
स्वर्ग लोक से गंगा आई, दरशन खातिर थारी ॥
घूंघर वाले केस जो झलके, जैसे नागिन कारी ।
द्वादश तिलक अंग में सोहें, आसन की बलिहारी ॥
आचारज अवतार लियो है, महिमा अपरंपारी ।
सरस माधुरी शरण तुम्हारी, किरपा करो सुखकारी ॥

॥ पद ॥

(तमाशे की चाल में)

अजी हांजी सुमरूँ श्री शुकदेव दयाल, श्रीमत वेदव्यास के लाल।
श्याम वरन सुन्दर तन जिनको सिर घुंघरारे बाल।
तिलक भाल नैंना रतनारे नासा बनी सुढाल ॥
मंद हँसन मुख मनमोहन है कंबु कंठ गल माल।
वक्षस्थल उन्नत अति नीको भुज आजानु विशाल ॥
कृस कटि प्रथुनितंब है अद्‌भुत पिंडली कदली मिसाल।
चरण कमल कोमल अरुणारे लख नाशत जग जाल ॥
आचारज हो प्रगट भये हरि संतन के प्रतिपाल।
सरस माधुरी नख शिख शोभा निरखत भई निहाल ॥

॥ पद ॥

परम शुचि श्री शुक मुनि को नाम।
जाहि जपत जिय के हिय माहीं आवत श्यामा श्याम ॥
अनुभव होत अलौकिक आनँद कुंज केलि अभिराम।
सरस माधुरी रस में मन यह मगन रहत निसि जाम ॥

॥ पद ॥

जिन्होंने श्री शुक तत्व पिछानों ॥
तिन सों श्रुति सिद्धान्त सार रस रह्यो नहीं कुछ छानों ॥
उज्जल रस विहार दम्पति को निश्चय कर जिन जानों ॥
सरस माधुरी रूप छटा में निस दिन रहत छकानों ॥

॥ पद ॥

जो जन श्री शुक के गुन गावे ॥
ताहि प्रिया प्रीतम ताही छिन अपनो कर अपनावे ॥
अपनी गौर श्याम सुंदर छवि ताके दृगन बसावे ॥
सरस माधुरी प्रेम सिंधु में मन नित गोता खावे ॥॥

॥ पद ॥

जो जन शुक मुनि ध्यान धरें।
कलि कलेश मन के मल तिनके छिनमें सकल हरें।
आय विराजें जुगल हिये में टारे नाँहि टरें।
सरसमाधुरी आश्रित जनकी सदा सहाय करें॥

॥ पद ॥

नाम शुक मुनि सर्वस धन पायो।
सुमरत श्यामा श्याम परम धन हृदय प्रगट ह्वै आयो ॥
परमानंद प्रेम परि पूरन रोंम रोंम में छायो।
सरस माधुरी महा मधुर रस पीवत नांहि अघायो ॥

॥ पद ॥

सलोंनो लागे शुक मुनि प्यारो री वेदव्यास को वारो री ॥
सुंदर श्याम कमल दल लोचन पतित,जनन के पाप विमोचन।
जग उद्धारन हार जीवन धन प्रान हमारो री ॥

स्वयं कृष्ण करुणा निधि आये आचारज अवतार धराये।
तारन तरन कहाय करें जग को निस्तारो री ॥
कलियुग में सतयुग विस्तारें, अमित जीव जग के उद्धारें॥
भगवत धर्म प्रचारें सोई निज नयन निहारो री ॥
नव निकुंज की लीला गावें, प्रेमामृत रसिकन को प्यावें।
छवि युग मांहि छकावें ये ही निश्चय उर धारो री ॥
जो जन शुक मुनि ध्यान लगावें, जग बंधन छिन में छुट जावें।
जन्म मरन छुट जावें जिन्हों पै तन मन धन वारो री ॥
परम धाम परिकर पद पावें, नित नव श्यामा श्याम लड़ावें।
सरस माधुरी महा प्रभु को इष्ट सँभारो री ॥

॥ पद ॥

श्री शुक देव सुजस जग छायो।
योग यज्ञ तीरथ व्रत संयम सब को सार प्रेम दरसायो ॥
नाम धाम लीला सरूप गुन कृपा दृष्टि कर सवन सुनायो।
बृज वृन्दावन श्री जमुना जस रज रानी को रूप लखायो।
बरनन कियो अनूप महातम जिनको गायो सबहिन गायो॥
आचारज सिरमोर महा प्रभु संतन रसिकन के मन भायो ॥
शुक मुख कथित कथा श्रवन कर नृपति परीक्षित हरि पद पायो।
सरस माधुरी के मन माहीं शुक को रूप अनूप समायो ॥

॥ पद ॥

नमो नमो शुक मुनि सुख रासी ॥
कुंज बिहारी के सर्वस धन नित्त निरंतर विपिन विलासी ॥
श्री भागवत सार निगमागम गुप्त केलि कल कुंज प्रकासी ॥
सरस माधुरी चरण रजाश्रित पाये श्री दंपति अनयासी ॥

॥ पद ॥

श्री शुकदेव सर्व पर माने ॥
सब सें पर जो केलि कुंज रस तिन की कृपा बिन कोइ न जाने ॥
श्री सुख मई सकल लीला रस रसिक गुप्त यह रीति पिछाने ।
जेते भये रसिक अरु अबहू आगेहू सुख सर्व प्रमाने ॥
निज निज बाँनी में सुख ही को आस्वादन कर सब तृप्ताने ।
जिन नहि समझो तत्व सार सुख सो जग में नित भर्म भुलाने ॥
श्री शुक सरण सकल सुख सुल्भ दुर्लभ जिन्हें जो और बखाने ।
सरस माधुरी रस दंपति को सुख कहि भाषत सकल सयाने ॥

॥ पद ॥

हमतो सुख में मगन रहत हैं ॥
सुख को मूल विहार जुगल को ताको तज नहीं और गहत हैं ॥
सुख अधार विविधि लीला रस श्रुति पुराण अरु वेद कहत हैं ॥
सरस माधुरी उज्वल सुख रस ताही को चित माँहि चहत हैं ॥

॥ पद ॥

श्री शुकदेव सुइष्ट हमारे ॥
माया काल कर्म त्रिगुण तज रहत सबनतें न्यारे ॥
सुख निकुंज आस्वादन करि के रहें सदा मतवारे।
छके रहें छवि गौर श्याम में युगल रूप उर अंतर धारे ॥
तन जग में मन रहत महल में सौंज लखें नित साँझ सकारे।
राधे कृष्ण रटें रसना सों प्रेम अनन्य नित रहत सँभारे ॥
सेवें सुकर सदा दंपति को भुक्ति मुक्ति पद सकल बिसारे।
सरस माधुरी युगल बिहारी जीवन प्राण नयन के तारे ॥

॥ पद ॥

हैं गुरु सकल सुखन को सार।
जाको अनुभव भई अनूपम नित समझो निश्चय निरधार ॥
श्री वृन्दावन सदा सुख मई श्री जमुना सुख रूप निहार।
लता पता तरु बेलि सुख मई सुखमय कुंज महल आगार ॥
सुख मय सकल सहेली अलिगन सुख मय करत परस्पर प्यार।
सुख मय महल महा मन भावन कंचन रत्न जटित वर चार ॥
सुख मय पंछी विविधि मनोहर सुख मय भृंग करत गुंजार।
सुख मय शीतल मंद सुगंधित सुरा श्रम हारी बहत बयार ॥
सुख मय रहत बसंत बाग बन कुसुमित सौरभ सुखद बहार।
सुख मय गान तान धुनि छाई गावत गुन गुन अली उदार ॥

सुख मई सरस विहारन राधे सुख मई दंपति करत विहार।
आलिंगन चुंबन परिरंभन सुख मइ कटि किंकिन झुनकार॥
सुख मय सेज जान रँग भीनी विलसत भरत विबस अँकवार।
सुख मइ सौंज सकल सुंदर अति सेवत लिये सहचरी नार॥
सुख मई रास विलास होत नित सुख मई नृत्त करत सुकुमार।
सुख उज्वल कल केलि झेलि दोउ तृप्त न मानत हिये मँझार॥
सुख बोलन बतरान सुख भरी करत रहत दिन प्रति सरकार।
तत् सुख स्वसुख बृजसुख आदिक सुखकेरूप सुविविधि प्रकार॥
सुखही सुख दसहू दिशि पूरन बरनो कहा सकल विस्तार।
सरस माधुरी पूर रह्यो सुख ताको आदि मध्य नहि पार॥

॥ पद ॥

वेद व्यास के कुंवर शुक मुनि तिन के चरण शरण जो आवें॥
राधे प्यारी रासिक विहारी तिन को तत् छिन ही अपनावें।
दया दृष्टि कर निज परिकर में रंग महल के निकट बसावें॥
सरस माधुरी उज्वल रस में मगन रहें दंपति गुन गावें॥

॥ पद ॥

सर्वस धन शुकदेव हमारे॥

सुख निकुंज को जो सर्वोपर देत दया कर प्रान पियारे॥
सहचरि बपु है सेवत अनु दिन दंपति प्रेम मगन मतवारे।
सरस माधुरी शरण चरण की निरखि नयन छवितन मन वारे॥

॥ पद ॥

जय शुक देव व्यास के नंदन ॥

रंग महल की लीला गाईं रसिक जनन की चित की चंदन ॥
दंपति रूप रँगीले रसिया रस निधान आनँद के कंदन ॥
सरस माधुरी रस के दाता दोउ कर जोर करत पद वंदन ॥

॥ पद ॥

जो शुक मुनि नांही प्रगटातो ।

तो फिर कौन भागवत रस की सरिता त्रिभुवन मांहि वहातो ॥
प्रान बल्लभा बृज गोपिन की प्रेम कथा को को अस गातो ।
बृन्दावन की सहज माधुरी ताकी महिमाँ कवन सुनातो ॥
परा भक्ति पथ अगम अगोचर ताको मारग कोन वतातो ।
रंग महल की टहल सहल ही रसिक सहज कोऊ नहीं पातो ॥
परम दयालु दीन हितकारी दंपति जस कह को दुलरातो ।
सरस माधुरी जुगल चरण की शरण सुखद में कोउ न आतो ॥

॥ राग विहाग ॥

भरोसो श्री शुक मुनि को भारी ।

जिनको नाम सकल सुख की निधि सब विधि मंगल कारी ॥
चरन चारु नख चंद्र चंद्रिका भावक हिये तम हारी ।
दरशें सहज सलौने दंपति राधा सरस बिहारी ॥
अतुलित कृपा करत निज जन पर भाव भक्ति दातारी ।
सरस माधुरी सेव कुंज की कृपा करो बलिहारी ॥

॥ राग कहरवा, विहाग ॥

हम सरनो गह्यो शुक चरन को ॥

संशय शोक सकल त्यागे हैं भय नहीं जीवन मरन को ॥

श्याम सरूप सच्चिदानंद घन ध्यान सकल दुख हरन को।

जीवन मुक्ति करत निज जन को डर नाहीं जग तरन को॥

शुक मुख रटें कटें सब संकट नाम अधम उद्धरन को।

सरस माधुरी मूरति मुनिवर आनंद मंगल करन को ॥

॥ राग विहाग ॥

श्री शुक मुनि तुमसे तुमही स्वामी ॥

श्याम चरन के दास दयानिधि तिनके गुरु सरनामी ॥

रसिक राज महाराज महा प्रभो सब उर अंतर यामी।

जीवन की त्रय ताप नशावन दरशावन निज धामी॥

छके रहत दंपति छबि निधि में अति अनन्य निष्कामी।

सरस माधुरी शरन कमल पद करत अनंत नमामी॥

॥ पद ॥

श्री शुकदेव रसिक सिर मौर।

भयो नही अब है नहिं कोऊ आगे कोउ न है है और ॥

गायो श्रीभागवत कृपा कर दरशाये दोउ श्यामल गौर।

शुद्ध प्रेम अमृत उमगायो प्यायो रस मय भक्तन घोर ॥

नृपति परीक्षित कियो परायण पहुँचायो परधाम सुठोर ।
सुन सुन श्रवण नारि नर जग के करत भक्ति दंपति निश भोर ॥
परा परम पद मारग प्रगटो नस्यो अंध तम कलि मल घोर ।
सरस माधुरी चरण चारु युग वंदत दोउ कर जोर निहोर ॥

॥ पद ॥

श्री शुकदेव तत्व जिन जान्यो ।
सारको सारसकल सुखको सुख जुगलविहारी निज धन मान्यो ॥
श्रीदम्पति रसिकन की संपति तिनको सुजस वितान सुतान्यो ।
ताही के वल गायो सवहुन रस विहार वहु भाँति वखान्यो ॥
श्रुति सिद्धान्त सकल पर सोई दरसायो रसिकन पहिचान्यो ।
सरस माधुरी सुलभ सवन कूँ कुंज केलि रस यह उर आन्यो ॥

॥ पद ॥

श्री भागवत सार जिन पायो ।
सोई सुकृती सोई सकल शिरोमणि ता मांही जो रहत समायो ॥
जाने जान लियो या रस कूँ और ठोर नांही भटकायो ।
पीयो प्रेम जुगल रस अद्भुत गौर श्याम छवि मांहि छकायो ॥
नाना भेद भाव मत मारग तिनको तत छिन ही छिटकायो ।
सरस माधुरी रस चसकन को चरण शरण शुक मुनि की आयो ॥

॥ पद ॥

जय जय श्री शुकदेव कृष्ण अवतार हो ॥
श्री मत वेदव्यास सुवन सुकुमार हो ॥

नव किशोर चितचोर श्याम सुंदर महा ॥
नख शिख रूप अनूप सुछवि कहिये कहा ॥

॥ छन्द ॥

कहा कहिये छवि सु अंगन मुख मयंक सुहावनो ।
प्रभा पूरन रही चहुं दिशि रसिक जन मन भावनो ॥
वार घुंघरारे सचिक्कन दीन जन उद्धार हो ।
जय जय श्री शुकदेव कृष्ण अवतार हो ॥
जय जय श्री शुकदेव मुखांबुज सोहनो ।
उद्धित ललित ललाट तिलक मन मोहनो ॥
भृकुटी काम कमान श्याम अलकावली ॥
विंवाधर वर वीच दिव्य दसनावली ॥

॥ छन्द ॥

दिव्य दसनावली सुशोभित मंद मुसकनि मोहनी ॥
चिंबुक चारु सुढार सुंदर ग्रीव अद्भुत सोहनी ॥
कलित युगल कपोल प्यारे तिन्हें नित प्रति जोहनो ॥
जय जय श्री शुकदेव मुखांबुज सोहनो ॥
जय जय श्री शुकदेव मनोहर गात हो ॥
वक्षस्थल सुअनूप रूप सरसात हो ॥
उदर अपूरव वीच ललित त्रिवली वनी ॥
कटि केहरि सम तूल नाभि शुभ सोहनी ॥

॥ छन्द ॥

सोहनी शुभ नाभि भुज आजानु अधिक सुढार हैं ॥

हस्त कमल सुचारु पिंडली जंघ जन मनहार हैं ॥
चरण पंकज परम कोमल स्वजन सिर परसात हो ॥
जय जय श्री शुकदेव मनोहर गात हो ॥
जय जय श्री शुकदेव सुजन प्रतिपाल हो ॥
देत तुरत दरशाय लाडली लाल हो ॥
प्रेम परायन करत धरत कर शीश हो ॥
महिमाँ अतुल प्रताप मुनिन में ईश हो ॥

॥ छन्द ॥

ईश हो सब मुनिन में नृप परिक्षित को तारिया ॥
दया करके अमित जिय संसार सों उद्धारिया ॥
शरन ले निज चरन ताको करत वेग निहाल हो ॥
जय जय श्री शुकदेव सुजन प्रतिपाल हो ॥
जय जय श्री शुकदेव छके रस माधुरी ॥
जुगल ध्यान ग़लतान रूप छवि हिय धरी ॥
जुगल नाम अरु धाम रूप लीला घनी ॥
रस निकुंज की केलि विविधि भाँतिन भनी ॥

॥ छन्द ॥

भली विधि भाँतिन भनी हो मुकुट मणि अलि महल में ॥
प्रान सों प्यारे युगल की रहत तत्पर टहल में ॥
शुकाचारज है चरन के दास पर कृपा करी ॥

जय जय श्री शुकदेव जुगलवर धन धनी ॥
नित दुलरावत दंपति दूलह दुलहनी ॥
दिन प्रति व्याह उछाह निकुंजन करत हो ॥
श्री ललितादिक संग रंग उर भरत हो ॥

॥ छन्द ॥

भरत हो उर रंग नित प्रति संग युग वर के रहो ॥
वाक्य रसमय सुरुचिकारी केलि वर्धन के कहो ॥
रीझि के उर हार अपनी करत तुम्हें राधे बनी ॥
जय जय श्री शुकदेव जुगल वर धन धनी॥
जय जय श्री शुकदेव दयाल उदार हो ॥
इष्ट मिष्ट अभिराम प्राण आधार हो ॥
एक आस विश्वास आपकी दृढ गही ॥
दैहो निकट निवास भई निश्चय यही ॥

॥ छन्द ॥

भई निश्चै यही हिय में करुणा सागर ढरोगे ॥
जान अपनी खास अनुचरि विरह दुख को हरोगे ॥
सरस माधुरी शरण आई कृपा दृष्टि निहार हो ॥
जय जय श्री शुकदेव दयाल उदार हो ॥

॥ राग सोरठ कालंगड़ा ॥

शुक मुनि राज शरन तेरी आयो ।
मोकों गति नहिं आन प्रान पति जानो चाकर घर को जायो ॥

द्वापर अंत आदि कलियुग के नृपति परीक्षित शाप लगायो।
तक्षक त्रास मिटाय आय तुम ताहि अभय पद में पहुंचायो॥
चरनदास महाराज शिष्य कर आचारज गुरुदेव बनायो।
प्रगट करी तिन आप संप्रदा सुजस सकल जग मांही छायो॥
मैं हूँ निज दासन को दासा कैसें नाथ मोहि बिसरायो।
शरणागत रक्षक जन पालक विरद रावरो रसिकन गायो॥
दीजे प्रेम भक्ति दंपति की करिये करुणा निधि मन भायो।
सरस माधुरी जोर दोउ कर चरन कमल में शीश नवायो॥

॥ राग रेखता, भैरवी, पीलू बरवा ॥

अरज शुकदेव जी मेरी जुगल को कब सुनावोगे।
महर करके कभी मुझ पर दरश उनका करावोगे॥
मैं गंदा आपका बंदा बहुत मन में हूं शरमिन्दा।
सुनो श्री व्यास के नंदा अधमता पर न जावोगे॥
पड़ी गल में करम फांसी सहै दुख नर्क चौरासी।
दया करके दया सिंधो दुसह दुख से छुड़ावोगे॥
बनी नेकी नहीं कोई बदी में उम्र सब खोई।
भला हूं या बुरा जैसा जिसे तुम ही निभावोगे॥
सहे संकट विकट भारी लगाये संग सुत नारी।
पड़ी है सख़्त दुशवारी मुझे इससे बचावोगे॥

पिला कर प्रेम का प्याला करो मुनि राज मतवाला ।
किशोरी नंद का लाला मुझे जल्दी दिखावोगे ॥
दुखी हो बिन मिले दंपति करो यह कब कृपा संपति ।
दया करके कहो मुखसें महल में कब बुलावोगे ॥
विरह ने मुझको अति मारा जिगर है जिससे सदपारा ।
बहे नैंनों से जलधारा महर मरहम लगावोगे ॥
मेरे अवगुन न चित धारो पतित पावन विरद पारो ।
अधम हूँ सबसे मैं भारो मेरे पातक नसावोगे ॥
परीक्षित राज निस्तारा किया भव सिंधु से पारा ।
करो मेरा भी उद्धारा अभय पद में बसावोगे ॥
सरस यह माधुरी आसी जुगल दरशन की है प्यासी ।
सुनो मुनिराज रस रासी चरन दासी बनावोगे ॥

॥ राग सारंग, पीलू बरवा ॥

शुक मुनि तुमरी शरण गही जू ।
आन भरोसो त्याग दियो है , एक रावरी होय रही जू ॥
सब गुण हीन मलीन दीन मैं, या में संशय नेंक नही जू ॥
कर गहि पार उतारो प्यारे , भव सागर में जात बही जू ॥
फँसी आय करमन के फंदे , महा विपति ने मोहि दही जू ॥
अधम उधारन विरद आपनो , स्वामी मेरे करो सही जू ॥
बुरी भली तेरी मैं चेरी , विनती सकल पुकार कही जू ॥
सरस माधुरी सेव युगल पद , करूँ दया निधि देहु यही जू ॥

॥ पद ॥

श्री शुकदेव सुइष्ट हमारे ॥
माया काल कर्म त्रिगुण तज रहत सबनसों न्यारे ॥
सुख निकुंज आस्वादन करि के रहैं सदा मतवारे।
छके रहें छवि गौर श्याम में जुगल रूप उर अंतर धारे ॥
तन जग में मन रहत महल में सौंज लखे नित साँझ सवारे।
राधे कृष्ण रटे रसना सों प्रण अनन्य नित रहत सँभारे ॥
सेवें सुकर सदा दंपति को भुक्ति मुक्ति पद सकल बिसारे।
सरस माधुरी जुगल बिहारी जीवन प्राण नयन के तारे ॥

॥ पद ॥

है शुक सकल सुखन को सार।
जाको अनुभव भई अनूपम तिन समझो निश्चय निरधार ॥
श्री बृन्दावन सदा सुख मई श्री जमुना सुख रूप निहार।
लता पता तरु बेलि सुख मई सुखमय कुंज महल आगार ॥
सुख मय सकल सहेली आलिंगन सुख मय करत परस्पर प्यार।
सुख मय महल महा मन भावन कंचन रत्न जटित वर चार ॥
सुख मय पंछी विविधि मनोहर सुख मय भृंग करत गुंजार।
सुख मय शीतल मंद सुगंधित जुग श्रम हारी बहत बयार ॥
सुख मय रहत बसंत बाग वन कुसमित सौरभ सुखद बहार।
सुख मय गान तान धुनि छाई गावत गुन युग अली उदार ॥

॥ राग भैरों परभाती ॥

प्रात समय श्री व्यास सुवन को नाम प्रेम युत रसना लीजे॥
सुख आनंद सौ गुनो पइयत अशुभ अमंगल तत छिन छीजे।
लौकिक अरु परलौकिक कारज होत सिद्ध यह निश्चय कीजे॥
सरस माधुरी शुकाचार्य जप निश दिन यह रस अमृत पीजे।

॥ राग विहाग ॥

प्रीति रीति जाही सों करिये जिन श्री शुकमुनि कों पहिचान्यों।
स्वयं कृष्ण अवतरे अवनि पर परीक्षित मिस भागोत बखान्यों॥
प्रेमामृत की सरित बहाई रसिकन पियो भाग्य भल जान्यों।
छकन छके दंपति की छवि में मन माधुरि मूरति उरझान्यों॥
उज्ज्वल रस गायो श्री मुख तें बृज भक्तन को यश प्रगटान्यों।
सरस माधुरी सुहृद हमारो जाको मुनिवर सों मन मान्यों॥

॥ राग विहाग ॥

श्री मत वेदव्यास को नंदन श्री मुनिवर शुकदेव न गायो।
श्री भागवत सुनी नहि श्रवनन वृथा जन्म जग में तिन पायो॥
सेये नहि श्री दंपति निज कर विषय विकारन मांहि लुभायो।
बस्यो नहिं श्री बृंदावन में सत संगति में मन न लगायो॥
ध्यान मानसी कियो न कपटी पर तिय परधन को ललचायो।
सरस माधुरी महा मूढ नर नरतन रतन अमोल गुमायो॥

॥ राग विहाग ॥

परम दयाल व्यास के नंदन श्री शुकदेव सुइष्ट हमारे।
शरणागत रक्षक करुणा निधि भवतें जीव अनंत उधारे ॥
श्री भागवत प्रगट कर प्रभुजी कलिमल दूर किये दुख टारे।
प्रेम पंथ के भये प्रवर्तक रसिक जनन के प्राण अधारे ॥
वृज वृन्दावन नव निकुंज रस सबको सुलभ कियो सुख प्यारे।
सरस माधुरी जुगल मिलाये निरखि नयन तन मन धन वारे ॥

॥ सोरठ, विहाग ॥

भज मन भाव कर शुकदेव।
कोटि कर्म कलेश टारत चरन तिनके सेव ॥
श्याम सुन्दर रूप अद्भुत ध्यान हिय धर लेव।
सरस सहजहि श्याम श्यामाँ मिलें हँसि कर हेव ॥

॥ राग विहाग ॥

महा प्रभु श्री शुकदेव दयाल।
शरणागत को देत अभय पद पल में करत निहाल ॥
मेटत कृपा दृष्टि कर अकरम अंक लिखे जिन भाल।
उदय करत शुभ अमित जन्म के ऐसे परम कृपाल ॥
निज जन जान मान अपने कर सदा करत प्रतिपाल
वास देत वृन्दावन कुंजन जहां लाड़ली लाल ॥
सेवा सोंपत रंग महल की सहचरि रूप रसाल।
सरस माधुरी मांहि छकावत देत विरह दुख टाल ॥

॥ सोरठ विहाग ॥

सबतें श्री शुकमुनि नाम सलोनों ।
जैसें सर्व धातु में उत्तम मानत हैं बड़ सोनों ॥
ज्यों सरितन में गंग शिरोमणि दूजो जल नहिं होनों ।
सरस माधुरी रटो रैंन दिन वृथा स्वास नहिं खोनों ॥

॥ राग चरचरी ॥

श्री मत शुकदेव शरण अतुलित सुख पावे ॥
हिय में नित धरत ध्यान, दरशें दंपति सु आन ।
रसना गुन गान करत प्रेम में समावे ॥
इन ही की राख आस, रहिये इन ही को दास ।
वृन्दावन वास पाय जुगल को लड़ावे ॥
सरस माधुरी निकुंज, अति ही आनंद पुंज ।
नित विहार नैंन लखे रूप में छकावे ॥

॥ राग विहाग, भैरवी, ठुमरी, खम्माच, सोरठ ॥

महा प्रभु श्री शुकदेव उदार ।
श्रीमत वेदव्यास के नंदन जग वंदन सुकुमार ॥
स्वयम् प्रगट पुरुषोत्तम द्वापर भये सुनंद कुमार ।
ब्रज लीला कीनी रङ्ग भीनी रसिकन प्रान अधार ॥

पुनि अवतरे आचारज ह्वै के मुनिवर को वपुधार ।
प्रेम परा विस्तारन सारग निस्तारन संसार ॥

व्रज ललना व्रज भूमि महातम वरन्यो विविधि प्रकार ।
परम तत्व सिद्धांत सर्व पर कह्यो श्रुतिन को सार ॥

शरनागत पालक जन रक्षक अधम उधारन हार ।
सिर कर धरत हरत दुख संसृति कृपा सुदृष्टि निहार ॥
इनको विसरि भजे औरन को सो नर विना विचार ।
सरस माधुरी इष्ट हमारे महिमा अपरंपार ॥

॥ पद राग कल्यान तथा कालंगडा ॥

कृपा सिंधु श्री व्यास सुवन वर ।
श्री शुकदेव दयाल महा प्रभु अभय करत कर कमल शीश धर॥
देत सोंप श्री सेवा दंपति राखत शरण आपनें निज कर ।
प्रेम परायण करत दास को रस निकुंज देवें हिय में भर ॥
दरशावें श्री युगल विहारी विरह वियोग लेत छिन में हर ।
सरस माधुरी चरण रजाश्रित रहत न काल कर्म गुण को डर॥

॥ चरचरी धुर पद ॥

श्री मत शुकमुनि दयाल श्याम रूप अति रसाल,
सिर पर घुंघरारे वाल सुन्दर लटकारे हैं ॥
शोभित श्री तिलक भाल बाँकी भृकुटी विशाल,
कमल नैन कृपा ऐन रसिकन के प्यारे हैं ॥

नासा सुठि कल कपोल बिंबाधर हैं अमोल।
मंद हँसन मधुर बोल मुख सें उचारे हैं॥
कंबु कंठ भुज मृनाल वक्षस्थल छवि को जाल,
त्रिवली उर अनूपम कटि सूक्षम मनुहारे हैं॥
पृथु नितंब जंगा जुग कदली तरु निंदित हैं,
पिंडरी हैं अति पुनीत गुल्फ़ हू सुढारे हैं॥
पंकज से युग्म चरण तृय विधि ताप हरण,
भक्तन सुख करन सर्वस्व धन हमारे हैं॥
स्वयं कृष्ण सगुण रूप वय किशोर भक्त भूप,
आचारज वपु सुधार भूतल पधारे हैं॥
सरस माधुरी के प्रान इन सम नहि और आन,
निश दिन उर धरत ध्यान जात नहीं बिसारे हैं॥

॥ राग विहाग ॥

आचारज सिर मौर जगत गुरू श्री शुकदेव व्यास के लाला।
शरण गये सरवात्म समरपण करवावत हैं परम कृपाला॥
सेवा अरु संवन्ध दान दे नाम निवेदन करें दयाला।
सोंपत जीव जुगल को निज कर दरशावें दंपति तत्काला॥
लेंहि उवार जगत जल निधि तें कुंज बसाय करें प्रतिपाला।
सरस माधुरी दृगन वसी छवि निरखि हरष उर भई निहाला॥

॥ राग धुरपद चौताला ॥

तेज पुंज कुंज में विराजें शुकदेव मुनि,
श्याम चरनदास तहाँ सेवा माँहि राजे हैं ॥
तेज के सिंहासन सुख आसन शोभायमान,
तेज ही के संख नाद अनहद ध्वनि वाजे हैं ॥
तेज मई सभा मध्य साधू जन तेज रूप,
करें टहल म ल माँहि चँवर करन साजे हैं ॥
सरस माधुरी अपार तेज को दरबार जहां,
जगमगात सुंदर द्युति लखि सुरेश लाजे हैं ॥

॥ राग कल्यान ॥

प्रथम करूँ श्री शुकमुनि बंदन श्री मत वेदव्यास के नंदन ॥
श्याम वरण मन हरण महा प्रभु भक्त जनन के चित्त के चंदन ॥
सुमरत सिद्ध होत सब कारज पुन्य प्रकाशन पाप निकंदन ॥
श्री भागोत भान प्रगटायो कृष्ण कथामृत कह्यो सुछंदन ॥
मुक्ति सरूप भूप मुनियन में ध्यान किये काटत जम फंदन ॥
सरस माधुरी चरन कमल मन भृमर भयो पीवत मकरंदन ॥

॥ राग भरों, भैरवी ॥

जय जय श्री व्यास सुवन शुकमुनि मतवारे ।
ब्रह्म रूप रसिक भूप श्याम अंग अति अनूप ।
वय किशोर चित के चोर जुगल प्रान प्यारे ॥

दंपति ग़लतान ध्यान प्रेमामृत कियें पान,

गुन निधान कृपा खान नैंना रतनारे ॥

चंद्र वदन शोभा सदन निरखि नैंन लजित मदन,

साक्षात नंद नदन संत रूप धारे ॥

सरस माधुरी निहार तन मन धन दीजे वार,

चरण कमल बसो हिये मांहि नित हमारे ॥

॥ राग सोरठ ॥

अब दीजे दरश दयाकर शुकमुनि प्यारे जी ॥

वेदव्यास के सुवन सलोंने तुम सम जग में और न होंने,

तक्षक त्रास मिटाय परीक्षित तारे जी ॥

श्री भागोत भान प्रगटायो सोवत सब संसार जगायो,

पतित अनयास किये भव पारे जी ॥

चरनदास कूँ दरस दिखायो सिर कर धर हित सें अपनायो,

प्रेम भक्ति विस्तार जीव निस्तारे जी ॥

जो जन तुमरो ध्यान लगावे भव बंधन छिन में छुट जावे,

बहुर जगत के मांहि जनम नहि धारे जी ॥

अविचल प्रेम भक्ति प्रभू दीजे अनुचर चरण कमल को कीजे,

सरस माधुरी तुमरे चरन सहारे जी ॥

॥ पद ॥

तुम तो वेदव्यास के लाल श्री शुकदेव मुनी मत वाले ॥

स्वयम् हो ब्रह्म रूप भगवान , करो नित प्रेम रसामृत पान।
रहो दंपति रस में ग़लतान , सकल रसिकों में हो तुम आले॥
तुम्हारी परमतत्व की काया , न व्यापी तुमको रंचक माया।
दिगंबर भेष अनूप बनाया , जती हो जग सें भये निराले॥
हैं तुम में गुन अनगिनत अपार , हो पूरन कृष्ण कला अवतार।
उतारन आये भू का भार , पतित के पावन करने वाले॥
तुम्हारा चंद्र वदन अभिराम , सलोनी सुंदर सूरत श्याम।
लजावें कोटि रती और काम , छुटे मुख ऊपर काकुल काले॥
जुगल का जो बृन्दावन धाम , रहो तुम उसमें आठों जाम।
सखी वपु सेवत श्यामा श्याम , सुहावन सेवा खास सँभाले॥
उचारत रस अमृत सम बैंन , सुने जिनके उपजे चित चैंन।
बसें हिय राधा कृष्ण सुखैन , गले में हिल मिल बैंया डाले॥
तुम्हारी सरस माधुरी दासी . करो कृपा अपनी अविनासी।
मिलादो श्री दंपति रस रासी , चरण के शरने मुझे बसाले॥

॥ विनय राग ठुमरी, सोरठ ॥

प्यारे श्री शुकदेव दयाल मुझे निस्तारनारे॥

आय फँसो माया के फंदन, सुनो विनय मेरी जग वंदन,
करम जाल सों मोकों आन उबारनारे॥

मानुप जन्म अनूपम पायो, हाय विना हरि भजन गुमायो,
अब मैं भई तुम्हारी मुझे उद्धारनारे ॥
महा कुटिल मैं क्रोधी कामी, पतितन में मोहि जानो नामी,
सुनिये अंतरयामी जगत सों तारनारे ॥
शरण गहे की लज्जा कीजे, प्रेम भक्ति दंपति को दीजे,
दीन दुखी को दिल से नांहि बिसारनारे ॥
मोकों बड़ी रावरी आसा, दीजे प्रभु वृन्दावन बासा,
स्वामी अपनी कृपा सुदृष्टि निहारनारे ॥
मेरी आय वेग सुध लीजे, दर्शन मोहि दयानिधि दीजे,
सरस माधुरी लेत तुम्हारे वारनारे ॥

॥ ग़ज़ल ॥

इधर भी हो नजर मुझ पर अजी मुनि राज थोड़ी सी।
घनी गुजरी उमर मेरी रही महाराज थोड़ी सी ॥
सलोने व्यास के नंदन करूँ कर जोर के वंदन।
दया कीजे दुखी जन पर अजी रस राज थोड़ी सी ॥
रसिक वर राधिका मोहन गौर अरु श्याम अति सोहन।
दिखा दो छवि छटा उनकी अजी सरताज थोड़ी सी ॥
करूँ सेवा निकुंजन में रहूँ नित संग बृज बन में।
तमन्ना है यही मन में अजी सुख साज थोड़ी सी ॥

छुटावो जक्त जंजाला पिलावो प्रेम का प्याला।
सुनो विनती कृपा करके मेरी यह आज थोड़ी सी ॥
सरस है शर्ण चरनन की लगी मोहि आस दरशन की।
विरद निज पतित पावन की करो अब लाज थोड़ी सी॥

॥ पद ॥

माहा मुनि तुम को शीश नवाऊँ।
श्री शुकदेव व्यास के नंदन जग वंदन बलि जाऊँ॥
कमल नैन कैशोर चोर चित निरखत नाँहि अघाऊँ।
रूप रासि सुंदर तन साँवल लखि लोचनहुलसाऊँ॥
आनंद सों उठ करूँ आरती मोतिन चौक पुराऊँ।
तन मन धन न्योछावर करके फूलन को बरसाऊँ॥
धन्य आज को दिवस हमारे हरष बधाई गाऊँ।
सरस माधुरी देहु दया निधि प्रेम पदारथ पाऊँ॥

॥ पद राग सोरठ, बसंत, कालंगड़ा, भैरवी ॥

शुक मुनि देखे बिन रह्यो न जाय।
मेरे नैनन में छबि रही समाय॥
साँवल तन सुंदर अति अनूप।
लाजत अनंग सत लखि के रूप।
महिमाँ वेद हु नहि सकै गाय॥१॥

जीती माया सहज ही सुभाय ।
सुर नर मुनि जन नित पूजें पाय ।
सुमरें दंपति मन वचन काय ॥
निर गुण पद सब जानें रीति ।
तउ सगुण ब्रह्म में अधिक प्रीति ।
छवि गौर श्याम लई हिये बसाय ॥
सत् चिद् आनंद घन जिन की देह ।
नित जुगल लाल सों अति सनेह ।
हैं विदित जगत में रसिक राय ॥
करें परम हंस संहिता गान ।
राधे मोहन में फँसे प्रान ।
लीला गुन गावत नहीं अघाय ॥
भूतल आचारज प्रगट रूप ।
अरु रंग महल में सखि सरूप ।
कुछ अद्भुत कौतुक कह्यो न जाय ॥
सुन सरस माधुरी विनय कान ।
मोहि निज दासिन की दासी जान ।
निज परिकर में लीजे मिलाय ॥

॥ पद ॥

प्रभु व्यास नंदन भक्त वंदन दया दृष्टि निहारिये ॥

निज जान अपनो दास प्रभु भव सिंधु सों उद्धारिये ॥
जय जय सलोने श्याम सुंदर मदन के मद के हरन ।
नित्य नवल किशोर मूरति चरन की आयो शरन ॥
जय जयति स्वामी विश्व नामी स्वयं कृष्ण अवतार हो ।
सर्वज्ञ संपूरन कला करुणा यतन उद्धार हो ॥
वृज के विहारी कुंज चारी पद कमल मस्तक धरो ।
काट कर्म कलेश मेरे युगल परिकर में वरो ॥
निज तात संशय दूर कर वन वृक्ष मिल उत्तर दियो ।
तक्षक को त्रास मिटा परीक्षित अभय पद वासी कियो ॥
जान कठिन कराल कलि चरनदास को दर्शन दियो ।
प्रेम भक्ति प्रचार कर संसार को पावन कियो ॥
श्री वृन्दावन रंग महल में सखी रूप सेवा में पगे ।
निरखि रूप अनूप दंपति प्रेम के रँग में रँगे ॥
जो प्रात सायंकाल जन कर प्रीति पुलकित गावहीं ।
कहै सरस माधुरी शरण निश्चय परम पद को पावहीं ॥

॥ राग विलावल ॥

श्री शुकदेव सहाय करो जू ।
अभय करो कर धरो शीश मम शरन चरन की आय परोजू ॥
शरनागत पालक जन रक्षक हे विरद है यह जग विदित खरोजू ।
काल कर्म गुन देत महा दुख इनकी सब भय भीत हरोजू ॥
दीजे अविचल वास विपिन में मो अधीन की ओर ढरोजू ।
सरस माधुरी श्याम राधिका परिकर में मोहि वेगि वरोजू ॥

॥ पद ॥

रस निकुंज शुक मुनि प्रगटायो।
सब तें प्रथम सुगम कहि बरणो ता पाछे बहु रसिकन गायो ॥
ज्यों भागीरथ भरतखंड में निज पुरुषारथ गंगा लायो।
पुनि पुहमी में प्रथक प्रथक कर घाट घाट बहुनाम धरायो ॥
प्रीति सहित भर लियो पात्र निज गंगोदक ताको कहलायो।
आस्वादन कीनो रंग भीनो सुजस सकल लोकन में छायो ॥
शुक मुख कथित सर्वपर कहियत एसो कौन जाहि नहि भायो।
सरस माधुरी रस आचारज चरणदास सोई सद् गुरू पायो ॥

॥ पद ॥

आचारज सिर मोर जगत गुरू श्री शुकदेव दयाल हमारे
परम हंस संहिता प्रगट कर सब रसिकन के कारज सारे ॥
स्वयं श्याम सुंदर सत चित् घन संत रूप भूतल अवतारे।
सकल ऋषिन की सभा मध्य में परम धर्म निज मुख उच्चारे ॥
नाम रूप लीला दंपति की श्री बन धाम सुजस विस्तारे।
सुन सुन सकल कुंज रस छाके पाये युगवर प्रीतम प्यारे ॥
रसिक मुकट मणि मदन मनोहर श्री मद् वेद व्यास के बारे।
सरस माधुरी शरण हरण मन मेरी दोउ अंखियन के तारे ॥

॥ पद ॥

जो शुकदेव नाम लौ लावै।
जाको श्री स्वामिनी अभिरामिनी बिपन विहारी जू अपनावै ॥

कृपा दृष्टि करि गहि कर ताको श्रीवृंदावन माँहि बसावै ।
देवैं टहल महल निज अपनी अलि परिकर पद निश्चय पावै ॥
रस विहार श्रुति सार सर्व पर ताहि निरखि निज नैन छकावै ।
हाजिर रहैं हुजूर कुंज में केलि कुँवरि लखि लखि मगनावै ॥
सीत प्रसादी अंग उतीरण रीझ रसिक दें सीस चढ़ावै ।
सरस माधुरी मोद भरी नित जुगल चंद के गुण गण गावै ॥

॥ विहाग ॥

श्री शुक मुनि अब जिन जन तरसावौ ।
अभय हाथ निज दास माथ धर वृन्दा विपिन बसावो ॥
कर्म भर्म बंधन जन्मन के तिनको वेगि मिटावो ।
दै दंपति की भक्ति रसीली रसिक अनन्य बनावो ॥
जुगल विहारी लाल जिन्हों को छवि के मध्य छकावो ।
सरस माधुरी सेवा देके कुंज केलि दरसावो ॥

॥ ठुमरी , गरबी ॥

भज मन श्रीशुकदेव दयाल ।
श्री मत वेदव्यास के नन्दन सुमरत होत निहाल ॥
सुंदर श्याम मोहनी मूरति अद्भुत रूप रसाल ।
जो जन ध्यान धरें उर अंतर तिनसों डरपत काल ॥
कृपा करें मुनिराज मिलावें जुगल लाडली लाल ।
सरस माधुरी अपने जन की सदा करत प्रतिपाल ॥

॥ पद ॥

श्री शुक चरण शरण जो आवै ।

श्री वृन्दावन बास निरंतर सहचरि वपु अति सुंदर पावै ॥
शुक आश्रित तिहि जान प्रान सम प्यारी प्रीतम कंठ लगावै ।
अँग सँग सेवा सर्वोपरि चहल पहल महली दरशावै ॥
फूली फिरैं करें सिवकाई वर विनोद उर अंतर छावै ।
सरस माधुरी रहस छकन छकि घूमत झूमत सुख सरसावै ॥

॥ पद ॥

जय जय श्री शुक चरण उपासी ।

बलि बलि जाऊँ जिनके वपु पर जे अनन्य आनँद बिलासी ॥
विशद विहार विहारनि निरखत कुंज नृपति की करत खवासी ।
सरस माधुरी सत्य समझ मन निश्चय है वृन्दावन बासी ॥

॥ पद ॥

धन्य धन्य जो जन निष्कामी ।

अति अनन्य उज्जल रस मांते श्री शुक संप्रदाय अनुगामी ॥
जुगल रहस गुन गान बांन नित वृन्दावन बासी निज धामी ।
सरस माधुरी युग्म पदांबुज जिनके बारंबार नमामी ॥

॥ पद ॥

श्री शुक मुख अमृत जो चाखें ॥

खारे लागे लोक भोग सब मिश्री मधुर छुहारे दाखें ॥

श्री भागवत प्रेम रस सागर यह निज मूल और सब साखें ॥
गौर श्याम उज्जल युग जोरी जिनको ध्यान हृदय दृढ़ राखें ॥
मगन रहै लखि रूप माधुरी काहू सों प्रगट नहिं भाखें ॥
और ठौर की छोड़ बासना निश दिन याही कों अभिलाखें ॥
सरस माधुरी स्वाद सर्व पर तामें छकें अपर सब नाखें ॥

॥ पद ॥

जित देखूं सुख रूप मई है।

सुख मई बृज मंडल वृन्दावन लता ललित सुख रूप छई है ॥
सुख सरूप रजरानी जमुना श्री वन चारों ओर वही है ।
कुंज महल सुख रूप लखावत ललितादिक सुख रूप भई है ॥
सुख मई श्यामा श्याम मनोहर करत केलि सुख नई नई है ।
सुख मई रास विलास केलि कल रसिक जनन भल जान लई है ॥
सुख मई उज्जल सर्वोपर रती अनंग गर्व विजई है ।
सुख बिहार दंपति की संपति सरस गुरुन दृग मेलि लई है ॥

॥ राग चरचरी ॥

श्री श्री वेद व्यास नंदन गुन गाइये ।
जिनको शुक मुनि सुनाम जपत प्रेम पाइये ॥
वृन्दावन परम धाम राजें जहाँ श्यामाँ श्याम ।
रास रंग जहाँ आठो जाम ताहि सदा ध्याइये ॥
कुंज महल सखि सरूप श्याम अंग अति अनूप ।
आचारज पुरुष रूप भूतल मन लाइये ॥

स्वयं कृष्ण कमल नैंन रसिकन मन मोद दैंन ।
छवि को लखि लजित मैंन ताकी शरण आइये ॥
सरस माधुरी उमंग निरखत कल केलि रंग ।
चरण चारु चिंता मणि हृदय निज वसाइये ॥

॥ पद राग सोरठ व सोहनी ॥

बंदो वेदव्यास सुकुमार ।
रसिक भूप अनूप शुक मुनि श्याम के उनहार ॥
मुख मयंक प्रकाश पूरन भौंह धनुष सुढार ।
नैंन अनियारे अरुण सित चपल मारत मार ॥
भाल दिपत विशाल सिर पर वारवूँघर वार ।
मंद मुसकावन सुहावन मोहनी दैं डार ॥
पीत वक्षस्थल उदर तृय रेख छवि सु अपार ।
गूढ जानु आजानू भुज कटि कसि नितंब सुभार ॥
चरण कमल अनूप अद्भुत लीजिये उर धार ।
सरस श्यामाँ श्याम दंपति मिलत लगत न वार ॥

॥ पद विहाग ॥

बंदो शुक मुनी के चरन ।
कलित कंज समान कोमल मोद मंगल करन ॥
त्रविधि जुग संताप मेटन रसिक मन आभरन ।
मोह माया के निवारन शोक संशय हरन ॥

श्याम श्यामा कुंज लीला आश्रित हिय धरन ।
सरस दंपति देंहि दरशन लेंहि अपनी शरन ॥

॥ आरती राग सारंग, विलावल टोड़ी ॥

श्री शुक मुनि महाराज तुम्हारी करूँ आरती वारं वारी ॥

चरन सरोज सकल सुख की निधि सब विधि करन सहाय हमारी।
जुगल जंग कदली सम सुंदर नाभि गंभीर महा रुचिकारी ॥
त्रिवली ललित उच्च वक्षस्थल कटि कोपीन मनोहर धारी ॥
पद्मासन आसीन महा प्रभु भुज आजानु अनूप सुढारी॥
भाल विशाल तिलक श्री शोभित अंबुज नैंन सैंन मदहारी ॥
छके जुगल छवि ध्यान माधुरी मंद मधुर मुसकनि पर वारी ॥
श्रवण सुभग नासा अति सुंदर बिथुरी अलक कपोलन कारी ॥
चंद्र बदन सुख सदन सलोनो शिर केशावलि धूँघर वारी ॥
महा प्रकाश तेज परि पूरन फैल रही चहुँ दिशि उजियारी ॥
श्याम वरन शोभा को सागर मनो स्वयं श्री कृष्ण मुरारी ॥
सरस माधुरी रूप अनूपम लखि निज नैंन भई मतवारी ॥

॥ पद ॥

तर्ज (तेरा श्याम कन्हैया कुंज बिहारी चंद्र वदन मोहे भावत है)

मेरे शुक प्यारे व्यास दुलारे मो मन में अति भावत हो ।
मैं तो बिन्ती करूँ तोरे चर्न परूँ मेरे स्वामी तुमहि कहावत हो ॥

॥ अंतरा ॥

लिया है व्यास के औतार नंद लाला है ।
तुम्हारा संत रूप क्या ही खूब आला है ॥
चंद से मुख पे तिलक पीत क्या निराला है ।
कटि में कोपीन और गल में पुष्प माला है ॥
तुमतो यशुमत प्यारे जग उजियारे संत रूप धर आवत हो ॥
तुम्हारा श्यामवरन मनका हरने वाला है ।
बजा के वंशी को जादू का करने वाला है ॥
हर एक तरह के वह रूपों धरने वाला है ।
सुना है कार्य भक्तों का करने वाला है ॥
तुमतो धर कर रूप मुनी का प्यारे जोरी जुग मिलावत हो ॥
वो सर्स माधुरी झाँकी जो बाँकी प्यारी है ।
उसके विन देखें मुझे सख्त वे क़रारी है ॥
छुपा है रूप में वो आपके विहारी है ।
दिखा दो उसको हमें तुम से आशा भारी है ।
मैंतो जान लिया तुम्हें श्याम कन्हैया शुकमुनि नाम कहावतहो॥

॥ पद ॥

तर्ज (हे श्याम कन्हैया कलैया मेरी छोड़ दे)

श्री शुक सलोने सखीरी मन भाये हैं ॥

आये हैं यह अमर नगर से आचारज बन श्याम ।
इन्हें निरखि नर नारि अप्सरा थिर चर मन मगनाये हैं ॥

वयस किशोर चोर हैं चित के मुनियन में हैं भूप ।
रस निकुंज को रसिकन के हित अपने संग में लाये हैं ॥
सुरपुर की सब नारी प्यारी ललचाई लख रूप ।
नाची गाई अन मगनाई मन मथ देख लजाये हैं ॥
व्यास सुवन हुवे परमारथ को करें भागवत गान ।
पहुंचावन परधाम जियन को भूतल में प्रगटाये हैं ॥
जो जन चरण शरण में आये दंपति तिनको अपनाये ।
सरस माधुरी जीत जन्म को अंत परम पद पाये हैं ॥

॥ ग़ज़ल ॥

बिनती मेरी सुनो तुम श्रीमान शुक मुनीश्वर ।
देखो दया नज़र कर श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
करमों का हूं सताया देती है दुःखमाया ।
रच्छा करो रसिकवर श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
निज दास खास जानो अपना ही मुझको मानो ।
परिकर में लो मुझे बर श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
प्यासा जुगल दरश का, चित को लगा है चसका ।
प्याला दो प्रेम रस का, श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
दम्पत के दर्श कारण, अँखिया अधिक हैं व्याकुल ।
छबि की छटा दिखादो, श्री मान शुक मुनीश्वर ॥
प्यारी पिया मिलादो, भिच्छा दरस दिलादो ।
मरती हूं मैं जिलादो, श्री मान शुक मुनीश्वर ॥

हे सर्स शर्ण तेरी, तुम को है लाज मेरी।
सरपे दो हाथ निजधर, श्री मान शुक मुनीश्वर॥

॥ दोहा ॥

प्रगटत ही वन को रमे, यह जानत सब भेव।
सरस माधुरी हेतु यह, नाम राम शुकदेव ॥

वेद व्यास व्यापक लखे, वन बृक्षन में देव।
द्वतिय हेतु यह जानिये, नाम राम शुकदेव॥

रमे रहत मन में सदा, राधा रमण सुजान।
नाम राम शुकदेव मुनि, या बिधि लेहु पिछान॥

श्री शुक मुनी महा प्रभु, विनय सुनो चित लाय।
कृपा करहु भव दुख हरहु, देहु प्रेम हरषाय॥

सुमरूँ दम्पति रैन दिन, आंसू दृगन बहाय।
गद गद स्वर रोमांच हो, तन मन सुधि बिसराय॥

रसिकन संग निश दिन रहों, गाऊँ गुण मन लाय।
ललित लाडिली लाल को, निज दृग लेहु बसाय॥

सेवक मो को जान के, लीजे निकट बुलाय।
सेवा चरण सरोज की, दीजे मोहि बताय॥

सिवकाई श्री अंग की, करूँ हिये हुलसाय।
सरवस धन सेवा गिनों, स्वर्ग मुक्ति बिसराय॥

नित निरखों छबि माधुरी, अति ही प्रीति लगाय ।
बांकी झांकी दृग बसे, चित इत उत नहि जाय ॥
तन में मन में नयन में, बसो लाडले आय ।
सरस माधुरी ध्यान में, दीजे नाथ छकाय ॥

॥ राग बिलावल ॥

जय शुक सखी जुगल की प्यारी ॥

परम पूज्य प्रणतारत भंजन जन मन रंजन मंगल कारी ॥
नाम रूप रसमय नित जिनको यूथाधिप अलि प्राण आधारी।
कुंज निकुंज केलि प्रकासन रस वर्धन दंपति रिझवारी ॥
छवि आसक्त छकी सँग डोलत सुख मृदु बोलत जन मन हारी।
अतुलित दया कृपा करुणामय सरस माधुरी लख भई वारी ॥

॥ राग भैरवी ॥

तुमसी तुम शुक सखि अलिवेली।

कृपा पात्र श्यामा की स्वामिनि निरखत नित्त निकुंजन केली ।
सेवत सुकर सदा प्यारी पद रिझवत राधे लाड़ गहेली॥
गुन गावत दुलरावत दम्पति सुसुख सुनावत प्रेम पहेली ॥
हँसिकसि भरतभुजन विचश्यामा मुखचूमत लखनिजमनमेली।
सरस माधुरी रस आस्वादनि नमो नमो प्रिय परम सहेली ॥

॥ राग काफी ॥

जय शुक सखी स्वामिनी मोरी ।

रंग महल में रहत निरंतर सेवत नित्त किशोर किशोरी ॥

युगल चंद मुख मंद हँसनि लखि मगन रहत मन में निश भोरी।

सरस माधुरी केलि विलोकत तृप्ति न मानत नैंन चकोरी ॥

॥ राग जंगला ॥

स्वामिनी श्री शुक सखी हमारी ।

यूथेश्वरी रूप गुण आगर छवि सागर दंपति की प्यारी ॥

कुंज मंजु में निश दिन राजत सेवत श्यामा सरस बिहारी ॥

जुगल चंद मुख दृगन चकोरी गौर श्याम जोरी उर धारी ॥

विलसावत पर्यंक परम सुख छवि आसक्त रहत नहिं न्यारी ॥

सरस माधुरी रूप रसामृत नैंनन पियत रहत मतवारी ॥

॥ राग कान्हरा ॥

जयति जय जयति शुक स्वामिनी नागरी ॥

श्याम सुचि वरन सुख करन रति मद हरन,

परम सौभाग्य गुण रूप में आगरी ॥

सखिन यूथेश्वरी दया करुणा भरी,

जुगल छवि हिये धरी सुयश शुचि सागरी ॥

सरस रस सिंधु की मीन छवि लीन नित,

रहत संग युगल वर परम बड़ भागरी ॥

॥ राग कान्हरा ॥

शुक सखी स्वामिनी कृपा करुणा करो ॥
जुगल मुख चंद की छवि छटा रसभरी,
रैन दिन अचल मम नैंन में वलि भरो ॥
मंद मुसकान बतरान अमृत मई,
मद भरे नैंन की सैंन उर में धरो ॥
सरस कर जोर जाचत टहल महल की,
देहु कर कृपा दुख विरह के परहरो ॥

॥ राग कव्वाली ॥

प्यारा प्यारा हमारा शुक मुनि वेदव्यास नन्दना,
साँवला सलौना रिझौना है रूप का,
माधुरी मूरति मुख चंदना ॥
नैंना हैं विशाल छवि जाल घुँघुरारे बाल,
मुख से हँसत मन्द मन्दना ॥
झाँकी है बांकी दिखाय, ललचाय हाय,
डार दियो प्रेम गल फन्दना ॥
रसिकाधिराज ऋषीराज, सिरताज सर्व,
अद्भुत है आनँद का कन्दना ॥
सरस माधुरी निहार, तन मन धन दीनो वार,
करी कर जोर चरण बन्दना ॥

॥ राग भैरवी ॥

ऐ व्यास नंदन शुक मुनी   मुश्ताक़ दीदारे तुअम ।
चरण दास के प्यारे गुरू   ,, ,, ,,
ए सरवरे ऋषि मुनिवरां   ,, ,, ,,
श्री भागवत करदी बयां   ,, ,, ,,
ए पेशवाये आचारजां   ,, ,, ,,
बखशिंदये राजे निहां   ,, ,, ,,
ए शाहंशाहे आशिकां   ,, ,, ,,
पुरसन्दये दुख वे कसां   ,, ,, ,,
ए रहनुमाये सालिकां   ,, ,, ,,
मक़बूल इबादत आबिदां   ,, ,, ,,
ए नूरदीदे दो जहां   ,, ,, ,,
इमदाद करदन कामलां   ,, ,, ,,
ए फ़ैज़ बखशे आजिज़ां   ,, ,, ,,
आसी सरस पीरे मुग़ां   ,, ,, ,,

॥ दोहा ॥

व्यास तिहारे वंश को मोकों जानो राय ।
शुक मुनि की विरदावली यश सुनिये हरषाय ॥
सभा सकल संतन भरी बैठ ऋपि मुनिराज ।
गावन लागो रायवर मंगल निरख समाज ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

व्यास जू तुम सम और न धन्न ।

कृष्ण कमल लोचन भव मोचन पुत्र भयो उत्पन्न ॥
आचारज ह्वै हैं रसिकन के मुनिन मांहि अग्रन्न ।
जो जन इनको ध्यान धरें उर होय अवश्य अनन्न ॥
प्रेम परा पद पाय प्रमुद मन भाव भक्ति व्युत्पन्न ।
सरस माधुरी टहल महल पा संतत रहै प्रसन्न ॥

॥ धुन कहरवा ॥

कछु कहूं कवित कर प्रीति रसिक सुन मोद भरो ।
अति प्रेम परायन होय लाल शुक दरश करो ॥
श्री शुक नाम उचार जगत दुख मूल हरो ।
निश्चय कर दृढ़ विश्वास सिंधु जग सहज तरो ॥
ह्वै मगन लगन के मांहि भक्ति के भाव ढरो ।
कहै सरस माधुरी शरण चरण को ध्यान धरो ॥

॥ राग श्याम कल्याण ॥

विघ्न विनाशन श्री शुकदेवा ।

ब्रह्म सरूप सर्व में व्यापक विरले जन जानत यह भेवा ॥
महिमां जक्त प्रसिद्ध जिन्हों की ऋषिमुनि जन मानें गुरुदेवा ।
सरस माधुरी रसिकाचारज करो निरंतर तिन पद सेवा ॥

॥ सवैया ॥

श्री शुकदेव सहाय करें, जन की जो हरें भवकी सब बाधा ।
नौ ग्रह आदि अनेक अमंगल मेटत हैं बहु भाँति उपाधा ॥
रक्षक हैं निज दासन के, जिनके हिय में वात्सल्य अगाधा ।
सर्स अभय पद में पहुँचावत ऐसे दया निधि को आराधा ॥

॥ सवैया ॥

श्री शुकदेव रटे रसना नित, कोटि कटें भव संकट भारी ।
होंहि उदय शुभ कर्म अनेकन, पुन्य प्रताप बढ़ैं सुख कारी ॥
रंग रँगीली छवीली छटा दृग, आय बसे श्री कुंज बिहारी ।
सर्स की माधुरी सेवा मिले सखी, प्रेम के माँहि रहै मतवारी॥

॥ गजल ॥

चल देखो आज सजनी, शुकदेव रूप आला ।
जन्में हैं व्यास जी के, मुनि रूप नन्द लाला ॥
है झांकी प्यारी बांकी, मन मोहनी अदा की ।
मुनियों के मन को मोहे, सुंदर सरूप वाला ॥
सर पर हैं बाल प्यारे, घुंघरारे कारे कारे ।
मस्तक तिलक श्री है, उर धारे फूल माला ॥
आसन पद्म प्यारा, कटि में कोपीन धारा ।
है उम्र सोलह साला, तन श्याम रंग निराला ॥

मुनियों में हैं ये राजा, रसिकों के सारे काजा ।
आवें शरन चरन की, उनको करें निहाला ॥
सुखदेव सुख के रासी, आनन्द के विलासी ।
दें दर्स निज सरस को, करके कृपा कृपाला ॥

॥ पद ॥

श्री महाराज शरण चलि आयो ॥
शरणागत वत्सल तुम स्वामी विरद आपको संतन गायो ॥
कृपा करो दुख हरो विरह को करिये नाथ मोर मन भायो॥
सरस माधुरी जुगल प्रेम दे जानों चाकर घर को जायो ॥

॥ नाटक की चाल में ॥

नांचे गावें सुरनारी सुकुमारी सब वारी वारी जावें ।
हरषावें हुलसावें मिल सारी सब वारी वारी जावें ॥
सुर वीणा बजावें मृदंग गति लावें,
करताल को लगावें, सब वारी वारी जावें ॥
पग घूंघरू छमकावें हाव भाव को बतावें ।
नैनों को मिलावें सब वारी वारी जावें ॥
सुमेरु शिखर पर फूल खिले क्यारी,
हर रंग की फुलवारी की देखें शान ।

सर्स चमन गुले गुल शन ।

है सलोना । आला । शुकलाला । छबिजाला । मतवाला ।

पियारी सब वारी वारी जावें ॥

॥ राग भैरवी ॥

श्री शुक मुनि की छवि लखि लीजे ॥

आनंद मंगल करके सजनी तन मन धन न्योछावर कीजे ॥

सुंदर श्याम काम मद मोचन रूप माधुरी में मन दीजे ॥

नयनन निरखि हरष हिय माहीं रूप रसामृत को नित पीजे ॥

अमर होय अमरा पद पावे प्रेम माँहि हियरो यह भीजे ॥

सरस माधुरी व्यास सुवन की शोभा देखि देखि के जीजे ॥

॥ ग़ज़ल ॥

निरखो निरखो छबी मुनि राज की री ।

सुंदर सूरत सलौनी महाराज कीरी ॥

कैसा मन हरन मनोहर है सुंदर जमाल ।

अवलोकन से करते आकरशन कमाल ॥

चुभी चित में है चितवन सरताज की री ।

आये अमर नगर से दिगंबर बन श्याम ॥

व्यास सुवन कहाये परमारथ के काम।
कृपा भारत पै है व्रजराज की री॥

लेते जो जन हैं सरस चरन की शरन।
छुटा देते हैं दम भर में जीवन मरन।
है यह आदत ग़रीबनवाज़ की री॥

॥ कव्वाली ॥

जय जय बोलो शुकदेव दयाल, नचो दे दे कर ताल॥

आज भलो दिन कियो विधाता, प्रगट भये संतन के त्राता।
त्रिभुवन में विख्यात निरखि के होहु निहाल॥
वय किशोर चित चोर छबीले, नैंना जिन के निपट रसीले।
मंद मधुर सुख कंज रसीले, श्याम शरीर सुढाल॥
चंद्र वदन सुख सदन सुहावन, नैंन कमल दल चित्त लुभावन।
रती मदन को गर्व नसावन, नख शिख लों छवि जाल॥
ऋषि नारी मिलि आईं सारी, धूप दीप कर कंचन थारी।
दरशन करत भईं मतवारी, मन मगन भई सब बाल॥
हरष निरख आरती उतारें, नैंनन रूप अनूप निहारें।
छवि मुनिवर की हिय में धारें, वारें मुक्ता मणि माल॥

कोइ नाचैं कोइ भाव बतावें, फूलन की वरषा बरसावें।
मिलें परस्पर मोद बढ़ावें, नहिं तन की सुरत सँभाल॥
सुर नर मुनि मिल करी बधाई, अति आनंद दसहों दिशि छाई।
गान तान धुन भरी लगाई, बाजें बीन मृदंग रसाल॥
प्रेम भक्ति मारग प्रगटावें, जीवन जीवनमुक्त बनावें।
अमित जीव जग धाम पठावें देवें जन्म मरन दुख टाल॥
जो जन शुक मुनि ध्यान लगावें, निश्चय श्याम राधिका पावें।
जगत जाल में बहुर न आवें, रहें सदा समीप खुशहाल॥
श्री शुक निज सुख नित प्रति गावें, अनमोदन कर उर हुलसावें।
भाव भक्ति कर जो जन ध्यावें, तिन्हें मिलें सुधाकर लाल॥
सरस माधुरी शुभ दिन नीको, दरशन पायो प्रानपती को।
जीवन मूर हमारे जी को, निज जन प्रभु करें प्रति पाल॥

॥ दादरा ॥

वेदव्यास लाला वाला दरस तो दिखायजा॥

श्याम बरन मन के हरन, मंगल मन मोद करन।
मेट मेरे जिय की जरन, नेंक नजर आयजा॥
निश दिन मैं धरूँ ध्यान, भूल गयो खान पान।
तलफत हैं पंछी प्रान, छवि में तू छकायजा॥
चंद बदन सुख को सदन, निरख नैंन लजत मदन।
मंद मुसकाय आय नैनों को मिलायजा॥

चातक को स्वाति आस, निश दिन ता विन उदास।
तैसे मोहि प्रेम प्यास दरस रस पिलायजा ॥
सरस माधुरी सुजान, विनय लेहु मोर मान।
वेग मिलो प्रान विरह विपति को मिटायजा ॥

॥ गज़ल ॥

दर से दरे दौलत पै हम सदा देते हैं।
देखूँ शुकदेव मुनि अव मुझे क्या देते हैं ॥
अपने वंदों को वना देते हैं दम में सुलतान।
आप विगड़ी हुई तक़दीर वना देते हैं ॥
सुन के मैं नाम वड़ी दूर से आया हूँ हुजूर।
आप कर रहम नज़र प्रेम पिला देते हैं ॥
अपनी रहमत से करो मुझ पै चरन का साया।
वन के मोहताज तेरे दर पै सदा देते हैं ॥
दस्त वस्ता तेरे दरवार में हाज़िर है सरस।
आप निज दास को दम्पति से मिला देते हैं ॥

॥ श्री शुक मुनि महाराज की आरती ॥

आरती करिये मुनिवर की, श्री शुक छविधर की ॥
श्याम सुअंग अनंग लजावन, घुंघरारी सिर जटा सुहावन।
शरद चंद सम मुख है पावन, शोभा मन हर की ॥

मंद हँसन दुति दसन उजारी, नैनन की चितवन अति प्यारी।
भुज आजानु अनूप सुढारी, कटि सम केहरि की॥
प्रथु नितंव जंघा कदली सम, पिंडली गोल और गुल्फ मनोरम॥
चरण चारु नख चंद हरण तम, रूप दिगम्बर की॥
शोडष वर्ष वयस सुख कारी, प्रेम मई मूरति मतवारी।
निरखत सुध बुध विसरी सारी, विधि अरु हरि हर की॥
श्री मत वेद व्यास दुलारे. आचारज गुरु इष्ट हमारे।
सरस माधुरी तन मन वारे, दासी निज घर की॥

॥ आरती ॥

वेद व्यास के कुँवर कृपानिधि श्री शुक मुनि प्यारे।
रूप आचारज धारे त्रिभुवन उजियारे॥ श्री शुकमुनि प्यारे॥
श्याम सरूप सुहावन पावन सुंदर वपु धारे।
नवल किशोर नवीने नयनन के तारे॥श्री शुकमुनि प्यारे॥
प्रगटत ही बन जाय वसे प्रभु जग से भये न्यारे।
ध्यान समाधि लगाई टरे नहीं टारे॥श्री शुकमुनि प्यारे॥
स्वर्ग अप्सरा छलने आई तिन से नहि हारे।
माया जीती छिन में मुनिवर मतवारे॥ श्री शुक मुनि प्यारे॥
नृपति परीक्षित की सुधि लीनी ताहि कियो पारे।
श्री भागवत सुनाई हो दयालु भारे॥ श्री शुक मुनि प्यारे॥
श्याम चरण के दास किये शिष्य सब कारज सारे।
नौधा भक्ति प्रचारी जग जिय निस्तारे॥श्री शुकमुनि प्यारे॥

चारों मुक्ति करें सिवकाई खड़ी रहैं द्वारे ।

चार पदारथ दाता रसिकन रखवारे ॥ श्री शुकमुनि प्यारे॥

प्रेम भक्तिवर देहु दयानिधि रखो चरन लारे ।

सरस माधुरी जुगल वसें चित गलवैया डारे ॥ श्री शुक०

श्री शुकदेव जी की नवीन लीला ।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री कृष्ण शुकमुनि बने, श्री आचार्य स्वरूप।
सो लीला वरणन करों, अति ही सरस अनूप ॥

श्री मत वृंदावन धाम में श्री युगल सरकार का गलबैंया दिये सिंहासन पर विराजमान होना और सखियों का यश प्रताप और ऐश्वर्य गुणों का पद गाना।

सखियों का गाना।

॥ आरती ॥

आरती करो राधावर की श्री वंशीधर की ॥
मोर मुकट शिर शोभा भारी, कानन कुंडल अति उजियारी,
अलक कपोलन छुट रही कारी अति ही मनहर की ॥
भाल तिलक श्री रेख सुहावन, भृकुटी कुटिल धनुष सकुचावन,
नैंन मैंन सर मारत चावन, छवि प्रिय गिरधर की ॥
नाक बुलाक अनूप सुढारी, मंद हँसन मन मोहनि डारी,
अधर धरे वंशी बनवारी, भरी सप्त स्वर की ॥
कौस्तुभ मणि कंठ में राजे, मोतियन माला गले बिराजे,
कछनी पीतांबर छवि छाजे, कटि सम केहरि की ॥

पायजामा पायन में सोहै, पग नूपुर धुनि मुनि मन मोहै,
उपमा वरन सके कवि कोहै, झांकी नटवर की ॥
वाम अंग वृषभान दुलारी, कोटि चन्द छवि मुख पर वारी,
भूषन बसन अनूपम धारी, प्यारी श्री हरि की ॥
नारद शारद गुण नित गावें, सुर नर मुनि जन शीश नवावें,
सरस माधुरी बलि बलि जावें, दासी परिकर की ॥

॥ श्री युगल सरकार स्तुति अष्टक ॥

श्री राधिकावर श्याम अति अभिराम युग सरकार हो ।
सर्वज्ञ संपूरन कला रसिकेश परम उदार हो ॥
वृषभानु नंदनि नंद नंदन मूर्ति रस श्रृंगार हो ।
रति मदन के मन के हरन सुंदर दोऊ सुकुमार हो ॥
भक्त वत्सल भय हरन तारन तरन संसार हो ।
कलिमल हरन मंगल करन करतार करुणागार हो ॥
सर्वेश परम परेश प्रभु तुम मुक्ति पद दातार हो ।
व्यापक सकल ब्रह्मांड में युग युग में लो अवतार हो ॥
छवि धाम पूरन काम सद्गुण ग्राम सब के सार हो ।
विद्युत छटा श्यामल घटा सदृश दोउ रिझवार हो ॥
भक्त वत्सल भय हरन संतन के तुम सरदार हो ।
दीन बंधो दया सिंधो अधम जन उद्धार हो ॥
सुधि लेहु दर्शन देहु दंपति प्राँन के आधार हो ।
नेंक करुणा कर निहारो नाथ बेड़ा पार हो ॥

नवल नागर प्रेम सागर नेह निधि मनहार हो ।
अशरण शरण आनँद करण प्रभु हरण भुव को भार हो ॥
जो प्रीत कर अष्टक पढ़े उनकी न कब ही हार हो ।
कहै सरस माधुरी धाम जावे जग में जय जय कार हो ॥

श्री प्रिया जी का सखियों सहित कुंज से पधार जाना । पीछे श्री करुणा देवी का आना और ठाकुरजी को हाथ जोड़ कर प्रार्थना पद सुनाना और गाना ।

॥ राग सोरठ, पीलू ॥

हे कृष्णचन्द्र कृपाल करुणा सिंधु अधमन उद्धरन ।
हे पतित पावन प्रभु सब के हो तुम पोषन भरन ॥
कर्म बंधन में बंधे जिय मायावस व्याकुल महा ।
जन्मते मरते जिन्हों की लेहु सुधि श्री गिरि धरन ॥
आप बिन निस्तार उनका होना संभव है नहीं ।
भेटिये हँस श्री हरी लेलीजिये उनको शरन ॥
सरस दरस दिखाय अपना दीजे निज छवि में छका ।
अभय दाता भक्त त्राता आपके निज हैं चरन ॥

श्री कृष्ण महाराज का सिंहासन से उठ कर करुणादेवी का सतकार करना और प्रेम पूर्वक अंक में भरना और आलिंगन करना और दोनों नेत्रों से करुणा के आंसू ढरना

और जक्त के दुखी जीवों की सुरति करना । करुणा रस का पद श्री मुख से गान। और करुणा देवी को गाकर सुनाकर व्याकुल होजाना ॥

॥ राग लावनी ॥

करुणा देवी तुम सुनो वचन मेरे प्रिय कान लगाई ।
तुमसे मिलते ही सखी मोहि, जग जीवन की सुधि आई ॥
रहे त्रिविधि ताप में तप्त कर्म वस पावें दुख अधिकाई ।
संकट मेटूं भेटूं उनसे कहूं सत्य वचन समझाई ॥
जीवन की ताप निवारूँ, अवगुन मन में न विचारूँ ।
प्रगटूं आचारज रूप धार के, यह मेरे जिय भाई ॥
जो आज्ञा देवें प्रिया मनोरथ सकल सिद्ध हो जावे ।
उनकी संमति के विना काम यह हमसे नहिं वन आवे ॥
हैं अति दयाल श्यामाँ गुन धामाँ वेद विमल यश गावें ।
शरणागत वत्सल विरद सत्य कर पतितन पार लगावें ॥
जग जीव अंश हैं मेरे, जिनको कर्मन ने घेरे ।
तिनको करके उपदेश सरस संसृति दुख देहुँ मिटाई ॥

(पद के गाये पीछे ठाकुरजी का व्याकुल होकर बैठ जाना और ध्यान लगा कर विचार करना । श्री जी का

आना और प्यारे को समाधान करके हृदय लगा कर पूछना।

॥ श्री प्रियाजीवचन ॥

प्यारे आप क्या कर रहे हैं किस बात के सोच विचार में बैठे हैं।

श्री ठाकुरजी :-

हे प्यारी जू संसार के जीव दुखी हैं आप की आज्ञा
होय तो उन को उद्धार करूँ ॥

॥ दोहा ॥

प्रियाजी:-

अहा हा ! श्री प्राणपति, भली विचारी आप ।
वलि हारी जग जियन को, मेटो भव संताप ॥

मात पिता सब विश्व के, हम तुम प्राण अधार ।
जीव सकल संतान सम, अपने लेहु विचार ॥

पितु सें माता सौ गुनो, सुत सों राखे प्यार ।
सत्य सत्य यह बात है, जानत सब संसार ॥

॥ सवैया ॥

प्रियाजी:-

मम प्रीतम श्याम सुजान सुनो, कहूँ बात प्रत्यक्ष तुम्हें समझाई।
इच्छा जग जीव उद्धारन की उत्तम हिय में तुमरे प्रगटाई ॥
यह नीको मनोरथ आप कियो, मोहे प्यारो लगे अति ही सुखदाई।
है सर्स सुहावनो काम यही यासों प्रगटे तुमरी प्रभुताई ॥

॥ पद ॥

मेरे सुनो वचन प्रीतम सुजान करो जग के जीवन को कल्यान।
लेवो आचारज शृंगार धार, उर धरो दया करुणा अपार॥
देवो जीव मात्र को अभय दान॥
शरणागति पद्धति करो प्रचार, सत्संगति शिक्षा देवो सार।
प्रेमामृत तिन्हें करावो पान॥
कलि नाम कीर्तन करो प्रकाश, जग जीवन को होय पाप नाश।
तज देह वसें सव धाम आन॥
काटो जीवन के करम फंद, मेटो माया के दुःख द्वंद।
या सम परमारथ नहीं आन॥
सुनो सरस माधुरी वचन कान, पतितन तारन की तुम्हें वान।
हो बुद्धि विशारद गुन निधान॥

॥ दोहा ॥

हे इच्छा देवी सखी, सुनहु वचन चित लाय।
प्यारे को याही समय, रूप आचार्य वनाय॥
वात्सल्य करुणा कृपा, हृदय नेंन झलकाय।
मधुर वचन मंगल करन, सुंदर गुन प्रगटाय॥

॥ राग रेखता ॥

इच्छादेवी:—

आचारज रूप प्रीतम को अभी प्यारी वनाऊँ मैं।
करोगी आप खुद दर्शन अभी करके दिखाऊँ मैं॥

दिगम्बर भेष अति सोहन मदन के मन का मन मोहन ।
फिरें ऋिधि सिधि लगी गोहन, तुम्हें नयनों लखाऊँ मैं ॥
सलोनी साँवली झाँकी, मनोहर माधुरी बाँकी ।
अनूपम अंग की शोभा सहज करके बताऊँ मैं ॥
रहे संग मुक्ति हो दासी, करे सेवा सरस खासी ।
बनें मुनि राज रस रासी तभी कुछ रीझ पाऊँ मैं ॥

इच्छा देवीः—

हे श्री राधे प्यारी आपकीप्यारी दासी अपने संग शृंगार कुंज में श्री प्राननाथ को ले जाती है और आचार्य रूप बना कर आप को झाँकी कराती है ।

(इच्छादेवी और श्री कृष्ण दोनों शृंगार कुंज में जाते हैं)

॥ सखियों का धन्यवाद पद गाना ॥

धन्य दिवस आज श्याम भूतल में जावेंगे ॥

आचारज रूप धार जीवन को करें उद्धार ।
माया कर्म बंध काट धाम में बसावेंगे ॥
जन्म मरन नरक त्रास चौरासी योनि वास ।
मेटें गर्भ त्रास शरन इनकी जो आवेंगे ॥
रैन दिवस धरें ध्यान प्रेमामृत करें पान ।
पुलक परम आनंद सों गोविंद गुन गावेंगे ॥
अमर लोक करें वास रहें नित्य युगल पास ।
सरस रस विलास निरख मोज नित मनावेंगे ॥

(इच्छादेवी का आना और श्रीकृष्ण को आचार्य स्वरूप में लाना)

॥ दोहा ॥

हे प्यारी नैंन लखो, श्री आचारज रूप ।
विश्व विमोहन मन हरन, अद्भुत अधिक अनूप ॥

॥ पद ॥

प्रियाजी:—आचारज रूप श्याम, अद्भुत शोभा के धाम ।
निरख लजित कोटि काम अंगकी निकाई ॥
घुँघरारी शीश जटा अद्भुत घनश्याम घटा ।
चंदा सम मुख की छटा चित्त ले चुराई ॥
ब्रह्मचर्य दिप्त भाल भौंह धनुष अति रसाल ।
नासिका सुढाल मंद मुसकन सुख दाई ॥
प्रेम मत्त युगल नयन अमृत सम मधुर वयन ।
करुणा रस अयन हृदय हरष रह्यो छाई ॥
दया क्षमा गुण अपार दीनन दुख हरन हार ।
सरस माधुरी सरूप शोभा अधिकाई ॥

बलिहारी ! बलिहारी !! इच्छा सखी प्यारी । अहा आपने प्रीयतम को अत्यंत सुंदर आचार्य सरूप करायो है हमारे मन में भायो है और हृदय नयनन में समायो है ॥

दोहाः— वेद व्यास के आश्रम, प्रीतम प्रगटो जाय ।
आचारज मुनि रूप हो, करो सुधर्म सहाय ॥

श्री गंगा जी आगमन लीला ।

॥ श्री राधा सरस विहरिणी नमः ॥

॥ सूचना ॥

श्री गंगा शुक मुनि जनम, सुन कर हिय हुलसाय ।
श्री वेद व्यास भगवान के, आश्रम पहुँची आय ॥
गंगाजल झारी लिये, अरु फूलन की माल ।
मंद मंद मुसकात मुख, मूरति परम कृपाल ॥

सखीः— जय जय जय बलिहारी। आप कहाँ से पधारीं।
कहा आपको नाम है। रहने को आप को कौन सो गाम है ॥
आपने अनुपम दर्शन दियो। हमारो सौभाग्य वर्धन कियो ॥

गंगाजीः—
हे सखी प्राण प्यारी। तुम्हरी प्रेम भरी बोलन पर मैं वारी॥
आप अपने प्रश्न को उत्तर सुन लीजिये ।
और हमारी मन इच्छा पूरण कीजिये ॥

सखीः—जो आज्ञा आप अपनो सर्व वृतान्त सुनाइये ।
और मेरे योग्य जो सेवा हो वह मोको अवश्य बताइये ।

॥ गजल ॥

आई हो तुम कहाँ से कह दीजे भेद सारा ।
क्या नाम आपका है कर दीजे आशकारा ॥

रहती हो तुम कहाँ पर क्या नाम धाम का है।
आने का कारन अपना मुख से करो उचारा ॥
सेवा हमारे लायक जो हो कहो कृपा कर।
सिवकाई हम करेंगी यह काम है हमारा ॥
तुम हो दयाल भारी सूरत तुम्हारी प्यारी।
सरस माधुरी ने अपना सर्वस्व तुम पै वारा ॥

॥ ग़ज़ल ॥

गंगाः—गंगा है नाम मेरा गौ लोक से मैं आई।
जनमे हैं व्यासजी के मुनि रूप श्री कन्हाई ॥
दर्शन करन को नैना ललचा रहे हैं मेरे।
मुख चंद शुक मुनी का दीजे ज़रा दिखाई ॥
जग में धरम सनातन क़ायम करेंग प्यारे।
भागोत को सुनाके परीक्षत को दें तराई ॥
आचार्य बन के ब्रज की बरनन करेंगे महिमाँ।
निज प्रेम भक्ति मारग देवेंगे खुद बताई ॥
नाम रूप धाम लीला प्रगटावेंगे उपासन।
पहुँचावेंगे पर्म पद निज जन को कर कृपाई ॥
जो जन इन्हों को ध्यावें प्रीतम प्रिया को पावें।
सरस माधुरी जुगल की छवि में देवें छकाई ॥

सखीः—हो तुम हरि की लाड़ली, श्री गंगा गुण धाम।
पापी पावन होत हैं, लेत तुम्हारो नाम ॥

व्यास आश्रम में आप अब, चलिये मेरे संग ।
करो दरश शुक लाल के, हृदय भरो रस रंग ॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री गंगा सानंद मन, चली सखी के साथ ।
वेदव्यास को नमन कर, जोर लिये दोउ हाथ ॥
स्तुति कर वहु भांति सों, कहत धन्य मुख धन्य ।
संत रूप श्री मत हरी, हुये तुमरे उत्पन्य ॥

॥ श्री गंगाजी वचन दोहा ॥

श्री मत वेदव्यास जू, तुम सम धन्य न आन ।
प्रगट भये तुमरे सदन, श्री पुरुषोत्तम जान ॥
आचारज है अवतरे, हरि करुणा के ऐन ।
रूप अनूपम श्याम घन, लखि लाजत मन मैन ॥
इनके गुण अन गिनत हैं, शेष न पावत पार ।
श्रवन कराऊं आपको, कछु इक वचन उचार ॥
संतन के सर्वस्व धन, मुनियन के सरदार ।
ऋषियन के हैं मुकट मणि, रसिकन प्रान अधार ॥
सर्व अंग सुंदर महा, नव किशोर सुकुमार ।
सरस माधुरी रूप पर, तन मन दीजे वार ॥

॥ आसावरी ॥२॥

वेद व्यास भगवान आपको पुत्र बधाई देने आई ।
परिब्रह्म पुरुषोत्तम प्रगटे रसिक राज संतन सुख दाई ॥
सुनके श्रवन अधिक सुख उपजो परमानंद हिय न समाई ।
मगन भई धाई इत आई दर्शन दीजे नेंक कराई ॥
लालन को अभिषेक करावन उत्तम जल झारी भर लाई ।
सेवा करूँ सुकर शुक मुनि की यह मेरे मन मांही भाई ॥
पतित जीव जग नहावत मो में तिनको पाप रह्यो हिय छाई ।
चरन छुवत मुनिवर के ततछिन जैहैं पातक सकल बिलाई ॥
आश लगी मोहे अमित दिनन तें धन्य घरी शुभ दिन दरशाई ।
होऊँ सनाथ नाथ निज देखे नेंन हृदय होय शीतलताई ॥
द्वैपायन कर कृपा सुरधुनी मंदिर अपने मांहि पठाई ।
लखि लोचन मन मुदित भई तब आनंद अंबु रहे दृग छाई ॥
जय जय कह निज करन नहवाये अंग परश निज सेव जनाई ।
चरन चारु निज मस्तक परसे वार दोऊ कर लई बलाई ॥
गद गद कंठ करी बहु अस्तुति फूल माल गल में पहराई ।
परिक्रमा कर छवि निज उर धर चली लोक निज शीश नवाई ॥
तीरथ सकल पुनीत करन को मुनि के पाद पद्म सुखदाई ।
सरस माधुरी के सर्वस धन सदा रहे तहां सुरति समाई ॥

॥ पद ॥१॥

सुनो वचन श्री वेद व्यास जू तुम घर श्री हरि आये हैं ।
आचारज ह्वै भये प्रगट प्रभु संतन के मन भाये है ॥

परम संहिता गान करेंगे हरिजन हिय हरषाये हैं।
दर्शन कर मन मुदित भये हैं सुर नर मुनि मगनाये हैं॥
श्याम वरण शोभा के सागर लखि लोचन तृप्ताये हैं।
परमानंद मगन मन सब ही सुख के सिंधु समाये हैं॥
बैठ विमान अमरगन नभ में फूल फूल वरषाये हैं।
जय जय धुनि दसहू दिशि छाई थिर चर चित हुलसाये हैं॥
उन्नत नित्य निकुंज पुंज रस रसिकन के हित लाये हैं।
सरस माधुरी शरन हरन मन प्रेम मुदित गुन गाये हैं॥

॥ पद ॥

जो जन शुक मुनिराज चरन की शरन भाव कर आवेंगे।
निश्चय वह नर नार-सहज संसार पार हो जावेंगे॥
शुक शुक रटें कटें भव संकट जन्म मरन मिट जावेंगे।
चौरासी यम दंड न व्यापें अंत परम पद पावेंगे॥
प्रेमा परा भक्ति को करके प्रीतम प्रिया रिझावेंगे।
रंग महल में पहुँच जुगल संग नित रंग रली मनावेंगे॥
बसें अमर पुर वास ख़ास सेवा करके हुलसावेंगे।
सरस माधुरी छक के छबि में मन में अति मगनावेंगे॥

इन्द्र अप्सरा आगमन ।

॥ श्रीः ॥

॥ सूचना ॥

इन्द्र राजा का श्री मत वेदव्यास आश्रम में अप्सराओं के सहित आना और सभा की सुंदर रचना निहार मंद मंद मुसकाना। परस्पर एक दूसरे की तर्फ इशारे से उत्तमता आश्रम की सूचना करना और हाथों से भाव बता कर मस्तक घुमा कर। इधर उधर फिरना। आपस में मिल कर आश्रम की मुख से प्रशंसा करना। हृदय में आनंद भरना॥

॥ इन्द्र राजा का बोलना ॥

बलि हारी। बलि हारी। यहाँ की तो शोभा ही बड़ी भारी है सभा की रचना अजब ही न्यारी है। मानो विधना ने अपने हाथ ही से संवारी है॥ सुमेरु तरैटी कैसी सुखकारी है। जहाँ देखिये वहाँ हरित लता पता परम प्यारी प्यारी है। चारों ओर नाना भाँति के फूलों की परम सुंदर फुलवारी है। जिन्हों की महक महान मोदकारी है। शीतल मंद सुगंध पवन हू संचारी है ये भी अत्यंत हर्ष के बढाने वारी है। मद माते भौंरान की गुंजार परम आनन्दकारी है। पक्षीन की मधुर बोलन कलोलन चित्त को चुराने हारी है। जहाँ तहाँ झरनान सें परम निर्मल जल जारी है। स्वच्छ सरोवर में नाना रंग के कमलन की पराग परमानुराग की उदय करन वारी है। श्री मत वेदव्यास परम धन्य है जिन्हों के आश्रम में आज श्री

कृष्ण महाराज महा मुनिराज रूप धारन कर प्रगट हुये हैं।
जय हो। जय हो। जय हो॥

इन्द्र और अप्सराओंका मिलके गाना और नृत्यकर भावका बताना॥

॥ गजल ॥

दिन आज महा मन भावन है जन्मोत्सव परम सुहावन है॥
प्रगटे हैं श्री शुकदेव लला, परिपूरण षोडस कृष्ण कला।
शुभ सुंदर मॉस वैषाख भला, तिथि मावस हू अति पावन है॥
सुमेरु शिखर की है शोभा भली, तरु वेली लता सब फूली फली।
सौगंध मनोहर गुंजें अली, ऋतु राज मनो छवि छावन है॥
करें कोयल शोर नचें कहूँ मोर, चकोर चकोरी लें चित को चोर।
सुहावन हंसन के बहु जोर, हिये सब हर्ष बढावन है॥
मुनिराज ऋषी यहाँ राज रहे, वेदव्यास के आश्रम साज रहे।
यहाँ वाजे अनेकन बाज रहे, सुन के सब चित्त लुभावन है॥
नव नारी बधाईयाँ गाय रहीं, आनंद के सिंधु समाय रहीं।
धुनि मंगल बन में छाय रहीं, रति हू की मति ललचावन है॥
कोई फूल के फूलन वृष्टि करे, जय जय कहि के मनमोद भरें।
कोई मंगल द्रव्य ले थाल अली, चली आवत चावन चावनहै॥
छकी छविमें सरसकरे लाल दरस, निज मस्तकसों कियेचरण परस।
मन माँहि हुआ है महान हरष, प्रगटी तन में पुलकावन है॥

॥ ऋषी वचन इन्द्र से ॥

॥ दोहा ॥

कहा नाम है आप को, रहो कौनसी ठौर ।
कहो कृपा कर भेद सब, हे सज्जन शिर मौर ॥

॥ इन्द्र वचन ॥

पुरी मेरी अमरावती, इन्द्र है मेरा नाम ।
रजधानी सुर लोक है, अति अनूप शुभ ठाम ॥
पुन्यवान विरले कोइ, पावत तहाँ निवास ।
सुख भोगें बहु विधि जहाँ, षट ऋतु बारह मास ॥
श्री नारद मुख में सुनों, शुक मुनि जन्म विधान ।
प्रगट भये श्री व्यास घर, स्वयम् कृष्ण भगवान ॥
दरशन तिन के करन को, लिये अप्सरा संग ।
आये अति ही प्रेम सों, कर मन माँहि उमंग ॥
दिव्य वस्त्र सुंदर सरस, भेट करन के काज ।
लायो हों हिय हर्ष के, देंन बधाई आज ॥
वेद व्यास पद वंदि के बोले दोऊ कर जोर ।
कहन लगो अमृत वचन, कर बहु विनय निहोर ॥

॥ इन्द्र वचन ॥

॥ प्रार्थना पद ॥

दर्शन देहु कराय व्यास जू दर्शन देहु कराय ।
तुम्हारे शुक सुत प्रगटे आय ॥

एक तो हैं ये स्वयं श्याम घन दूजे हैं मुनिराय ।
तीजे तीन लोक निस्तारन पार न कोई पाय ॥
श्री मत भगवत धर्म सनातन जग में दें फैलाय ।
नृपति परिक्षित तार सहज ही हरि पद दें पहुँचाय ॥
परम हंस संहिता प्रगट कर हरियश निज मुख गाय ।
प्रेमा परा भक्ति जीवन को दान करें हरषाय ॥
परम तत्व की काया इन की तेज पुंज छवि छाय ।
नवल किशोर चोर हैं चित के लखि अनंग शरमाय ॥
जो जन ध्यान धरें उर अंतर अजर अमर हो जाय ।
सरस माधुरी बसे धाम में सेवें युगल लड़ाय ॥

॥ दोहा ॥

दरशन कर मन मुदित हो, नैंन प्रेम जल छाय ।
नख शिख लखि छवि माधुरी, मूरत रहे छकाय ॥
धन्य धन्य मुख कह वचन, दोउ कर लई बलाय ।
महिमाँ शुक मुनिराज की गाय उठे हरषाय ॥

॥ पद ॥

शुक मुनि सरकार हमारे, प्यारे नयनन के तारे ॥
भक्ति विस्तारन वपु धारा, लियो प्रभु आचारज अवतारा ।
धाम से स्वामी आप पधारे ॥

कुंज रस रसिकन के हित लाये, अनन्यन के हिये आनंद छाये।
दया तुम्हरे उर अपरम्पारे ॥
जुगल छवि ध्यान माधुरी छाके, बसे हिय जुगल बिहारीबाँके।
धन्य हम नैंनन आप निहारे ॥
मानसी महल भावना भीने, मगन उज्वल रस रास नवीने।
रहो नित प्रेम माँहि मतवारे ॥
निरंतर चरण शरण में लीजे सेव श्री मत दंपति की दीजे ।
सरस दर्शन कर सर्वस वारे ॥

॥ इन्द्र वचन ॥

॥ राग जंगला ठुमरी ॥

वेदव्यास भगवान आपको देंन बधाई आये हैं ॥
पुत्र जन्म सुन कर सुख पाये, दर्शन को नेंना ललचाये,
निरखि लाल मुख मन मगनाये, वस्त्र भेट हित लाये हैं ॥
रोम रोम में आनँद छायो, अति ही प्रसन्न हियो हुलसायो,
परम प्रेम दरशन कर पायो, सुख के सिंधु समाये हैं ॥
अचल भक्ति दंपति की पाऊँ, विनती कर निज शीश नवाऊँ ।
सरस माधुरी मौज मिले मोहि, याते हिय हरषाये हैं ॥

॥ इन्द्र और अप्सराओं का नाचना गाना ॥

मिल नचो अप्सरा नार लखो शुकदेव कुमार ।
सुभग माँस वैसाख तिथि मावस सोम सुवार ।

होम कुंड तैं प्रगट हुये, हरि आचारज अवतार ।
लेवें जीव अनंत उवार करें भव सागर पार ॥

आये मुनि को रूप धर स्वयम् कृष्ण सरकार ।
कलि मल हरन कला निधि स्वामी भक्ती करन प्रचार ।
हरि भजन करें नर नार हरें सब भुव को भार ॥

परम हंस संहिता कहेंगे निज मुख कमल उचार ।
नृपति परिच्छित को सुनाय के करें सहज उद्धार ।
दीनन दुख भंजन हार ऐसे महाराज उदार ॥

प्रेम परा पद देंन दया निधि नव निकुंज दरबार ।
पहुँचावें परधाम जनन को दरशावें दीदार ।
बाँकी छवि में छकावें कर प्यार लखावें नित्य विहार ॥
ऋतु बसंत संतत तहाँ छाई फूले फूल अपार ।
त्रिविधि पवन दुख दवन गवन करें वन घन विविधि बहार
बोल रहे पंछी अमित प्रकार करें भौंरा गुंजार ॥
रास विलास हुलास जहाँ नित सत चित आनंद सार ।
वस्तु अमायक सकल जित विलसत वारंवार ।
रहैं अजर अमर तन धार करत दंपति उर हार ॥
अभय करें सिर कर धरें रखें आपने लार ।
सरस माधुरी श्याम राधिका मिलें दोऊ भुजा पसार ।
प्यारे प्राणन के आधार रसिक जन के रिझवार ॥

॥ पद अंगना मंगना की चाल में ॥

शुक मुनी महा प्रभु वेद्व्यास नंद्ना ।
वेद्व्यास नंद्ना श्री वेद्व्यास नंद्ना ॥

(अंतरा)

गिर सुमेर के तरे, संत रूप अवतरे ।
श्याम अंग अति अनूप, आनंद् के कंद्ना ॥

नव किशोर चित्त चोर, नयन बसत श्याम गोर ।
नख शिख श्री कृष्ण मूर्ति, मुख सु हँसत मंद्ना ॥

रसिक मुकट मणि प्रधान, तुम सम नाहि और आन ।
दीजे प्रेम भक्ति दान, करें चरन बंद्ना ॥

दया दृष्टि कीजिये, स्वामी सुधि लीजिये ।
श्रवन सुनो विनय वेग, भक्त चित्त चंद्ना ॥

विरह दुख को हरो, माथ नाथ कर धरो ।
परिकर में मोहि वरो, मेटो दुख द्वंद्ना ॥

दंपति दीजे मिलाय, छवि में दीजे छकाय ।
टहल महल दो बताय, टारो भव फंद्ना ॥

पाप ताप के हरन, आप हो तारन तरन ।
सरस माधुरी शरन, गावत गुन छंद्ना ॥

॥ पद नाटक की चाल में ॥

शुक मुनि महा प्रभु हो कृष्ण के अवतार ।
प्रभु निज धामी पतित उधार ॥

साँवल वरन, मनके हरन, मंगल करन, पोषन भरन,
दुख के हरन, तुमरे चरन, अशरन शरन,
तारन तरन सुनिये मेरी पुकार॥

संसार सिंधु भार, इस से मुझे उवार,
करुणा नज़र निहार, करिये मेरी संभार ॥

मैं दीन हूँ, बुधि हीन हूँ मलीन हूँ, आधीन हूँ।
तुम दीन बंधु, दया सिंधु, स्वामी हो हमार ॥

कृपा के हो निधान, दंपति मिलावो आन।
दरशन का दीजे दान, विनती सरस की मान,
पाहि माम्, पाहि माम्, प्राण के हो तुम अधार ॥
प्रभु निज धामी पतित उधार।
शुक मुनी महा प्रभु हो कृष्ण के अवतार ॥

॥ दूसरा पद ॥

नाचो नवेली मिल सारी वजावो गावो दे दे करतारी ॥
व्यास के लाला की वलिहारी ॥ वजावो ॥
छवि लखि जावो वारी वारी ॥ वजावो ॥
साँवरी सूरत प्यारी प्यारी ॥वजावो॥
मोहनी है सोहनी छटारी ॥वजावो॥
छैल छवीली झाँकी भारी ॥वजावो॥
शुक लाला हैं सुख कारी ॥वजावो॥
मृदु मुसकन मनुहारी ॥वजावो॥

मोहनी दीनी है थाने डारी ॥बजावो॥
प्रेम की है नैंनों में खुमारी ॥बजावो॥
बन में हैं फूले फूल क्यारी,हररंग की फुलवारी की देखें शान ।
सरस चमन। गुले गुलशन। है सलोना आला शुकलाला ।
छवि जाला। मतवाला। मनहारी। बजावो गावो देदे कर तारी॥
नाचो नवेली मिल सारी बजावो गावो दे दे करतार ॥

॥ राग ॥

शुक लाल हमारा प्यारा री नैंनों का है तारा ॥
व्यास दुलारा ये भोरा है भारा ।
ऐसा ना और निहारा री नैंनों का है तारा ॥
सुंदर सोहन विश्व विमोहन, है त्रिभुन उज्यारा री॥
श्याम सलोना है रूप रिझोना है, ता पर तन मन वारा री॥
आचारज शिरमौर जगत गुरु, रसिकन प्रान अधारा री॥
भक्त जनों का है सरवस धन, हमारा है रखवारा री ॥
प्रेम भक्ति विस्तारन कारन, लियो है अवनि अवतारा री ॥
स्वयं कला निधि कृष्णा कुँवर ने, अद्भुत नरतन धारा री॥
माधुरी मूरति मन में बसी है ध्यान टरत नहिं टारा री ॥
सोवत जागत सुरत लगी है, बिसरत नाहिं बिसारा री॥
देवेंगे बास महल वृंदावन, यह निश्चय उर धारा री ॥
परिकर में पहुँचावें प्रान धन जुगल मिलावन हारा री॥
सरस माधुरी सोंपे सेवा, सदा करें प्रतपारा री ॥
शुक लाल हमारा प्यारा री नैंनों का है तारी ॥

॥ इन्द्र वचन ॥

॥ दोहा ॥

गावो मुवारिकवादियाँ, कर मन उमंग हुलास।
नित प्रति हो यहाँ शादियाँ, उत्सव प्रेम विलास॥

श्री शुक मुनि जुग जुग जियो, हो जग सुयश प्रकाश।
सदा रहो आनंद सों, षट ऋतु बारह मास॥

॥ मुवारिकवाद की ग़ज़ल ॥

मुवारिक आज का दिन है प्रगट शुकमुनि हुये आई।
वधाई गान मंगल धुनि सकल संसार में छाई॥
जुरे हैं आके ऋषि मुनि जन, मुदित सबके हुये हैं मन।
किये शुकलाल के दर्शन, सकल जय जय उठे गाई॥
चरच के अँग अगर चन्दन, तिलक करके करी वन्दन।
गले में माल फूलों की, मुदित मन होय पहिराई॥
चढ़ाये फूल फल डाली, अनेकन आये हैं माली।
मिठाई पान और मेवा, सभा में सबको वरताई॥
यहां जाचक जो आते हैं, सकल सनमान पाते हैं।
स्वइच्छा दान लेले के, अशीसत हित से हर्षाई॥
सकल ऋधि सिद्धि कर जोरें, निहोरें लाल की ओरें।
मुक्ति मांगत खड़ी होकर, चरन लालन की सिवकाई॥
सरस लख व्यास के नन्दन, करी कर जोर के वन्दन।
नज़र के डर से मन में डर, उसारत नोंन और राई॥

॥ समाजी दोहा ॥

माल प्रसादी पाय के, जय जय कह सिर नाय।
इन्द्र अप्सरा गन सहित, चले सदन सुख पाय॥
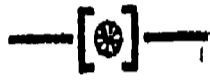
❋ श्री नारद मुनि आगमन ❋

॥ श्रीः ॥

॥ दोहा ॥

हरि गुन गावन मोहि प्रिय, नारद है मम नाम ।
प्रेम भक्ति अनुरक्त नित, सुमिरों श्यामा श्याम ॥
तीन लोक चौदह भुवन, विचरत रहों हमेश ।
सुन्यो जन्म श्री शुकमुनी, व्यास भवन रसिकेश ॥
आयो धायो हर्ष हिय, लेकर बीन नवीन ।
दर्शन हित ललचाय मन, ज्यों जल चाहत मीन ॥
धन्य सुमेरु सुहावनो, सुभग तरहटी जान ।
जहां प्रगटे मुनिराज वर, व्यासाश्रम में आन ॥
देव बजावत दुंदभी, बरषावत हैं फूल ।
सुर नारी गावें सरस, सोहिल मंगल मूल ॥

अहा ! आज को दिन अत्यंत मंगलकारी है । श्रीमत वेदव्यास आश्रम की शोभा सर्व विश्व से कुछ न्यारी है । गगन में देवता दुंदभी बजा रहे हैं और जय जय ध्वनि करके परम उत्साह सहित फूल बरषा रहे हैं । हा हा हू हू गंधर्व बधाई गावें हैं । अप्सरा नाना भाँति नृत्य कर भाव बताय के रिझावें है । श्री मती भागीरथी गंगा भी आतुर उठ धाई हैं और श्री शुक मुनि के स्नान निमित्त श्रीजल झारी हू भर लाई है । सुरराज अप्सरा समाज सहित उत्साहित आये हैं और अलौकिक दिव्य वस्त्र भेट करवे को लाये हैं ।

॥ पद ॥

भजो श्री राधे गोविंद हरी ॥

ुगल नाम जीवन धन जानो, या सम और धर्म नहिं मानो ।
वेद पुरानन प्रगट बखानो, जपै जोई है धन्य घरी ॥

कलियुग केवल नाम अधारा, नौधा भक्ति सकल श्रुति सारा ।
प्रेम परापद लहै सुखारा, रसना नाम लगावो झरी ॥

नृत्य करें प्रभु के गुण गावें, गदगद स्वर तन मन पुलकावे ।
टहल महल कर हिय हुलसावें, सरस माधुरी रंग भरी ॥

॥ राग मांड ॥

श्री कृष्ण कहत निरधारा, प्रेमी जन हमको प्यारा ।
अति अनन्य निष्काम भक्त जो, जिनका नित राखन वारा ॥

भक्त जाय जहां सँग ही जाऊँ, उनको अर्पित भोजन पाऊँ,
यह मैंने प्रण धारा ॥

आरत वचन सुनत अकुलाऊं, ताही क्षण उठकर मैं धाऊं,
नेक न करूँ अवारा ॥

निज भक्तन को सर्वस देहूं, पल पल में उनकी सुधि लेहूं,
करूं सदा प्रति पारा ॥

भक्तन हित नाना तन धारूं, भू को सबही भार उतारूं,
युग युग लूं अवतारा ॥

जाको जैसो भाव पिछानूं, तासों तैसी ही गति ठानूं,
रसिकन प्राण अधारा ॥

ध्यान भक्त धारूं दिन रैना, भक्त बिना मोहि परै न चैना,
दूं उनको निज दीदारा ॥
हम भक्तन के भक्त हमारे, मैं निज जन उर अन्तर धारे,
नाता टरत न टारा ॥
भक्तन को ज्ञानियां कहलाऊं, नित प्रति उनको हुकम उठाऊं,
जानें जानन हारा ॥
कपटिन सूं नहिं मेल करूं मैं, गर्व वचन सुन अधिक जरूं मैं,
उनको भेजूं यम द्वारा ॥
द्रोही भक्त हमें नहिं भावे, देखे हू नहिं हमें सुहावे,
तिनको करूं गर्व परिहारा ॥
भक्तहि मात पिता परिवारा, सजन सनेही सुत अरु दारा,
सत यह वचन हमारा ॥
सरस माधुरी जुगल उपासी, करे भावना उमंग हुलासी,
पावे नित्य बिहारा ॥

॥ पद ॥

(रसिया की चाल में)

शुकमुनि अमरलोक तें आये स्वामिनि श्यामां आप पठाये।
आचारज धर रूप आप हरि अपने दरस दिखाये ।
रस निकुंज रसिकन देने को रसिया सँग निज लाये ॥
वेदव्यास भगवान जगत गुरु तिनके कुंवर कहाये ।
वयस किशोर श्याम सुंदर वपु निरख अनंग लजाये ॥

अतिशय सोहन विश्व विमोहन रसिकन के मन भाये ।
थिर चर सकल लोक में व्यापक सबमें सहज समाये ॥
सुर नर संत महंत मगन मन दर्शन कर हरषाये ।
सरस माधुरी रसिक शिरोमणि जिनके गुण मुख गाये ॥

॥ पद ॥

व्यास जू सुकृत कौन सो कीनो ।
ताके किये जगत पति तुम को यह सोहन सुत दीनो ॥
सुंदर श्याम कमल दल लोचन प्रेम माँहि रंग भीनो ।
शोडष वर्ष किशोर चोर चित मनहु कृष्ण सम चीनो ॥
विधि हरि हर हरषे मन माँही लखि के रूप नवीनो।
सरस माधुरी शुक प्रगटत ही छयो लोक सुख तीनो ॥

॥ पद ॥

व्यास जू तुम सम धन्य न और ।
प्रगट भयो तुमरे घर लालन सकल मुनिन सिर मौर ॥
श्याम अंग शोभा निधि सुंदर रसिकन को चित चोर ॥
घुँघुरारे वर वार वदन विधु अद्भुत वयस किशोर ॥
कमल नैन मृदु बैन मनोहर केसर चंदन खौर ॥
सरस माधुरी छवि कों लखि के मुदित भयो मन मोर ॥

श्री मुनिराज वन गमन लीला ।

॥ श्रीः ॥

॥ श्री वेदव्यास वचन ॥

॥ गजल ॥

नैनों में शुक मुनीश्वर मेरे समा रहा है।
तज के मुझे वेदरदी बनको ये जा रहा है॥
सौ वर्ष तप के फल से प्रगटा है प्रान प्यारा।
जाता नहीं विसारा मेरे मन में भा रहा है॥
किसको ये दुख सुनाऊँ लौटा के कैसे लाऊँ।
हाय हाय क्या करूँ मैं मुझको सता रहा है॥
सुंदर है श्याम सूरत मन मोहनी है मूरत।
वरछी विरह की वेढव मुझपर चला रहा है॥
संकट विकट है भारी नैनों से नीर जारी।
वैराग वल यह अपना मुझको वता रहा है॥
झांकी है सरस प्यारी रवि चन्द जिस पै वारी।
झांके न मेरी ओरी आगे को धा रहा है॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री शुकमुनि वन को चले, मिथ्या यह जग जान।
उदय भयो वैराग उर, प्रगटो पूरन ज्ञान॥
व्यास आश्रम तज दियो, गवन कियो तत्काल।
चलत मंद गति मन हरन, मानहु बाल मराल॥

॥ सोरठा ॥

व्याकुल वेदव्यास, मोह पासि गल में परी ।
अति ही भये उदास, शुक सुत के पीछे चले ॥

वेदव्यास--हे परमेश्वर आपने यह कैसा विचित्र चारित्र कर दिखलाया अत्यन्त सोहन विश्व विमोहन श्याम सुंदर मेरे यहां सुत प्रगटाया और प्रगट होते ही मुझसे वियोग कराया और बन को पठाया और मुझको शोक समुद्र में डुबाया । अद्भुत है तेरी माया । हाय हाय अब मै क्या करूँ और कैसे धीरज धरूं ॥ (आप ही आप) अहो मेरा प्यारा पुत्र तो बड़ी ही दूर बन में जारहा है (ऐसे कह कर पद गान करते चलने लगे)

॥ गाना ॥

॥ राग बहार ॥

शुकदेव सुवन ठाड़े रहो ॥

तात बात सुन लेहु हमारी विरह अगन तन जिन दहो ॥
दिव्य बरस शत तप अति कीनो तब तो सो सुत मैं लहो ॥
निरमोही हो जात कहां अब मृदुल वचन हँसि मुख कहो ॥
वृद्ध वयस मम लखि के लालन बैंयां आ मेरी गहो ॥
मोह महान देत दुख मोको जात नहीं अब यह सहो ॥
शीतल करो हृदय सुत आके जो जीवन मेरो चहो ॥
सरस माधुरी छवि निज मुख की दिखलावो प्रियतम अहो ॥

॥ समाजी दोहा ॥

अंतरयामी शुकमुनी, व्यथा पिता लई जान ।
वृत्तन में शुक शब्द बहु, प्रगटाये हित ज्ञान ॥
व्यापकता गुन आपनो, दरशायो शुकदेव ।
बोध करायो व्यास को, समझायो निज भेव ॥

॥ वेदव्यास वचन ॥

अहो अति आश्चर्य । देखो इन बन के वृत्तों में से 'शुकोहं शुकोहं' ऐसे अनंत शब्द सुनाई दे रहे हैं मानो मुझ ही से ज्ञानोपदेश वार्ता कर रहे हैं कि शुक स्वयं सर्व व्यापी घट घट वासी अविनाशी सुख राशी है । (ऐसे कह कर रास्ते में ठहर कर शुक को बन में जाता हुआ दृष्टि से देखते हैं) ॥

॥ समाजी दोहा ॥

सुरकन्या हिल मिल करत, सरवर में असनान ।
श्री शुक मुनि के दरसन कर, भई प्रसन्न महान ॥
विनय सकल करने लगीं, शीश नवा कर जोर ।
छकी दरश छवि में महा, जिम लखि चन्द चकोर ॥

सुरकन्या पाठ पद ग़ज़ल ॥

श्री शुकमुनी मनमें भाये हुये हैं, अमरलोक से आप आये हुवे हैं
स्वयं श्याम औतार धरके पधारे, सुवन व्यासजूके कहाये हुवे हैं

प्रगटते ही प्यारे सिधारे हैं बन में, निजानंदमें लौ लगाये हुवे हैं
चलेव्यास पीछेहो व्याकुल विरहमें, दरस करनेको दृगलुभायेहुवेहैं
शुकोहं शुकोहं किया शब्द पैदा, सचर और अचर में समायेहुवेहैं
श्रीकृष्ण में शुक में अंतर नहीं है, ये उन में वे इन में रमाये हुवेहैं
सरसमाधुरी धन्यहै जगमें वोही जो,मुनिवरकी छविमें छकायेहुवेहैं

॥ सुकन्या पद ठुमरी ॥

शुक मुनि को नैंन निहारो री ।
श्याम वरण शोभा को सागर श्री मत व्यास दुलारो री ॥
ब्रह्म रूप रसिकन को भूप सुंदर अनूप अंतरयामी ।
निज धामी स्वामी सर्वेश्वर संतन को प्राण आधारो री ॥
आनंद कंद मुख हँसत मंद छवि को लखि लाजत सूर चंद ।
सुर नर सब ही रहे चरन वंद त्रिभुवन तम नाशन हारो री ॥
सर्वज्ञ सकल घट घट वासी अविनासी और आनंद रासी ।
सर्वव्यापी सब में पूरन परमातम नर वपु धारो री ॥
चरनन की शरन जो जन आवें मन वांछित इच्छा फल पावें ।
कहै सरस माधुरी दर्शन करके जन्म मरन दुख टारो री ॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री शुक मुनि आगे गये, हिय में भरे हुलास ।
आये सुर कन्या निकट, श्री मत वेद व्यास ॥
लज्जा कर विसमित भई, वस्त्र लिये अँग धार ।
मौन गहे ठाढ़ी रहीं, शीश नाय नेहि वार ॥

॥ दोहा ॥

वेद्व्यास–नव किशोर मेरो सुवन, ताहि मिलीं तुम धाय।
लज्जा कुछ कीनी नहीं, कहो मोहि समझाय॥
वृद्ध वयस मेरी महा, तासों लज्जा कीन।
समझ परी नहि बात यह, कहो तुम सकल प्रवीन॥

॥ दोहा ॥

सुरकन्या–नारि पुरुष रस रीति के, तुम सब जानन हार।
तातें लज्जा हम करी, वस्त्र अंग लिये धार॥
शुकमुनि मन समझत नहीं, कहा पुरुष कहा बाम।
सम दरशी शीतल हृदय, अतिशय आतम राम॥

वेद्व्यास–मेरा शुक पुत्र अब किसी प्रकार बन से लौट कर नहीं आना है। यह मैंने अपने मन में ठीक ठीक निश्चय करके जाना है। अब पुत्र के विरह वियोग में मेरा वृथा पछताना है। अबतो अपने आश्रम को चलना ही उचित है (ऐसे कहि के श्री वेद्व्यास अपने आश्रम की तरफ लौटते हैं)॥

॥ समाजी दोहा ॥

है निराश तजि आश शुक, लौटे वेद्व्यास।
पछताते आये उलट, आश्रम किये निवास॥

श्री शुकमुनि बन सघन में, तब ही पहुंचे जाय ।
गुफा मध्य आसन कियो, बैठ ध्यान लगाय ॥

॥ इति पहिला प्रसंग समाप्त ॥

॥ दुतिय प्रसंग ॥

इन्द्र अप्सराओं को बुलाकर वार्ता कहना ।

॥ समाजी दोहा ॥

इन्द्र अधिक मन में डरे, तप शुक मुनी निहार ।
सत्य हरन को अप्सरा, कीनी तुरेत तयार ॥

इन्द्र—जावो जल्दी बन विषे, शुक मुनि को छल लेव ।
भंग भजन करके बहुर, हमें आय कहो भेव ॥

अप्सरा—जो आज्ञा श्री इन्द्र महाराज अभी हम बन जाती हैं। और शुक मुनि को छल कर तपस्या से डिगाती हैं। और उलटी आय कर आपको मन वांछित समाचार सुनाती हैं।

॥ समाजी दोहा ॥

चलीं सकल मिल अप्सरा, काम सैन्य ले लार ।
अंगन सज भूषन वसन, कर सोलह शृंगार ॥

आ पहुँची आरन्य में, करन लगी कल गान।
नाचन लागीं नवल गति, ले ले सुंदर तान॥

नैन मूँद कर ध्यान धर, शुक मुनि रहे विराज।
चरन वंदना कर कही, जय जय जय महाराज॥

केशर चन्दन तिलक कर, पुष्प माल पहिराय।
करी आरती प्रीति सों, ऋतु फल भेट चढ़ाय॥

कोलाहल सुन शुक मुनी, खोले अपने नैन।
देख अप्सरा गगन को, या विधि बोले बैन॥

॥ थियटर की धुन में ॥

शुक मुनि की सुरतियां है प्यारी घनी।
मनहारी घनी सुखकारी घनी।
है ये जीवन प्रानों की हमारी घनी॥

है किशोर चित चोर शुक, श्याम रूप सुख दैन।
नख शिख मूरत प्रेम की, निरख लजित यों मैन॥
शुक मुनि की छवि माधुरी, बसी दृगन में आय।
छकी अप्सरा रूप लख, करत हाय मुख हाय॥
रूप ठगोरी डार मन, ठग लीनों वर जोर।
साधु भेष में हे सखी, निकस्यो चितको चोर॥
घूँघर वारी सिर जटा, घटा सरिस घन श्याम।
मुख मयंक की छवि छटा, अति सुंदर अभिराम॥

रूप दिगम्बर में रमो, नख सिख रस शृंगार ।
सुरकन्या मोहित भई, तन मन दीने वार ॥
मृदु मुसकन मन मोहनी, नैंन सैंन के वान ।
तिरछी चितवन से सखी, घायल कीने प्रान ॥
जो घायल शुक नैंन के, सो तलफें दिन रैंन ।
फसे प्रेम के फंद में, पल छिन परे न चैंन ॥
साधुन को सर्वस्व शुक, भक्त जनन को प्रान ।
रसिकन को जीवन यही, संतन को सुखदान ॥
रूप जाल शुक लाल में, फँसे सो हुये निहाल ।
पहुंचे नित्य निकुंज में, जहां लाडली लाल ॥
शुक मुनि सुंदर श्याम हैं, आचारज गुण ग्राम ।
अंतर सुंदर श्याम हैं, वाहर सुंदर श्याम ॥
शुक मुनि रूप अनूप है, वसो दृगन निशि भोर ।
सरस माधुरी सर्व दिशि, दरसत नहिं कुछ ओर ॥

॥ दोहा ॥

शुकमुनि—कहो खोल तुम कोन हो, कहा तुम्हारो नाम ।
क्यों आई वन में यहां, कहा तुम्हारो काम ॥

॥ गाना ॥

करन दर्शन तुमरे हमआई, सुनोतुम विनय वचन सुखदाई ॥
खोलो सकुच वचन मुख वोलो, मिलो हृदय हरषाई ।
सुरकन्या सारी सुकुमारी, लो निज दासी वनाई ॥

तुम से सुन्दर वर न निहारो, सकल विश्व भटकाई ।
हमरी तुमरी जोरी अनुपम, विधि ने भली बनाई ॥
अंग संग करिये मुद भरिये, हे रसिकन के राई ।
सरस माधुरी अधरामृत रस, दीजे चतुर चखाई ॥

॥ गाना ॥

शुक मुनि की मूरति रस खान री ॥
नैंना निरखि के लुभानी सुर कामनियां हो ।
सुध बुध ना रही निश जामनियां हो । सांची मान री ॥
मंद मंद मुसकाय के मनवा मोह लियो ।
अब बिन दर्शन के सखी कैसे जात जियो । जावे जान री ॥
सरस माधुरी रस छकी प्रेम पियूष पियो ।
तन मन धन मुनि चरन पै अपनो वार दियो । मेरे प्रान री ॥

॥ दोहा ॥

शुकः—सुर पुर की तुम अप्सरा, जान लई मन मांहि ।
तुमरे छल बल में कभी, हम आवेंगे नांहि ॥

॥ गाना ॥

(तमाशे की चाल में)

सुनो तुम सकल अप्सरा नारी, बात तुम्हरी हम जानें सारी ।
तपसी सन्यासी सब मोहे, जती सती ब्रह्मचारी ।
शृंगी ऋषि से छल तुम कीनो, अद्भुत कला तुम्हारी ॥

सुर अरु असुर सकल बस कीने, विषयी नर संसारी ।
जटा जूट लूटे बहु साधू, हो तुम ठगनी भारी ॥
दूधा धारी फल आहारी, सब की बुद्धि बिगारी ।
ज्ञानी ध्यानी बहुतक मारे, मदन मोहनी डारी ॥
कन्या क्वारी कहत आपको, मिथ्या बचन उचारी ।
सरस माधुरी बानी बोलत, अंतर कपट अपारी ॥

॥ दोहा ॥

अप्सरा—विषय भोग सम सुख नहीं, त्रिभुवन में कुछ और ।
रमन करो हम संग तुम, हे मुनिवर चित चोर ॥

॥ पद ॥

शुक—चौरासी जम दंड भुगत के जीव जक्त में आता है ।
समय पाय श्री हरि कृपा से फिर यह नरतन पाता है ॥
माया के बस होय विषय रति अंतकाल पछताता है ।
भजन किये बिन सरस माधुरी मानुष जन्म गमाता है ॥

॥ पद ॥

विषय भोग तो जोंन जोंन में करता यह जी आता है ।
जन्म अनेक विषय सुख भोगे तो भी नहीं अघाता है ॥
भजन बनत है इसी देह में तासे हरि पद पाता है ।
सरस माधुरी जन्म मरन मिट जीवन मुक्त कहाता है ॥

॥ पद ॥

बनिता वृत्ति हमारी प्यारी सोइ सँग सुन्दर नारी है ।
ब्रह्मानंद परम सुख विलसैं जीवन यही हमारी है ॥
सुखमन सैया पर हम सोवत हमैं न चांह तुम्हारी है ।
सरस माधुरी रस नित पीवत अचल धारना धारी है ॥

॥ दोहा ॥

नरक तुल्य हैं नारि सब, नख शिख निपट निकाम ।
मल अरु मुत्र मलीनता, वात पित्त कफ़ धाम ॥
शुष्क अस्ति सम स्त्री, कामी कूकर जान ।
मुख लोहू पी आपनो, सुख मानत अज्ञान ॥
आतम सुख संतुष्ट हम, निजानंद ग़लतान ।
विषय भोग संसार के, नस्वर लीने जान ॥

॥ दोहा ॥

अप्सरा—दिव्य हमारी देह है, अस्थि मांस की नांहि ।
उदर फार कर देखलो, है सुगंध तन मांहि ॥

॥ दोहा ॥

शुक--पहिले जो हम जानते, निर्मल उदर तुम्हार ।
माता तुम्हरे गर्भ में, हम लेते अवतार ॥

॥ समाजी दोहा ॥

यह सुन सब लज्जित भई, दई कुटिलता त्याग ।
विषय वासना मिट गई, उर उपजो अनुराग ॥
दृग नीचे भये तियन के, मन में उपजी लाज ।
करन लगी अस्तुति सकल, कही धन्य मुनिराज ॥

॥ दोहा ॥

अप्सरा--क्षमा करो अपराध सब, हे मुनि परम दयाल ।
महिमां हम जानी नहीं, तुम प्रभु परम कृपाल ॥

॥ राग ठुमरी ॥

शुक मुनि प्रगटाये सो हमारे मन भाये ।
स्वयं कृष्ण करुणा कर स्वामी, प्यारे आचारज बन आये ॥
नवल किशोर चोर चित प्यारे, निरख रूप रति मदन लजाये ॥
दीन बन्धु भक्तन हितकारी, वेदव्यास के कुँवर कहाये ॥
नव निकुंज उज्वल रस रसिया, रसिकन को निज हितकर लाये ॥
मुक्ति आदि इच्छा नहिं मन में, ध्यान मानसी सहज समायें ॥
दुर्लभ दर्शन देवन हू को सो, हम सहज सुलभ कर पाये ॥
धन्य भाग्य हम अपने मानें, परम प्रेम तन मन पुलकाये ॥
सरस माधुरी शोभा लखके, छवि मांही निज नैंन छकाये ॥

॥ समाजी दोहा ॥

जय जय कर जोर के, चरणन करी प्रणाम ।
चली अप्सरा हार के, अपने सुर पुर धाम ॥

॥ तृतीय प्रसंग ॥

॥श्री वेदव्यास वचन विद्यार्थियों से॥

॥ दोहा ॥

सुनहु शिष्य मम प्रान प्रिय,आज्ञा लीजे मान ।
वन जा लाओ फूल फल, पूजा हित भगवान ॥

संथा श्री मत भागवत, करते जावो याद ।
कंठ करो श्लोक तुम, हिय में रख अह्लाद ॥

॥ दोहा ॥

विद्यार्थी–जो आज्ञा हम जात हैं, लावन को फल फूल ।
जा वन में तप करत हैं, श्री शुक आनँद मूल ॥

॥ समाजी दोहा ॥

चलो चलो कहि के उठे, करत परस्पर प्रीत ।
मगन महा आनंद में, सख्य भाव रस रीत ॥

हरित सघन वन में गये, ऋतु वसंत अनुकूल।
देखो नाना भांति जहां, कंद मूल फल फूल ॥
चुन कर कलियां फूल फल, डलिया करी तयार।
निरखन लागे बाल सब, बन की विविधि बहार ॥

॥ पद ॥

विद्यार्थी—अहा! हा!! कैसा बन सुंदर हरा हर तर्फ़ छाया है।
सघन अति ही सुहावन है, हमारे मनको भाया है ॥
खिली चंपा चमेली है, अनूपम राय वेली है।
जुही छाई नवेली है, निरख के मन लुभाया है ॥
गुलाबों की कहीं क्यारी, सुमन सौरभ है रुचिकारी।
चले शीतल पवन पावन, सकल श्रम को मिटाया है ॥
मनोहर बुलबुलें बोलें, लताओं पर उडत डोलें।
सलौनी कूक कोयल ने, अजब रंग ढंग जमाया है ॥
यहां पर बैठ के यारो, करो श्लोक मुख गायन।
सुनावो सर्स सुर भर के, भला ये वक्त पाया है ॥

॥ समाजी दोहा ॥

जहां शुक बैठे गुफा में, करत आत्मा ध्यान।
तहां श्लोक विद्यार्थी, करन लगे हैं गान ॥

॥ श्री कृष्ण ध्यान श्लोक श्री मद्भागवत १० स्कंध ॥

वर्हापीडं नटवर वपुः कर्णयोः कर्णिकारम्।
विभ्रद्वासः कनक कपिशं वैजयन्तीं च मालाम।

रंध्रान् वेणुरधरसुधया पूरयन् गोप वृंदैः ।
वृंदारण्यं स्वपद रमणं प्राविशद् गीत कीर्तिः।

॥ अर्थ ॥

मयूर का मुकट नटवर भेष कानों में कर्णिका के पुष्प सुवर्ण जैसा दीप्तमान पीतांवर तथा बैजयन्ती माला धारण किये हुये वंशी के छिंद्रों को अधरामृत से पूर्ण करते हुये गोप गणों के साथ जो गान कर रहे हैं श्री कृष्ण ने वृन्दावन में प्रवेश किया जो श्री चरणाविंदो से परम शोंभायमान हो रहा था॥

॥ श्लोक ॥

अहो वकीयं स्तनकालकूटं । जिघांसया पाययदप्पसाध्वी ।
लेभेगतिं धात्र्युचितांततोन्यं । कंवा दयालुं शरणं ब्रजेम ॥

॥ अर्थ ॥

वड़े आश्चर्य की बात है कि पूतना ने मारने के लिये विष मिश्रित स्तन पान कराया । उस दुष्टनी को भी धाय की सी गती दी ऐसे श्री कृष्णचंद्र को छोड़ कर कौन ऐसा दयालू है जिसकी शरण में जांय ॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्री शुकमुनि निज गुफा में, धरत निरंतर ध्यान ।
आतम सुख अनुभव करत, ब्रह्म भाव गलतान ॥

श्लोकन की धुनि अति सरस, श्रवन परी तिन कान।
छोड़ ध्यान बाहर गुफा, आये कृपा निधान ॥

॥ पद ॥

शुक--सुनावो फिर कृपा करके वही श्लोक शिशु प्यारे।
अनूपम है ललित अति ही, मेरे मन के हरन हारे ॥
मनोहर ध्यान मंगलमय, किया है जिसमें सब वरनन।
बतावो कौन है स्वामी, जिन्हों ने मुख से उच्चारे ॥
है महिमा उनकी अति भारी, जिन्हों ने पूतना मारी।
दयालू दीन हितकारी, वही हमने हृदय धारे ॥
शरण उनकी मैं चल जाऊँ, जनम धारन का फल पाऊं।
सरस श्री कृष्ण चरणों पर, करत है प्रान बलिहारे ॥

॥ पद राग सोहनी ॥

विद्यार्थी--हैं पिता तुमरे सांई श्री व्यास जिनको नाम है।
श्री भागवत वरनन करी श्रीकृष्ण यश सुख धाम है ॥
पूतना पावन करी नँद नंद शुभ गुन ग्राम है।
मदन मोहन सर्व सोहन अंग की द्युति श्याम है ॥
नवल नटवर छवि नई लखि रूप लाजत काम है।
सरस माधुरी भाव कर सेवत रसिक निश जाम है ॥

॥ दोहा ॥

शुक--बड़ी भूल मेरी भई, बन में आयो भाग।
रह्यो नहीं पितु के निकट, करतो हरि अनुराग ॥

सूखे आतम सुख विषै, मैं दिन दिये गुमाय।
ध्यान कियो नहि कृष्ण को, हाय हाय फिर हाय॥

कहां आत्मा सुस्क सुख, कहां कृष्ण को ध्यान।
जिमि चिंतामणि काच में, अंतर लेहु पिछान॥

कहां सगुण सदगुण सहित, कहां अगुन गुन हीन।
निराकार आकार में, अंतर लीन्हों चीन॥

आतम सुख में वृत्ति मम, रही प्रथम गलतान।
अबतो भावत है हमें, कृष्णचन्द्र को ध्यान॥

आकर्षण की कृष्ण ने, मेरी मति निज ओर।
अब नहि भावत ब्रह्म सुख, छूट गयो बरजोर॥

व्यास पिता पै ले चलो, मोको सब तुम संग।
पठन करूँ श्री भागवत, हृदय भरूँ रस रंग॥

मेरे मन में लग रही, अतिशय सरस उमंग।
जैसे श्री गंगा विषय, अनगिन उठत तरंग॥

ध्यान नहीं श्री कृष्ण सम, सब ध्यानन शिरमौर।
श्री भागवत समान कोई, दीखत शास्त्र न और॥

विद्यार्थी--श्री शुकमुनि हम संग चलो, अपने पितु के पास।
याद तुम्हारी नित करें, श्री मत वेदव्यास॥

शुक--मोहि ले चलो संग निज, जहां श्री वेदव्यास।
पठन करूँ श्री भागवत, तुम सँग करूं निवास॥

॥ समाजी दोहा ॥

आस पास शिशु मंडली, मध्य चले शुक लाल ।
पहुंचे आ आश्रम निकट, जहां श्री व्यास दयाल ॥
करी दंडवत शुकमुनी, दीनी व्यास अशीश ।
चिरजीवो मम प्रान धन, करो कृपा जगदीश ॥

॥ श्री वेद व्यास वचन शुक प्रति ॥

पठन करो श्री भागवत, कृष्ण रसामृत सार ।
ताहि सुना संसार के, जीव करो उद्धार ॥
स्वयं श्याम तुम आप हो, आचारज अवतार ।
भगवत धर्म प्रचार के, निस्तारो संसार ॥

विद्यार्थियों का गाना ।

॥ राग सोहनी ॥

व्यास आश्रम में मुनी शुकदेव बन से आये हैं ।
ऋषी बालक वृंद सुंदर संग अपने लाये हैं ॥
देख द्वैपायन सुवन मन में महा मगनाये हैं ।
रंक ने ऋधि सिधि मनो भंडार धन के पाये हैं ॥
शुक करी दंडवत हित कर नैन चरन छुवाये हैं ।
भुजा भर के तात ने निज हृदय से लिपटाये हैं ॥
जय जय जय धुनि बोल नभ से सुर सुमन वर्षाये हैं ।
सरस ने शुभ जान अवसर गीत मंगल गाये हैं ॥

॥ ऋषि पत्नियों का गाना ॥

आये हैं सखी बन तें शुक लाल, सलौने सुंदर श्याम तमाल ॥
सोहें री सिर पर घुंघरारे बाल, कुटिल भृकुटी है अद्भुत भाल ॥
प्रेम मदमाते हैं नैंन विशाल, नासिका सोहन अधिक सुढाल ॥
हँसन मुख मंद हंस गति चाल, शरन जन रक्षक दीन दयाल ॥
कृपा सागर संतन प्रतपाल, सरस दर्शन कर हुईं है निहाल ॥

श्री शुक सखी प्राकट्य ।
लीला ।

॥ श्रीः ॥

॥ समाजी दोहा ॥

दम्पति राजें महल में, कर बिपरीत शृंगार ।
श्याम स्वामिनी बन गये, श्यामा नंद कुमार ॥
जोरी गोरी सांवरी, अति सुंदर सुकुमार ।
सरस माधुरी प्रान धन, दीजे इन पर वार ॥

॥ सखी बचन पद आरती राग बहार ॥

जै जै आरति जुगल लाल की ।
कुंज नृपति प्यारी अरु प्रीतम, नख सिख लों छवि जाल की ॥
गल बैंया दीनें रंग भीनें, रसिया रसिक रसाल की ॥
रस निधान रस खान रसीले, रसिकन के प्रतिपाल की ॥
मन मोहन सोहन सुंदर वर, चितवन नैंन विशाल की ॥
सरस माधुरी मँद मंद हँसि, सखियां सकल निहाल की ॥

॥ युगल स्तुति छन्द ॥

जै जै जुगल रस खान आलिंगन प्रान कृपा निधान हैं ।
रति मदन के मद हरन सुर मुनि धरत नित प्रति ध्यान हैं ॥
गौर श्याम सरूप श्री बन भूप परम सुजान हैं ।
ब्रह्मा विष्णु महेश आदिक कोउ न आप समान हैं ॥

शेष शारद ऋषी नारद करें गुन गन गान हैं ।
परात्पर परमेश प्रभु रसिकेश परम प्रधान हैं ॥
परा प्रेमा भक्ति दासन कों करत नित दान हैं ।
सरस माधुरी शरण जन को रखत दंपति मान हैं ॥

॥ सखी वचन पद ॥

जुगल की झांकी अति कमनी ।
प्रीतम बने प्रिया अति सुंदर प्यारी बनी धनी ॥

॥ अंतरा ॥

गोरे श्याम साँवरी राधे अद्भुत बनावनी ।
निरख रूप अलियन मन आनँद छवि नहि जात भनी ।
जै जै जै बलिहार बोल सुख हरषत सब सजनी ।
सरस माधुरी रति मद मर्दन मूरति प्रेम सनी ॥

॥ सखियन के वचन ॥

श्री ललिता-अरी हे सखी हो । श्री जुगल सरकार परम सुकुमार के विपरीत मनोहर श्रृंगार की वारंवार बलिहार जाइये । और परम आनंद मंगल मनाइये । और निज नैंनन सों निहार छवि में छकाय जै जै कहि लडाइये दुलराइये ॥

श्री विशाखा वचनिका--हे सखी हो । श्रीमती श्याम सरूप परम अनूप प्यारी जू की परम मनोहारी झांकी है । और

गौर रूप मनमोहन सोहन के नाक में पन्ना की बुलाक है तामें श्यामा प्यारी को अंग को प्रतिबिंब कैसो अद्भुत चमत्कारी मनोहारी है। हे श्री रंग देवी जू तुम भी भली भांत दरशन करो।

॥ श्री रंगदेवी वचनिका ॥

श्री लालजी के पास जाकर कहती है।

अहाहा! अहाहा!! अरी सखी हो ऐसी अनूपम अलबेली नवेली छवि को नित्त निरंतर नैंनन तें हम तुम सदा देख्यो करें याकी सुगम उपाय येही है कि श्री युगल सरकार सें विनय करें अपनो मनोरथ अवश्य ही पूरण करेंगे जामें कुछ संदेह नहीं है॥

॥ सखी का विनय पद ॥

सुनो तुम विनय युगल सरकार॥

गौर श्याम छवि धाम प्रियापिये जीवन प्रान अधार॥

आज अनूपम अति सुंदर तुम कियो विपरीत श्रंगार॥

बनें श्याम श्यामां अभिरामां प्यारी पिय उनहार॥

श्यामाँ रूप दूसरो अपनों प्रगट करो बलिहार॥

निरखें ताहि निरंतर निशदिन करें परसपर प्यार॥

छवि में छकें लखें भरिलोचन दें निजतन मन वार॥

सरस माधुरी शरण कृपा बल विलसें नित्य विहार॥

श्री लाल जी वचन सखियों प्रति ॥

परम प्राण प्यारी सखी तुम्हारी इच्छा अनुसार हम अभी दूसरो श्याम सखी सरूप प्रगट कर तुम्हारो मंगलीक मनोरथ पूरण करने को हम तैयार हैं तुम निकुंज द्वार पर टेरा लगावो पश्चात् टेरा खोल कर मन वांछित फल पावो और परमानंद मंगल गावो ॥

सखी निकुंज द्वार पर टेरा लगाती है और सरकार की महिमा का पद गाती है ॥

॥ पद ॥

जै जै जै श्री दम्पति प्यारे ॥

परम पूज्य प्रणतारत भंजन, जन मनरंजन जग उजियारे ॥
भावाधीन रहत भक्तन के, कृपासिंधु प्रिय प्राण हमारे ।
नाना रूप धरत संतन हित, लीला करत अनेक प्रकारे ।
देहैं प्रेम को दान दया निधि, महिमाँ कहत वेद विधि हारे ।
सरस माधुरी देत अभय यह, पूरण करें मनोरथ सारे ॥

आकाश वाणी—अरी हे सखी सुकुमारी प्रान प्यारी निकुंज मंदिर का टेरा हटावो और मन वांछित मनोरथ को दरशन पावो ॥

॥ सखी वचन ॥

भई अकाश बानी अभी सुनी सखी तुम कान ।
टेरा खोलो कुंज को करो रूप रस पान ॥

देखो दृग भरि के अली, लली बिंब अवतार ।
सरस माधुरी दीजिये, तन मन अपनो वार ॥

वचन —सखी कुंज द्वार का टेरा सरकाती है और श्यामाँ सदृश दूसरो सरूप परम अनूप दरशन कर परमानंद पाती है, और सरकार को स्तुति सुनाती है, और बारंबार बलिहार जाती है ।

अष्टअली स्तुति ॥

जैति जैति जै शुक सखी, सुखदा हित की रूप ।
अहलादनी कलवेनिका, आनन्दा जु अनूप ॥
रसपुंजा रसरूपनी, प्रेम प्रभा अभिराम ।
अष्टम प्रमुदा नाम शुक, तिन कों कोटि प्रनाम ॥

श्री जुगल सरकार बचन ॥

॥ पद अंगना मंगना की चाल ॥

अष्ट अली प्राण प्यारी हिल मिल सब आवोरी ।
प्रेम सों बधाई शुक स्वामिनी की गावोरी ॥
ध्वजपताक सदन द्वार, स्वस्तिक रचिये सँवार ।
हरी भरी बंदनवार, हरष हिये बँधावोरी ॥
धूप दीप धरो थाल, अच्छत रोरी रसाल ।
आरती उतार, अर्घ देके बलि जावोरी ॥
सरस माधुरी सुरंग, लै के बीणा मृदंग ।
हरष हिये उमंग, नाच भाव बहु बतावोरी ॥

॥ सखी वचन आरती पद ॥

श्री सुख सखी आरती करिये ॥

श्याम रूप अभिराम सुहावन, ध्यान निरंतर हिये में धरिये ॥
वयस किशोर चोर चित चंचल, चपल दृगन दिशि देख न टरिये॥
मंद मंद मुसकान मनोहर, लखि लोचन उर आनंद भरिये ॥
जुगल अंगजा जूथाधिप अली, अलवेली नव नाम सुमरिये ॥
नित नव नेह वढ़ाय चावसों, चरन सेव कर अंत न टरिये ॥
परिकर वास पाय वडभागन, वृंदावन में नित्त विचरिये ॥
सरस माधुरी दंपति सेवा, नित कर विरह तांप तन हरिये ॥

॥ श्री प्रियाजी वचन दोहा ॥

श्री शुक सखी यूथेश्वरी, खास तुम्हारो नाम ।
अष्ट जाम सेवा करो, यही तिहारो काम ॥
श्री तिलक मस्तक सुरचि, पहराऊँ उर हार ।
हिये लगाऊँ हरष के, करूँ प्रीत वहु प्यार ॥

सखी—श्री सुख स्वामिनी की जय हो जय हो ।
ऐसे सर्व सखी बोलके फूल बरषाती हैं आनंद मनाती हैं ।

श्री प्रियाजी सुख सखी को संग लेकर आनन्द मनाती हैं ।

॥ राग सोहनी ॥

सुख सखी सुंदर सलौनी प्रानों से तू प्यारी है ।
मैं हुई आशक्त तुझ पर तू मेरे पर वारी है ॥

श्याम सुंदर मन हरन सूरत सलौनी है तेरी।
प्रान प्यारे ने यही छवि तेरी हिये में धारी है॥

नंद नँदन का सा नख शिख एकसा नकशा तेरा।
एकसी सीरत है सूरत लोक से कुछ न्यारी है॥

तुझ में और मोहन में कुछ अंतर तफ़ावत है नहीं।
एक इतना ही फ़रक वो पुरुष है तू नारी है॥

रह सदा संग में मेरे तू नित अदा अपनी दिखा।
मंद मुसकन सरस चितवन मोहनी पढ़ डारी है॥

॥ दूसरो पद धुन नाटक ॥

प्यारी प्यारी हमारी शुक सखी मन की है भावनी हो॥

(अंतरा)

श्याम रंग रूप छवि भूप है अनूप।
अति चितवन में चित की चुरावनी हो॥

चंद सो प्रकास मंद मंद मुख की है हास।
परम आनन्द प्रगटावनी हो॥

छवि की है खान गुनवान है हमारी प्रान।
रति हू की मति ललचावनी हो॥

हाव और भाव बरताव प्रेम चाव कर।
नाच गाय नेह की बढ़ावनी हो॥

है तू सुकुमारी सुखकारी रिझवारी।
अति स्वामिनी सलौनी सुहावनी हो॥

सरस माधुरी निहार तन मन देवो वार।
भई अंग प्रेम पुलकावनी हो ॥

श्री प्रियाजी वचन पद।

॥ राग बसंत ॥

आव शुक सखी तोहिलडाऊँ, तेरा ऊपर बलि बलि जाऊँ ॥
प्रीतम के उनहार रसिकनी, तोहि निरख मैं अति सुखपाऊँ ॥
तेरी रूप रंगीली छवि को, नित प्रति अपनें दृगन बसाऊँ ॥
सब सुख की सुख देंन तुहीहै, हितकर अब तोहि हृदय लगाऊँ॥
जुदी होय जो इक पल मोसों, ताहीं छिन मैं अति अकुलाऊँ॥
रह मोसंग रंगसों सजनी, नित नव तोसों प्रेम बढाऊँ ॥
प्रानन तें प्यारी सुकुमारी, सरस दरश कर मन मगनाऊँ ॥

॥ श्री लालजी बचन दोहा ॥

प्यारी मेरी सुख सखी, है तू रस की खान ।
तोहि निरख मैं मन मुदित, ता सम प्रिय नहिं आन ॥
तेरे बिन पल छिन घरी, मो मन परे न चैन ।
प्राण बल्लभा है तुही, हे सुन्दर सुख देंन ॥

॥ श्री प्रियाजी वचन पद राग सोरठ ॥

श्री शुक सखी सलौनी तोपर वारी री ॥

(अंतरा)

प्राणनाथ सम रूप तुम्हरो, मोकों प्रानन सें अति प्यारो।
तेरी सुंदर सूरत निज उर धारी री ॥

है तूही मेरी मन मेली, कर री मेरे संग रस केली ।
अति ही नवल नवेली रूप उजारी री ॥
नैंन निरख तोकों मैं जीऊँ, वारवार पानी नित पीऊँ ।
तुही मेरी मन भावन हितकारी री ॥
विरह ताप तन सकल नसाऊँ, आव निकट तोहि कंठ लगाऊँ ॥
परम प्रेम रस पाय रहूं मतवारी री ॥
सरस माधुरी झांकी तेरी, जिय की जीवन है यह मेरी ।
प्रीत परस्पर चितते टरे न टारी री ॥

श्री प्रियाजी वचन-हे सुख सखी प्रान प्यारी मैं तेरे पर बारंबार बलिहारी। अब तुम निकुंज महल में चल कर मेरे संग बैठो और परस्पर प्रेमानंद बर्द्धन वार्तालाप कर मेरी विरह ताप हरो । और सुख करो और रसानंद विस्तरो।

सुख सखी बचन-हे श्री प्रानेश्वरी प्यारी जी दासी बचनामृत की प्यासी आपके संग निकुंज मंदिर में चलवे को तैयार है आप आनंद पूर्वक पधारें ॥

श्री प्रिया जी के संग शुक सखी निकुंज मंदिर में जाकर सिंहासन पर विराजमान होती हैं और सखी नृत्त गान करती हैं ।

॥ सखी वचन राग सारँग ॥

जै जै सुख सहचरी सलौनी गुन रासी ॥

श्याम रूप रंग अंग, रहत प्रिया संग संग।
मुदित मन उमंग रसिक राधिका उपासी ॥
राधे गुन गान वान, राधे ही जीवन प्रान।
राधे को ध्यान संग राधिका विलासी ॥
राधे मुख चंद की चकोरी, निशि भोरी तुम।
राधे मुसाकन मंद अमृत की प्यासी ॥
सरस माधुरी सुजान, दीजे रस कुंज दान।
जानो निज खास हमें दासिन की दासी ॥

॥ दूसरा पद विहाग ॥

जै जै सुख स्वामनी निकुंज की निवासनी ॥
रूप की सलौनी अति लौनी ललना अनूप, जुगल रसिक भूप
कुंज केलि की प्रकाशनी ॥
वय किशोरी भामिनी, सुसेव्य कंथ कामिनी।
श्री राधे गुन गामनी सुमंद मंद हासनी ॥
रास के विलासी रस रासी सँग रहत सदा।
प्रीत सहित सेवा करत दंपति उपासनी।
सरस माधुरी सुजान, सुनिये करुणा निधान।
दीजे रस भक्ति दान, वृंदावन वासनी ॥

॥ पद राग कालंगड़ा ॥

श्री शुक सखी की बलिहार।
श्याम सुंदर अंग जिनको कृष्ण के उनहार ॥

श्याम सों श्यामा वनी तुम रसिक अति रिझवार ।
निरख तुमको मुदित प्यारी करत प्रिय सम प्यार ॥
रहत हो नित संग राधे, करत केलि अपार ।
रास रंग विलास विलसत देत तन मन वार ॥
गुप्त मंजु निकुंज लीला, करत युग सरकार ।
तुम विना अलि और को तहां है नहीं अधिकार ॥
नेंक करूणा कर कृपा निधि दया दृष्टि निहार ।
सरस रस की माधुरी को देवो नित्य बिहार ॥

श्री प्रियाजी वचन ललिता से—हे प्यारी ललिता सखी तुम रंगदेवी जी के यूथ में जावो । और प्रेम मंजरी प्यारी को बुलाकर हमारे पास लावो ॥

श्रीललिता वचन -हे श्री प्यारीजी महाराज मैं आपकी आज्ञा अनुसार जाती हूं । और प्रेम मंजरी को अपने संग अभी लाती हूं ।

॥ श्री ललिता बचन दोहा ॥

प्रेम मंजरी से—प्रेम मंजरी जी चलो, अब ही मेरे संग ।
प्रिया बुलावत महल में, जहां होत रस रंग ॥

॥ प्रेम मंजरी बचन दोहा ॥

सरकार से--जै जै जै श्री राधिका, तुम हो जीवन प्रान ।
श्यामा मेरी स्वामिनी, करुणा कृपा निधान ॥

॥ पद चाल नाटक ॥

राधे रानी रँगीली सरकार तुम्हारी महिमा अपार ।
हो महिमा अपार ॥

॥ अन्तरा ॥

प्यारी दया निधान, तुम सम न कोई आन ।
देदीजे प्रेम दान, विनती सलोनी मान ॥शोभा खान॥
रूप उजारी भोरी भारी, प्रान प्रिया तुम परम सुजान ।
अति सुकुमारी मैं बलिहारी, चरण शरन विन गति नहिं आन॥
टहल महल की मिले मनोहर करूं रूपरस अमृत पान ।
सेऊं मैं पद कमल लाडिली रहूं कुंज रस में ग़लतान॥
धरो ध्यान ,सुनिये कान, कृपा खान ।
सरस की हो प्रान अधार ॥ हो प्रान अधार ॥ राधे रानी ॥

॥ श्री ठाकुरजी बचन ॥

॥ पद राग बहार ॥

प्रिय प्रेम मंजरी आवरी ॥

अति प्यारी तू प्रान अधारी, सुन बतियां चित लावरी ।
श्री शुक सखी प्रगट भई आली, तिनके ढिंग तू जावरी ॥
रह तिन संग करो सिवकाई, यूथेश्वरि करि भावरी ।
हिल मिल ललित विशाखा आदिक, जनम बधाई गावरी ।
सरस माधुरी राग रागिनी, निज मुख हमें सुनावरी ॥

प्रेम मंजरी वचन—हे श्री प्रीतम निकुंज बिहारी जी महाराज में आपकी आज्ञा अनुसार शुक सखी यूथेश्वरी जी की सेवा में जाती हूं और ललितादिक सखीन के संग शुक सखीजी की जन्म बधाई गाकर आपको सुनाती हूं ॥

श्री ठाकुर जी वचन—प्यारी प्रेम मंजरी जी तुम जावो आनंद मंगल गावो ।

॥ प्रस्ताव ॥

प्रेम मंजरी शुक सखीजी के पास जाती हैं और स्तुति पद गान करती हैं । श्री शुक सखी जी प्रसन्न होकर मंजरी को प्यार कर अपने हृदय से लगाती हैं ॥

॥ प्रेम मंजरी बचन छन्द ॥

स्वामिनी श्री शुक सखी युग अंगजा अवतार हो ।
श्याम सुंदर प्राण प्रीतम उनके तुम उनहार हो ॥
दीन बन्धु दयाल परम कृपाल प्रानाधार हो ।
भक्त त्राता प्रेम दाता मूरति रस श्रृंगार हो ॥
शरण ले तुम चरण की बेड़ा जिन्हों का पार हो ।
सरस माधुरी छबि छके रस रास रंग अपार हो ॥

श्री शुक सखी बचन पद ।

॥ राग कान्हरा ॥

प्रिय प्रेम मंजरी प्यारी ।

साच्छात तुम मूरत प्रेम की दंपति प्रान अधारी ॥
प्राण वल्लभा हो तुम मेरी मैं तुम ऊपर वारी ।
हिय लगाय तोकूं मन हरखूं मेरे ढिग तू आरी ॥
तोकों नैंनन तें नित निरखूं करूं न पल छिन न्यारी ।
सरस माधुरी रूप सलोनी अब तू भई हमारी ॥

॥ प्रेम मंजरी वचन दोहा ॥

आवोरी प्यारी अली, गावो मंगल आज ।
नाचो सब ही प्रेम सों, हिल मिल करो समाज ॥
कुंज द्वार पर परम शुचि, सजो सुमंगल साज ।
सहनाई नौबत सरस विविधि बजावो बाज ॥

सब सखी बधाई गान ।

॥ राग गरबी ॥

प्रगट भई शुक सखी प्रिया प्यारी ॥
श्याम सुन्दर तन सुकुमारी ॥

॥ अंतरा ॥

अंगजा जुगल अनूपम रूप यूथपति स्वामिनी अवतारी ॥
धाम में छाया परम आनंद, बधाई आलिन करी भारी ॥
कुंज प्रति बांधी वंदन माल, पताका तोरन शुभ कारी ॥

अतर चंदन छिरक के सब ठौर, धूप कर दीपावलि वारी ॥
बजाकर बीन पखावज ताल, नृत्य कर गाई सहचारी ॥
मिठाई मेवा बीड़ी पान, प्रसादी बांटे भर थारी ॥
निरख छवि सरस माधुरी रूप, दियो सब तन मन धन वारी ॥

श्री ठाकुरजी बचन सखियों से ।

॥ दोहा ॥

सुनों सखी सब चित्त दे, कहूं बात समझाय ।
वेद व्यास भूतल विषे, कीनों तप अधिकाय ॥
मेरे सम सुत होंन को, कियो मनोरथ चित्त ।
महादेव जू वर दियो, कियो अधिक ही हित्त ॥
मेरी आज्ञा अब येही, सुन शुक सखी सुजान ।
आचरज वपु दूसरो, धारो परम प्रधान ॥
सखी रूप निज सों रहो, सदा हमारे पास ।
आचारज वपु धार जग, भक्ती करो प्रकास ॥
वेदव्यास आश्रम सरस, जहां प्रगटो तुम जाय ।
धरम सनातन भागवत, भक्तन देहु बताय ॥

॥ शुक सखी बचन पद ॥

विनय सुनो बांके श्याम बिहारी ।
श्री मुख आज्ञा निज उर धारी ॥

रूप आचारज धर यहि वारी ।
जाऊं मैं भूलोक मंझारी ॥
वेदव्यास आश्रम शुभकारी ।
प्रगटूं तहां मनुज तन धारी ॥
विस्तारूं जग भक्ति तुम्हारी ।
प्रेम मगन होवें नर नारी ॥
महा पुराण भागवत प्यारी ।
सुनें गुनें सब जिय संसारी ॥
माया पति प्रभु मंगल कारी ।
तुम अवतारन के अवतारी ॥
संत जनन के नित रखवारी ।
दुष्ट दलन रसिकन रिझवारी ॥
जै जै कहि जाऊं वलिहारी ।
सरस माधुरी छवि ऊपर वारी ॥

॥ सखी वचन सोरठ सैन ॥

जुगल के अंग छाई अलसान ॥
नैनन में निद्रा अति दरसत, आलियन जीवन प्रान ॥
कोमल कलित ललित फूलन सों, सेज रची सुखदान ॥
पौढ़न तापर चले चतुर दोउ, रसिक छैल छवि खान ॥
संग चली सहचरी सलौनी, करत सैन पद गान ॥
सरस माधुरी बसी दृगन में, मंद मंद मुसकान ॥

॥ दूसरा पद सोरठ सेन ॥

रँगीले रँग बिलसो रंग भरी रैंन ॥

कुंज बिहारिनि कुंज बिहारी, नींद घुरानी नैंन ॥

कुसमन सेज रची अति सुंदर, निरखत उमगत मैंन ॥

सरस माधुरी पिय प्यारी जू, करो सैंन सुख चैंन ॥

श्रीमत् श्याम चरण दासाचार्य चरितामृत बधाई तथा विनय।

श्रीमन्निकुंज विहारिणे नमः ॥

श्रीमत् श्यामचरणदासाचार्यचरितामृत ॥

(दोहावली)

श्री सतगुरु बलदेव प्रभु, चरणन शीश नवाय।
श्यामचरण के दासको, चरितामृत कहों गाय ॥

बैठि हिये मम श्रीगुरु, करि हैं आय सहाय।
सरस माधुरी गुरु कृपा, सबही विधि बनजाय ॥

सम्वत सत्रहसौ गिनो, ऊपर साठ पिछान।
प्रगटे भार्गववंश में, कृष्ण अंश प्रभु आन ॥

शोभनजी के कुल विषे, अष्टम पीढ़ी अन्त।
मुरलीधर घर प्रगट भये, श्याम रूप धरसन्त ॥

स्वप्न माहिं दर्शन दिये, कुंजों को श्री श्याम।
तुमरे प्रगटूं पुत्र हो, सुनहु मातु सुखधाम ॥

भादों शुक्ला तीज को, कुंजो कूख मझार।
बालनाम रणजीत धर, प्रगटे कृष्ण मुरार ॥

जन्म समय अस्थान में, भयो अधिक उजियार।
अनहद धुनि बाजे बजे, छई सुगन्धि अपार ॥

नाम ग्राम डहरे विषे, घरघर मंगल चार।
विविधि बधाई गुनिनमिल, गाई भली प्रकार ॥

पंच वर्ष की वयसमें, सरिता तट शुकदेव।
गोदलिये रणजीत को, प्यार कियो गुरुदेव ॥

गये वर्ष उन्नीस में, गंगातट शुकतार।
साक्षात दर्शन दिये, शुक मुनि व्यासकुमार ॥
गुरुदीक्षा दी विधि सहित, मन्त्र सुनायो कान।
योग ज्ञान वैराग दे, कियो शिष्य हित मान ॥
श्री तिलक मस्तक रचो, श्रीतुलसी शुचि माल।
गल में बांधी प्रेमसों, कीने शिष्य निहाल ॥
नौधा प्रेमा अरु परा, त्रिविधि भक्ति दई दान।
तारण तरण बनायके, कीने आप समान ॥
आज्ञा दी श्री शुकमुनी, जगमें भक्ति प्रचार।
विमुखन हरि सन्मुख करो, निस्तारो संसार ॥
सतगुरु आज्ञा शीशधर, आ दिल्ली अस्थान।
रचि मन्दिर राजे जहां, कियो मानसी ध्यान ॥
योग युक्ति चौदह वरष, करी समाधि लगाय।
रूप अनेकन धार प्रभु, भारत दियो चिताय ॥
राजा राना छत्रपति, तिनकी करी न चाह।
चरण दास हरि रंग रंगे, सबसों बे परवाह ॥
ईश्वरीय परचय अमित, हिये भक्ति हरि हेत ॥
किये मनोरथ सबन के, पूरण प्रेम समेत ॥
बादशाह दिल्ली तख़्त, ठाड़े रहे हुजूर।
चरणदास के चरण की, मस्तक धारी धूर ॥
अष्टसिद्धि नवनिद्धि सब, खड़ी रही कर जोर।
श्यामचरण के दास प्रभु, लखें न तिनकी ओर ॥

शिष्य अनेकन कर प्रभो,तारन तरन बनाय।
चार धाम सातों पुरी,तीरथ दिये पठाय ॥
श्री भगवत की भक्ति को,भानु दियो प्रगटाय।
भर्म निशा सोते हुए,दीने जीव जगाय ॥
नर नारी संसार के,करन लगे हरि भक्त।
पगे प्रेम प्रीतम प्रिया,नशी बासना जक्त ॥
कलि युग के कलमष सकल,दीने सबहि मिटाय।
चरणदास प्रभु कृपाकर,बिगरी दई बनाय ॥
कलियुग छायो जक्तमें, मिटी वेद मरयाद।
उबरे अनगिन जीव जग,श्री चरणदास प्रसाद ॥
कलियुग सतयुग सम कियो,दियो नाम हरि दान।
चरणदास जग जियन को,प्रेम करायो पान ॥
कलियुग में सत कर्म को,कियो बहुत विस्तार।
चरणदास गुरु भक्ति दे,निस्तारो संसार ॥

॥ श्रीवृन्दावनगमनवर्णन ॥

सगुण ब्रह्म सर्वज्ञ प्रभु,सर्व व्यापी श्याम।
पुरुषोत्तम परमात्मा, श्रीवन जिन को धाम ॥
सतचिद्घन आनंदमय, जिन को अद्भुत रूप।
ध्यानधरत विधि शिवसदा, तिन पद पद्म अनूप ॥
श्यामचरण के दास प्रभु, आचारज अवतार।
दिल्ली से चलकर गये, वृन्दा विपिन मझार ॥

दृगन चटपटी दरस की, निरखन नन्दकुमार ।
विरह विथा व्याकुल महा, तनकी सुधि न सँभार ॥
पहुँचे सेवा कुंज में, निरखी अनुपम ठौर ।
सब कुंजनतें अति सरस, तेहि समान नहिं और ॥
सेव्य जहाँ श्री राधिका, सेवक श्रीनँदलाल ।
याते नाम प्रसिद्ध जग, सेवा कुँज रसाल ॥
लता ललित छाई जहाँ, छविको नाहिन पार ।
कुसुमित तरु बेली छई, भृंग करत गुंजार ॥
द्रुम बहु नाना भांति के, छाई बेलि वितान ।
तिन में पच्छी विविधि विधि, करत युगुल गुणगान ॥
सीतलमन्द सुगन्ध मय, रोचक बहत समीर ।
ऋतुबसन्त सन्तत रहत, बोलत कोयल कीर ॥
रैनि मांहिं तहां छिपरहे, श्याम चरण के दास ।
निज मन्दिर बारहदरी, जा बैठे जेहि पास ॥
करन लगे तहां भावना, मूंद लिये निज नैन ।
रोमांचित हो पुलक तन, कहे विरह मुख बैन ॥
हा राधे मम स्वामिनी, हे प्रीतम घनश्याम ।
वेगि दरश दे युगल वर, पूरणकर मन काम ॥
हा हा छवि दीजे दिखा, दास मोहिं निज मान ।
नाहीं तन तज जायगो, तात्काल यह प्रान ॥
विरह हूक हिय में उठी, भये महा बेहाल ।
दृगन अश्रुधारा बही, तनकी सुधि न संभाल ॥

अन्तरयामी युगुल वर, रसिकन के प्रिय प्रान।
विरह विथा निज दासकी, अतिशय निज मन मान॥
चरणदास आये यहां, हमरे घर महमान।
प्रगट होय दे निज दरस, करें सन्त सन्मान॥

रसिक हमारे प्राण धन, हम रसिकन के प्रान।
प्रेमिन के समतुल हमें, और न प्रिय जग आन॥
अर्धनिशा बीती तवहि, प्रगटे प्यारी लाल।
भक्तन के मन भावने, करुणासिन्धु कृपाल॥

गौरश्याम अभिराम दोउ, अनुपम नवलकिशोर।
ललितादिक अनगिन अली, संगलिये सिरमौर॥

नील पीत पट सोहने, नखशिख सजि शृङ्गार।
मुकट चन्द्रिका शीशपर, छविको नाहीं पार॥

युगल चन्द्रमुख चन्द्रिका, छाई मध्य निकुंज।
दमकत चमकत अंगदुति, अनुपम छवि की पुंज॥

चंचल चितवनि रसभरी, मन्द मधुर मुसकान।
अलक कपोलन छुट रहीं, अधर ललाई पान॥
बेसर और बुलाक शुचि, नासा शोभा देत।
निरखत ही निज जननको, मनमानिक हरि लेत॥

गल बैंयां दीने दोऊ, मदन मनोहर लाल।
प्रीतम कर वंशी लसी, प्रिय कर कमल रसाल॥
युगुल चरण बारिज बरण, छवि कुछ कही न जाय।
पायल घुंघरू सजि रहे, छुम छुम शब्द सुनाय॥

उठ आतुर चरणन परे, चरणदास तेहि बार।
कृष्ण भुजनभर हियलगा, कियो प्रेम अति प्यार॥
कुंवरि किशोरी करि कृपा, प्रेम मंजरी जान।
हस्तकमल मस्तक धरो, दियो प्रेम वरदान॥
पुनि दोऊ प्रीतम प्रिया, चरणदास लै संग।
जाय बिराजे कुंज में, हिलमिल हर्ष उमंग॥
हँसिहँसि रसबतियांकरन, लागे श्याम सुजान।
चतुर शिरोमणि लाड़िली, नागरि नेह निधान॥
कहनलगे मुख मृदुवचन आये प्रीति पिछान।
कहा करें तुम पहुनई, अरु सेवा सनमान॥
चरणदास दोउ जोर कर, या विधि बोले बैन।
सेवादे निज पद कमल, निकट रखो दिन रैन॥
हँसि बोले तब श्रीहरि, मधुर वचन अभिराम।
जग में भेजे जिन लिये, लोन किये कुछ काम॥
आचारज वपु दे तुम्हें, भक्ति प्रचारन काज।
भेजा है संसार में, सुनहु भक्त महाराज॥
योगध्यान तज कीजिये, नौधा भक्ति प्रचार।
प्रेमपरायण जीव हो, उतरे भवनिधि पार॥
प्रेमभक्ति प्रगटाय जग, जीवन को दे दान।
करो कृतारथ जक्त को, मेरे जीवन प्रान॥
कछु इकदिन बीते तुम्हें, लें निज धाम बुलाय।
रखें निरन्तर निकट नित, सुन प्यारे चितलाय॥

वचन कहे श्री कृष्ण ने, सुने श्याम चरनदास ।
बिछुरन बिरह वियोग लखि, अतिशय भये उदास ॥
गदगद बानी होगई, नैन बही जलधार ।
सुबकी ले रोवन लगे, सन्मुख कृष्ण मुरार ॥
हाय हरी कैसी करी, धीर धरी नहि जाय ।
तुम सब समझत लाडिले, बिछुरन दुख अधिकाय ॥
तुमरो श्रीमुख चन्द्रसा, मेरे नयन चकोर ।
बिन दरशन जीवन नहीं, सुनिये नवल किशोर ॥
सघन सजल गिरि आप हो, मैं हों तुम्हरा मोर ।
सुखी होहुं सुन सांवरे, बन्शी धुनि घन घोर ॥
चरण कमल तव आपके, मधुकर है मन मोर ।
तहां बसन को चित चहै, अन्त नहीं कहिं ठोर ॥
स्वामी मेरे आप हो, मैं सेवक निज दास ।
उत्कंठा अति रहन की, सदा तुम्हारे पास ॥
स्वाति बूंद तुम हो हरी, चातक मोहि पिछान ।
रूप सुधारस पान बिन, तलफत मेरे प्रान ॥
आप पारधी प्रान धन, मोहि मृगा लो मान ।
मारो निस्तारो तुमही, मोको गति नहि आन ॥
गंगाजल सम श्याम तुम, मैं हों तुम्हरा मीन ।
तुम माता मैं पुत्रवत, समझो सत्य प्रवीन ॥
तुम गैया मैं वत्स सम, मैं पतंग तुम दीप ।
यही चाह चित में बसे, निशि दिन रहों समीप ॥

कहनलगे श्रीकृष्ण तब, सुनहु श्याम चरन्दास।
तुमरे हिय माहीं रहै, हमरो सदा निवास॥
सन्त हमारी आतमा, यामें नहि संदेह।
रोम रोम में रमि रहै, ज्यों बादर में मेह॥
आज्ञा जो हमंने दई, लीजे प्यारे मान।
भक्ति प्रचारो जक्त में, करो जियन कल्यान॥
जो आज्ञा करि हों यही, कही चरण ही दास।
देखो चाहूं सांवरे, सुन्दर रास विलास॥
है प्रसन्न बोले लला, मूंदो अपने नैंन।
आज्ञा दूं तब खोलियो, हे प्रीतम सुख दैंन॥
मूंदे तब ही नैंन निज, चरणदास तेहि बार।
बोले पुनि श्री श्यामघन, देखो पलक उघार॥
दृगन खोल देखन लगे, तेजोमय उजियार।
रत्न जटित अवनी लखी, जगमग जोति अपार॥
ऋतु वसंत संतत तहां, अनगिन बाग वहार।
फूले फूल अनेक जहां, लहरत लता अपार॥
फुलवारी क्यारी बनी, न्यारी नाना रंग।
तरुन मांहि बहु बरन के, बोलत विविधि विहंग॥
बीच विविधि कुंजस्थली, छाई बेलि वितान।
तिन में सेवा हित रहैं, सहचरि सखी सुजान॥
ठौर ठौर सुंदर सुखद, भरे सरोवर नीर।
कमल खिले बहु रंग के, रोचक बहत समीर॥

वँगला अरु बारहदरी, बनी अनेकन ओर ।
तिन पर सूआ सारिका, क्रीड़त मोरी मोर ॥

मध्य महा रमनीक इक, रत्न जटित सुढार ।
बन्यों चौंतरा अति सरस, मंडल गोलाकार ॥

चौंसठ खम्भा तासु पर, जटित जवाहर लाल ।
पचरँग चुन्नी चमकनी, बूंटा बेलि सुढाल ॥

चौंसट खम्भा पर बनो, रंग महल रस खान ।
मणि माणिक चहुँ दिशि जड़े, जगमग जोति महान ॥

चौंसठ कलश सुहावने, ध्वज पताक धजदार ।
लहरत फहरत तड़ित सम, दमकत दुति मनहार ॥

चौंसठ खम्भा मध्य में, बिछी बिछायत खूब ।
नरम रेशमी गलीचा, अतिशय सरस अजूब ॥

गुलदस्ता सुंदर सजे, सुमन अनेकन रंग ।
महल महक छाई महा, निरखि दृगन गति दंग ॥

चँदुवा पिछवाई सजी, सुबरन बूंटेदार ।
मुतियन झालर लग रही, जगमग जोति अपार ॥

सत रंग की माणिन के, शोभित सुन्दर झार ।
सजे सुहावन महल में, दमकत दुति सुअपार ॥

स्वर्ण मई दीवार में, चारो ओर सुढार ।
पन्ना हीरालाल मणि, जड़रहे विविधि प्रकार ॥

सिंहासन सुन्दर सजो; तापर छत्र सुहान ।
मसनद तकिया मन हरन, सुंदरता की खान ॥

राज रहे तापर तहां, युगुल विहारी लाल ।
चहों ओर ठाढ़ी सखी, मनहुँ प्रेम की माल ।
चमर मोरछल अरु छरी, लिये खरी कोइ बाल।
इतरदान लीने कोऊ, कोउ कर लिये रुमाल ॥
पानदान लेकर कोऊ, कोउ फूलन की माल ।
कोउ दरपन अरपन करत, छवि लखि होत निहाल ॥
सनमुख श्यामा श्याम के, खड़े सखिन के वृन्द ।
इकटक निरखत युगल को, मनहुँ चकोरी चंद ॥
सखी रास रस करन को, बजत बीन मृदंग ।
कोउ सितार कोउ सरंगी, कोउ बजात मुहंचग ॥
मधुर मँजीरा कोउ अली, लिये बजावत संग ।
कोऊ अलापत सप्तस्वर, हिय में भरी उमंग ॥
कोऊ उघटत सांगीत आलि, नृतत गति नव ढंग ।
भाव बतात नचात दृग, लचकावत कटि अंग ॥
जै जै जुगल किशोर कहि, कोऊ रही हरषाय ।
गोदन भर अति मोद मन, सुमन रही बरषाय ॥
चरणदास तहां अपन को, देखे सखी सरूप ।
नव यौवन सुकुमार तन, नख शिख सुंदर रूप ॥
सिंहासन के सन्निकट, रहे दोऊ कर जोर ।
तब हांसि बोले श्री हरिः, चितय चपल दृगकोर ॥
अब नीके लखि लीजिये, लीला रास बिलास ।
सुख रासी दासी चरन, आव हमारे पास ॥

चरणदासि कर गहि उठे, श्री मत गोपीनाथ ।
पुनि लालन निरतन लगे, प्राण प्रिया लै साथ ॥
वाम अंग श्री राधिका, दाहिने चरणहिदासि ।
मध्य बिहारी लाल जू, नृतत उमंगि हुलासि ॥
चहुँ ओर आली नचत, मंडल गोल बनाय ।
निरखत छबि रस माधुरी, हर्ष न हृदय समाय ॥
लेत स्वल्पगति लाड़लो, बहुविधि भाव बताय ।
नैन नचा लचकाय कटि, ताथेइया मुख गाय ॥
अंग संग दै अधर रस, प्यावत प्रेम बढ़ाय ।
चरणदासि को श्यामघन, लेत भुजन भर धाय ॥
मुकट लटक मन को हरत, अलक रही बलखाय ।
छुटी कपोलन लाल के, चित को लेत चुराय ॥
मकराकृत कुंडल श्रवन, नाक बुलाक सुढार ।
मोती मटकत अधर पर, अजब सुराहीदार ॥
पाजामा कछनी कलित, पीत रंग मनहार ।
नख शिख लो भूषन सजे, गल फूलन के हार ॥
रंग रंगीली लाड़िली, मदन मनोहर लाल ।
नटवर गति ले ले नई, रस बस कीनी बाल ॥
श्री राधे रासेश्वरी, सखियन की सरदार ।
दरसायो चरन्दासि को, नित नव रास बिहार ॥
पुनि राजे दम्पति तबहि सिंहासन पर जाय ।
चरणदासि को कर कृपा, लइ निज निकट बुलाय ॥

हंसि बोले श्री हरि बचन, करके प्रेम अपार ।
चरणदासि जा जक्क में, भक्ति करो विस्तार ॥
तबही दासी जोर कर, आज्ञा सिर धर लीन ।
परिक्रमा करके बहुर, चरण प्रणाम सुकीन ॥
नैन मूंदि निज लीजिये, कही कृष्ण भगवान ।
दृग मूंदे तब दास ने, ताही समय पिछान ॥
पुनि अकाशवानी भई, चक्षु खोल चरन्दास ।
दृग खोलतही आ गये, वंशीवट के पास ॥
संतरूप आपन लखो, श्याम चरन के दास ।
बिछुरन दंपति मन समझः अतिशय भये उदास ॥
धरनि गिरे व्याकुल विरह, देह दशा बिसराय ।
नैनन जल धारा वही, करत हाय हरि हाय ॥
इसी भांति बीते दिवस, होय गई पुनि रैन ।
प्रगट भये शुकदेव मुनि, निज शिष्य को सुख दैन ॥
श्री सतगुरु नैनन निरखि, उठ करि चरण प्रणाम ।
व्याकुल हो बिलपन लगे, विन श्री श्यामा श्याम ॥
विनय करी कर जोर कर, दम्पति दरस कराय ।
नाहीं तो तन त्यागि के, जीव निकस यह जाय ॥
श्री शुक मस्तक शिष्य के, धरो कृपा कर हाथ ।
बंशीवट नीचे लखे, श्याम राधिका साथ ॥
गलबैयां दीने युगल, नवल लाड़िली लाल ।
मंद मंद मुसकात मुख रूप राशि छवि जाल ॥

श्री दम्पति के दरस कर छके श्याम चरन्दास ।
रोम रोम में प्रगट भयो, परमानंद हुलास ॥
शिष्य के मस्तक से तभी, मुनि लियो हाथ उठाय ।
दृष्टि परे दम्पति न तब, अचरज भयो अधिकाय ॥
श्री शुक मुनि चरनन परे, श्याम चरन के दास ।
धन्यवाद श्री गुरुन को, कीनो सहित हुलास ॥
पुनि गुरु शिष्य दोऊन में, ज्ञान गोष्टि सम्वाद ।
रह्यो रैन में रंग अति, उर उपजो आह्लाद ॥
प्रात होत शुकमुनि कही, सुनो श्याम चरणदास ।
दिल्ली जाके तुम करो, श्री हरि भक्ति प्रकास ॥
शिष्य करी तब दंडवत, श्री गुरु चरणों मांहि ।
शीश उठा देखन लगे, शुक मुनि दरसे नांहि ॥
श्री शुक मुनि धर ध्यान उर, श्याम चरण के दास ।
बृंन्दाबन से गवन कर, दिल्ली कियो निवास ॥
रहन लगे आनन्द सों कृष्ण ध्यान ग़लतान ।
नर नारिन उपदेश दे, भजन करें भगवान ॥
दूर देश रामत करन, जावें श्री महाराज ।
भक्ति प्रचारें जक्त में. परमारथ के काज ॥
रूप अनेकन धार के, भक्तन करी सहाय ।
जल थल देश विदेश में, चरण दास प्रगटाय ॥
बैष्णव नागरि दास को, जगन्नाथ निज रूप ।
दरसायो करिके कृपा, सुंदर अधिक अनूप ॥

बैजनाथ विप्रन लखे, श्री महाराज सुजान ।
चरण प्रछाले गंग जल, शिष्य ह्वै गये अस्थान ॥
वैष्णव परमानंद की, मनसा पूरन कीन ।
कृष्ण रूप निज ह्वै प्रभो, दर्श दया निधि दीन ॥
जोग जीत गुरु छोन को, दरसायो निज धाम ।
अमर लोक संग ले गये, जहां श्री राधे श्याम ॥
राम सखी सह वपु गई, श्याम सुंदर के संग ।
जा पहुंची निज धाम में, जहां रास रस रंग ॥
श्री मति कुंजो मात कों, दरस कराये श्याम ।
तन को तज के फिर गई, अमरलोक निज धाम ॥
विभिचारी जय करन को, कियो कृथारथ जाय ।
अमर लोक में ले गये, दंपति दरस कराय ॥
स्वर्ग प्रवाही गंगजल, सेवक दिये न्हवाय ।
जय जय श्री महाराज की, सकल उठे मुख गाय ॥
साधू परमानंद को, डसो सर्प ने आय ।
श्याम चरण के दास प्रभु, लीनो तुरत जिवाय ॥
दो कन्या पैदा हुईं, सेवक के घर आन ।
निज प्रभुता सों पुत्र किए, चरणदास भगवान ॥
रक्षा कीनी बैल सों, शिष्य प्रेम गलतान ।
घोड़े से लीनो बचा, निरमलदास सुजान ॥

जमुना में न्हावत हुते, मुक्तानन्द सु सन्त।
ग्राह ग्रसे लीनेछुड़ा, चरनहिंदास तुरंत॥
दूसर आतम राम को, दीने नर्क दिखाय।
भय मानो यमदूत लखि, चरणशरणलइ आय॥
वैठ जमुना नाव में, डूवन लागे संत।
ध्यान धरो महाराज को, दिये उबार तुरंत॥
छै महिने पहिले कह्यो, आवन नादिरशाह।
परचय पा चरनन परे, शाह मुहम्मदशाह॥
माना नादिरशाह ने भक्तराज इर्शाद।
मुरशद पीर पिछान के, कीना निज दिलशाद॥
गिलचे आये कतल को, कियो तरवार प्रहार।
हाथ हुवे जड़ सबन के, तब मन मानी हार॥
नौधा प्रेमा पराको, निशिदिन बरसे रंग।
सदा होइ हरिकीरतन वाजत बीन मृदंग॥
सेवक साधू संत सव, रहैं ध्यान लवलीन।
युगल लगन में मग्न नित, प्रेम सिंधु मन मीन॥
भक्ति हरी को कर दियो, श्री महाराज प्रचार।
भारत में करने लगे, प्रेम भक्ति नर नार॥
सर्परूप श्री हरी ने, पार्षद दिया पठाय।
आवो प्यारे धाम अब, दियो संकेत जनाय॥
तब निज सन्तनको बुला, बोले श्री महाराज
हम जावें हरिधाम को, कर मन वांछित काज।

भक्ति भजन करते रहो, सुमरो श्री हरिनाम ।
हरि गुरु उर विश्वास रख, रहो सदा निष्काम ॥
तुम सब तनताजि आयहो, निश्चय मेरे धाम ।
प्रेम प्रीति कर प्यार सों बोले गुरु गुण ग्राम ॥
श्री हरि आज्ञा सिरधरी, करी तयारी धाम ।
दशम द्वार निज पुरगये, जहां श्रीराधे श्याम ॥
सम्बत अठारह सौ हुते, ऊपर उन्तालीस ।
देह त्याग चरन्दास प्रभु, गये धाम जगदीस ॥
अस्सी वर्ष भूतल विषै, राजे श्री महाराज ।
सरस माधुरी भक्ति हरि, जक्त प्रचारन काज ॥

॥ श्रीमत् श्याम चरण दासाचार्य महिमा ॥

चरणदास के चरण में, जो जन आये धाय ।
सूरज मण्डल बेध कर, बसे अमरपुर जाय ॥
भेजे श्यामा श्याम ने, करन जगत उद्धार ।
चरणदास ने कृपा कर, किये पतित भव पार ॥
चार पदारथ प्रेम सो, सबको कीने दान ।
चरणदास ने दया कर, कियो जक्त कल्यान ॥
नवधा प्रेमा अरु परा, दियो भक्ति उपदेश ।
किये कृतारथ जीव जग, पार न पावत शेश ॥
ज्ञान दियो ज्ञानीन को, जोगिन को दियो जोग ।
भक्तन दई भक्ति हरि, मेटे भव दुख रोग ॥

ज्ञानी विज्ञानी बड़े, जोगिन के सरताज ।
रसिकाचारज मुकुट मणि, चरणदास महाराज ॥

दयावान दाता बड़े, परदुख भंजन हार ।
पतितन के पावन करन, चरणदास अवतार ॥

सब सद्गुण सम्पन्न हैं, सब लायक महाराज ।
सदा सहायक जनन के, मण्डन सन्त समाज ॥

लोक और परलोक के, सुखदायक सिरमौर ।
व्याप रहे सब विश्व में, भीतर बाहर ठौर ॥

भक्तन के मन भावने, रसिकन के रिझवार ।
प्रेमिन के प्रभु प्राण प्रिय, चरणदास सरकार ॥

शिष्यन के संशय हरन, सेवक जन प्रतपाल ।
आश्रित जन रच्छा करन, श्री रणजीत दयाल ॥

प्रगट भये संसार में, दूर करन भुव भार ।
धर्म सनातन भागवत, चहूं दिशि करन प्रचार ॥

जिज्ञासू जन मुमुच्छु, चरण शरण लई आय ।
चरणदास प्रभु कृपाकर, श्रीहरि दिये मिलाय ॥

सेवा में ठाढ़ी सदा, अष्टसिद्धि नवनिद्धि ।
चरणदास दाता बड़े, जग में भए प्रसिद्धि ॥

रंकन को राजा किये, दिये मुक्ति अरु माल ।
चरणदास चरणन परे, सो सब हुवे निहाल ॥

भूत भविष्य वर्तमान के, त्रिकालज्ञ महाराज ।
चरणदास की दयासों, सुधरे सब के काज ॥

दे दे परचय विविधि विधि, कलिजिय किये सचेत ।
चरणदास विश्वास दे, प्रगटायो हरि हेत ॥
भगवत धर्म प्रचार हित, लियो अवनि अवतार ।
चरणदास तारण तरण, अधम उधारण हार ॥
चार धाम सातोंपुरी, तीरथ क्षेत्र सुठौर ।
चरणदास बहु रूपधर, रमें रसिक सिरमौर ॥
घर घर सेवा श्याम की, राग भोग रसखान ।
चरणदास की दया सों, भक्ति करी भगवान ॥
पुरुषोत्तम परमात्मा, अवतारी जगदीस ।
चरणदास दृढ़ उपासन, थापी विसवा वीस ॥
रसिक अनन्यन की रहनि, रस उपासना भाव ।
चरणदास सबही कहै, सुन उपजै चितचाव ॥
पापी अधम अनेक को, कियो जक्तसों पार ।
चरणदास सन्मुख हरी, पहुँचाये कर प्यार ॥
बहु जीवनको वपु सहित, कृष्ण ले गये धाम ।
चरणदास की दया सों मिले महल विश्राम ॥
बहुतन को संसार में, श्री हरि दिये मिलाय ।
चरणदास ने सबन की, बिगरी दई बनाय ॥
आचारज को रूप धर, जग में प्रगटे आय ।
चरणदास निज कृष्णहो, दरसन दिये कराय ॥
निर्धन जनको धन दियो, पुत्र हीन सन्तान ।
सबको मन बांछित कियो, चरणदास भगवान ॥

बंधन में जो जन परे, तिनको दिये छुड़ाय।
मृतक जिवाये बहुत से, महिमा कही न जाय॥
ज्ञान योग वैराग को, जग में कियो प्रचार।
कीनो भगवत धर्म को, चरणदास बिस्तार॥
ग्रन्थ भक्तिसागर सरस, बानी पांच हजार।
महाराज बरनन करी, प्रेम भक्ति भंडार॥
जोग ज्ञान वैराग को, बरनो विविधि प्रकार।
अरु गायो निज धामको, अनुपम नित्य बिहार॥
खंडन मंडन मतन को, कियो न श्री महाराज।
गीता अरु भागवत मत, बिरचो धर्म जहाज॥
जो बांचे नित नेम सों, बानी परम पुनीत।
पावे परमानंद सुख, धाम जाय जग जीत॥
सुन समझे दृढ़ उर धरे, करनी करे जु कोय।
लहै पदारथ चार सो, श्री हरि बल्लभ होय॥
बानी रससानी सुनत, नास्तिकता होय दूर।
आस्तिकता उपजे अधिक, हरिगुन हिय भर पूर॥
संप्रदाय शुकदेव मुनि, इष्ट राधिका श्याम।
चरणदास वृंदा विपिन, बरणन कीनो धाम॥
नव निकुंज ब्रज की अमित, लीला के रस भेद।
दिये जनाय निज जननको, कियो सकल भ्रम छेद॥
दिव्य मानसी महल की, टहल करन की रीत।
श्याम चरण के दास ने, प्रगट करी सह प्रीत॥

अली मंजरी सहचरी, सखी सहेली भाव।
ग्रन्थ भक्ति रस मंजरी, कहे तहां चितचाव ॥

दंपति सेवा सुख मई, सब को दई बताय।
श्याम चरण के दास हो, सहचरि पद लियो पाय ॥

रंग महल युग टहल में, पहुँच लह्यो आनंद।
चरणदास चरणन परसि, पायो परमानंद ॥

चरणदास के चरण की, लई शरण निज आय।
तिनको श्री प्रीतम प्रिया, लीने हैं अपनाय ॥

चरणदास के चरण को, जिनके लागो रङ्ग।
प्रेम पगे प्रीतम प्रिया, तजे न तिनको संग ॥

चरणदास के चरण में, जो नवाय निज माथ।
कुँवरि किशोरी राधिका, रीझि गहे तिहि हाथ ॥

श्याम चरण के दास को, जपै प्रेम कर नाम।
तिनको दंपति भुजन भर, हँसि भेटें सुख धाम ॥

चरणदास के ध्यान में, जो जन हो ग़लतान।
उज्जल नवल निकुंज रस, करे निरन्तर पान ॥

भजे भाव कर जिन्हों ने, श्याम चरण के दास।
पहुँचे सोइ निकुंज में, जहां नित्य रस रास ॥

होत रहत जहां परस्पर, दंपति विविधि विलास।
रहत निकटवर्ती तहां, श्यामचरण के दास ॥

गुप्त प्रगट लीला ललित, करत राधिका श्याम।
चरण दास चरणन परसि, पाय तहां विश्राम ॥

दृढ़ कर गहै अनन्य व्रत, चरणदास प्रभु इष्ट ।
सरस माधुरी रस मिले, महा मधुर अति मिष्ट ॥
जो जन मन वच कर्म कर, भजे श्याम चरन्दास ।
रिधिसिधि सम्पति प्राप्त हो, अशुभ अमंगल नास ॥
लोक और परलोक के, रक्षक श्री महाराज ।
सरस माधुरी शरण की, सब विधि उनको लाज ॥
स्वामी रामहि रूप जी, जोग जीत जी जान ।
दोउन ने अनुपम कह्यो, जीवन चरित बखान ॥
तिन दोउन को सार यह, सूक्षम रचना कीन ।
पढ़ो सुनो सब प्रेम सों, साधू रसिक प्रवीन ॥
जैसे सुंदर सुमन की, लई सुगन्धि निकार ।
सरस माधुरी ने रचो, यह चरितामृत सार ॥
चरितामृत को प्रीत कर, पठन करे नित जोय ।
सुफल होंय सब मनोरथ, गुरुभक्ति दृढ़ होय ॥
शुभ सम्वत उन्नीससौ, और तिहत्तर जान ।
चैत्र कृष्ण तिथि द्वादशी, भयो समाप्त सुख दान ॥
जयपुर शहर सुहावनो, जहां दरीबा पान ।
सरस माधुरी ने कह्यो, चरितामृत रसखान ॥

॥ सुयश प्रताप ॥

श्री शुकमुनि के शिष्यवर श्याम चरण ही दास ।
यश प्रताप तिन को कछुक कीनों चहत प्रकाश ॥

उनही को उर ध्यानधरि चरणन शीस नवाय ।
सरसमाधुरी शरण गुण गावत हिय हुलसाय ॥

॥ छन्द ॥

श्याम चरणहि दास श्रीशुकदेवके शिष्य ध्याइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकार युगलपद पाइये ।
भक्त शोभन वंश भूषण मुरलि सुत ह्वै अवतरे ।
कुंजो नन्दन जक्त वंदन भक्त हित नर वपुधरे ।
प्रेम मंजरी कुंज में निश्चय यही मन लाइये ।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥१॥
वाल पन वय पंच वर्ष मुनीश मिल वहु हित करे ।
मोदसों ले गोद मांही अभय कर मस्तक धरे ।
पुनि दई शुकतार दीक्षा प्रेम में सरसाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२॥
पिता परम पुनीत प्रेमी सदेही हरिपुर गये ।
प्रकट आप प्रताप पूरण जक्त में शुभ यश छये ।
इन्द्रप्रस्थ पधार कर श्रीकृष्ण प्रेम समाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥३॥
ध्यान योग विराग द्वादश वर्ष कर आनंद भरे ।
विविध परचय भक्तिहित दे जक्त के कलिमल हरे ।
कृष्ण भक्ति प्रचार कीनी जासु की वलि जाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥४॥

मुनिराज आज्ञा मान प्रभूजू भूपज्यों रहने लगे।
वसन भूषण धार अंग में सरस सुन्दर जगमगे।
होत नित दरबार हरियश गान मन हरषाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकरि युगल पद पाइये ॥५॥
जगन्नाथ स्वरूप धारण आपने अद्भुत कियो।
नाम नागरिदास वैष्णव तासुको दरशन दियो।
पुनि प्रगट आचार्य्य वपुसों ताहि को दरसाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६॥
वैजनाथ निहारि प्रभु को विप्रवर तिन शिष्य भयो।
गंगोदक ले चरण धोये भक्त ह्वै निज पुर गयो।
अधिक एक सुएक लीला सुन सुअंग पुलकाइये।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥७॥
राधा वल्लभि वैष्णव जो परमानन्द सुनामजू।
श्रीकृष्ण कराय दर्शन किये पूरण कामजू।
पात पीपर वृक्ष में श्री लालजू दिखलाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥८॥
सखी रूप अनूप धारो वस्त्र भूषण अँगधरे।
दुष्ट जन सब पाय परचय निठुर चरणन में परे।
सुन सुयश सानन्द ह्वै के चरण शीस नवाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥९॥
शिष्य प्रभू के प्रेम मूर्ति राम सखी शुभ नाम को।
ह्वै प्रकट श्रीकृष्ण तिनको लेगये निज धाम को।

नित्य परिकर में बसाये ताहि निरय मनाइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥१०॥

जोग जीत पुनीत श्रीमहाराज के शिष्य जानिये ।
लीला सागर ग्रन्थ करता तिन्हें प्रकट पहचानिये ।

शरद पूनों नित्य लीला रास लखि तृताइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥११॥

गुरु भक्तानन्द गुणनिधि शिष्य जिनको नाम है।
स्वामी रामहि रूप पदवी जक्त में सरनाम है ।

किये निज दीवान प्रान समान प्रिय कहलाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥१२॥

करत रामत शाहजहांपुर दिल्ली प्रकटे आय के ।
सहजो बाई दर्स दे दियो वाजू ताको जाय के ।

पुनि उलट आये तहां मन मोद ह्वै मगनाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥१३॥

ग्राम हरसोरे प्रकट दिये दरश जुगतानन्द को ।
दूध अवखोरा गहा गये इन्द्रप्रस्थ आनंद सो।

दई पदवी गुसांइ तिन शिष्य कर सुख पाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥१४॥

शिष्य गुरु छौना जिन्हौं को वृन्दाबन दरसाइया ।
रास लीला दिखा के छबि जुगल मांही छकाइया ।

धन्य कहि गुरु चरण परसे तिन्हें नित लडाइये ।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥१५॥

जय करण पापिष्ट जन तिहिं दियो दर्शन आयके।
कृपा कर निज धाम में प्रभू ले गये हुलसाय के।
दरश दम्पतिके करा मन माधुरी अटकाइये।
नाम तिनको लेत ही परि कर युगल पद पाइये ॥१६॥

मातु कुंजो प्रेम पुंजो नित्य लीला रास की।
दई सहज दिखाय स्वामी पूर्ण तिन अभिलास की।
गुप्त गंगाजी नहवाई चरण तिन उर लाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगलपद पाइये ॥१७॥

स्वर्ग गंगाजल सुधारा जासु की बर्षा करी।
संत सेवक सब नहवाये ताप त्रय तिन की हरी।
अमित जनको पुत्र धन दिये तिहिं चरित चित लाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥१८॥

मृतक नर बहुतक जिवाये चरणामृत दे चरण को।
काल के सम्बत् करे वर्षाय जल दुख हरण को।
रोग रोगिन के मिटाये सुन सुयश हुलसाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युग पद पाइये ॥१६॥

सर्प काटे से जिवायो साधु परमानन्द को।
करत रच्छा रहत निसि दिन मेट भव दुख द्वंद को।
प्रणत जन प्रतिपाल प्रभु मन मांहि निश्चय लाइये।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥२०॥

एक सेवक के यहां है कन्यका पैदा भई।
कृपा कर प्रभु पुत्र कीने जक्त मे कीरति छई।

ईश्वरीय अनेक परचय देख दृगन सिराइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२१॥
कह्यो छै महीने पहले ही आन नादिरशाह को ।
दियो लिख पढवाय परचा शाह मुहम्मदशाह को ।
भूत भविष्य वर्त्तमान ज्ञाता भक्ति उर उपजाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥ २२ ॥
नाम नादिरशाह शाहनशाह पायन में पर्यो ।
दे सुपरचय भर्म मेटो गर्व सब ताको हर्यो ।
करी नित्य नवीन लीला तासु प्रेम बढ़ाइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥ २३ ॥
करन दर्शन सप्त साधू पूर्व सों चल आइया ।
आगरे जमुना में तिन मल्लाह नाव चढाइया ।
तिन्हैं डूबत जा उबारे सुन प्रताप सराहिये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥ २४ ॥
सप्त ठग मग में मिले गल फांस दीनी आयके ।
टूट फांसी अग्नि वस्त्रन लगी दुष्टन जायके ।
तिन्हें हित कर शिष्य कीने मन महा मगनाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥ २५ ॥
धाम वृन्दा विपिन सेवाकुंज में दम्पति मिले ।
अंक भर भर भुजन भेटे प्रेम सागर में झिले ।
नृत्य रास विलास लखि पुनि बंसी बट ठहराइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२६॥

रैन में सुख देन शुक मुनि कृपा कर दरशन दियो ।
जुगल परिकर युत दिखाये विरह तन शीतल कियो ।
ज्ञान गोष्टि भई परस्पर हरष हिये छाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२७॥
पुनि पहुंच दिल्ली नगर में रचि सुमंदिर ब्राजई ।
जक्त जीवन को चितावन आपकी इच्छा भई ।
लगे उपदेशन सबनको ध्यान जासु लगाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥२८॥
नाम आतमराम दूसर नर्क तिहि दरसाइया ।
पाय परचय पर्यो चरणन संत ताहि बनाइया ।
भक्ति करन प्रचार जयपुर कृपा कर सो पठाइये ।
नाम तिन को लेतही परकिर युगल पद पाइये ॥२९॥
प्रेम के ग़लतान शिष्य की बैल ते रचा करी ।
दास निरमल अस्त्र काटत प्रकट ह्वै बिपता हरी ।
संत मुक्तानन्द जमुना न्हात ग्राह छुड़ाइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥३०॥
शाह मौला मौलवी को राम मौला कर लियो ।
शाह आलमशाह कीनों तख्त पद ताको दियो ।
रंक राजा करत छिन में शरण जिन की जाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३१॥
नाम राजाराम सेवक पुत्र दौलतराम ही ।
दुमंजले से गिरत गहिभुज कियो ले ठाडो मही ।

शरण रक्षक जान सतगुरु तासु की शरनाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३२॥
बिपिन केहरि शिष्य कर द्वैगज लिये अपनाय के ।
सीत दै सुप्रसाद तिन को दिये धाम पठाय के ।
चरित परम पुनीत रसना गा पवित्र कराइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३३॥
क़तल गिलची करन आये एंच असि मारत भये ।
वार करन न नेक पाये हाथ जड ह्वै रह गये ।
पाय परचय नम्र ह्वै पुनि चरण मांहिं पराइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥३४॥
शहर दिल्ली जामा मसजिद यवन मारन मन दियो ।
काढ के तरवार प्रभु के वार सर ऊपर कियो ।
टूट असि तब परी तिहि छिन दुष्ट सकल खिसाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३५॥
सिद्धको कियो शिष्य चादर कूप पै बिछवायके ।
मंत्र दीक्षा देसु ताको लियो साधु बनाय के ।
तरन तारन ताहि कियो गुन कहां लौं गाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३६॥
नाम विद्यानाथ जोगी वैष्णव ताको कियो ।
तिलक कंठी मंत्र दे निज जक्त में बड़ यश लियो ।
मोहर आंवल वृक्ष वर्षा देख भाव दृढ़ाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३७॥

एक जादूगर कुयोगी ज़हर ले प्रभु को दियो।
नाम चरणामृत कह्यो मुख प्रेम कर ताको पियो।
कुटिलता को मेटि तिहिं फिर कागा हंस बनाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३८॥

नाम केशवदास वैश्य पुनीत अलवर जानिये।
कर्म वश अपराध विन भई क़ैद तिन की मानिये।
प्रगट होय छुड़ाय लीनो प्रेम मांहि पगाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥३९॥

एक यवन मलीन आमिष भर घरा में लाइया।
कह्यो लेहु प्रसाद यामें बचन कपट सुनाइया।
भये पेडे गुरु कृपासों जिन्हों की वलि जाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४०॥

दास हँसमुखराम जू को प्रगट ह्वै दर्शन दियो।
दूध वेला ले सुकर में पान प्रभु ताको कियो।
हैं स्वयम् सर्वज्ञ तिनको चरित सुन अरु सुनाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४१॥

वनिक के ले कर्ज़ साधू सेव कीनी प्रीति सों।
संत पूरण प्रताप को सीधो दियो न कुनीति सों।
रूप शिष्य सुधार लेकर द्रव्य जाय चुकाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइय ॥४२॥

शहर मथुरा में प्रगट ह्वै दरस बाई को दियो।
सीत अरु सुप्रसाद सादर लै स्वगुरु पूजन कियो।

दया के सागर प्रभु चित चरन माँहि बसाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४३॥
कामबन के नाम नागरिदास को निज शिष्य कियो ।
स्वप्न में कंठी तिलक पुनि मंत्र गुरु ताको दियो ।
लखत अन्तर की सुगति मति नैंन जल वर्षाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइय ॥४४॥
जय नगर के नृपति ईश्वरीसिंह को निज शिष्य कियो ।
प्रेम भक्ति प्रतापसिंह आय निज दर्शन दियो ।
किये श्री गोविंद दर्शन अर्स पर्स मिलाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४५॥
नागे दस हज़ार मिलके प्रभु जाचे आयके ।
लियो तिन हित दोय मन प्रसाद मोल मंगाय के ।
मानसी धर भोग जिमाये साधु सकल अघाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४६॥
पारषद् निज सर्प रूपी भेज दिये समुझाय के ।
प्यार कर प्रीतम प्रियाने लिये धाम बुलाय के ।
बसे जा रंग महल में निश्चय यही मन लाइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥४७॥
रूप नाना धार दस दिश प्रगट ह्वै दर्शन दिय ।
शिष्य सेवक संत और महंत प्रभु अनगिन किये ।
करी पूरण सर्व आशा तिन्हें सकल रिझाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४८॥

शिष्य संपूरण कला अनगिन महंत बनाय के।
भरत खण्ड समस्त में दीन्हें तिन्हें पठवाय के।
कियो यह उपदेश प्रेम भक्ति जग फैलाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥४९॥

पुरी सातों तीर्थ अडसठ रमे याही रीति सों।
भक्ति हित भये प्रगट जित तित करी लीला प्रीति सों।
भाव के वश भये स्वामी तिन्हें नित दुलराइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥५०॥

दीन लखि बहु द्रव्यदीनैं विपत सबहिनकी हरी।
अष्ट सिद्धि नव निद्धि जिनके रहत चरनन में परी।
रोम प्रति जो होहि रसना पार गुन नहीं पाइये।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥५१॥

कई परचय क्षमा अरू निरलोभता के प्रभु दिये।
अमित याचक किये अयाचक काज तिन पूरन किये।
चरित चारु विचित्र बहु विधि दिवस निशि मन लाइये।
नाम तिन को लेत ही परिकरि युगल पद पाइये ॥५२॥

ज्ञान जोग विराग प्रेमा भक्ति दीनी दान जू।
लखि सुरुचि जिहि जीव की तिहि कियो प्रभू कल्यणजू।
लोक अरु परलोक सिद्धि दई सुन सुख पाइये।
नाम तिन को लेतही परि कर युगल पद पाइये ॥५३॥

अथर्वणकी उपनिषद को भाष्य भाषा में कियो।
अगम अर्थहिं सुगम कर आनन्द सब ही को दियो।

शुद्ध ब्रह्म विवेक वेत्ता विदित जक्त लखाइये ।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥५४॥
कह्यो कर निरधार श्रुति सिद्धांत संतन सों यही ।
प्रेम भक्ति विराग जोग अरु ज्ञान सों वढकर सही ।
हार मानत भक्ति सों माया यही दृढ लाइये ।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥५५॥
प्रेम को सु प्रभाव बारंबार वाणी में कह्यो ।
प्रेमवश श्री कृष्णजू कहि सर्व तज याको गहो ।
सार यही कलि काल में सत्संग रंग लाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥५६॥
सहनता सद्गुन लखायो कटु बचन दुष्टन सहे ।
मार गारि सहार स्वामी वाक्य सीतल मुख कहे ।
क्षमा सागर जग उजागर तिनहिं सों लो लाइये ।
नाम तिन को लेत ही परि कर युगल पद पाइये ॥५७॥
रहे आप अमान स्वामी मान औरन को दियो ।
लियो कुछ नहीं किसी से सब को सुमन वांछित कियो ।
आप जैसे आप पटतर और कौन बताइये ।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगुल पद पाइये ॥५८॥
स्वयम् प्रभु सर्वज्ञ और गुणज्ञ गुण निधि गाइये, ।
त्रिकालज्ञ श्रुतिविज्ञ तिन की भक्ति उर उपजाइये ।
तत्व वेत्ता वेदकें बिन मोल आप बिकाइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥५९॥

सर्व गुण सम्पन्न सतगुरु गुणातीत गुपालजू ।
सर्व रक्षक विश्व व्यापी ब्रह्म रूप रसाल जू ।
गुप्त प्रकट स्वरूप जिन के दुई भाव नसाइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६०॥

अगुन सगुन अनेक लीला वेद गावत जासु की ।
नित्य लीला धाम में तहां होत रास बिलास की ।
सोई आचारज हमारे सकल को समझाइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥६१॥

जल सुथल में नभ अनलमें पवनमें दरसाइये ।
सर्व में भरपूर सब से पृथक जिन को पाइये ।
निकट सों अति निकट सोई गुप्त प्रगट बताइये ।
नाम तिन को लेतही परिकर युगल पदपाइये ॥६२॥

रसिक चूड़ामणि रसीले रस उपासक जानियें ।
कृष्ण ही नर वपु धर्यो यह बात सत्य प्रमानियें ।
कुंज केलि दृढ़ाय लीला मन मुदित उमगाइये ।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥६३॥

नाम रूप अरु धाम लीला की उपासन रसमई ।
करी आप सुप्रेम पूर्वक और निज शिष्यन दई ।
नित्य परिकर में बसाये जिन्हें सकल लड़ाईये ।
नाम तिन को लेत ही परिकर युगल पद पाइये ॥६४॥

प्रकट कहि गायो शिवाशिव भविष्योत्र पुराण में ।
नाम श्री रणजीत अरु चरणदास कह्यो प्रमाण में ।

मुरलीधर निज तात कुंजो मातु के प्रगटाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद् पाइये ॥६५॥
श्याम चरणहिदास अरु रणजीत जिनके नाम हैं।
भक्तराज महाराज सोई जक्त में सरनाम हैं।
जपै जो लहै मन सुवांछित भरम सकल मिटाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद् पाइये ॥६६॥
सर्व जन को सुलभ स्वामी स्वयम् भावाधीन हैं।
प्रेम के वर वश महा प्रभु जल विवश जिमि मीन हैं।
एक मनकि बृति निसि अरु दिवस लगन लगाइये।
नाम तिनको लेत ही परिकर युगल पद् पाइये ॥६७॥
भक्त त्राता प्रेम दाता नित्य वासी धाम के।
निकटवर्ती रहत नित प्रति राधिका अरु श्याम के।
चकोरी मुख चन्द् दम्पति निरख नैंन छकाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद् पाइये ॥६८॥
शेष शारद् सुयश जिनके गात पात न अंत है।
नेति कहि कहि मौन गहि मुख नाहि और भनंत है।
भक्त अरु भगवंत अकथ गुन कहत बुद्धि थकाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद् पाइये ॥६९॥
भक्ति ज्ञान वैराग प्रेमा परा बरनी रस मई।
भक्ति सागर ग्रन्थ रचि कियो जक्त में कीरत छई।
सार श्रुति सिद्धांत गायो मनन कर मुसकाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद् पाइये ॥७०॥

गहो भक्ति अनन्य श्री गुरु चरण में चित नित रहो।
लहौ पदवी दास तिनकी जयति जय सुख सों कहो।
सुरति सकल समेटि चित की वृति चरण रमाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७१॥

भक्ति को विस्तार कर संसार में सतयुग कियो।
धर्म को स्थाप अधर्म मेटि सब को सुख दियो।
ऐसे प्रभु को नित सुमर मन से न कभु बिसराइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७२॥

पराभक्ति प्रकाश परचय सर्व को दरसाइया।
सर्व में सब से अलौकिक सार तत्व लखाइया।
भावना कर भर्म परिहर भव न फिर भटकाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७३॥

महा प्रभु मन भर्म मेटन भाव दृढ़ निश्चय करो।
सकल पूरण कला स्वामी चरण तिन मस्तक धरो।
कर सुमन विश्वास भव भय जन्म मरण गुमाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७४॥

भीर भक्तन पै परी जित स्वयम् पहुंचे जाय के।
भक्त वत्सल गुण सुमिर मन लिये जीव बचाय के।
करे चरित अपार तिनको आप गाय गवाइये।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७५॥

भार्गव कुल भानु भक्ताचार्य प्रभु भगवान हैं।
सम्प्रदाय शुकमुनि प्रवर्तक तिन्हैं मोर प्रणाम हैं।

जान दासानुदास अपनो निकट चरण बसाइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७६॥
श्री कृष्ण प्रभु अवतार ले लीला करीजू अनन्त है ।
तैसे श्री महाराज की लीलान को नहि अन्त है ।
सरस माधुरी ध्यान नित धर शरण जिनकी आइये ।
नाम तिनको लेतही परिकर युगल पद पाइये ॥७७॥

॥ दोहा ॥

नेम प्रेम सों साठ दिन पाठ करे जो कोय ।
सकल मनोरथ सिद्ध ह्वै दम्पति वल्लभ होय ॥
श्रद्धा अरु विश्वास कर बांचे अर्थ विचार ।
श्री सतगुरु प्रताप से मिल युगल सरकार ॥
यश प्रताप जो जन पढ़े वढ़े प्रेम अधिकाय ।
चौरासी बन्धन कटैं जन्म मरण छुटजाय ॥
दुगध भात भोजन करे हरि अर्पित परसाद ।
ब्रह्मचर्य भू शयन कर त्यागे मिथ्या वाद ॥
भक्ति मुक्ति दाता गुरु भाषत वेद पुरान ।
सरस माधुरी कहत है निश्चय लीजे मान ॥

श्रीमत् श्यामचरणदासाचार्य्य परत्वपद ।

॥ ठेका कव्वाली ॥

श्यामचरणदास आचारज ख़ास मुकटमणिहो सरताज हमारे ॥
पेगम्बर ढहरे में प्रगटाये पेशवा, आलम के कहलाये ।

लेके पेगाम ज़मीं पर आये वजे जब अनहद नाद नकारे ॥१॥

वालपन मुनिवर दरशन दीये, खुशी हो गोद आपको लिये।
प्यार कर पेड़े बख़शिश कीये, मिले तुम्हें मुरशद नदी किनारे॥२

जलवागर हुवा जहां में जमाल, लोगज़ियारत कर हुए निहाल।
तजल्ली रोशन नूर जमाल संत का रूप धार अवतारे ॥३॥

फ़रिश्ते और हूर गिलमान परी पैकर जन्नत के आन।
हुवे सव सूरत पै क़ुरवान, सवों ने आकर नैन निहारे ॥४॥

प्रभू ने दया दई अति दिल में, मनोरथ सवके पूरे पल में।
रहते थे हरदम इश्क शग़ल में, ज़िक्रमें दिन और रैन गुज़ारे॥५॥

कभी भर नींद नहीं सोते थे, हिज्र हरि में हरदम रोते थे।
तुम्हें दम दम दर्शन होते थे, निरखते निसदिन दम्पति प्यारे॥६

कलियुग सतयुग कर दिखलाया, सनातन धर्म जक्त फैलाया।
लोग सोतों को तुमने जगाया, भक्ति मारग प्रगटाने वारे॥७॥

वली अल्लाह औलिया सारे, नहीं कोई सानी हुआ तुम्हारे।
जीव जन्नत पहुँचाये अपारे, हमारे हो नैनों के तारे ॥८॥

रूप नाना प्रभु तुम्हने धारे, दुख भक्तों के अमित निवारे।
याद किये जहां तहां आप पधारे, दयालू ऐसे हो तुम भारे॥९॥

मुरादें सव की पूरन कीनी, दीन दुनिया की दौलत दीनी।
विपत सवकी तुमने हरलीनी, काम संतोंके सहज सुधारे॥१०॥

तख़्त दिल्ली के शाहनशाह, बताई सव को इबादत राह।
रहे सव से तुम वे परवाह, हक़ीक़त रब की रहे संभारे॥११॥

शाह मौला क़ंधार से आया, आप के दरशन कर सुख पाया।
उसी को राजे निहां दरसाया, राम मौला हो वतन सिधारे॥११

पुरी सातों अरु चारों धाम, तीरथ अडसठ अरु क्षेत्र तमाम।
शहर सारे सबछोटे ग्राम, रमे तुम शुकदेव मुनी दुलारे॥१३॥

अर्श कुरसा जहां रब का नूर, ख़ास ख़िलवत का वहां जहूर।
रहो तुम हाज़िर जहां हुजूर, भेद कुदरत के जानने हारे॥१४॥

लुदन्नी इलम तुम्हें भरपूर, मुजस्सिम आप सरापा नूर।
देख के लजत चंद अरु सूर, हुवे मशहूर हिन्द में सारे॥१५॥

करे तुम्हें सिजदा सकल जहान, तुम्हारा सच्चा रहा इमान।
हुवा तुमको असली इरफ़ान, बहर वहदत में गोते मारे॥१६॥

वहद हुला शरीक का ज्ञान, शिर्कतज सेवा करी रहमान।
तबकचौदह हुवे रोशन-आन, अनल हक़इस्म आज़म उच्चारे॥१७

आपने धारा सदा सुहाग, कृष्ण से किया प्रगट अनुराग।
हाल महफ़िल में उठता जाग, बजाते गाते गाने वारे॥१८॥

मिले श्री बनमें कृष्ण करतार, किया तुमसे हिलमिल के प्यार।
दिखाया तुमको निज दीदार, लगेसीने से सनम तुम्हारे॥१९॥

स्वरोदय इल्म जानते खूब, बताते सब का बात अजूब।
मुहब्बत सब से थी मरगूब, खुल्क़ ख़लक़त से करने वारे॥२०॥

हो मुरशद पीर खुदा के वज़ीर, रहनुमा आरिफ असल फ़क़ीर।
पेशवा मौला के हो मशीर, गुनाहों के बख़्शाने वारे॥२१॥

हजारों हुवे इरादत मंद, फ़क़ीरी फ़िरका किया पसंद।
सुल्ह कुल फैलाया चोचंद, तसव्वुर रब में रहे मतवारे॥२२॥

आखिरूज्जमा नवी हुवे आप, हमारे तुमही मां अरू बाप ।
दूर किये दुख दोजख संताप,तुम्हारे यश गावत हम हारे॥२३॥
शरण जो जीव आप की आये, वोही मकबूल खुदा कहलाये।
दरजे लाहूत उन्हें पहुँचाये,जन्म अरु मरण जिन्हों के टारे।२४॥
सरस है, तुम चरणों का दास, करोगे मेरी पूरन आस।
देवोगे निज वृन्दावन वास, जहाँ तुम रूप सहचरी धारे॥२५॥

॥ दोहा ॥

जुगल जन्म सों सौ गुनो, शुभ मंगल दिन आज।
प्रगटे श्री रनजीत प्रभु, माया जीतन काज॥
श्री हरिजू रणछोड़ हैं, आचारज रणजीत।
जीते माया दल प्रवल, करिये सत्य प्रतीत॥
जो जो जन आवें शरण, दे जग बंध छुड़ाय।
बंदी छोड़ प्रसिद्ध प्रण, वेद विमल यश गाय॥
हरि माया बांधे अमित, जीव आसुरी जाल।
तिन्हें छुड़ाके परम पद, ले जावें तत्काल॥
ब्रह्मा ने शृष्टि रची, सो भरमे संसार।
श्री सतगुरु शृष्टि रची, उतरे भवजल पार॥
ब्रह्मा सिरज्यो बिंद कुल, लगो विमुखता रोग।
सतगुरु कीनों नाद कुल, सनमुख हरि संयोग॥
जग शृष्टि सम काग की, भच्छ अभच्छहि खाय।
हंस शृष्टि सतगुरु रची, हरियश मुक्ता पाय॥

सतगुरु हिय भंडार में, अनगिन राधेश्याम।
शरणागत को देत हैं, लें नहिं एक छदाम॥
श्री हरि ने जगजीव को, छोड़ दियो है हाथ।
सतगुरु कीनों शरण जब, तब नहिं छोड़त साथ॥
अंधी शृष्टि जक्त की, ब्रह्माने रचि दीन।
ज्ञान चक्षु दीनी गुरु, तबहि परे प्रभु चीन॥
मिल्यो रहत फिर नहिं मिलत, सखा जीव हरि संग।
प्रगट मिलायो श्री गुरु, दरशायो रस रंग॥
कर्म शुभाशुभ तीन विधि, तिनके नाशन हार।
जीव करें निषकर्म प्रभु, प्रेम भक्ति दातार॥
कोटि नाम हरि के जपे; एक आचारज नाम।
तुले नहिं सम तासु की, जपो रसिक निशि जाम॥
कोटि जन्म उत्सव हरि, गुरु उत्सव पर वार।
एक रसना नहिं कहि सके, महिमा अपरंपार॥
ज्यों हाथी के खोज में सकल समावत खोज।
यों आचार्य उत्सव विषे, सब उत्सव की मौज॥
धर्म स्थापन हेतु हरि, ले निमित्त अवतार।
नित्य प्रगट नर रूप हरि, आचारज संसार॥
खमेहू सुधि लेत नहिं, जिय की श्री हरि आन।
गुरु पल पल रक्षा करें, अतुलित कृपा निधान॥
हेतु सहित हरि करत हैं, जिय की आन सहाय।
निरहेतुक आचार्य गुरु, दें भव बंध छुड़ाय॥

ज्यों हरि के प्रति रोम में, लटकत अमित विराट ।
त्यों श्री गुरु प्रतिरोममें, युगल रूप के ठाट ॥
आम वृक्ष सिंचिन किये, उपजत बहुरस आम ।
आचारज सेवन कियें, मिलें राधिका श्याम ॥
मेरे साधन हैं नहिं, जप तप नेम अचार ।
श्री आचारज गुरु शरण, सोवत पांव पसार ॥
श्री आचारज गुरुन बिन, मोहि नहिं गति आन ।
मनसा वाचा कर्मना, श्री गुरु इष्ट प्रधान ॥
श्री गुरु व्यापक सर्व दिशि, आदि मध्य अवसान ।
जाग्रति स्वप्न सुशुप्ति, तुरिया गुरु पद ध्यान ।
श्री गुरु साधन सिद्धि फल, जीवन प्रान अधार ।
सर्वस धन श्री सतगुरु, सर्व तत्व के सार ॥
तन में मन में वचन में, श्री गुरु रहे समाय ।
सरस माधुरी रोम प्रति, श्री गुरु छवि रही छाय ॥

॥ दोहा ॥

श्री सतगुरु बल्देव प्रभु, बंदो बारंबार ।
भृगुवंशी वंशावली, कहत सरस उच्चार ॥
जग के कर्ता जानिये, श्री नारायण जान ।
नाभि नारायण सों भयो, कमल प्रगट पहिचान ॥
कमल मध्य ब्रह्मा भये, जिन सिरज्यो संसार ।
सुर नर मुनि वंदन करें, तिनकों विविधि प्रकार ॥

वरुण देव के यज्ञ में, श्री ब्रह्मा से जान।
प्रगट भये तहां अग्नि तें, श्री भृगु ऋषी सुजान॥
भृगु की पत्नी पुलोमां, पतिव्रता अधिकाय।
प्रगटे तिनके गर्भ तें च्यवन ऋषीश्वर आय॥
श्री राजा सर्याति की, नाम सुकन्या जान।
च्यवन ऋषी की भार्या शुभ गुन मांहि प्रधान॥
पर्वत वर इर्चाक पर, कियो आश्रम आय।
ढोसी नाम प्रसिद्ध जग, तीरथ अति शुभदाय॥
च्यवन ऋषीश्वर से भई, जो उत्पति संतान।
दूसर कहत सुनाम जग, भार्गव वंश वखान॥
रजधानी अलवर निकट, डहरा नाम सुग्राम।
दूसर जाति प्रसिद्ध भये, शोभन जू सरनाम॥
निष्कामी प्रेमी महा, अनन्य भक्ति सिर मौर।
ध्यान मानसी में मगन, सेवें युगल किशोर॥
ह्वै प्रत्यक्ष दर्शन दिये, युगल बिहारी लाल।
मिले परस्पर प्रेम कर, बोले वचन रसाल॥
वर दीनों अति कृपा कर, अष्टम पीढ़ी अंत।
भक्ति प्रचारन जक्त में, धरूँ रूप निज संत॥
वर देके ताही समय, हरि भये अंतर ध्यान।
शोभनजू के सुत, भये चतुरदास पहिचान॥
चतुरदास जूके भये सुत, श्री गिरधरदास।
तिनके लाहड़दास जू, प्रेम भक्ति सुख रास॥

जगन्नाथ जिनके तनय, तिनके प्रागहि दास ।
मुरलीधर तिनके सुवन,तिन जस जगत प्रकास ॥
श्री मुरलीधर दासके,प्रगटे श्री महाराज ।
कृष्णा कला कलयुग विषे,भक्ति प्रचारन काज ॥
नाम सुनो तिनको सकल, श्री रणजीत दयाल ।
शोभन को जा वर दियो,सो कीनो प्रतिपाल ॥
सत्रह से अरु साठ का,सम्वत विक्रम जान ।
भादों शुक्ला तीज तिथि, मंगलवार पिछान ॥
नाम जपे रनजीत मुख,जीते माया जाल ।
पहुँचे जाय निकुंज में,जहाँ लाडली लाल ॥
व्यास पुत्र शुकदेव मुनि,मिले मया कर आन ।
शिष्य बनावें आपको,मंत्र सुनावें कान ॥
नाम धरें इनको हरष,श्री श्याम चरणदास ।
प्रगट करें श्री शुक्र संप्रदा,जग में करुणा रास ॥
ले जावें संसार सों, अनगिन जीव उधार ।
पहुँचावें निज अमरपुर,जहाँ युगल सरकार ॥
सुन हरषे वंशावली,प्रागदास महाराज ।
मुरलीधर मन में मुदित,मिल्यो रंक ज्यों राज ॥
सभा सकल फूलत भई,जय जय कही उचार ।
ढाढी को दीने मँगा,भूषन वसन अपार ॥
भारत अरु श्री भागवत इनके, मत अनुसार ।
सरस माधुरी ने कही, वंशावलि उच्चार ॥

हरि हरिजन अंतर नहि, बरनत वेद पुरान।
हरिते हरि के दास बड़, गावत संत सुजान ॥

श्री भृगुकुल वंशावली, सुन पावे आनंद।
कृपा करें तिन पर सदा, श्री राधा ब्रज चंद ॥

॥ कवित्त ॥

श्री कृष्ण स्वयं कला प्रगटे कलि काल मांहि च्यवन कुल प्रशंस कियो भूतल में आयके। मुरलीधर तात मात कुंजो आनन्द मगन प्रागदास दादा रहे सुख में समाय के ॥ डहरे वर ग्राम मास भादों तृतीया पुनीत मंगल दिन शुक्ल पक्ष रह्यो रस छाय के। कहै सरस माधुरी बधाई मिल नवल नारि लालन रनजीत निरखि नांचत हैं गाय के ॥

॥ कवित्त ॥

भृगु ऋषि वंश सो प्रशंस सर्व विश्व मांहि च्यवन कुल तिलक श्री शोभन सुखदाई है। प्रेम भक्ति मांहि परिपूरन प्रसिद्ध महा दिये दर्श जुगल लाल हिय में हुलसाई है। दीनो वर ह्वै प्रसन्न अष्टम तुम पीढ़ी में लैंहों अवतार संत गिरा कहि सुनाई है ॥ कहै सरस माधुरी महोत्सव यह मंगल मय प्रगटे श्याम चरनदास स्वयं श्री कन्हाई है ॥

॥ कवित्त ॥

पावस ऋतू मांहि भादों भल सर्व भांति मघवा मन मगन मेघ झरी हू लगाई है। हरी भूमि हरे वृच्छ हरी लता ललित स्वच्छ,वोलत विहंग मोर नाचत मगनाई है ॥ झरना हू झरत नीर नदियां हू उमग चली गुंजत है भृंग बहु पराग पुष्प छाई है। कहैं सरस माधुरी मनोरथ की बेलि फूली श्याम चरनदास फल लागो सुखदाई है ॥

॥ कवित्त ॥

जन्मे हैं जगत गुरु रसिक रनजीत लाल मंगल सज थाल बाल घर घर ते आई हैं। नख शिख शृंगार नवल साज रही सुंदर तन मोद भरी मधुर सुरन गावत बधाई हैं। मुरलीधर आजिर मांहि मांची है महाधूम झूम झूम झमक सकल नृत्तत मगनाई हैं। कहै सरस माधुरी महोत्सव सुख छाय रह्यो नौबत नफीरी द्वार बाजत सुहाई है ॥

॥ कवित्त ॥

मुरली धर आजिर बीच मांची दधि हर्द कीच चोवा और चंदन ले छिरकत सब अंग में। गुनी जन आये सनमान दान पाये बहु गाय गुन रिझाये अति प्रेम की उमंग में ॥ आनंद घन वरस झरी नेह मेह लगी भीज रहे तन मन सुख जन्मोत्सव रंग में। कहै सर्स माधुरी रंगीले मिल रसिक भक्त जय जय ध्वनि बोल रहे बानी तिन संग में ॥

॥ सवैया ॥

सुन आये सबे मिल संत शिरोमणि मोद महा मन में मगनाई॥ मुख जयजय बखान भली विधिसों कर मंगल गान निशान बजाई ॥ लखि लोचन सों रणजीत लला मनो रंकन सिद्धि नवो निधि पाई ॥ भाग सराहत आपन को कहै सर्स बधाई सु दर्शन पाई ॥

॥ सवैया छंद ॥

परम सुधाम परात्पर में श्री दंपति राजत हैं सुखदाई ॥
जक्त में भक्ति प्रचारन कारन प्रेम की मंजरी आप पठाई ॥
सो प्रगटी भृगुवंश शिरोमणि शोभन के कुल मध्य सोआई ॥
सर्स सुहावन भाद्व मास में छाई सुमंगल मोद बधाई ॥

॥ राग आसावरी ॥

राय मैं तुम्हरे घर को आयो ॥
लालन के गुन गान करन को अति आतुर उठ धायो ॥
कुंजो रानी सब गुन खानी सुत पुरुषोत्तम जायो ।
विश्व चराचर अंतरयामी मुरली सुत कहलायो ॥
आचारज सिर मौर जक्त गुरु यश फैले अधिकायो ।
सम्प्रदाय शुकदेव प्रकाशक सो मेरे मन भायो ॥
धन घरि धन दिन लगन महूरत दरशन कर मगनायो ।
सरस माधुरी छवि को लखि के प्रेम पदारथ पायो ॥

॥ कवित्त ॥

आये हैं उमंग जन्म सुन के रनजीत लाल जाचक अनेक द्वार मुरलीधर राय के । भूषन वसन ज़र जेवर विविधि भांति दान सनमान पाय सब गये हैं अघाय के ॥ विप्रन को गऊ दई दूध की सबच्छ शुभ शास्त्र अनुकूल अलंकार को सजाय के । देत हैं अशीस सरस माधुरी प्रसन्न होय चिरजीवो कुँवर कहैं वचन वर सुनाय के ॥

॥ सवैया ॥

जन्मत श्री रनजीत कुमार के द्वारे बंदनवार बँधाई ॥
रोपे पताक ध्वजा चहुं ओरन तोरन की छवि अद्भुत छाई ॥
स्वास्तिक आन रचे हैं सवासनि मोतिन सों शुभ चौक पुराई ॥
सर्स की माधुरी बीथी बजारन मालन फूल बिछा हुलसाई ॥

॥ सवैया ॥

नाचत वारमुखी दरबार में गावत मंगल गीत महाई ॥
भाँड़ भवैया जुरे बहु द्वार पै केलि करें मन मोद बढ़ाई ॥
पाट पटंबर द्रव्य न्योछावर पाय प्रसन्न भये अधिकाई ॥
जीवो जुगजुग कुंजो लाल कहै सर्स सुबानी हिये हुलसाई ॥

॥ सवैया ॥

धन्य घरी दिन आज अली मिल मंगल मोद बधाई गावें ॥
भादव मास सुदी तृतीया तिथि ढोलक ताल बजा हुलसावें ॥

जन्म लियो जग में जगदीश्वर प्रेम परा जिय भक्ति सुपावें॥
सर्स बसैं अमरापुर में नित संसृति कर्म कलेश मिटावें॥

॥ कवित्त ॥

डहरे वर ग्राम में सुभीर भृगुवंसिन की हंसन की पंक्ति ज्यों लगत सुहावनी। प्रागदास दादा अरु श्याम सुंदर भैया आदि बोलत सुबानी प्रेम सानी मन भावनी। भूवा और भतीजी बहिन भानजी सुनेग देत लेले सब भूषन पट तन मन पुलकावनी। कहैं सर्स माधुरी अशीश देत हर्ष मान चिरजीवो लालन वर बानी सरसावनी॥

॥ राग साँझ ॥

कुंजो नंदन बरस गांठ दिन हिलमिल सजनी आवोरी।
मंगल महा महोत्सव आली रंग बधाई गावोरी॥
भादों तीज सुदी तिथि सुंदर मोतिन चौक पुरावोरी।
शुभग साथिये द्वार बनावो बंदन माल बँधावो री॥
कंचल कलश धरो आंगन में कदली थंभ रुपावो री।
केसर चंदन चहुं दिशि छिरको फूलन को बरसावो री॥
बीन मृदंग चंग सारंगी बाजे विविधि बजावो री।
नाचो प्रेम रंग में रांचो नाना भाव बतावो री॥
अतर मिलाय उबटनो अंग कर सोंधे नीर न्हवावो री।
पीतांबर पोशाक सजावो भूषन रतन धरावोरी॥

लेकर गोद मोद भर भामिनि सिंहासन बैठावो री ।
षट रस विंजन मन के रंजन लालन लाड़ जिमावो री ॥
पुनि अचवाय पान बीरी दे आरति कर बलि जावोरी ।
सरस माधुरी शोभा लखि के नैनन को फल पावोरी ॥

॥ बधाई राग कालंगड़ा ॥

रंगीली म्हारे आज की घरियां ।
श्री रनजीत जनम सखी री अति शुभ अवसरियां ॥
भादों मास सुहावन पावन भूमि भई हरियां ।
दादुर मोर चकोर कोकिला बोलत इह बिरियां ॥
मंगल मोद महोत्सव हेली सुख सृष्टि विस्तरियां ।
मोतिन चौक पुराय प्रेम सों शुभ स्वस्तिक धरियां ॥
विविधि वधाई नारिन गाई वृष्टि कुसुम करियां ।
आये उमँग रसिक जन सारे मिले परस्परियां ॥
निरखि रूप रसिकाचारज को जय जय मुख उच्चरियां ।
दरसन कर प्रसन्न भये हिंये सुख सागर भरियां ॥
छाई घटा घुमड़ आनंद की डहरे पर ढरियां ।
सरस माधुरी रस की सजनी लाग रही झरियां ॥

॥ राग माँड़ ॥

सखी री श्री श्याम चरणदास परम गुरु प्यारो लागे है ॥
च्यवन ऋषीश्वर वंश विभूषन, शोभन भक्त विशाल ।

जिनके प्रेम भक्ति वस मोहन, भये मुरलीधर लाल।
भाग कुंजो भल जागे हैं ॥
प्रेम मंजरी नाम धाम में, निकट लाड़ली लाल।
तिन आज्ञा सों भूतल प्रगटे, संतन के प्रतिपाल।
निरखि सुर नर अनुरागे हैं ॥
भादों मास सुहावनो, शुक्ला तीज रसाल।
आय अवतरे रसिक शिरोमणि, नख शिख लों छवि जाल।
प्रेम के रस में पागे हैं ॥
रंग बधाई डहरे छाई, गावत मंगल बाल।
दरशन कर रनजीत कुँवर को, वारत मोती थाल।
रूप लखि दुख सब भागे हैं ॥
परमानंद मगन नर नारी, तन मन की नसँभाल।
सरस माधुरी दंपति संपति, दे कर करो निहाल।
यही निश्चल वर माँगे हैं ॥

॥ बधाई ॥

रंगीली बधाई आज बाजे ॥

श्री रनजीत जन्म भयो सजनी भक्त जनन के काजे ॥
भादों मास महा रंग भीनों बरसत मेह गगन घन गाजे ॥
हरी भूमि जल भरे सरोवर फूले कमल अधिक छवि छाजे ॥
नारी हिल मिल मंगल गावत पट भूषन तन सुन्दर साजे ॥
बटत विविधि विधि पान मिठाई सभा भरी जहां रसिक विराजे ॥

निरखि नगर डहरे की शोभा नारि रमापुर मन में लाजे ॥
सरस माधुरी संत रूप हरि प्रगट भये सुर मुनि सिरताजे ॥

॥ बधाई ॥

सखी सुन डहरे मंगल चार ।
जन्मे हैं जगदीश कलानिधि चरनदास अवतार ॥
विप्र वेद ध्वनि करत सकल मिल मंगल गावत नार ।
मुरलीधर दे दान जाचकन माणिक मोती वार ॥
भृगुवंशिन को प्रागदास घर भलो जुरो दरबार ।
गान तान धुनि छाय रही है छवि को अंत न पार ॥
ध्वजा पताका सजे सुहावन बँध रही बंदन वार ।
बाजत नौबत और नफीरी ढोलक बीन सितार ॥
गह मह भई भीर रसिकन की शोभन भवन मँझार ।
छिरकत केसर चंदन हित कर जय जय कहत उचार ॥
संत अनंत जुरे तिहि अवसर लखि रनजीत कुमार ।
सरस माधुरी मगन भये सब बोलत मुख बलिहार ॥

॥ बधाई राग बिलावल ॥

भादों सुदी तीज सुख रास, प्रगटे श्री श्याम चरणदास ॥
मुरली धर की पुजई आसा, भक्ति चन्द्रमा कियो प्रकासा ॥
चन्द्रमा भक्ती प्रकास्यो लिये बिप्र बुलाय के ।
वेद ध्वनि सब करत मुख सों रह्यो आनंद छाय के ॥

करी शुश्रुषा भली विधि वचन मधुर बखान जू ।
सरस माधुरी प्रेम पूर्वक कियो है सनमान जू ॥
मुरलीधर कीनो स्नाना, पहिरे पीतांबर वाना ।
कर आचमन पूजन ठाना, श्री तिलक माथे कियो सुहाना ॥
सुहावन मस्तक तिलक करा, गोत्र उच्चारन कियो ।
वेद विधि संयुक्त कुल के, देव पूजन मन दियो ॥
नवल नारी मिल बधाई, गात सुन्दर गान जू ।
सरस माधुरी श्याम प्रगटे, भृगु सुकुल के भान जू ॥
रचि रचि चंदन सदन लिपायो, चौक चारु मोतिन पुरायो ।
द्वारन बांधी वंदन माला, ध्वजा कलश सज धरे रसाला ॥
जयति जयति धुनि रसिक बोलत, होत हैं बलिहार जू ।
धरे कंचन कलश फहरत, ध्वजा अति शुभ कार जू ॥
द्वार नौबत बजत घन ज्यों परम सुख की खान जू ।
सरस रस की माधुरी ध्वनि सुनत हैं सब कान जू ॥
पुर घर घर की आई बाला, लीनें हाथन कंचन थाला ।
मंगल कलश शीश धर प्यारी, रमा लखि लजत अपारी ॥
लखि लजात रमा उमा मिल सकल मंगल गाइया ।
निरखि नैंन सरूप लालन सकल तन पुलकाइया ॥
भई परम प्रसन्न सगरी रूप रस कर पान जू ।
सरस रस की माधुरी भल भाग्य अपने मान जू ॥
प्रागदास दादा रँग भीने, बहु विधि दान जाचकन दीने ।
देत अशीश सकल मगनाये, भूषन वसन पटंबर पाये ॥

पाय कर भूपन पटंबर कहत धनि दिन आज को।
चिरजीवो रणजीत श्री मुरलीधर महाराज को॥
चले भवन अशीश दे शुभ विरद बहुत बखान जू।
सरस रस की माधुरी में भये सब गलतान जू॥

॥ गजल ॥

श्याम चरनदास जन्म तीज आज है।
घर घर बधाई मंगल सुन्दर समाज है॥
प्रागदास द्वार बाजें नौबतें भली।
मानो मनोहर हे सखी घन की सी गाज है॥
छाई घटा गगन में नांचे हैं मोर वन में।
भादों का मास सोहन सब सर का ताज है॥
निरतें हैं नारि प्यारी हँस के बजावे तारी।
भूषन बसन सुहावन सब तन में साज है॥
जाचक हजारों आवें मन माने दान पावें।
विरदावली सुनावें आनंद का राज है॥
सरस माधुरी ह्व आई रणजीत छवि छकाई।
दरशन इनाम पाई भये पूरन काज हैं॥

॥ बधाई ढाढी के गायबे की ॥

श्री मुरलीधर जू के घर आय, नांचे नांचेरे ढाढी प्रेम बढाय॥
जन्म सुनत रणजीत कुँवर को तुरत ही उठके आयो धाय॥

नाना गति ले ललित अंगसों गावत गुन हियमें हुलसाय ॥
रङ्ग बधाई बोल भली विधि सभा लई है सकल रिझाय ॥
सुन जस सुखी भये पुरवासी तन मन में रह्यो आनंद छाय ॥
सभा भरी है संत जनन की रसिक रहे मन में मगनाय ॥
कोऊ बांटत है पान मिठाई कोऊ अतर अँग देत लगाय ॥
कोऊ फूलन के हार हरष कर हरिजन को हँसि दे पहिराय ॥
कोऊ मणि माणिक न्योछावर कर देत जाचकन को सुखपाय॥
कोऊ केसर चन्दन छिरकत है कोऊ जन रहे फूल बरसाय ॥
दधि कादो की कीच करन ले कोउकोउ के मुखदें लिपटाय ॥
सरस माधुरी महा महोत्सव इक रसना वरन्यो नहिं जाय ॥

॥ रसिया ॥

बधाई बाज रही श्री मुरलीधर दरबार ।
प्रगट भये पूरन पुरुषोत्तम, अरी कि माता कुंजो कूंख मझार॥
आचारज सिरमोर महाप्रभु, अरीकि लीनों जगमें नर अवतार॥
ध्वजा पताका तोरन रोपे, अरी कि द्वारे बांधी बंदन वार ॥
बाजरही नौबत सहनाई, अरीकि झमझम झांझन की झनकार॥
पुरनारी सुंदर सुकुमारी, अरी कि हिलमिल गावें मंगलचार ॥
लाई भूषन वसन विविधिविधि, अरीकि भरभर सुंदर कंचन थार॥
धनधन भादों तीज सुदी तिथि, अरीकिशुभ दिननीको मंगलवार॥
बैठे सभा रसिक जन जितने, अरीकि साधू संत महंत अपार ॥
जय जय जय बलिहार कहें सब, अरीकि वारें मोती मांणिक हार॥
मागध सूत भाट बंदीजन, अरी कि कर रहे वंशावलि उचार ॥

गुनिजन जुरे जन्म सुन सगरे, अरीकि नांचे गावें दे कर तार ॥
नकल भांड़ नाना विधि करके, अरी कि राज़ी करें सकल नर नार ॥
जो रनजीत जपें रसना सों, अरीकि जिनको मिलें पदारथ चार ॥
श्री शुकदेव सहाय करें नित, अरीकि देवें दरस युगल सरकार ॥
देखें रास विलास महल में, अरी कि देखें दंपति नित्य विहार ॥
सरस माधुरी रहसी डोले, अरीकि कर रही फूलन की बौछार ॥

॥ बधाई राग टोडी ॥

आज म्हारे रंगरी हो बधाई महलां छाई छे जी।
    मुरली सुत हो मोहन प्रगटे भई सकल मन भाई छे जी॥
कुंजो माता जायो जगपति जाको नाम कन्हाई छे जी।
प्रागदास प्रफुल्लित तन में महा परम निधि पाई छे जी ॥
है भक्ता अवतार महाप्रभु हिय करुणा उपजाई छे जी।
जीव उद्धारन जग निस्तारन जिनके जिय में आई छे जी ॥
जब जब भीर परत भक्तन पर तब तब करत सहाई छे जी।
विरद विचार अवतरे प्यारे नेंक न ढील लगाई छे जी ॥
कलिमल हरिहैं जिय निस्तरि हैं यह निश्चय दृढताई छे जी।
शोभन वर आ पूरन कीयो दरस दियो सुखदाई छे जी ॥
ध्वजा पताका तोरन साजे बंदन माल बँधाई छे जी।
बाज रही नौबत द्वारे पर और सुंदर सहनाई छे जी ॥
कुल की नारि पहर पट भूषन हिलमिल मन मगनाई छे जी।
कंचन थाल आरती वारी जगमग ज्योति जगाई छे जी ॥
हँसकर हरष बलैयां लीनी कर अँगुरी चटकाई छे जी।

चिरजीवो रणजीत कुँवर वर यही अशीस सुनाई छे जी ॥
रसिक संत गुनवत जुरे हैं फूलन वृष्टि कराई छे जी ।
जय जय जय बलिहार बोल बहु मनमें खुशी मनाई छे जी ॥
फूलमाल छविजाल जुगति सों सब के गल पहिराई छे जी ।
अतरन अंग लगाय परस्पर बांटे पान मिठाई छे जी ॥
ढाढी संग सुहागनि ढाढनि बहु विधि नांची गाई छे जी ।
भाव बताय विविधि भांतन सों सगरी सभा रिझाई छे जी ॥
छगन मगन को रूप निरख के छवि के मांहि छकाई छे जी ।
सरस माधुरी मूरति लालन अविचल दृगन बसाई छे जी ॥

॥ बधाई ठेका कव्वाली ॥

रस रंग बधाई छाय रही, सुकुमारी सखी मिल गाय रही ॥

यह भादों महीना महान भला, प्रगटाये श्री रनजीत लला ।
अवतार लियो श्री कृष्ण कला, अलि प्यार दुलार लडाय रही ॥
तिथि तीज सुदी अति पावन है, दिन मंगल हू मन भावन है ।
सब के हिय हर्ष बढ़ावन है, छवि उत्सव देख छकाय रही ॥
सारंगी सुरीली सितार मिला, कर ताल लगाय रही अबला ।
कोई कंधे पे धार तूमरा भला, कोई बीन मृंदग बजाय रही ॥
कोई नाचत नारि उमंगन सों, बहु भाव बतावत अंगन सों ।
कर नैंन कटाच्छ सुढंगन सों, चित वित्त सबों के चुराय रही ॥
कोई जय जय मुख उच्चारत है, मणि माणिक लालपै वारत है ।
कोई राई नोंन उसारत है, कर हेत हिये हरषाय रही ॥

कोई प्यार पगी पलना ललना, झुक झूम के घूम झुलाय रहीं।
मुख चंद लला लखि सर्स सखी, निज नयनन को फलपाय रहीं॥

॥ बधाई राग ठुमरी ॥

प्यारा लला प्यारा प्यारा लला, श्री कुंजो का वारा लला॥
श्री मुरली सुत मंगल मूरति, सुंदर रूप उजारा लला॥
भादों शुक्ला तीज जान शुचि, आन लियो अवतारा लला॥
भक्ति प्रचारन पतित उधारन, जग में नर तन धारा लला॥
आचारज हो अधम उधारें, हरिहैं भू को भारा लला॥
नारि नवेली होकर भेली, गावें मंगल चारा लला॥
रंग बधाई महलन छाई, छवि को अंत न पारा लला॥
नौबत बजत सरस सहनाई, झांझन का झनकारा लला॥
ध्वजा पताका ललित लगाये, बांधी बंदनवारा लला॥
मंडप वृहद बनों ता नीचे, बिछे गलीचा न्यारा लला॥
प्रागदास कर सभा बिराजे, सज सोहन दरबारा लला॥
भक्त वृन्द बहु जुर मिल आये, उत्सव कियो अपारा लला॥
बाजे विविधि बजावें गावें, जय जय कहत उचारा लला॥
केसर चन्दन चरन परस्पर, भेटत भर अँकवारा लला॥
आज भलो दिन कियो विधाता, जागा भाग हमारा लला॥
अतर पान सनमान सबन को, करें सकल सतकारा लला॥
दधि काँदो कर रसिक जनन नें, सब ही को रंग डारा लला॥
जाचक दान पाय परपूरन, भये अजाचक सारा लला॥
कहैं रनजीता जुग जुग जीवो, भक्तन प्रान अधारा लला॥

जो जन ध्यान धरें उर अन्तर, ताहि करें भव पारा लला ॥
अचल वास वृन्दावन पावे, निरखे नित्त विहारा लला ॥
सेवे युगल सहचरी होके, यह निश्चे उर धारा लला ॥
सरस माधुरी का सरबस धन, अरु नयनों का तारा लला ॥

॥ ढाढी के गायबे की बधाई ॥

अहो मेरे प्रागदास जिजमान, तिहारो ढाढी आयो ॥
सुफल फलो भृगुवंश हंस कुल, जग में सुयस सवायो ॥
श्री रनजीत जन्म सुन कर में, मन में अति मगनायो ॥
ढाढन सहित हरष हिय माँही, निज घर तें उठ धायो ॥
एक बेर मैं आगे आयो, मुरलीधर जब ब्याह्यो ॥
ढाढन कही चलो तुम डहरे, श्री कुंजो सुत जायो ॥
कृष्ण कला कलियुग के मांही, तुमरे घर प्रगटायो ॥
शोभन भक्त दियो वर पूरव, सो कर सत्य बतायो ॥
और पदारथ मैं नहिं लेहों, दर्शन को ललचायो ॥
गोद मोद भर लेकर नाँचू, कर मेरे मन भायो ॥
दीजे वास मोहि निज पुर में, अन्त रहन विसरायो ॥
चरण शरण रह गुन गन गाऊँ, सुख में रहूँ समायो ॥
यह सुन च्यवन ऋषि कुल भूषन, ढाढी निकट बुलायो ॥
भूषन वसन अमोल मंगाये, नख सिख लों पहरायो ॥
लई बधाई मन की भाई, सुजस आसित मुख गायो ॥

सरस माधुरी लखि लालन छवि,मन वांछित फल पायो ॥

॥ बधाई ॥

भला वे आज बाजे छै रंगबधाईयां,सुन सखी वे सब मन भाईयां॥

गुनि जन आवे गावें बाजावें,लय सुरताल मिलाईयां ॥
ढाढी के सँग ढाढन नांचे, नाना गति उपजाईयां ॥
मागध सूत भाट बन्दी जन, कुल करतूत सुनाईयां ॥
मुरलीधर को सुकृत उदय भयो, सुन्दर सुत प्रगटाईयां ॥
कुंजो माता कूंख सिरानी, करी न जाय बडाईयां ॥
कृष्ण कला कलियुग के मांही,भक्ति चलावन आईयां ॥
हरिजन संत महंत मगन मन, फूले अङ्ग न माईयां ॥
शुभ सातिये रचे द्वार पर, बंदन माल बँधाईयां ॥
बाज रही नौबत सहनाई, ज्यों घन गरज सुनाईयां ॥
धन भादों धन तीज सुदी है,धन दिन मंगल आईयां ॥
प्रागदास भूसुर सनमाने दई, गऊ बहु ब्याईयां ॥
जाचक सकल अजाचक हुये, लै लै दान अघाईयां ॥
देत असीस लाल चिरजीवो, सुजस रहो जग छाईयां ॥
सरस माधुरी निरखि लाल मुख,मन में अति मगनाईयां ॥

॥ बधाई पीलू बरवा ॥

म्हे तो थांका जाचक छां जी राज ।
श्री रणजीत जनम सुन आया भृगुवंशी महाराज ॥

प्रेम भक्ति वर मांगां थांसू देवो दयाकर आज ।
मिले मौज सत्संग भजन की निशि दिन सन्त समाज ॥
दर्शन करस्यां श्री लालन मुख सब दुख जावें भाज ।
सरस माधुरी दृगन बसे छवि नहीं और सों काज ॥

॥ पीलू बरवा ॥

हूँ तो थांकी ढाढन छूँ जी राज ।
श्री रणजीत जनम सुन आई प्राणदास महाराज ॥
शोभन भक्त दियो प्रभु जो वर सो पूरन भयो आज ।
संत रूप धरि श्री हरि आये रसिकन के सिरताज ॥
मन मानी मैं लेहुँ बधाई सुनिये धर्म जहाज़ ।
सरस माधुरी जाचत तुमकों औरन सों नहिं काज ॥

॥ बधाई ॥

चरन के दासा पूरी करो मन आसा ।
सुनोजी स्वामी तुम हो अंतरयामी, कीजिये हियमें प्रेम प्रकासा
बसोजी नयनों तुम ध्यान तुम्हारो ही नाम जपूं प्रति स्वासा ।
करोजी मोकों पराभक्ति वरदान जान कर अपनो ही निज दासा
दिखलावो बृन्दावन निज धाम बसावो श्याम राधिकापासा ॥
करावो टहल महल की नित्य जहां होवे रास विलासा ।
रखो तुम मोकों निज परिकर में सरसके चितमें यह अभिलासा॥

॥ बधाई ॥

श्री मुरलीधर दरवार बधाई बाजे रङ्ग भरी ॥
हां हां बधाई बाजे रङ्ग भरी ॥
शोभन भक्त श्याम मन भाये, तिनको पूरव बचन सुनाये।
आये पूरन करन अवनि श्रीकृष्ण हरी ॥
भक्तन हित नाना तन धारे, वेद पुराण कहत जस हारे।
युग युग ले अवतार धर्म सहाय करी ॥
भार्गव वंशभान प्रगटाये, मुरलीधर के सुत कहलाये।
कुंजो नंदन भये धन्य हैं आज घरी ॥
रस निकुंज की वर्षा करि हैं,रसिकन के हियमें रस भरि हैं।
हरि हे मन संताप लगे आनन्द झरी ॥
प्रेमपरा मारग प्रगटावन, अमित जीव नित धाम पठावन।
जीवन की यम त्रास त्रिविधि सब ताप टरी ॥
स्वर्ग मांहि देवत हुलसाये, इन्द्रहु मन आनन्द मनाये।
वर्षत भादों मास भूमि भई सकल हरी ॥
जो जो जन जांचन को आये, दान मान मन वांछित पाये।
दे दे चले अशीस जयति जय मुख उचरी ॥
सरस माधुरी गावत नारी, प्रेम मगन तन पुलकित भारी।
निरखि नयन अलि गई लाल छवि हिये धरी ॥

॥ बधाई ॥

मुरलीधर घर बजत बधाई।
प्रगट भये भक्तन हितकारी, चरणदास संतन सुखदाई ॥

घर घर तें भामिन गज गामिन मंगल द्रव्य लिये कर आई।
धरे स्वासन सीख साथिया नारिन हिल मिल मंगल गाई ॥
अति आनंद भयो पुर मांही भक्ति भान अद्भुत प्रगटाई।
रसिक कमल कुल फले चहुँ दिशि रंक मनो चिंतामणि पाई ॥
भादों मास सुदी दिन तृतीया मंगल मेघन झरी लगाई।
सरस माधुरी जान सुअवसर सुमन समूह हरष वर्षाई ॥

॥ बधाई ॥

बधाई बाजे माई, कुंजो रानी ललना जायो सुंदर सुखदाई ॥
मुरलीधर को सुकृत सफल भयो अद्भुत निधि पाई।
चरणदास हरि अंश अवतरे अति ही छवि छाई ॥
सज शृंगार नारि जुरि आईं मिल संगल गाई।
पुरवासी लखि जन्म महोत्सव हिय में हरषाई ॥
प्रगट भये रस रासि चन्द्रमा रसिकन के राई।
सरस माधुरी निरखि लाल मुख मन में मगनाई ॥

॥ बधाई राग बिलावल ॥

आये हैं अनेक गुनीं देस परदेसन सें छाई है बधाई
आज प्राणदास द्वारे री।
ध्वज पताक तोरन कंचन के कलस सखी।
सोहन शुभसाज सदन नीके सँवारे री॥
स्वस्तिक बनाये चौक मोतिन पुराये थंभ।
कदली रुपाये छवि कवी कहत हारे री॥

सुंदर सहनाई मन भाई राग रंग भरी।
बाज रही बीन और ढोलक नगारे री ॥
मुरलीधर अजिर बीच मांची दधि दूध कीच।
चन्दन केसर सुवास फैल रही सारेरी ॥
गावत हैं नारी मिल मंगल बधाये सारी।
लालन रनजीत नवल नयनन निहारे री ॥
कुंजो मैया उदार करके अति प्रीत प्यार।
पय को पिवाय प्रान बल्लभ दुलारे री ॥
आरती उतारे कोई राई नोंन वारें सुख।
जय जय कहिं बानी सरस माधुरी उचारे री ॥

॥ राग गनगौर व कालंगड़ा ॥

मुरलीधर द्वारे आज बाजत हैं बधाइयां।
ध्वज पताक तोरन की सुन्दर छवि छाइयां ॥
नौबत हू गाज रही सुंदर सहनाइयां।
नांचत हैं नवल नारि भाव बहु बताइयां ॥
मोतिन के चौक पूर साथिये धराइयां।
हरी भरी बंदनमाल पौल के बँधाइयां ॥
भक्त संत सबही आये हरषे गुन गाइयां।
लालन को रूप निरखि अंग ना समाइयां ॥
सरस माधुरी समाज शोभा भल पाइयां।
कृष्ण चंद नर तन धरि भूतल प्रगटाइयां ॥

॥ भाँड बधाई ॥

महाराजा तेरे भांड भवन में आये ।
श्री रनजीत जन्म सुन श्रवनन मन में अति मगनाये ॥
नाचत गावत सुजस सुनावत निज घरतें उठ धाये ।
नकल अकल के अमित खजाने हम सब ही भर लाये ॥
नाना हास विलास बारता तुमको चहत सुनाये ।
सरस माधुरी दरस लाल कर तन मनमें पुलकाये ॥

॥ भाँड बधाई ॥

शादियाँ सलोनी आनन्द की भली वे ।
हिल मिल के आवो गावो गुनी रंग की रली वे ॥
करते गुनी गुण गान ले ले आनन्द की तान, अजी वाह वाह है ॥
सूत माँगध सुजान करें वंशावली बखान. अजी वाह वाह है ॥
हुआ मंगल का राज दुख दूर गया भाज, अजी वाह वाह है ॥
प्रगटे हैं सरके ताज महाराज ब्रजराज, अजी वाह वाह है ॥
चिरंजीवो कोटि काल तेरा मुरलीधर लाल, अजी वाह वाह है ॥
नहाते बाँकाहो न बाल रहो लालोंका लाल, अजी वाह वाह है ॥
फूलें अंग नर नार फूलो सब ही दरबार, अजी वाह वाह है ॥
हिये छायो हुलास भये पुत्र सुख रास, अजी वाह वाह है ॥
लालन मुख चंद लखि आनंद के कंद, अजी वाह वाह है ॥
सखियाँ सयानी नार पानी पीवें वार वार, वाह वाह है ॥

प्यारे लाल की बलाय परो खारे सिंधु जाय, अजी वाह वाह है ॥
भये मन में खुश हाल नाचे गावें दे दे ताल, अजी वाह वाह है ॥
देख श्याम गौर तन लख मन हुये मगन, अजी वाह वाह है ॥
पाया पट और भूषन होते मन में प्रसन, अजी वाह वाह है ॥
पीवें प्रेम रस रंग उठें दिल में तरंग, अजी वाह वाह है ॥
छवि मन की मोहन अति सुंदर सोहन, अजी वाह वाह है ॥
मुख लालन को जो अहा अहा हाहो, अजी वाह वाह है ॥
मगन मगनाये मन भाये सोई पाये, अजी वाह वाह है ॥
दिये विप्रन को दान यथा योग कर सनमान, अजी वाह वाह है ॥
बोले सबही जयजयकार बारबार बलिहार, अजी वाह वाह है ॥
खुश होते अपार जैसे रंक निधि सँभार, अजी वाह वाह है ॥
बजें ढोलक सितार गावें पावें कंचन थार, अजी वाह वाह है ॥
रहोसदा खुशहाल निज भक्तन प्रतपाल, अजी वाह वाह है ॥
बढ़ो सुजस अपार तीनों लोकमें प्रचार, अजी वाह वाह है ॥
आवें सुनके जिज्ञासी मन पूरे अभिलासी, अजी वाह वाह है ॥
जपें श्याम चरनदास पावें वृंदावन वास, अजी वाह वाह है ॥
जहां नित्त रसरास निरखें दंपति विलास, अजी वाह वाह है ॥
जो इनको धरें ध्यान पावें पदवी निरवान, अजी वाह वाह है ॥
करें प्रेम रस का दान बहु जीव करें पान, अजी वाह वाह है ॥
निजजनको अभिराम पहुँचावे खासधाम, अजी वाह वाह है ॥
सरसमाधुरी सरन हिय धरे निज चरन, अजी वाह वाह है ॥

॥ बधाई राग बसंत, परभाती ॥

भार्गव वंश प्रशंस प्रभाकर द्विज कुल शोभा धाम री ।
श्याम चरन के दास दया निधि प्रगटे हैं अभिराम री ॥
परम पवित्र पिता मुरलीधर माता कुंजो नाम री ।
अलवर निकट जन्म भूमी जहां डहरो सुंदर ग्राम री ॥
गावन लगी बधाई बहु विधि हिलमिल पुर की बाम री ।
महा महोत्सव आनँद मंगल छायो आठों जाम री ॥
स्वयं श्याम सुंदर जहां आये जन मन पूरन काम री ।
सरस माधुरी जोर दोऊ कर जुग पद करत प्रणाम री ॥

॥ राग बिलावल ॥

धन धन आज की है घरी ।
श्री कुंजो रनजीता जायो रसिकन जीवन जरी ॥
हिये हुती अभिलाषा जैसी विधना पूरी करी ।
निरखि चंद मुख मुरली सुत को आलि आनंद भरी ॥
भादों शुक्ल तीज दिन मंगल बरषत अमृत झरी ।
सरस माधुरी बेलि मनोरथ सब विधि फूली फरी ॥

॥ पद ॥

सखीरी मुरलीधर घर जइये ।
कुंजो रानी ढोटा जायो निरखि नयन सुख पइये ॥

भूषन वस्तर साज सुअंगन रहस बधाई गइये ।
शोभन भक्त मनोरथ को फल ताके दर्शन लहिये ॥
प्रागदास जसुधा की जीवन छवि लख हिये हुलसइये ।
बड़ भागन यह औसर आयो आनँद सिंधु समइये ॥
संत रूप धरि निज हरि आये और कहा अब चहिये ।
लैके गोद मोद सों सजनी पलनें गोद खिलइये ॥
ध्वजा पताक साथिये शुभ धरि बंदनवार बँधइये ।
धूप दीप अच्छत दधि दुर्वा मोतिन चौक पुरइये ॥
ताल बीन मृदंग मँजीरा मंगल वाद्य बजइये ।
करो सोहिलो सब मिल आली फूलन को बरसइये ॥
अपनो भाग सराहो हेली हिय में हर्ष बढ़इये ।
सरस माधुरी लालन मुख लखि हित सों कंठ लगइये ॥

॥ गनगौर की ध्वनि बधाइ ॥

प्रागदास द्वार बाजे नौबत्या भली वे ।
जन्मे रनजीत लाल रंग की रली वे ॥
मुरलीधर तात मात कुंजो आनंद हुलसी,
हिय मांहि सखी कमल ज्यों कली वे ॥
जसुधा दादी सुजान जाके बडभाग मान ।
मनसा की बेलि ताकी सुफल अब फली वे ॥
डहरे वर नगर धाम गावती बधाई बाम ।
नाचत मन मोद मान सकल मिल अली वे ॥

चोवा चन्दन सुवास महकत मन्दिर अवास।
सुमन सुठि बिछाय दिये डगर अरु गली वे॥
ध्वज पताक सदन द्वार स्वस्तिक विरचें सँवार।
हरी भरी दूब मालिन लाई भर डली वे॥
सरस माधुरी हुलास निरखत आनन्द विलास।
पूरन भई मन की आस भाग की भली वे॥

॥ खम्माच ॥

भयो घर मुरलीधर अवतार।
संत रूप धर श्री हरि आये भक्तन प्राण अधार॥
भादों तीज सुदी तिथि सुंदर शुभ दिन मंगलवार।
ध्वजा पताका तोरन रोपे बांधी वन्दन वार॥
गुनि गंधर्व वधाई गावत ढोलक लिये सितार।
ढाढन ढाढी नाँचत छवि सों शोभा भई अपार॥
मागध सूत भाट बंदीजन वंशावली उचार।
देत अशीश जीवो रनजीता नहात खसो नहिं बार॥
भक्ति प्रचारन कलिमल टारन आये जक्त मँझार।
सरस माधुरी युगल कमल पद बंदों बारंबार॥

॥ रेखता ॥

सलोनी कुंजो रानी ने श्री रनजीता जाया है।
मगन मन में हैं मुरलीधर अनोखा लाल पाया है॥

जिसे शिव अज सदा ध्यावें, विमल यश वेद नित गावें ।
वोही श्री कृष्ण करुणा कर मनुज तन धरिके आया है ॥
मुनी जन सुर सकल जिसको करें परनाम हित चित सें।
सोई करतार संतूचिद घन तरन तारन कहाया है ।
दिया वर भक्त शोभन को तुम्हारी पीढ़ी अष्टम में ।
लेऊँ अवतार मैं आके वचन सोई निभाया है ॥
रसिक जन संत अनुरागे सभी आनन्द में पागे ।
ध्वजा तोरन पताका ले सदन सुंदर सजाया है ॥
लियें फल फूल की डाली तभी आया मगन माली ।
हरी दुर्वा सबों को दे हरष हिय में बढ़ाया है ॥
बजे नौबत अमित बाजे गगन में मेघ बहु गाजे ।
घटा भुक भूम चहुं दिशि को भरी का रँग जमाया है ॥
भई सब भूमि हरियारी नचत हैं मोर मुदकारी ।
कुहुक कोयल की अति प्यारी समय मंगल सुहाया है ॥
आईं हिलमिल के नव नारी बधाई गावती सारी ।
भई सब प्रेम मतवारी हिये आनन्द छाया है ॥
यशोदा लाल की दादी विराजी आयके गादी ।
करी खुश हो जनम शादी कुँवर गोदी खिलाया है ॥
धरमधुर प्रागदासा हैं अधिक हिय में हुलासा हैं ।
सुयश सूरज प्रकाशा हैं बहुत अन धन लुटाया है ॥
गऊ विप्रन को बहु दीनी विनय कर जोर के कीनी ।
करी हो नम्र आधीनी वचन मृदु मुख सुनाया है ॥

करें कलकेलि सुकुमारी लला की जावें वलिहारी।
हँसन किलकन निरख सारी झमक पलना झुलाया है ॥
सरस के मन में अभिलाषा करूं सेवा रहूं पासा।
यही नयनों में मेरे आ चरनदासा समाया है ॥

॥ बधाई राग विलावल ॥

बधाई रनजीत की गाऊँ ॥

कुंजो सुत को निरखि कमल मुख अपने नैंन सिराऊँ ॥
नृत्त करूँ नाना गति लै लै वहु विधि भाव वताऊँ।
गोद मोद सों ले लालन को हँस हँस हृदय लगाऊँ ॥
पुनि पलना पधराय चाव सों अपने हाथ झुलाऊँ।
किलकनि मंद मंद मुसकनि लखि फूली अंग न माऊँ ॥
चकरी भौंरा और झुन झुना नव नव खेल खिलाऊँ।
तन मन धन न्यौछावर करि के फूलन को वरसाऊँ ॥
जय जय वोल वलइयां लै लै कर अंगुरी चटकाऊँ।
सरस माधुरी छगन मगन की छवि निज हृदय वसाऊँ ॥

॥ बधाई ढाढन के गायवे की ॥

ढाढन नांचे रंगभरी नांचे नांचे रे प्रागदास दरवार।
श्री रनजीता जन्म लियो है सुन के धाई मैं तज घरवार ॥
वर जो दियो भक्त शोभन को सो कीनो पूरन करतार ॥
श्री कृष्ण नर को तन धारो लीनों आचारज अवतार ॥
सारी लगी किनार लेउंगी लहंगा लेउंगी मैं घूम घुमार ॥

वाजू भी लेउंगी गजराभी लेउंगी लेउंगी लेउंगीरे नथ भलकेदार
दुलरीभी लेउंगी मैं तिलरी भीलेउंगी लेउंगीलेउंगी जड़ाऊ में चंदनहार
हीरा भी लेउंगी मैं पन्ना भी लेउंगी लेउंगी लेउंगीरे मोती भरके थार॥
ढाढन के संग ढाढी नांचे गावत है दे दे करतार॥
भाव बतावत तन पुलिकावत जय जय बोलत बारंबार॥
सरस माधुरी निरख लाल मुख तन मन धन सरबस दीनोंबार॥

॥ बधाई पद राग कालंगड़ा ॥

रंगीली बधइयां बाजेरी श्री मुरलीधर दरबार।
कुंजो कूख प्रगटे पुरुषोत्तम महा प्रभू मन हरन नरोत्तम।
रूप राशि रसिकन की जीवन सब सिरताजे री॥
सहनाई सुर अति सुखदाई झांझ झनक सुन मन मगनाई।
नवल नवेली नौबत द्वारे घन ज्यों गाजेरी॥
रसिक संत गुणवंत रसीले सजे सुअंगन वस्त्र सुपीले।
केसर चंदन छिरक छबीले कियो समाजे री॥
नव निकुंज रस देन पधारे आचारज वर नर तन धारे।
अमरलोक सें आये आली रसिकन काजेरी॥
नाचन गावत सुन गरवीले भाव बतात चतुर चटकीले।
नख सिख भूषन वसन साज सोहन तन साजे री॥
श्री रनजीत गोद लै मैया लखि लालन की लेत वलैया।
मुख चूमत कर प्यार महल के मांहि विराजे री॥
गौर वरन मृदु गात सलौना मंद हँसन कर डारत टौना।
जाको दरस किये जीवन को जग दुख भाजे री॥

ध्वजा पताका सजे सदन में छवि अपार नहिं आत कहन में।
डहरे की शोभा लखि मन में सुर पति लाजे री ॥
जय जय धुनि दशहों दिशि छाई हरिजन रहे सुमन वरषाई।
सरस माधुरी महा महोत्सव हमरे आजे री ॥

॥ वधाई झूँगा की चालमें ॥

सखी री सब मिल आवो गावो वधाई म्हारे रंग भरी।
अजी हां वधाई म्हारे रंग भरी ॥
सखी री नव निकुंज सों आई नाम है प्रेम मंजरी ॥
सखी री श्यामा श्याम पठाई करेंगी रस रंग ररी ॥
सखी री भई आचारज रूप अहेतुक कृपा करी ॥
सखी री करिके करुणा हृदय हमारी प्यारी ओर ढरी ॥
सखी री मिले महल निज वास सकल मन आस फरी ॥
सखी री धन यह भादों मास लगाई आली मेघ झरी ॥
सखी री भरे हैं सरोवर नीर भूमि भई हरी हरी ॥
सखी री लखि सुकुमारी रूप छबीली छवि द्रगन धरी ॥
सखीरी सरस माधुरी वारी जोर कर पाय परी ॥

॥ पद वधाई ठेका कव्वाली ॥

सखी आज वधाई आनंद छयो, श्री कुंजो के सुतउत्पन्न भयो ॥
देखो नारी नवेली ए आयरही, अंग भूषन वस्त्र सजाय रही ॥
मिल मंगल गीतन गाय रही, सुन के सजनी सुख चैन लह्यो ॥

कोई स्वस्तक द्वार रचाय रही, कोई बंदन माल बँधाय रही।
कोई मोतिन चौक पुराय रही, चल देख सखी मेरो मान कह्यो ॥
पय पीवत मात की गोद लला, मन मोहन सोहन रूप भला॥
मुसकावन में मन मोर छला, चितचाव चढ़ो दुख दूर दह्यो ॥
देखी सर्स की माधुरीझांकी भली,मेरे मनकी मनोरथ बेलीफली।
उर प्रेम तरंग उठें हैं अली, उमगो रस सिंधु गलीन बह्यो ॥

॥ बधाई धुनि गनगौर ॥

आज महाराज भक्तराज प्रगटाये हैं।
श्याम चरणदास खास वृन्दावन जिन को वास,
प्रेम को प्रकाश करन करुणा निधि आये हैं ॥
अमर लोक रंग महल करत जहां जुगल टहल,
प्रेम मंजरी सरूप धाम में कहाये हैं ॥
अष्ट जाम श्यामा श्याम सेवा को करत काम,
अष्ट नाम नवल धार दम्पति लड़ाये हैं ॥
पतितन के पाप हरन मंगल मन मोद करन,
रस निकुंज दंन राधे कृष्ण ने पठाये हैं ॥
रसिक जन जुरे आन कीनो उत्सव महान,
सुंदर सुथान विविधि आजनें वजाये हैं ॥
लिये बीन अरु मृदंग नाच गाय करत रङ्ग,
रीझ भीज सानुराग सबको रिझाये हैं ॥
जय जय मुख बोल करत हिल मिल कलोल घोल,
केसर अरु चन्दन अँग सबके छिरकाये हैं ॥

निरखि मुख मयंक लाल फँसे सकल प्रेम जाल,
होय के निहाल परम आनँद छकाये हैं ॥
आचारज गुन निधान इन सम नहिं और आन,
सरस माधुरी के प्रान पूरे पुन्य पाये हैं ॥

॥ बधाई ॥

मुरलीधर घर आनन्द माई ।
जन्म दिवस रनजीत लाल को गावत मंगल नारि बधाई ॥
मंगल कलश धराय भवन में मोतिन को शुभ चौक पुराई ।
मंगल दधि अक्षत अरु रोरी दुर्वा हरित अली लै आई ॥
भक्त वृंद मिल करत महोत्सव रसिक जनन कुल कीरति गाई ।
संत समूह करत जय जय ध्वनि मुरली शंख मृदंग बजाई ॥
कलियुग में सतयुग दरशावन संत रूप धरि श्री हरि आई ।
प्रगटे हैं भृगुवंश महाप्रभु सरस माधुरी स्वयम् कन्हाई ॥

॥ राग सोरठ ॥

आज सलोनी कुंजो रानी लालन जायो है ।
श्री मुरलीधर को सुकृत फल अद्भुत पायो है ॥
श्री पुरुषोत्तम कृष्ण कला सोई सुत प्रगटायो है ।
निरखि रूप नयनन सों सजनी सुख उपजायो है ॥
गावत अलिगन हिलमिल आई नवल बधायो है ।
डहरे मांहि महोत्सव सुन्दर घर घर छायो है ॥

भृगु कुल चंद उदय भये अमृत रस बरसायो है।
रसिक चकोर छकित भये छवि लखि हिय हुलसायो है॥
प्रागदास महाराज जाचकन दान दिवायो है।
भूषन वसन अनेक भांति दे द्रव्य लुटायो है॥
धन्य यशोदा दादी जिन लै गोद खिलायो है।
सरस माधुरी रसिकाचारज मो मन भायो है॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

मंगल मय आज दिवस अति ही मन भायो री॥
डहरे वर ग्राम भये प्रगट आय आप श्याम।
नवल नारि गाय रही जन्म को बधायो री॥
मुरलीधर मन आनंद लालन मुख निरखि चंद।
पुरुषोत्तम संत पुत्र कुंजो ने जायो री॥
मंगल मय भादों मास तृतीया तिथि सुख की रास।
मंगल ही वार परम मंगल मन भायो री॥
मंगल मय बजत बाज नौबत घन ज्यों अवाज।
मंगल उत्साह सकल पुर ही में छायो री॥
सरस माधुरी मुकुन्द देंन सकल परमानन्द।
काटन भव फंद प्रभु जग में प्रगटायो री॥

॥ बधाई ॥

आज डहरे में मंगल छायो।
कृष्णा कला रनजीत लाल प्रभु कुंजो के प्रगटायो॥

भादों तीज सुदी दिन मंगल सात घड़ी दिन आयो ।
हिलमिल नारि नगर की आई गायो गीत वधायो ॥
मुरलीधर आनंद मगन मन सब परिवार बुलायो ।
कर मनुहार महल अपने में सबही को बैठायो ॥
ध्वजा पताका वन्दनमाला सुन्दर सदन सजायो ।
नौबत और बजत सहनाई सुन हिय अति सरसायो ॥
जाचक सकल अजाचक कीने दान दियो मन भायो ।
बिरदावली बोल वन्दीजन बरनत सुजस सवायो ॥
केसर चन्दन अतर अमोलक गलियन में छिरकायो ।
बांटे पान प्रीत कर सबको रोली तिलक करायो ॥
अनगिन गऊ दई विप्रन कों बहु धन माल लुटायो ।
सरस माधुरी महा महोत्सव लखि परमानंद पायो ॥

॥ बधाई ॥

श्री प्रागदास दरबार वधाई बाज रही ।
हां हां वधाई बाज रही ॥
नौबत बजत और सहनाई,
लागत निपट सुहाई घन ज्यों गाज रही ॥
ढाढी के संग ढाढन नाचे, भूषन बसन
अमोल सुअंगन साज रही ॥
गुन गावत मनमें हरषावत, हँसत हँसावत
चतुर अधिक छवि छाज रही ॥

उमंग रह्यो रस रंग अनूपम,
रंभा निरखि समाज मन ही मन लाज रही ॥
श्री पुरुषोत्तम संत रूप धरि,
आये रसिकन काज सनो यह बात सही ॥
संत महंत सभी हर्षाये,
बरषाये बहु फूल जय जय सबन कही ॥
भक्ति प्रचारन पतित उधारन,
आये श्री महाराज दुसह दुख सूल दही ॥
धन भादों धन तीज सुदी है,
धन दिन मंगलवार धन है घरी यही ॥
धन्य धन्य श्री कुंजो माता,
धन मुरलीधर तात प्रेम परसिद्धि लही ॥
परमानन्द सुडहरे छायो,
गलियन ब्रह्मानन्द बहायो पार नही ॥
सरस माधुरी लखि लालन मुख,
हाथ जोर सिरनाय चरन की शरन गही ॥

॥ दोहा ॥

अति पुनीत दिन आज को, जन्मोत्सव रंजीत ।
गावत हैं हरिजन हुलस, अनुपम मंगल गीत ॥
नवल बधाई गा रहीं, नारी परम पुनीत ।
सरस माधुरी कर रहे, रसिक परस्पर प्रीत ॥

॥ गज़ल ॥

जनम रंजीत उतसव की खुशी जयपुर में छाई है ।
जहां राजेन्द्र भूपति मान-सिंह राजें सवाई हैं ॥
सुदी तिथि तीज भादों की परम पावन है मन भावन ।
रसिक भक्तों ने रचना जलसे की सुंदर रचाई है ॥
सरस निज कुंज की शोभा सकल भक्तों की मन लोभा ।
जुगल सरकार की झांकी अधिक बांकी बनाई है ॥
श्री शुक मुनि चरण के दास दोनों तरफ राजे हैं ।
करैं दरशन जिन्हों के चित में नख शिख छवि समाई हैं ॥
नचें निर्तक नई गति ले बतावें भाव भक्ती से ।
गुणी जन मन मगन होके बधाई हित से गाई है ॥
कहें धन धन सकल हरिजन मगन हैं सबके तन और मन ।
सरस सोहन समय सुंदर को लख गति मति भुलाई है

॥ बधाई ॥

डहरे नगर के महिया बधैया बाज रहियां रे ॥
उमंग रह्यो आनंद महल में नारिन मंगल गैयां ॥
कुंजो मैया लालन जायो त्रिभुवन पती गुसैयां ॥
मुरलीधर मन मुदित भये हैं रंक मनो निधि पैयां ॥
आचारज अवतार धरयो हरि भूतल में प्रगटैयां ॥
अमर लोक से आय पधारे श्यामा श्याम पठैयां ॥
पहुँचावन परधाम जनन को अपने दरस दिखैयां ॥
सरस माधुरी छवि रंजीता देख दृगन बलिजैयां ॥

॥ मंजू ॥

रंजीता की जन्म बधाई, नारि नवेली गावैं।
घर घर से सबही बन ठन के झुंड़२ मिल आवैं।
राई नोन उसार लाल पर दरशन कर हुलसावैं।
जुग जुग जीवो मुरली नंदन सरस असीस सुनावैं॥

॥ मंजू ॥

भादों मास सुदी तिथि त्रितिया मंगल दिन मन भावन।
प्रगट भये हरि अंश संत हो कियो च्यवन कुल पावन॥
शरण होय जो इन चर्णन की करे प्रेम कर धावन।
सरस माधुरी हरि जग आये जिय परधाम पठावन॥

॥ मंजू ॥

भृगु कुल च्यवन वंश भूतल पर श्री शोभन प्रगटाये।
प्रेम भक्ति परि पूरण करके श्रीमत कृष्ण रिझाये॥
अष्टम पीढी मुरलीधर घर आचारज हो आये।
प्रगट करें शुक मुनी सम्प्रदा भये सरस मन भाये॥

॥ मंजू ॥

प्रगट भये श्री श्याम अवनि में जग जीवन उद्धारन।
मुरली सुत कुंजो नंदन हो भूमि उतारन भारन॥
कलि मल हरन करन पावन जन प्रेमा भक्ति प्रचारन।
सरस माधुरी दरस परस कर करिये सरवस वारन॥

॥ मंजू ॥

जन्म महोत्सव मुरली सुत में रचना रुचिर वनाई ।
ध्वजा पताका तोरन रोपे बंदन माल बंधाई ॥
ढांढन ढाढी नाच गाय गुण सारी सभा रिझाई ।
सरस माधुरी रंजीता की पाई दरस वधाई ॥

॥ मंजू ॥

रखें इष्ट रंजीत लाल को रसिक अनन्य कहावें ।
सखी भाव सेवा दम्पति की अमर लोक पद पावें ॥
रंग महल में रास लखे नित दम्पति को दुलरावें ।
श्री शुक सखी स्वामिनि तिनको अपनी कर अपनावें ॥

॥ मंजू ॥

जुगल लाल की प्राण वल्लभा प्रेम मंजरी प्यारी ।
चरण दास धर नाम नवीनो जग मांही अवतारी ॥
जुगल भावना ध्यान मानसी रस की रीति प्रचारी ।
लई शरण जिन इन चरणन की पाये सरस विहारी ॥

॥ बधाई ॥

रंजीता जनम की वधाई भली, मन भाई भली सुखदाई भली ।
सखी उत्सव की शोभा है छाई भली ॥

(अंतरा)

कृष्ण अंश भृगुवंश में, प्रगट भये महाराज ।
शोभन कुल पावन कियो, संतन के सरताज ॥

कुंजो माता गर्भ से, उपजे आनँद कंद।
डहरे गोकुल प्रगट भये, चरणदास कुल चंद ॥

श्रीमत शुक मुनि सम्प्रदा, प्रगटावें कर प्रीत।
प्रेमा भक्ति प्रचार के, दरसावें रस रीत ॥

कलियुग में सतयुग करें, हरें भरम अंधियार।
जीव चितावें जक्त के, करदेवें भव पार ॥

ज्ञानी जन को ज्ञान दें, जोगी जन को जोग।
प्रेमिन को दें प्रेम हरि, मेटें भव दुख रोग ॥

रसिक जनन ही को करें, रस निकुंज को दान।
सेवें श्यामा श्याम को, करें रूप रस पान ॥

शरण गहे इन चरण की, रटे नाम लौ लाय।
जगत जाल से छूट कर, बसे अमरपुर जाय ॥

रसिकाचारज जक्त गुरु, कलिमल नाशन हार।
पतितन के पातक हरण, चरण दास सरकार ॥

चरण दास के चरण की, लई शरण जिन आय।
तिन को श्री प्रीतम प्रिया, लीन्हे हैं अपनाय ॥

चरण दास के चरण को, जिन के लागो रंग।
प्रेम पगे प्यारी प्रिया, तजें न तिन को संग ॥

चरण दास के चरण में, जो दृढलगे सनेह।
रीझ तिन्हे प्रीतम प्रिया, महल खवासी देंह ॥

चरणदास के चरण में, जो नवाय निज माथ।
कुंवरि किशोरी राधिका, रीझ गहत तिहि हाथ ॥

भजे भाव कर जिन्होंने, श्याम चर्ण के दास।
पहुँचे सोई निकुंज में, जहां नित्त रस रास॥
होत रहत जहां परसपर, दम्पति विविधि विलास।
रहत निकट वरती तहां, श्यामचरण के दास॥
आचारज हो अवतरे; महिमा कही न जाय।
सरस माधुरी शरण भई, चरणन पर बलि जाय।

॥ ग़ज़ल ॥

अनोखे दास चर्णों की अनोखी यह बधाई है।
अनोखा है दिवस मंगल अनोखी रैन आई है॥
अनोखी भूमि डहरे की अनोखी है चरण गङ्गा।
अनोखी रीति उत्सव की सरस सुंदर चलाई है॥
कहीं रस रास के विलसन कहीं रस गान गुनियन के।
कहीं संकीर्तन मंगल की मंगल ध्वनि सुहाई है॥
भरे भंडार रस रंग के उमंग मन की अनोखी है।
अनोखी छवि यह लालन की अनोखे नयन छाई है॥
अनोखा सुख महोत्सव का अनोखे चौक मोतिन के।
अनोखी सखी सथियन से पुरी शोभा महाई है॥
पुरुष बड़भागी डहरे के हैं बड़भागन सकल नारी।
सखा सखियों ने हिल मिलके बधाई सर्स गाई है॥

॥ ग़ज़ल ॥

डहरे नगर में देखो कैसी बहार छाई।
प्रगटे हैं श्याम सुंदर रनजीत यहां आई॥

कुंजो के गर्भ जन्मे, भादौं की तीज शुक्का ।
घर घर में नारियां मिल, गावें जनम बधाई ॥
श्री प्रागदास दादा, बहुदान दे रहे हैं ।
हैं मग्न मुरली धरजी, आनँद कह्यो न जाई ॥
तोरण ध्वजा पताका, हर तर्फ सज रहे हैं ।
हरियारी भूमि प्यारी, मघवा झरी लगाई ॥
पलना में लाल झूलें, नरनारी निरख फूलें ।
जय जय उचारें मुख से, छवि लख रहे लुभाई ॥
छाई घटा गगन में, नाचें हैं मोर बन में ।
कोयल कुहुक रही हैं, शीतल पवन सुहाई ॥
मेवा मिठाई बहु बिधि, उत्सव में बट रही है ।
दासी सरस नें दिलकश, दरशन इनाम पाई ॥

॥ पद राग बहार ॥

प्रगटे कृष्ण कला रनजीत मुरली धर के गेह री ।
माता कुंजो बालक जायो वेद बतायो जेह री ॥
भादौं माँस महा मन भावन बरसत रस को मेह री ।
प्रागदास दादा मन प्रमुदित हिय में सरस्यो नेह री ॥
समर्थ सर्व कला निधि स्वामी कलि गज मारन केह री ।
माया जाल जीव काटन को सुन्दर धारी देह री ॥
शरण गहो जो चहो अचल सुख मम सिखवन सुन लेह री ।
सरस माधुरी सिर निज धारो जुगल कमल पद खेह री ॥

॥ पद पलना राग विलावल ॥

पलना श्री रनजीता झूलें ।
हरख झुलावत कुंजो रानी लखि सुत तन मन फूलें ॥
किलकन हँसन निरख लालन की मैया सुधि बुधि भूलें ॥
सरस माधुरी जसुधा दादी ललना जीवन मूलें ॥

॥ पद आसावरी ॥

पलना श्री रनजीता झूलत पुर की नारि झुलाय रही ।
मुदित मनोहर रूप निहारत मंद मंद सुर गाय रही ॥
चकरी भौंरा फेर प्रेम सों तन मन में पुलकाय रही ।
चिबुक प्रलोय वलैया लै लै अलिगन अमित लड़ाय रही ॥
अपनो तन मन वार प्यार कर सुख के सिंधु समाय रही ।
सरस माधुरी मन भावन को लखि लोचन मगनाय रही ॥

॥ राग टोड़ी ॥

झूलो प्यारे पलना श्री रनजीता ।
जुग जुग जीवो मुरली नंदन जग वंदन हरि मीता ॥
बढ़ो वयस दिन दिन प्रति दूनी प्रगट करो रस रीता ।
दादी भूवा दें अशीश शुभ गावत मंगल गीता ॥
पुचकारत सिर पर कर फेरत करत अधिक ही प्रीता ।
सरस माधुरी ललन खवावत मिश्री अरु नवनीता ॥

॥ पलना राग आसावरी ॥

लला झूलो पलना सुकुमार ।

जीवो मैया कुंजो वदन निहार कुल मंडल रनजीत लला ॥

मुरलीधर मोद बढाय हैं हो, कहि कहि मृदु मुख बोल ।

हँसि गोदी में आय हैं हो आनंद है अनमोल ।

अति सुंदर रनजीत लला ॥

पुर बालक संग खेलि हैं हो, नाना खेल पुनीत ।

नदी किनारे मुनि मिलें हो करें अधिक प्रभु प्रीत ।

चित चंदन रनजीत लला ॥

पंच बरस की वयस में हो, सुमिरें श्री गोपाल ।

छापा तिलक लगाय कें हो, कर सों फेरे माल ।

जग बंदन रनजीत लला ॥

इन्द्रप्रस्थ घर ननां के हो, जाय रहे सुख कंद ।

भक्ति करें श्रीकृष्ण की हो, प्रगटे परमानन्द ।

जन रंजन रनजीत लला ॥

गंगा तट शुकतार पै हो, जाय मिलें शुकदेव ।

दीक्षा लें गुरुसों तहाँ हो, करें मानसी सेव ।

भव भंजन रनजीत लला ॥

सुनि वृन्दावन पहुँच के हो, मध्य श्री सेवा कुंज ।

दम्पति सों मिल रास रस हो, निरखेंगे रस पुंज ।

रसिक राज रनजीत लला ॥

दिल्ली में आश्रम रचें हो, है अचारज आप ।

श्री शुकमुनि शुभ संप्रदा हो, करें ताहि अस्थाप।
जगत गुरु रनजीत लला ॥

सर्व जक्त में भक्ती को हो, करि हैं बहु विस्तार।
पापी बहु पावन करें हो, उपदेशें नर नार।
जग तारन रनजीत लला ॥

बादशाह को आदि लै हो, राजा रंक अमीर।
परें चरन में आय के हो, मेटें सब की पीर।
दुःख हरन रनजीत लला ॥

काहू कों राजा करें हो, काहू बादहीशाह।
मन इच्छा पूरन करें हो, जैसी जाके चाह।
सुख करन रनजीत लला ॥

कलियुग में सतयुग करें हो, भगवत धर्म प्रचार।
सरस माधुरी शरन के। इन चरनन आधार।
भक्त राज रनजीत लला ॥

॥ दोहा ॥

भादों शुक्ला तीज तिथि, शुभदिन मंगलवार।
मुरलीधर घर प्रगट भये, चरनदास अवतार ॥
कुंजो कूंख सुहावनी, प्रगटे दीन दयाल।
आचारज हो अवतरे, संतन के प्रतिपाल ॥
शोभन अपने भक्त को, दीनो वर करतार।
कलियुग में सतयुग करूँ, रूप संत को धार ॥

आये वर पूरन करन, जगपति कृपा निधान ।
प्रेम भक्ति बस श्याम घन, गावत वेद पुरान ॥
डहरे में आनँद महा, घर घर मंगलचार ।
सरस माधुरी जन्म की, गात बधाई नार ॥

॥ राग विहाग ॥

सुकृत फल प्रगटो आज तुम्हारो ।
श्री मुरलीधर तुमरे निज घर, कृष्ण कला अवतारो ॥
पतित उधारन जन निस्तारन, यह निश्चय मन धारो ॥
नाम जपै जो इनको जग में, सो हो दम्पति प्यारो ॥
सरस माधुरी श्री रनजीता, जीवन प्रान अधारो ॥

॥ शेर ॥

हम आये जनम लाल सुन आज भवैया ।
दुनियां में नहीं हमसा कोई और गवैया ॥
गाते हैं वजाते हैं सुनाते हैं मधुर तान ।
सानी हमारी और नहीं जग में नचैया ॥
दरसावें सभा बीच में हम भाव भली भांतिं ।
लो जान हमें खास हैं हम भांड़ों के भवैया ॥

बधाई (नाटक की चाल)

देखो डहरे में छाई बहार, जगत गुरु जनमे यहां ॥
भक्त शोभन को दिया श्यामने मुख से वरदान ।
प्रगट हुये हैं हरि कुंजो के करुणा के निधान ॥

मुरलीधर होके मगन दे रहे हैं बहु विधि दान ।
जो जाचक आये किया उनका अधिक ही सनमान ।
हुआ सुजस सकल संसार ॥

प्रागदास ने उत्सव किया है अनुपम आज ।
गुनी जन गा रहे हैं राग रहे वाजे बाज ।
जुरे हैं संत भगत हो रहा अनूप समाज ।
मगन हैं मन में सभी रंकों ने पाया ज्यों राज ।
जय जय बोल रहे हैं नर नार ॥

हुई हैं शेदा परी हूर हज़ारों इक बार ।
निहारा आनके ज़िस दम श्री रनजीत कुमार ।
करे हैं सिजदा झुका सर को क़दम पर कर प्यार ।
छकी छवी में सभी देख के दिलकश दीदार ।
लला सब का जीवन आधार ॥

भई है धूम हरी भक्तों की हर तर्फ़ अपार ।
घरों में गाय रही नारी नवल मंगलचार ।
रहे हैं झूल झमक पलना में मन मोहन हार ।
सरापा नूर की मूरत हैं मनोहर सुकुमार ।
हुई सरस निरख बलिहार ॥

॥ पद ॥

श्री रनजीता सरकार गुरु रनजीता ॥
भक्त शोभन प्रिय प्रान तुम्हारे, तिनके हित नर तन धारे ।
कियो डहरो ग्राम पुनीता ॥

धाम से राधेश्याम पठाये, जग में भक्ति प्रचारन आये ।
धरो है रूप अनूप अतीता ॥
प्रेम भक्ति प्रभु पूरन कीनी, लगाई हरिसों लगन नवीनी ।
कियो है खास कृष्ण निज मीता ॥
ज्ञान को भान आप प्रगटायो, जक्त सोते को सहज जगायो ।
कियो उपदेश भागवत गीता ॥
सहस्रों सेवक संत बनायें, जुगल श्री राधा कृष्ण मिलाये ।
सिखाई सबको रस की रीता ॥
शरन जो जीव आपके आयो, वोही हरिदास अनन्य कहायो ।
जन्म मरने से भये नचीता ॥
सरस माधुरी अचल विश्वासा, मिले वृंदावन कुंज बिलासा ।
यही निश्चय मन भई प्रतीता ॥

॥ बधाई झूमका ॥

बजत बधाइयां हो मुरलीदास के दरबार ।
प्रगट भये पुत्र सोहन हो सलौने श्याम नर तन धार ॥
सुहावन मास भादों का सुदी तृतीया सुमंगलवार ।
चढ़ा जब पहर दिन पूरन लियो प्रभु ता समय अवतार ॥

॥ झूमका ॥

नारि कुल की जुरि आई, सजे शृंगार महाई ।
थाल कर कंचन लाई, फूल फल भरे मिठाई ॥
झुगुलिया टोपी प्यारी, लगी चहुँ ओर किनारी ।
कनक के भूषन भारी, जड़ाऊ रत्न अपारी ॥

॥ अंतरा ॥

उमँग आई भवन भीतर बधाई गावती वर नार ।
परस्पर नाचती हिलमिल मुदित मुसकात करके प्यार ॥
करे आनंद अलवेली नवेली नागरी सुकुमार ।
छमाछम पायलों की धुन छई मंगल मई मनहार ॥

॥ झूमका ॥

मोतियन चौक पुराये, साथिये द्वार धराये ।
हरी हरी बंदनमाला, सदन में बांधी वाला ॥
पताका तोरन साजे, बाजे शुभ मंगल बाजे ।
नफ़ीरी और नकारा, झांझन झनक झनकारा ॥

॥ अंतरा ॥

नगर डहरे की अति शोभा भई भारी अधिक ही जान ।
घरन अति सुंदरी सजनी सजाये सुभग निज अस्थान ॥
मनो सबके भवन भीतर दिया मंगल ने डेरा आन ।
नवों निधि सिद्धि हू आठों करन आई सकल सनमान ॥

॥ झूमका ॥

लता चहुँ दिशि को छाई, घटा सुन्दर घिर आई ।
चमक चपला सुखदाई, झरी आनंद लगाई ॥
भूमि अति ही हरियारी, मोर नाचत मुदकारी ।
पपैया बोल सुहाई, कूक कोयल मन भाई ॥

॥ अंतरा ॥

उमँग सरिता वहन लागी चरन गंगा है जाको नाम ।
भई मन में मुदित भारी करे जल केलि प्रभु अभिराम॥
सखा ले संग रनजीता विमल जलमें करें असनान ।
चरन को कर परस पावन लहूंगी लाभ पद निरवान॥

॥ झूमका ॥

भार्गव कुल की शोभा, सकल मुनियन मन लोभा ।
च्यवन ऋषिवंश उजागर, दिपत ज्यों दिव्य दिवाकर॥
प्रागदासा मगनाये, दान दीने मन भाये ।
मगन मुरलीधर मन में, समात न फूले तन में ॥

॥ अंतरा ॥

गऊ विप्रन को बहु दीनी अलंकृत कर विविधि सनमान ।
दुशाले शाल ज़र ज़ेवर जगामग जिनकी अति चमकान ॥
असीसत प्रेम सों भूसुर करो जिजमान हरि कल्यान ।
जुगन जुग पुत्र चिरजीवो सुखी राखें श्री भगवान ॥

॥ झूमका ॥

ख़ज़ाने खास खुलाये, अमित धन माल लुटाये ।
पटंवर डुपटे दीने, पाग पेचा रंग भीने ॥
लला पर मोती वारे, लुटाये भर भर थारे ।
सभासद बैठे प्यारे, जयति जय धुनि उचारे ॥

॥ अंतरा ॥

नचत हैं ढाढी और ढाढिन मटक गति लेत हैं कटि मोर।
वतावत भाव अंगन से सबोंके चित्त लेवें चोर॥
अजब अंदाज़ का गाना गुनीजन सों अधिक सिरमौर।
सुनावें भक्त शोभन जस मिलें जिन्हें श्याम राधे गौर॥

॥ झूमका ॥

वसन भूषन मँगवाये, ढाढी ढाढन पहिराये।
सजाये नख शिख भारी, नृपति सम शोभित भारी॥
चढ़न घोरे रथ दीने, अजाचक सब को कीने।
मुदित मन दई असीसा, जीयो सुत कोटि वरीसा॥

॥ अंतरा ॥

गुनी जन जन्म सुन आये गवैया राय भांड अरु भाट।
जुरे सब लोग मंडल के लगे अनगिन जिन्हों के ठाट॥
तराने तान मिल गावें बजावें वीन ढोलक ढोल।
नक़ल नूतन करें हिलमिल हँसावें करें विविधि किलोल॥
बनावें स्वांग नाना ढङ्ग हँसें पुलकें करें रंग रोल।
सुनावें सरगमें नच नच मानो प्यावें हैं अमृत घोल॥
चुरावें चित्त सब ही का करें केली कला अनमोल॥

॥ झूमका ॥

दान मन माने पाये, द्रव्य ले सकल अघाये।
कहे मुख बारंबारी, लला की जावें वारी॥

उसारें राई नौना, जिवो मुरलीधर छौना।
दोष दुख पास न आवें, असीसें यही सुनावें ॥

॥ अंतरा ॥

कहैं धन धन्य संत महंत सुनिये सब सभा के लोग।
सुनावें ज्योतिषी ग्रह फल भला पाया है सुख संजोग ॥
स्वयम् श्री कृष्ण प्रगटाये मिटावें जीव संसृति रोग।
करेंगे भक्ति जो इनकी छुटैंगे उनके सब भव सोग ॥

॥ झूमका ॥

इन्हों का ध्यान लगावे, बास बृन्दावन पावे।
रहै नित दंपति पासा, निहारें रास विलासा ॥
सखी तन सुंदर पाई, करें सेवा हुलसाई।
कुंज में रहसी डोलें, अलिन मिल करें कलोलें ॥

॥ अंतरा ॥

रखे जो इष्ट इनही का जपै जो नाम दृढ़ता धार।
मिलें मन भावते प्यारे हमारे श्री युगल सरकार ॥
सरस यह माधुरी दासी कहत कर जोर विनय उचार।
मिलावो मुझको परिकर में दिखादो नित्य युगल विहार ॥

॥ पद ॥

शादियां सुरंगी हम भांडदेव आये। अजी वाह वाह है ॥
नाचते और गावते हुलसावते सुहाये। अजी वाह वाह है ॥
लाये भांडों का गोल, नकल करते अनमोल ॥ अजी० ॥
तान टप्पों का रंग, गावें भरके उमंग। अजी वाह वाह है ॥

नचैं कूदें किलकावैं, नाना स्वांग कर दिखलावैं ॥ अजी० ॥
कोई बोल बोले टट्टू, हों सुनके सबही लट्टू। अजी वाह० ॥
कहैं भांड हम हरिके प्यारे, हमने सुकृत किये भारे। अजी० ॥
हमारा जो करे सनमान, पावे पुन्य गऊ दान। अजी० ॥
देवे हमको जो दुशाला, जिसके पैदा होवे लाला। अजी० ॥
हमें नोंत के जिमावे, सो यज्ञों का फल पावे। अजी० ॥
करावे जो हमें जल पान, पावें गंगा फल स्नान ॥ अजी० ॥
देवे हमको मोहर भेट, वोही होवे जक्त सेठ ॥ अजी० ॥
जिस लिया भांड़ नाम, मानो किये चारों धाम ॥ अजी० ॥
देवे भाड़ों को दाम, उसके होवें पूरन काम ॥ अजी० ॥
करी भाड़ों से मित्रताई, उसने अष्ट सिद्धि पाई ॥ अजी० ॥
करी भाड़ों की बुराई, उसकी कंबख़्ती आई ॥ अजी ॥
करे भांड़ों को प्रसन्न, मिले उसको धन अन्न ॥ अजी० ॥
जो जन भांड़ों के गुन गावे,उसकी सभी बात बन जावे ॥अजी०॥
देवे भाड़ों को आराम, उसने तीरथ किये तमाम ॥ अजी० ॥
किया भांड़ों का सनमान,मानो किया त्रिवेणी नहान ॥अजी०॥
जिमावे भांड़ोंको जिजमान,गया फल मिले सहजमें आन ॥अजी०
बोले जो कोई मुख भांड़, खावे नित्य खीर खांड़ ॥ अजी० ॥
जिसके भांड़ भवन में आये,उसने मन वांछित फल पाये॥ अजी०
भांड़ आये जिसके द्वारे, उसने पुन्य कर लिये सारे ॥अजी०॥
जो भांड़ों से करे भलाई, कीरत उसकी जगमें छाई ॥अजी०॥
जिसको देवें भांड़ असीस, वोही पूरा बिस्वा बीस ॥ अजी० ॥
जिसने कीनी भांड़ बधाई, मानो मंदर धजा चढ़ाई ॥ अजी० ॥

सुनिये प्राणदास जिजमान, तुमको खुश रक्खें भगवान। अजी०॥
प्यारे मुरलीधर दास, तुम्हारे प्रगटे कृष्ण खास॥ अजी०॥
आये नरतन को धार, करें जीवों का उद्धार॥ अजी०॥
माता कुंजो तुम धन्न, तेरे हरि हुये उत्पन्न॥ अजी०॥
भादों शुक्ल तीज सार, दिवस दिव्य मंगलवार॥ अजी०॥
लिया आचारज अवतार, हुआ जग में जय जय कार॥ अजी०॥
देखो नभ छये विमान, देखें देव महोत्सव आन॥ अजी०॥
करें अप्सरा गुन गान, गावें मधुर मधुर तान॥ अजी०॥
बरसे कल्प वृक्ष फूल, विधना भये अनुकूल॥ अजी०॥
दादी यशोदा सुन कान, कीजे हमारा सनमान॥ अजी०॥
हुआ पोता श्री भगवान, लेवें मन माना हम दान॥ अजी०॥
श्री व्यास पुत्र शुकदेव, इनके होवे श्री गुरुदेव॥ अजी०॥
शुक सम्प्रदाय प्रगटावें, भक्ती जक्त में फैलावें॥ अजी०॥
बहु जीव ठिकाना पावें, चले पर्म धाम को जावें॥ अजी०॥
नर्क चौरासी छुट जावें, जो जन इनके शरन आवें॥ अजी०॥
कलियुग पावन अवतार, करो बंदन बारंबार॥ अजी०॥
नाम रनजीता लाल, जपे जीते माया जाल॥ अजी०॥
रटे श्याम चरनदास, पहुँचे दंपति के पास॥ अजी०॥
महाप्रभु हैं आचारज; सारें जीवों के सब कारज॥ अजी०॥
कहे नाम भक्तराज, होवे सब का सरताज॥ अजी०॥
बोले जय जय श्री महाराज, सर्व दुःख जावें भाज॥ अजी०॥
कुंज केली करें दान, करें रसिक प्रेम पान॥ अजी०॥

जगमें प्रगटावें सत्संग, चढै प्रेमा भक्ती रंग ॥ अजी० ॥
अर्थ धर्म मोक्ष काम, सेवें इनको आठों जाम ॥ अजी० ॥
जोगी सिद्ध समाधी ध्यानी, इनको ध्यावें मुनिजन ज्ञानी ॥ अजी
सेवें राजा बादशाह, करें सर्व इनकी चाह ॥ अजी० ॥
वली औलिया दरवेश, इनसे पावें फैज़ हमेश ॥ अजी० ॥
शरन आये जीव तारें, सर्व वंश को उद्धारें ॥ अजी ॥
सर्व सभा के समाजी, हुये सुन के मन में राजी ॥ अजी० ॥
भृगुवंशी हरषाये भाड़ नख शिख पहिराये ॥ अजी० ॥
सरस माधुरी ने गाई, यही भाड़ों की बधाई ॥ अजी० ॥

॥ नाटक की चाल में ।

नगर डहरे में छाय रही प्यारी बधाई चरणदास की
दास की दास की दास की ॥ हां ॥
शुक्ला तीज सुहावन अति ही उत्तम भादों मास की
मास की मास की मास की ॥
मुरलीधर घर प्रगट भई है मूरत प्रेम प्रकाश की
प्रकाश की प्रकाश की प्रकाश की ॥ हां ॥
श्री हरि आये धाम से पूरन शोभन आस की
आस की आस की आस की ॥ हां ॥
संत रूप आचारज धरके रक्षा की जन खास की
खास की खास की खास की ॥ हां ॥
कुंजो माता कूख सिरानी लखि छवि आनँदरास की
रास की रास की रास की ॥ हां ॥

जो जन शरण चरण की पाई जम की त्रासा नास की
नास की नास की नास की ॥ हां ॥
सरस माधुरी शोभा निस दिन निरखें रास विलास की
विलास की विलास की विलास की ॥ हां ॥

॥ राग भैरवी ॥

आज श्याम मुरलीधर घर में गौर रूप धर आये हैं।
निरखन चलो सकल मिल आली मन वांछित फल पाये हैं॥
रवि शशि कोटि बदन की शोभा सुंदर सुखद सुहाये हैं।
निरख छवी रनजीत कुँवर की मदन रती शरमाये हैं॥
कुंजो माता कूँख सिरानी श्री हरि पुत्र जनाये हैं।
पतित उबारन भव भय टारन चरनदास कहलाये हैं॥
डहरे नगर के सब नर नारी आनंद बधाई लाये हैं।
बड़े भाग दादा प्रयाग के सब हू ने बतलाये हैं॥
शोभन जी के वर के कारन स्वयं कृष्ण प्रगटाये हैं।
गुनिजन आवें गावें बजावें रसिक अति ही हरषाये हैं॥
भादों मास सुदी तृतीया को दान दरस का पाये हैं।
सरस माधुरी उमँग हुलस कर फूल फूल बरसाये हैं॥

॥ पद ॥

डहरे में आज देखो शोभा अपार सजनी।
रनजीत की अदा पर हरगुल निसार सजनी॥

पीले वसन से सज कर, छतरी में बैठ आकर।
डहरे निकट चमन में निरखें बहार सजनी ॥
भक्तों का जम घटा है, छिटकी ललित लता है।
हर तरफ धुन सुनायें गायें मलार सजनी ॥
भक्तों की देख भक्ती शरमा रही है मुक्ती।
गउलोक ब्रजपती का देखें विहार सजनी ॥
कैसा सरस समा है, आनँद रङ्ग जमा है।
कर दीजे इस पै तन मन सब अपना वार सजनी ॥

॥ पद ॥

प्रगटे हैं श्री रनजीत लला, परिपूरण श्री कृष्ण कला।
रूप संत धरि आय लला, रसिकन के मन भाये लला ॥
राधाकृष्ण पठाये लला, पर्मधाम सों आये लला।
महा प्रभु कहलाये लला, आचारज पद पाये लला ॥
शोभन जो वर दियो लला, सो परि पूरन कियो लला।
कुंजो के प्रगटाये लला, मुरलीधर मगनाये लला ॥
जनमत भयो उजास लला, मानों चंद्र प्रकास लला।
बाजे अनहद नाद लला, सुनत भयो अहलाद लला ॥
प्रागदास दिये दान लला, कियो सकल सनमान लला।
गऊ द्विजन को दई लला, सबहिन हितकर लई लला ॥
ढाढी ढाढन आये लला, हँसि हँसि नाँचे गाये लला।
वंश प्रशंसा सुनाये लला, सुन यश सब हरषाये लला ॥

भाँड़ भवन चल आये लला, सरस कवित्त सुनाये लला।
जन्म कर्म गुन गाये लला, प्रेम माँहि पुलकाये लला॥
भक्त मंडली आई लला, जय जय जय धुनि छाई लला।
फूलन बृष्टि कराई लला, केसर घसि छिरकाई लला॥
बाँटत पान मिठाई लला, आनंद कियो महाई लला।
भवन अजिर के बीच लला, दधि कादो भई कीच लला॥
डहरे भई बधाई लला, सजि तन नारी आई लला।
झुगली टोपी लाई लला, भूषन रत्न जड़ाई लला॥
गावत मृदु मुसकाई लला, नृतत मन मगनाई लला।
मोतिन चौक पुराई लला, हिये माहीं हुलसाई लला॥
धरे सातिये द्वार लला, बाँधी बंदनवार लला।
ध्वजा पताक अपार लला, सजे सदन मनुहार लला॥
भृगुवंशी जुरि आये लला, बैठ सभा हरषाये लला।
परमानंद समाये लला, उत्सव देख छकाये लला॥
भांड़ भवन में आये लला, नकल करी बहु गाये लला।
कौतुहल दिखलाये लला, सज्जन सकल हँसाये लला॥
छवि को अंत न पार लला, जहां प्रगटे सकुमार लला।
रिधि सिद्धि खड़ी द्वार लला, करत सकल सतकार लला॥
बांटत धन नहिं घटत लला, अधिक सौ गुनो बढ़त लला।
रंग चौ गुनो चढ़त लला, विप्र वेद धुनि पढ़त लला॥
भक्ति प्रचारन आये लला, तारन तरन कहाये लला।
दरशन करन उमाहे लला, झुंड नारि नर धाये लला॥

जक्त गुरू कहलावें लला, अनगिन जीव चितावें लला ।
जो जन इन शरन आवें लला, श्यामा श्याम मिलावें लला ॥
जो इन के गुन गावें लला, जग बंधन छुट जावें लला ।
जाको मंत्र सुनावें लला, सो जमपुर नाहिं जावें लला ॥
पहुँचें जा रंग महल लला, मिले युगल वर टहल लला ।
रास विलास हुलास लला, रहै दंपति के पास लला ॥
जहां वृंदाबन धाम लला, विहरत श्यामा श्याम लला ।
तहां पाव विश्राम लला, पूरन हों मन काम लला ॥
यह शुभ जन्म बधाई लला, सरस माधुरी गाई लला ।
लख लालन मगनाई लला, प्रेमा भक्ति सुपाई लला ॥

॥ राग भैरवी ॥

हुआ तवल्लुद कुंजो तुम्हारे मुरशदे पीरान पीर ।
दरवेशों का शाह दुनी में सिजदा करें अमीर ॥
वली औलिया ख़ास येही हैं रोशन इनका ज़मीर ।
है मक़बूले खुदा ख़लक़त कहै ख़िदमत करें फ़क़ीर ॥
करें क़दम बोसी हर रोज़ा शाहंशाह वज़ीर ।
सरस माधुरी ख़ास खुदा के समझो इन्हें मशीर ॥

॥ मुबारक बादी ग़जल ॥

जनम रनजीत का पाना मुबारक हो मुबारक हो ।
हमारा जलसे में आना मुबारक हो मुबारक हो ॥

सुनाना तान का सबको, बताना भाव भक्ती से।
वधाई गान का गाना, मुबारक हो मुबारक हो॥
बजाके साज सारंगी, लगाके ठेका ढोलक का।
अहा हा बोल मुसकाना, मुबारक हो मुबारक हो॥
निरत कर नक़्ल दरसाना, हँसाना हरि के भक्तों को।
हुलस कर स्वांग भरलाना, मुबारक हो मुबारक हो॥
कराना जन्म उत्सव का, बँधाना द्वार बन्दन माल।
पुराना चौक मोती का, मुबारक हो मुबारक हो॥
खुशी सुनकर महोत्सव की, शगुफ़्ता होना हर दिल का।
सजाना आज महफ़िल का, मुबारक हो मुबारक हो॥
ज़ियारत लाल की करके, तसद्दुक़ होके हरषाना।
खुशी से फूल बरसाना, मुबारक हो मुबारक हो॥
सरस चर्णों में कर सिजदा, अदब और इज्ज़ से झुक के।
नमो जय कह के बलजाना, मुबारक हो मुबारक हो॥

॥ ग़ज़ल ॥

लालन रनजीता का पलना क्या सजा निरखो अली।
जटित जगमग ज्योति जिसकी है अजब शोभा भली॥
झूलें हैं लालन सलोने पौढ़ें परमानंद सों।
मंद मुसकावन सुहावन लखि भई मन बेकली॥
पीत झँगुली तन में पहिनें और टोपी शीश पे।
लग रहे गोटा किरन जिनकी है खूब झला झली॥

कोंधनी कटि अरु करा कर कनक के रतनों जड़े ।
चित चुराये लेत हैं गति मति मेरी सारी छली ॥

मंद झोटा दे झुलावें नारियां सुकुमारियां ।
जावें हैं बलिहारियां पुरनारियां भृगुकुल लली ॥

गावें कर ढोलक बजावें संग मंजीरा ताल दे ।
नांचें गति ले ले नई आनंद मन मानी रली ॥

कर रहीं न्योंछावरें नारी नवल वत्सल भरी ।
दे रहीं हँस जाचकों को खिल रही दिल की कली ॥

जय जय कह कर जोर दर्शन कर रहीं रस में पगी ।
सरस रस की माधुरी बेली मनोरथ की फली ॥

॥ रसिया ॥

पलना झूल रह्यो है श्री रंजीत कुमार ॥
रतन जटित रंग भीनो सुंदर,
अरी कि ताकी शोभा को नाहिं पार ॥
रेशम गादी लघु तकिया,
अरी कि तामें बिछे परम मनहार ॥
पोढि रहे तामें मन भावन,
अरी कि क्रीड़ा करत अनेक अपार ॥
शिर घुंघरारे बार सलोने,
अरी कि तिनकी छवि है अधिक अपार ॥
भाल डिठोना अतिही लोना,
अरी कि केसर सुंदर खौर सुढार ॥

मंद हसन मन फसन सबन को,
अरी कि सोहन कमल नयन रुचिकार ॥
गोल कपोल बुलाक नाक मैं,
अरी कि लखि २ मोहत हैं नर नार ॥
पहुँची करा कनक कर राजत,
अरी कि पग पेंजनियां की झुनकार ॥
कटि कोंधनी बजे रुन झुनियां,
अरी कि रसिकन की है प्राण अधार ॥
झगुली टोपी पीत मनोहर,
अरी कि तन में देत है अजब बहार ॥
लगे किनारी गोटा तामें,
अरी कि निरखत लजत रती अरु मार ॥
छगन मगन की छटा छबीली,
अरी कि इकटक रहे नयन निहार ॥
सरस माधुरी रूप लुभानी,
अरी कि बोलत मुख जय २ बलिहार ॥

॥ ध्यान मंगलस्तव छंद ॥

जय जय श्री महाराज श्याम चरनदास जी ।
मोकों सब बिधि नाथ तुम्हारी आस जी ॥
प्रेम मंजरी नाम महल श्री वन जहां ।
करत युगल वर टहल रहत सुख संग तहां ॥

रहत सुख संग तहां नित प्रति प्रेम पुलकनि अंग में ।
दंपति विहार अहार अनुदिन मगनमांती रंग में ॥
लखत प्रति छिन रंक धन ज्यों चकोरी विवचंद की ।
प्रेम प्यासी स्वांति स्वादित मधुर मुसकानि मंद की ॥

॥ छंद ॥

जय जय श्री चरणदासि चरन रति दीजिये ।
नित नवसरसे नेह कृपावलि कीजिये ॥
कुंज भाव निज रूप न भूलूँ छिन घरी ।
सेऊँ श्यामा श्याम रहूँ आनन्द भरी ॥
रहों आनन्द भरी नयनन केलि निरखों महल की ।
करों अंग श्रृंगार निज कर रहै हुलसनि टहल की ॥
जीवन अहार विहार रसमय दीजिये रासिकन मनी ।
सरस की चित चाह पूरन कीजिये सहचरि धनी ॥

॥ छंद ॥

जय जय श्री चरनदासि शरण युग पद गही ।
मेरी तुम लग दौर जान निश्चय सही ॥
आय परी हों द्वार दया उर धारिये ।
परिकर मांहि मिलाय विरह दुख टारिये ॥
विरह दुख को टार दीजे वास आलिगन खास में ।
करों सेवा गान नृत्तन विविधि विधि रस रास में ॥

रीझ श्री रासेश्वरी मम शीश पर निज कर धरें।
सरस रस दे दान प्रीतम पकर भुज हित कर बरें ॥

॥ छंद ॥

जय जय श्री चरनदासि नाम रटना रटें।
मिले निकुंज निवास द्वंद संकट कटें ॥
छके रूप रस रसिक लाडिली लाल के।
दुलहिन दूल्ह दोऊ अलिन प्रतिपाल के ॥
अलिन के प्रतिपाल प्यारे नैंन के तारे सखी।
कृपा तिन की पाय प्रीतम प्रिया निज नैंनन लखी ॥
सरस रसकी माधुरी ने शरण चरनन की लई।
आश्रय निज रावरो लखि रहत नित आनँद मई ॥

॥ सूहा व बिलावल ॥

जय जय श्री श्याम चरनदास च्यवन कुल मंडना।
करन भक्ति विस्तार कलुष कलि खंडना ॥
कृष्ण कला अवतार संत वपु धारिया।
रसिकाचारज विदित जगत जीय तारिया ॥

॥ छंद ॥

तारिया जग जीव अनगिन प्रेम भक्ति प्रचारि के।
दई सेवा युगल प्रभु की कृपा दृष्टि निहारि के ॥
अति अनन्य नरेश जन की दूर करी विडम्बना।
जय जय श्री श्याम चरनदास च्यवन कुल मंडना ॥

जय जय श्री चरनदास सुजन प्रतिपाल की ।
ध्यान परायन जुगल बिहारी लाल की ॥
अष्टयाम रंग महल महा रस में पगे ।
सेवत श्यामा श्याम प्रेम रंग में रंगे ॥

॥ छंद ॥

रँगे रंग में रहत नित ही प्रिया नवल किशोर के ।
छके छवि में परम प्रमुदित रहत श्यामल गौर के ॥
रटत नामावलि नित प्रति रसिक राधा वाल की ॥
जय जय श्री चरनदास सुजन प्रतिपाल की ॥
जय जय श्री चरनदास खास अलि महल की ।
रहत चटपटी चित्त जुगल पद टहल की ॥
अंग अंग शृंगार अनूपम साजई ।
निरख नैंन होय चैंन अधिक छवि छाजई ॥

॥ छन्द ॥

छाजई छवि अधिक दंपति देख दृग दर्शन पगे ।
रहें इक टक हेरि हँस हिय पलक सों पलकन लगे ॥
कुंज क्रीड़ा अगम अति ही निज जनन को सहल की ।
जय जय श्री चरनदास खास अलि महल की ॥
जय जय श्री चरनदास चरन की बलि गई ।
तुमको श्री शुकदेव खास संपति दई ॥
राखत नयनन मांहि न बिसरत छिन घरी ।
छटा विलोकत जुगल रंगीली रस भरी ॥

॥ छन्द ॥

भरी रस में रहत अनुदिन प्रेम पुलकनि अंग में ।
पगी पूरन भाव भीनी सखी परिकर संग में ॥
लिये ललन लड़ाय हितकर बचन बोलत रस मई ।
जय जय श्री चरनदास चरन की बलि गई ॥

जय जय श्री चरनदास आस तुम चरन की ।
सब विधि तुमको लाज आश्रित शरन की ॥
महा कठिन कलिकाल जाल में आपरी ।
लेहु बेगि सुधि नाथ विनय तुम प्रति करी ॥

॥ छन्द ॥

विनय तुम प्रति करी करुणा सिंधु सुधि आ लीजिये ।
काट कर्म कलेश मेरे निज अनुग्रह कीजिये ॥
है तिहारी बान प्रभु जी पतित पावन करन की ।
जय जय श्री चरनदास आस तुम चरन की ॥

जय जय श्री चरनदास कृपा यह कीजिये ।
युगवर प्रेम अखंड निरंतर दीजिये ॥
सुरति रहे निज रूप नवल कलि कुंज की ।
बसे सदा छवि दृगन जुगल रस पुंज की ॥

॥ छन्द ॥

छवि बसे दृग जुगल वर की सुरुचि संतत मन रहै ।
सरस माधुरी सेव सुख निधि प्रान सम दृढ़ कर गहै ॥

है यहै अभिलाष मेरी श्रवण दे सुन लीजिये ।
जय जय श्री चरनदास कृपा यह कीजिये ॥

॥ छन्द ॥

जयति श्याम चरनदास तिहारे नाम की ।
कला अवतरे अवनि स्वयं श्री श्याम की ॥
शोभन अपने भक्त जाहि जो वर दियो ।
प्रगटे तिहि कुल आय वचन पूरन कियो ॥
कियो पूरन वचन अपनो मुरलि सुत हो अवतरे ।
मात कुंजो प्रेम पुंजो गोद ले वहु हित करे ॥
जाऊँ बलि जहां जन्म लीनो सुथल ढहरे ग्राम की ।
जयति श्याम चरनदास तिहारे नाम की ॥

जय जय श्री श्याम चरनदास जगत पर हित कियो ।
आचारज वपु धार सुजस अति ही लियो ॥
जान कठिन कलिकाल चित्त करुणा भई ।
भादों शुक्ला तीज अवतरे मुदमई ॥
मास भादों शुक्ल तृतीया वार मंगल सुखमई ।
प्रात पहिले जाम प्रगटे महा द्युति तिहि छिन छई ॥
लगे अनहद बजन बाजे श्रवन कर हुलसो हियो ।
जय जय श्री चरनदास जगत पर हित कियो ॥

जय जयति श्री श्याम चरनदास सरूप लखि बलि गई ।
पलना झुलावत मात लखत छवि रस मई ॥

चकई भौंरा फेर खिलावत ख्याल को ।
कबहूं ले निज गोद लड़ावत लाल को ॥
लड़ावत है लाल को कर केलि कल दुलरावती।
वदन विधु को चूम के कर नेह नैंन सिरावती ॥
रहो नित सानंद सुत मम मात विनवत है दई ।
जय जय श्री चरनदास चरन की बलि गई ॥

जय जय श्री चरनदास जनम दिन जान के ।
आये द्विज गन बृन्द सुअवसर मान के ॥
वेद ध्वनि उच्चार अमित आसिष दई ।
पाय विप्र गोदान भये आनंद मई ॥

भये आनंद मई भूसुर तबहि ढाढी आइया ।
संग ढाढन नृत्त करके सभा सकल रिझाइया ॥
विहँसि वंशावलि सुनाई सुनी सब सुख मान के ।
जय जय श्री चरनदास जन्म दिन जान के ॥

जय जय श्री चरनदास भक्त चिंतामनी ।
जग मांही विख्यात भई महिमा घनी ॥
गुनि जन जाचक अमित द्वार पर आइया ।
पूरी सब मन आस सुजस जग छाइया ॥
सुजस जग छायो घनो घन सम सुनौवत बाजई ।
नारि मिल गावत बधाई सुन वधू सुर लाजई ॥
दान लेके चले जाचक भये सब ले धन धनी ।
जय जय श्री चरनदास भक्त चिंतामनी ॥

जय जय श्री चरनदास दरश अपने दिये ।
सुफल मनोरथ सकल नाथ तुमनें किये ॥
तुमरी कृपा कटाक्ष मिले परधाम हैं ।
राजत जहां सदैव राधिका श्याम हैं ॥

राधिका वर श्याम सुन्दर मिलें मन के भावने ।
सेव चरन सरोज दें निज कुंज मांहि वसावने ॥
आश्रित तुम जान दंपति आपने निज कर लिये ।
जय जय श्री चरनदास दरश अपने दिये ॥

जय जय श्री महाराज श्याम चरनदास हो ।
अतुलित सुजस प्रताप स्वयं सुप्रकाश हो ॥
पतित पावन अधम उधारन नाथ हो ।
निज जन अपने जान धरत सिर हाथ हो ॥
धरत सिर निज हाथ अपनो विरह दुख वेगहि हरो ।
देहु चरन निवास अपनी खास परिकर में वरो ॥
सरस माधुरी की कृपा निधि करन पूरन आस हो ।
जय जय श्री महाराज श्याम चरन दास हो ॥

॥ छंद ॥

प्रभो पतित पावन दुख नशावन जयति श्याम चरनदास हो ।
रसिक आचारज विदित पूरन कला सुख रास हो ॥
कुंजो के नंदन करों बंदन मुरलि सुत मंगल करन ।
प्रेम भक्ती के प्रदाता द्वंद संकट के हरन ॥

जान कर कलि काल भृगु कुल प्रगट ह्वै दर्शन दियो।
च्यवन वंश प्रशंस कर संसार को पावन कियो॥
योग ज्ञान विराग साधन सिद्ध कर समरथ धनी।
विमुख हरि सम्मुख किये भव विपति जीवन की हनी॥
रूप नाना धार देश विदेश भक्ति प्रचारिया।
नाम दंपति दान कर जिय अमित भव सों तारिया॥
धाम वृन्दावन युगल वर मिले सेवा कुंज में।
लखी रास विलास लीला मिल सखिन के पुंज में॥
इन्द्रप्रस्थ निवास कर वहु शिष्य सेवक निज किये।
राव रंक नरेश जिनको विविधि विधि परचय दिये॥
प्रात संध्या प्रेम कर स्तोत्र जो गायन करें।
कहैं सर्स माधुरी भक्त जन संसार सागर को तरें॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

श्याम चरनदास प्रभु प्यारे हमारे तुम चरनन को ध्याना॥
आस और विश्वास आप को यह निश्चय प्रण ठाना।
तुम ही सांचे सजन सनेही वारों तुम पर प्राना
सुनो मो बिनती दया निधाना तुम्हें सरबस धन मैने माना॥
ज्यों गज टेर सुनत ही धाये आये श्री भगवाना।
त्यों ही आय लीजिये मो सुधि भूल बिसर मत जाना
वेग ही आना हो प्यारे विमुख जन जग के नाहिं हँसाना॥
मेरी सुधि तुम आप राखियो हों जग जाल फँसाना।

अवगुण पर मत जाना स्वामी अपनो विरद निभाना।
मुझे नाहीं बिसराना हो वेग ही आकर के अपनाना ॥
त्रिविधि ताप संताप तपत हूँ विकल भये मेरे प्राना।
तुम बिन और नहीं कोइ रक्षक सुनो विनय कर काना।
ढील अब नाहि लगाना हो हमारी विपता आय मिटाना ॥
अभय हस्त मस्तक मम धर के धीरज मोहि बँधाना।
सरनागत पालक प्रण अपनो ताहि आय प्रगटाना
दरस दिखाना हो प्यारे अपनी छवि के माँहि छकाना ॥
तिलक माल पीतांबर वस्तर पहरो तुमरो बाना।
तुमरे चरन कमल को चेरो जानत सकल जहाना।
भेष की टेक रखाना हो संग रसिकन को नित्त कराना ॥
नाहि शुभ करम किये कुछ साधन नाहिं जप जोग विधाना।
नहीं भक्ति अरु भाव हृदय में कपटी कुटिल महाना
पापी हूँ मुझे पार लगाना हो प्यारे अध बिच मत छिटकाना ॥
पतितन पावन विरद रावरो संतन प्रगट बखाना।
यही भरोसो दृढ़ है मेरे और नही उर आना
भूल मत जाना हो प्यारे नहीं फिर दुनिया देगी ताना ॥
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद इन से पर रह्यो पाना।
जन्म जन्म दुख देते आये इन में बल अधिकाना
मुझे छुड़ाना हो प्यारे अब के मेरी शरम रखाना ॥
घेर लियो माया ममताने तासों तुम्हें न जाना।
ज्यों जयकरन कियो पारायन परम धाम दिखलाना

लाड़ली लाल लखाना हो प्यारे पावन परम बनाना ॥
दे निज भक्त जक्त तें तारो प्रेम करावो पाना ।
दंपति की छवि मांहि छकावो देहु दरस को दाना।
लगन लगाना हो प्यारे प्रिया प्रीतम की कुंज बसाना ॥

जुगल कमल पद सेवा देके परिकर में पहुँचाना ।
भाव स्वरूप प्राप्त कर मोकों अमर लोक अस्थाना ।
रास लीला दरसाना हो नृत्य गुन गाना मुझे सिखाना ॥

जब से सुरत सँभारी जग में तुम ही को पहिचाना ।
हा हा नाथ शरण में तेरी अब देरी न लगाना
मिटावो आवन जाना हो प्यारे निज छवि में अटकाना ॥

तुम को तज कर और जक्त गुरु भूल न मैंने माना ।
करो सनाथ अनाथ जान के अपने निकट रखाना
अंत कहुँ मत भटकाना हो नही कहिं मोको ठौर ठिकाना ॥

श्री बलदेव दास गुरु मेरे तिन की करके काना ।
सरस माधुरी श्री रनजीता अब के जन्म जिताना
पतित पावन तुम्हे जाना हो प्यारे तुमरे हि हाथ विकाना ॥

॥ राग बिलावल ॥

जय जय नमो श्याम चरनदासा ।
भार्गव वंश प्रशंसत कीनों कलि में सतयुग कियो प्रकाशा ॥
जो जो शरण आप की आये जग दुख दूर भये अनयासा ।
पाये प्रीतम कुंज बिहारी लह्यो अचल वृंदावन वासा ॥

सहचरि वपु धर सेये दंपति सुख संपति हिय उमँग हुलासा ।
अवलोकत नित युगल माधुरी निरखत नैन सदा रस रासा ॥
अचल प्रेम भक्ती प्रभु दीजे कीजे मेरी पूरन आसा ।
सरस माधुरी कहत जोर कर रखिये चरण कमल के पासा ॥

॥ पद ॥

करुणा निधान सुन कान श्याम चरनदास अरज़ मेरी ।
मैं अति अयान अघ खान आन कर परी शरन तेरी ॥
अधम उधारन वान तुम्हारी, दीन बन्धु जीवन हितकारी ।
मैं हूँ पतित पतित पावन तुम क्यों कीनीं देरी ॥
अनगिन पाप किये मन माने, सो तुमसों नाहीं कछु छाने ।
वाने की कर लाज लखो मोहि नेंक नज़र हेरी ॥
अपनो कहो कृपा कर मुख सों, वेग छुढ़ाय देव जग दुःख सों ।
सेवा करूँ रहूँ सुख सों काटो ममता वेरी ॥
विषय बासना चित तें टारो, कीजे मोहि प्रेम मतवारो ।
दीजे टहल महल मोकूँ लखि ख़ास चरन चेरी ॥
काटो करम भरम उरभेरे, दूर करो सब बन्धन मेरे ।
रहों लय में मगन रखो मोहि रसिकन के नेरी ॥
नाम जपूँ निशदिन मैं हित सों, ध्यान धरूँ दंपति निज चित सों ।
लाख यही अभिलाष होय आरत बिनती टेरी ॥
सरस माधुरी करत निहोरे, शीश नवाय जुगल कर जोरे ।
देहु अमरपुर बास यही मन लग रही अवसेरी ॥

॥ कन्हैया मुरली वारो री की चाल में ॥

ललन रनजीता प्यारो री श्री मुरलीधर बारो ॥

गौरवरन मन हरन दुलारो, कुंजो माता प्रान आधारो।
प्रागदास जीवन धन सो नयनन को तारो री ॥

आचारज ह्वै श्री हरि आये, रस निकुंज रसिकन हित लाये।
भक्ति प्रचारें जक्त करें जीवन निस्तारो री ॥

श्री शुक संप्रदाय प्रगटावें, श्री भागोत तत्व दरशावें।
श्यामां श्याम मिलावें यही निश्चय उरधारो री ॥

नाम रूप लीला जु लखावें, धाम परत्व प्रकाश जनावें।
परम धाम पहुँचावें जिन्हों पे तन मन वारो री ॥

शरनागति की रक्षा करिहैं, अभय हस्त निज मस्तक धरि हैं।
सरस माधुरी सो जक्त गुरु इष्ट हमारो री ॥

॥ विनय पद ॥

तुम सुनों चरन के दास प्यारे, मुरलीधर के वाले।

दिया जो शोभन को वरदान, अपना प्रेमी भक्त पिछान।
प्रगटे संतरूप भगवान, वचन अपने आकर प्रतपाले ॥
लीनो आचारज अवतार, माता कुंजो गर्भ मँझार।
लिये हैं सँग सखा सुकुमार, नदी के तट पर खेलन चाले ॥
मिले जहां श्री शुकमुनि रंग भीना, तुमको गोदी में ले लीना।
सिर पर कर धर के हित कीना, जान कर सुंदर भोले भाले ॥

तुम्हारे श्री मुरलीधर तात, जिनका सुजस बहुत विख्यात।
गये निज धाम न छोड़ा गात, जगत से जिनके ढंग निराले॥
गये दिल्ली से जब शुकतार, दिये दर्शन शुकमुनि उद्धार।
कियो उपदेश मंत्र सरकार, शिष्य कर सबही भांति सँभाले॥

जुगल को जो वृन्दावन धाम, तहां है सेवा कुंज सरनाम।
मिले जहां सुन्दर श्यामा श्याम, दिखाये रास रंग अतिआले॥
संप्रदा शुकमुनि की प्रगटाई, विश्व में हरि भक्ती फैलाई।
दिये जी अमित धाम पहुंचाई, नरक और दुख चौरासी टाले॥

बनाये अनगिन संत महंत, समाधी ज्ञानी गुनी अनंत।
अधिक सब अद्भुत शोभावंत, तिलक श्री पीले बाने वाले॥

करो अब करुणा करुणा रास, दीजे अमरलोक में वास।
निकट श्री जुगल विहारी पास, चरन के शरणों मुझे बसाले॥
अरज यह सरस माधुरी मेरी, सुनिये श्री महाराज सवेरी।
जानकर निज चरनन की चेरी, खास परिकर में मुझे मिलाले॥

॥ पद ॥

चरनदास स्वामी पद पंकज निज उर धारे री।
श्री मुरलीसुत कुंजो नंदन परम प्यारे री॥
शोभन वंश प्रशंस प्रभाकर जग उजियारे री।
प्रागदास के जीवन धन भृगुकुल उद्धारे री॥
कृष्ण कला कलियुग में प्रगटे नर वपु धारे री।
प्रेम भक्ति विस्तार जीव किये भव निधि पारे री॥

भक्तराज महाराज सकल भय संकट टारे री ।
सरस माधुरी तुम बल सोवत पांव पसारे री ॥

॥ विहाग ॥

भज मन श्याम चरणहिदास ।
कला कृष्ण कृपाल स्वामी करत भव भय नास ॥
शरण ले नित चरण की जो धार दृढ़ विश्वास ।
पराभक्ती कर परायण देंहि श्री वन बास ॥
रंग महल बसाय के दें टहल दम्पति खास ।
रहें निशि दिन प्रेम प्रमुदित प्रिया प्रीतम पास ॥
नित्य निरखें कुंज लीला ललित रास विलास ।
सरस रस की माधुरी पूरन करें अभिलास ॥

॥ विहाग ॥

महा प्रभु श्याम चरन के दास ।
रंग महल रस लीला राचे जिनके जुगल उपास ॥
दंपति को दृढ़ व्रत कर सेवें हितकर उमँग हुलास ।
छिन छिन छवि में छके रहत हैं निरखें विविधि विलास ॥
रहें निरंतर निकट हुजूरी प्यारी प्रीतम पास ।
कुंजन केलि करें निशि वासर श्री वृन्दावन वास ॥
आश्रित जन निज जान प्रान पति देत अचल विश्वास ।
सरस माधुरी श्याम राधिका दरशावें अनयास ॥

॥ पद ॥

श्री महाराज रसिक चूड़ामणि रंग महल तें आये हैं ।
प्रेम भक्ति विस्तारन कारन दंपति आप पठाये हैं ॥
जन्म लियो भृगुवंश हंस कुल मुरली सुत कहलाये हैं ।
कुंजो कूँख उदित प्राची दिशि प्रेम चंद्र प्रगटाये हैं ॥
प्रागदास दादा की जीवन लख लोचन ललचाये हैं ।
शोभन वर पूरन आ कीनो सखियन मंगल गाये हैं ॥
घर घर आनंद भई बधाई संत रसिक हरषाय हैं ।
विप्रन को गौ दान याचकन मन वांछित फल पाये हैं ॥
पांच वर्ष की वयस भई तब श्री सुखदेव मिलाये हैं ।
कर मन मोद गोद बैठाये सिर कर धर अपनाये हैं ॥
नाम श्याम चरन दास विदित जग सब ही के मन भाये हैं ।
सेवक संत महंत उपासक जीव अनेक बनाये हैं ॥
तिलक भाल तुलसी गलमाला पीत वसन छवि छाये हैं ।
सरस माधुरी जुगल कमल पद अविचल हिये वसाये हैं ॥

॥ पद ॥

श्री चरनदास प्यारेजी सरन मैं परी तुम्हारे जी ।
श्री मुरली धर के हो नंदन, श्री कुंजो सुत सब जग बंदन
संतन के चित चंदन सिर के छत्र हमारे जी ॥
शोभन वंश प्रशंसित कीनो, साधु रूप अति धरो नवीनो ।
वर कूँ पूरन कियो सत्य मुख वचन उचारे जी ॥

भक्ति भान जग में प्रगटायो, सोवत सब संसार जगायो
चरन शरन जो आयो भयो भव सागर पारे जी ॥
प्रेम भक्ति की वर्षा कीनी, त्रिविधि ताप सब की हर लीनी
बड़े बड़े कवि महिमां तुमरी करते हारे जी ॥
सरस माधुरी दीन दुखारी, कृपा करो जाऊँ बलिहारी
लीजे चरन लगाय अमित तुम पतित उबारे जी ॥

॥ राग सोरठ ॥

प्यारे श्याम चरन के दासा दरश दिखावना रे ।

जगमें तेरो दास कहायो, तूही इक मेरे मन भायो ।
निशि दिन मोकों तेरे ही गुन गावना रे ॥
चरण शरण तुम्हरी तक आयो, तुमरे ही मन ध्यान समायो ।
भव सागर सें मोकों पार लगावना रे ॥
प्रेम भक्ति अपनी प्रभु दीजे, यह विनती मेरी सुन लीजे ।
अपनों अनुचर कीजे भूल न जावनारे ॥
मेरे अवगुण चित न धारो, पतितन पावन विरद विचारो ।
अपनों जान उबारो नहि विसरावनारे ॥
अमरलोक निज धाम बसावो, रास विलास हुलास दिखावो ।
दंपति देहु मिलाय करो मन भावनारे ॥
सरस माधुरी शरण तुम्हारी, चरण कमल सों करो न न्यारी ।
युगल विहारी सेवा महल करावनारे ॥

॥ विनय ठेका कौवाली ॥

विनय कर जोर करूँ सुनलो रनजीत कुमार ।
श्री मुरली सुत कुंजो नंदन जीवन प्रान अधार ॥
श्री शुकमुनि के परम लाड़ले आचरज अवतार ।
जीव उवारन जग में आये भक्ती करन प्रचार ॥
युगल बिहारी तुमको भेजे निस्तारन संसार ।
अमरलोक से आप पधारे पतित उधारन हार ॥
मैं हूं शरण आपकी स्वामी आनपरो दरबार ।
शरणागत की लाज करोगे अपनी ओर निहार ॥
प्रेम भक्ति दो दान दयानिधि लीजिये नाथ सँभार ।
सरस माधुरी विरद भरोसे चरनदास सरकार ॥

॥ भैरों व भैरवी ॥

करुणा निधि कृपा सिंधु चरनदास स्वामी ।
दीनके दयाल और भक्तन प्रतिपाल प्रभु,
करते हैं निहाल विरद शरण पाल नामी ॥
अशरण के शरण त्रिविधि ताप जन्म मरण हरण,
अभय करन आनँद घन अमरलोक धामी ॥
प्रगटे हरि आज्ञा मान प्रेम भक्ति दीनी दान,
तारे बहु जीव महा दुष्ट कुटिल कामी ॥
सरस माधुरी निहोर विनवत युग पान जोर,
शीश निज नवाय करत पद्म पद नमामी ॥

॥ कालंगड़ा ॥

मेरे चरनदास मन माने ।
श्री शुक मुनि के परम प्यारे सबजग सुयश बखाने ॥
जोगी सिद्ध समाधी ध्यानी ज्ञानी गुरु कर जाने ।
रसिक अनन्यन के जीवन धन दंपति दरस दिवाने ॥
लगन मगन रंग भीने निशि दिन प्रेम मांहि मस्ताने ।
निज धामी निष्कामी नामी जगत प्रगट नहिं छाने ॥
श्री तिलक तुलसी गल माला पीतांबर वर बाने ।
सरस माधुरी श्याम राधिका तिनके हाथ बिकाने ॥

॥ प्रभाती, भैरों ॥

श्याम चरनदास नाम प्रातहि उठ गाऊँ ।
कृष्ण कला कलियुग में प्रगट भये महा प्रभो,
निरख नयन अतिही सुख परमानँद पाऊँ ॥
भृगुकुल के तिलक च्यवन वंश के विभूषन को,
सुयश भाष रसना सो नेंक ना अघाऊँ ॥
कहै सरस माधुरी श्री मुरली सुत जग वंदन,
कुंजो के नन्दन की चरण शरण जाऊँ ॥

॥ पद विहाग ॥

सुनो विनय स्वामी निजधामी श्रीमत श्याम चरन के दासा ।
तुम ही तारण तरण हरण दुख मो मनमें निश्चय विश्वासा ॥

भूल भजूं नहिं और देव को करूँ तुम्हारी सदा उपासा।
सब साधन फल शरण रावरी लई प्रीति कर करुणा रासा ॥
तन मन प्रान करों न्योछावर हिय में मेरे यह अभिलासा।
सरस माधुरी विरद भरोसे सदा मगन आनंद हुलासा ॥

॥ पद राग भैरों ॥

श्याम चरनदास सदा संतन सुखदाई।
शुक मुनि के शिष्य सकल शोभा शुभ गुन निधान
देत अभयदान दीनबन्धु रसिक राई ॥
हस्त कमल शीश धरत त्रिविधि संताप हरत
दरसावत सहजहि श्री राधिका कन्हाई ॥
बृन्दाबन कुंज धाम विहरें जहां प्रिया श्याम
टहल महल सोंप देत हैं तहां वसाई ॥
सरस माधुरी सरूप निरखत नैंनन अनूप
कुंज नृपति जुगल लाल देत हैं मिलाई ॥

॥ राग धुरपद चौताल, बिलावल ॥

श्याम चरनदास खास निरखो निज नैंनन तें बैठे
कर सभा मध्य सिंहासन राजें री ॥
पदवी बड भक्तराज संतन के शीश ताज
देख के सुतेज नृपति शाह अमित लाजें री ॥
हरियश नित होत गान उपदेशत ज्ञान ध्यान
भक्तिभान उदय कियो छवि अपार छाजें री ॥

सरस माधुरी सुजान दया कृपा गुण निधान
प्रेमामृत किये पान देखत दुख भाजें री ॥

॥ पद राग बिलावल चौताला ॥

श्याम चरनदास को निहार रूप नैनन सों
कोटि काम रती देख छवि को लजावें री ॥
मस्तक घुंघरारे बाल सोहत श्री तिलक भाल
टोपी सज शीश पीत फेंटा सुहावें री ॥
नीमा है जरद रंग तन में पहरें सुनंग
तुलसी और पुष्प माल ग्रीवा छवि छाजें री ॥
नैंना अति ही विशाल भृकुटी बांकी सुढाल
नासा अति सुंदर मंद होठन मुसकावें री ॥
धरें कटि पीतांबर रेशमी किनारदार
चरण चारु अरुण कंज मधुप मन लुभावें री ॥
अनुपम आजानु बाहु हस्त कमल लखि सुबाहु
मुद्रा कर ज्ञान उपदेश को सुनावें री ॥
सरस माधुरी सुअंग लखि लोचन भई उमंग
दर्शन कर भक्त रोग भव के मिटावें री ॥

॥ पद राग बिलावल, सोरठ ॥

विनय मोरी सुनो श्याम चरनदास जी ॥
कलि के कलेश टारो, भव समुद्र सें उबारो
दीजिये सहारो नेक करुणा की रास जी ॥

इंद्री मन शत्रु गन लूटत हैं भजन धन
लीजिये बचाय आय मेरी मेटो जम त्रास जी ॥
साधन न जानूं कृपा तेरी को वल मानूं
मो से मति हीन की तुम काटो भव पास जी ॥
अवगुण न निहारो निज विरद पतित पावन पारो
दया दृष्टि सें उधारो राखो चरनन के पास जी ॥
पिय प्यारी पद सेवा दीजिये दयाल देवा
करूं टहल महल मिलें कुंज में निवास जी ॥
हा हा वलिहारी में रावरो भिखारी
मेरी करो जू सँभारी देवो वृन्दावन वास जी ॥
सरस माधुरी है दासी नाम तेरे की उपासी
दरशन की प्यासी लखूं दंपति विलास जी ॥

॥ ग़ज़ल, रेखता ॥

सुनो स्वामी चरनदासा विनय तुमको सुनाऊं मैं।
दोऊ कर,जोर कर प्यारे चरन में सिर नवाऊं मैं ॥
सुरत जव सें संभारी है तुम्हारी आस धारी है
भरोसा मुझको भारी है तुम्हारा जन कहाऊं मैं ॥
पड़ा हूं मोह माया में अधिक दुख ने सताया मैं
तुम्हारे चरन को तज के कहो किस ठौर जाऊं मैं ॥
दया कीजे पतित जन पर करो प्रभु लाज निज पन पर
पतित पावन विरद पारो विपन में वास पाऊं मैं ॥

किये अनुचित करम अनगिन खबर ले कौन अब तुम बिन
वृथा जाते हैं मेरे दिन उमर योंही गुमाऊं मैं ॥
विषय जंजाल ने घेरा नहीं चलता है बस मेरा
भजन सुमरन नहीं बनता विपत किसको बताऊं मैं ॥
रसिक जन संत अनुरागी रहे जिनसों लगन लागी
बनू जब ही मैं बड़भागी परम सुख में समाऊं मैं ॥
दिखादो छवि जुगल प्यारी रहूं लखि प्रेम मतवारी
करूं तन मन मैं बलिहारी तुम्हारे गुन को गाऊं मैं ॥
करू शृंगार प्यारी को पिया बांके बिहारी को
दिखा दरपन खवा बीरी प्रिया प्रीतम रिझाऊं मैं ॥
सरस है माधुरी तेरी खबर लीजे प्रभु मेरी
महल दंपति टहल दीजे विरह विपता नसाऊं मैं ॥

॥ राग विहाग ॥

आसरो श्याम चरनदास चरन को ।
और उपाय नहिं कोऊ दीखत या भव सिंधु तरन को ॥
दृढ़ विश्वास आस इन ही की जाचक नाहि नरन को ।
टारी टेक टरे नहिं कबहूं भय नहिं जन्म मरन को ॥
जग में दासन दास कहाये नहीं अभिमान बरन को ।
सरस माधुरी संशय नांही है बल मोहि शरन को ॥

॥ राग सोरठ व पीलू वरवा ॥

श्री शुकमुनि के परम प्रिय शिष्य श्याम चरनदास गुन गाइये
तिनकी कृपा निकुंज भवन की सेवा सुख सर्वोपरि पाइये ॥
उज्ज्वल रस उन्नति अति अद्भुत निरखि केलि दंपति हुलसाइये
सरस माधुरी रस आचारज चरन शरन इनही की आइये ॥

॥ पद ॥

हमारे चरनदास गुरु ध्यान ।
इष्ट उपास आस इनही की सब विधि सुख की खान ॥
जो उपकार कियो करुणा निधि को करि सके बखान ।
चौरासी से काढ़ कृपा निधि दीनो पद निर्वान ॥
सन्मुख किये जीव हरि अनगिन प्रेम भक्ति दे दान ।
निर हेतुक हितकारी अति ही तिनके सम नहिं आन ॥
मो सम अधम अपावन हू की सुनि विनती निज कान ।
सरस माधुरी शरन लाज अब तुमको जीवन प्रान ॥

॥ पद राग चरचरी ॥

श्याम चरनदास नाम नित प्रति जप भाई ॥

चाहत जो जुगल प्रेम रटिये नित राख नेम
होय योग क्षेम मिलें राधिका कन्हाई ॥
चरण शरण रहो आन दृढ कर उर धार ध्यान
निश्चय कर जान बसे अमरापुर जाई ॥

पावे परिकर सुखास निरखें दंपति विलास
सरस माधुरी खवास प्रिया की कहाई ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

इष्ट श्याम चरनदास हमारे ।
श्री शुक सखी कृपा कर सिंचित रस विहार बिवि चंद उजारे ॥
शरनागत को करत कृतारथ दरशावत दोऊ प्रान प्यारे ।
सरस माधुरी तुमरे ऊपर रीझ भीज तन मन धन वारे ॥

॥ छप्पै ॥

व्यास पुत्र सुखदेव कृपा कर दर्शन दीने ॥
राधा कृष्ण उपास तिलक जो मुनि जन कीने ॥
पुनि इन्द्रप्रस्थ में आय सबहि पूजे अरु पुजाये ॥
जुगल रहस्य प्रेम अगाध अनंत परचे दरशाये ॥
अष्टांग योग को साधि कर दशम द्वार निज पुर गये ॥
कलि काल कठिन भरद्वाज मुनि चरनदास प्रगट भये ॥

॥ कुंडली छन्द ॥

प्रेम मंजरी वपु धरयो नाम श्याम चरनदास ।
भार्गव कुल भूषन कियो च्यवन वंश प्रकास ॥
च्यवन वंश प्रकाश व्यास सुत शुकमुनि स्वामी ।
किये आपने शिष्य भये जग में सरनामी ॥

अनगिन जिय उद्धार जग दियो अमर पुर वास ।

प्रेम मंजरी वपु धरयो नाम श्याम चरनदास ॥

॥ छप्पय ॥

भगवत धर्म प्रचार हित चरनदास प्रगट भये ।

व्यास सुवन शुकदेव मुनि शुकतार मिलाये ॥

तिनतें दीक्षा पाय बहुरि वृंदावन आये ।

सेवा कुंज निहार विहार स्थल पिय प्यारी ।

साक्षात है प्रगट मिले जहां जुगल विहारी ॥

इन्द्र प्रस्थ अस्थान कर अभय दान जीवन दये ।

भगवत धर्म प्रचार हित चरनदास प्रगट भये ॥

॥ पद ॥

चरनदास शुकदेव गुरु बिहारी विहारन पद भजो ॥

योग स्वरोदय सिद्ध तीन कालन के ज्ञाता ॥

अष्ट सिद्धि नव निद्ध सहज में सब के दाता ॥

नाना ग्रंथ विचार शिष्य देशन में कीने ॥

प्रेम संप्रदा प्रचुर साध्य साधन संग लीने ॥

कुंज केलि वर्णन करी इन्द्र प्रस्थ अस्थल सजो ॥

चरनदास शुकदेव गुरु विहारी विहारन पद भजो ॥

॥ पद ॥

कुंजो नंदन करुणा रासी ।

कृपा करो दुख हरो विरह को देवो मिलाय निकुंज विलासी ॥

अति आसक्त अधीर रहत नित अंखिया जुगल रूप की प्यासी।
सरस माधुरी की सुध लीजे जान नाथ चरणन की दासी ॥

॥ पद ॥

श्री मुरली सुत सुध मो लीजे ।
जुगल प्रेम परि पूरण अपनो, दीन जान स्वामी मोहि दीजे ॥
लगन युगल में मगन रहै मन, करुणासिंधु कृपा यह कीजे ।
सरस माधुरी वयस वृथा यह, विन अनुराग नेक नाहिं छीजे ॥

॥ पद ॥

श्री रणजीत जगत गुरु प्यारे ।
परम पूज्य प्रणातारत भंजन जन मन रंजन जक्त उजारे ॥
करो अनुग्रह दास जान निज श्रीमत मुनि शुकदेव दुलारे ।
सरस माधुरी जुगल चरण पर अपनो तन मन धन सब वारे ॥

॥ पद ॥

रंजीत जगत गुरु कृपा कर अमरापुर से जग आये हैं ।
श्री मुरली सुत कुंजो नंदन जग वंदन सब मन भाये हैं ॥
एसे हैं आप दया धारी निज भक्त जनों के हितकारी ।
पतितों के पावन करनेको भूतल में प्रभु प्रगटाये हैं ॥
शोभनजी को बरदान दिया इस कारण डहरे जन्म लिया ।
नादिया तट खेलत लड़कों संग शुकदेव मुनी दरसाये हैं ॥
हित कर लालन को गोद लिये दो पेड़े दे बहु प्यार किये ।
मुनिवर के तबही चरण छिये गुरु देव निरख हुलसाये हैं ॥

उन्नीसवे साल में श्रीस्वामी शुकतार गये अंतरयामी ।
श्री व्यास सुवन दरशन करके दीक्षा ले हिये हरषाये हैं ॥
दिल्ली में रहे जा गुफा बना कर जोग जुगत धुनि ध्यान लगा ।
पहुँचे जा सुन्न समाधी में निज गगन मंडल घर छाये हैं ॥
लाहूत सकां जहां अर्शवरीं जिसजापर खुद पहुँचे मुरशद ।
हुये नूर जहूर में जा शामिल वहदत पा वहां समाये हैं ॥
धर रूप अनेकों भारत में प्रभु भक्ति प्रचारी श्री हरिकी ।
प्रतीत करा परमेश्वर की भक्ताचारज कहलाये हैं ॥
दिये परचे शाहंशाहों को सीधे किये सब गुमराहों को ।
पूरण कर सबकी चाहों को दिलके भय भर्म मिटाये हैं ॥
श्रीवन जा सेवा कुंज रहे श्री दम्पति दरशन खास लहे ।
सखी रूप हो रास विलास रमें ले रस निकुंज तृपताये हैं ॥
अंशा अवतार श्री हरिके श्री नित्य बिहारी युगल वरके ।
जिसने किये याद जहां पहुँचे जग जीव अनंत चिताये हैं ॥
जो चरण शरण में चल आये मन वांछित फल सबने पाये ।
कहे सरस माधुरी जीत जनमको अंत परम पद पाये हैं ॥

॥ पद ॥

श्याम चरणदास अपनाओ कृपा कर ।
हा हा कर मैं पांय परत हों, चित चरनों में लगावो कृपाकर ॥
तुम्हरो उर विश्वास अधिक है, प्रेम सुधारस प्यावो कृपाकर ।
लगन लगाय लाडिली लालन, रसिक अनन्य बनावो कृपाकर ॥
जुगल बिहारी जीवन मेरे तिन्हें दिखाय जिवावो कृपाकर ।

दे निज टहल महल मनमानी परिकर मांहि मिलावो कृपाकर ॥
सरस माधुरी शरण तुम्हारी नवल निकुंज बसावो कृपाकर ॥

॥ पद ॥

जय जयति श्री जगत गुरु, रंजीत प्राण प्यारे ।
रसिकाधिराज स्वामी, हो इष्ट तुम हमारे ॥
निज धाम ही से आये, दम्पति ने तुम पठाये ।
हरि प्रेम हम को लाये, हम दास हैं तुम्हारे ॥
नर रूप धार आये, कुंजो कुंवर कहाये ।
मुरली के सुत सलोने, नैनों के आप तारे ॥
हरि भक्ति हिय भरोगे, हमरी तरफ़ ढरोगे ।
परिकर में प्रभु वरोगे, हो तुम दयाल भारे ॥
संकट सकल हरण हो, आनंद के करन हो ।
अधमों के उद्धारन हो, शुकदेव मुनि दुलारे ॥
निज जन के हो सहायक, सामर्थ सर्व लायक ।
रस केलि कुंज दायक, नैनों से हम निहारे ॥
निश दिन बसे दृगन में, है ध्यान तुम्हरा मन में ।
रख लो प्रभु शरण में, करिये न नेक न्यारे ॥
आचार्य धाम वासी, रस रास सुख विलासी ।
सरस माधुरी ने सरवस, तुम्हरे चरण पे वारे ॥

॥ पद ॥

चरणदास प्रभु की बलिहारी, राखो लाज महाराज हमारी ॥

उहरे नगर जन्म लियो स्वामी, अद्भुत लीला विस्तारी।
श्री शुकदेव मिले तुम्हें सतगुरु, कलि में हुवे कलाधारी॥
आस पास है बाग बगीचा, फूल रही है फुलवारी।
बीच बिराजे चरण पादुका, छतरी की शोभा भारी॥
जती सती दरशन को आवें, ध्यावें सब ही नरनारी।
संत महंत रहें सेवा में, गुण गावे दुनियां सारी॥
मन इच्छा फल सेवक पावे, जावें प्रभु की बलिहारी।
फूल पान मिष्टान चढ़ावें, नृत्य करें देकर तारी॥
प्रेम भक्ति सब जक्त प्रचारी, पतित किये बहु भव पारी।
सरस माधुरी साक्षात तुम, श्री कृष्ण हो अवतारी॥

॥ पद ॥

श्याम चरण के दास महाप्रभु चरण शरण लइ तेरी रे॥

सर्व पूज्य सरताज जक्त गुरु, लाज राखिये मेरी रे॥
दीन हीन दुखिया मैं भारी, आय परो प्रभु शरण तुम्हारी।
भव सागर में भय अति भारी, सुधि आ लेओ सवेरी रे॥
सुमरन भजन कछू नहीं कीनो, शुभ कर्मन में मन नहिं दीनो।
महा पतित पामर मोहि चीन्हो, मति माया ने घेरी रे॥
कृपा दृष्टि कर करुणा कीजे, सुधि मेरी महाराजा लीजे।
अविचल भक्ति दान मोहि दीजे, नैंक न कीजे देरी रे॥
निश दिन युगल लाल गुन गाऊँ, नाम जपूं नित ध्यान लगाऊँ।
परम धाम परिकर पद पाऊँ, रहूं निरन्तर नेरी रे॥

विनय सुनो रंजीता प्यारे, इष्ट देव हो आप हमारे ।
सरस माधुरी जनम जनम की, निज कर जानों चेरी रे ॥

॥ पद ॥

रंजीता प्यारा दरस तुम्हारा मन भावना ।
अजी हांजी म्हाने लागो छो सुहावना ॥

संत रूप धर अवतरे जी, कुंजो कूंख मझार ।
मुरली सुत मंगल करन, प्रागदास उरहार ॥
हरष थांका गांवां जी म्हे रहस बधावना ॥

भेजे श्यामां श्याम ने जीव करन उद्धार ।
जो जो जन आवें शरण, उतरें भवनिधि पार ॥
जगत गुरु जग जंजाल छुड़ावना ॥

प्रेम भक्ति प्रगट करन, हरण सकल भू भार ।
आचारज हो जक्त में, करो हरि धर्म प्रचार ॥
हमारी सुधि भूल विसर मत जावना ॥

इष्ट हमारे आप प्रभु, सब ही के सरताज ।
हम हैं निज जन आपके, तुम्हें हमारी लाज ॥
हमारे प्यारे सीस चरण परसावना ॥

भले बुरे हम आपके, आप हमारे नाथ ।
कृपा दृष्टि कर कीजिये, सब विधि हमें सनाथ ॥
हमारे स्वामी अवगुण पर मत जावना ॥

भक्त राज महाराज जी, तुम लग हमरी दौर।
चरण शरण बिन आपके, अंत नहीं कहिं ठौर॥
भरोसो थांको भारी म्हारी धीर बंधावना॥

युगल बिहारी लाल की जी, छवि दीजे दरसाय।
सर्स माधुरी सेवा देके, परिकर में पहुंचाय॥
निरख छवि निश दिन नयन छकावना॥

॥ पद ॥

यही है मेरे मनमें दृढ़ विश्वास, करोगे प्रभु मेरी पूरण आस॥
धरोगे स्वामी मेरी विनय पर ध्यान,
देओगे प्यारे निज वृंदावन वास॥
सलोनी सेवा दे निज बीरी पान,
रखोगे मोको युगल बिहारी पास॥
कृपा दृष्टि करके पोयोगे।
सफल सब करि हो हिय अभिलास॥
मिलावो मोको श्री शुक सखी परिकर में,
मनोरथ पुरवो करुणा रास॥
लखों नित लीला रास विलास,
ललित गुण गाऊँ उमँग हुलास॥
सरस चेरी रंजीता तेरी,
दया कर करहु विरह दुख नास॥

॥ पद ॥

भरोसो तेरो भारी रंजीत कुमार ।

श्री मुरली सुत कुंजो नंदन जीवन प्रान हमार ॥

जन्म लियो जग में जग करता भूमि उतारन भार ।

कलियुग के कलिमल मेटन को धरो मनुज अवतार ॥

बिमुख जीव सनमुख हरि कीने अनगिन नर अरु नार ।

भरतखंड में भक्ति प्रचारी पतित किये भव पार ॥

दीन जनन के दुख के हरता सुख करता सरकार ।

पतितन पावन परम दयानिधि अधम उधारन हार ॥

बिरद् बड़ाई सुन कर स्वामी आनपड़ो प्रभु द्वार ।

नैंक नजर करुणा कर देखो अपनी ओर निहार ॥

अविचल प्रेम भक्ति वर दीजे मांगों गोद् पसार ।

निज परिकर में बर मोहि लीजो संतन के सरदार ॥

सेवा सुख दे हरहु विरह दुख अवगुण नाथ निवार ।

सरस माधुरी शरण चरण की जानत सब संसार ॥

॥ पद ॥

मांगने वाले चलो मांगो दुआ आज की रात ।

बैठा छतरी में है महबूब बना आज की रात ॥

भक्ति का चांद उदय आज हुआ डहरे में ।

करलो दरशन ए चकोरो चलो तुम आज की रात ॥

प्रेम का फूल खिला गुलशनें शोभन में आज ।
भूमती फिरती यहां वादे सभा आज की रात ॥
कुंजो माता के गर्भ प्रगटे हैं रंजीत कुँवर ।
गा रहीं गान नवल नारी यहां आज की रात ॥
दे रहे दान नक़दो ज़र का श्री मुरलीधर ।
लेलो जो कुछ जिसे चहिये यहां आज की रात ॥
सबही मोहताज चलो आवो नगर ढहरे में ।
सदक़ा हरि नूर का मिलता है यहां आज की रात ॥
दौड़ कर आवो यहां द्वार खुला मुक्ती का ।
पहुँचो निज धाम सरस काम बना आज की रात ॥

॥ पद ॥

क्या मनोहर मूरती रंजीत की मन की हरन ।
है सलोनी सांवरी सूरत सरस गोरे बरन ॥
चंद सा चहरा प्रकाशित सरपे लंबे बाल हैं ।
छारही अद्भुत छटा चहरे पे आनंद की करन ॥
प्रेम मदमाते नशीले नैन मद हर मैन के ।
नासिका सुन्दर मधुर मुसकन हरन जिय की जरन ॥
ध्यान इन का जो धरें संताप अरु दुख को हरें ।
सहज भव सागर तरें नाहिं होवे फिर जीवन मरन ॥
परम पावन कंज से कोमल चरण तारन तरन ।
सर्स दम्पाति दर्स देवें जो रहैं इनकी शरन ॥

॥ पद ॥

प्यारे श्याम चरण के दास हमें हितकर अपनावोजी ॥
ध्यान मानसी मांहि महा प्रभु बेगा आवोजी ।
श्यामा श्याम उमंग रंग से संग में लावोजी ॥
दरशन की प्यासी हैं अंखियां मत तरसावोजी ।
कुंज विहारिन कुंज बिहारी आन मिलावोजी ॥
लाल लडेती सों तुम स्वामी लगन लगावोजी ।
प्रेम प्रीति का प्याला प्रीतम भर भर प्यावोजी ॥
अमर लोक अविचल हमको बास बसावोजी ।
अष्ट याम की सारी सेवा आप करावोजी ॥
रास विलास हुलास निरंतर नयन दिखावोजी ।
रस भरी राग रागनी नई नई श्रवण सुनावोजी ॥
सखी सहेली मन मेलिन के संग रखावोजी ।
परमानंद प्रेम परि पूरण हिय प्रगटावोजी ॥
नाचो गावो आप प्रेम सो हमें नचावोजी ।
सरस माधुरी श्री दम्पति के रंग रचावोजी ॥

॥ पद ॥

रोशन है नाम विश्व में रंजीत तुम्हारा, मनजीत तुम्हारा ।
अवतार धार आपने जीवों को उबारा, भव सिंधु से तारा ॥
श्री कृष्ण अंश आप हैं मा बाप हमारे ।
हमको तो फ़कत आपके चर्णों का सहारा, किया सबसे किनारा॥

भक्तों ने किया याद जहां पहुँचे वहां तुम ।
दरशन को देके दुख सकल उनका निवारा, अवगुण न निहारा ॥
संतों की करी आपने हर वक्त में रक्षा, दुष्टों को दी शिक्षा ।
हरि भक्ति को इस जक्त में तुमने ही प्रचारा, अधरम को है टारा ॥
हामी हो मदद गार हो प्राणों के हो प्यारे, सरकार हमारे ।
निज मुख से यह कह दीजे सरस तू है हमारा, तब ही हो गुज़ारा ॥

॥ पद ॥

गौर तन मन के हरन कुंजो के नंदन प्यारे ।
मुरलीधर दास सुवन नेनों के हो तुम तारे ॥
प्रयागदास जी दादा के बड़े भाग जागे ।
जिन के घर जन्मे स्वयम कृष्ण मनुज तन धारे ॥
भारगव वंशमें हरि अंशने अवतार लिया ।
भक्ति शोभन की फलीभक्त बचन प्रतपारे ॥
पुरकी सब नारी हुईं वारी निरख छबि रंजीत ।
प्रेम के रंग रची आय नची सब द्वारे ॥
देश मेवात में दिन रात है घर घर मंगल ।
बज रहे बाजे विविध भेरी ढोल नक्कारे ॥
डहरे निज धाम की शोभा का नहिं वारापार ।
छारही नभ में घटा बरसे है अमृत धारे ॥
हर तरफ़ भूमि हरी बाग़ हरे बृक्ष हरे ।
नाचे हैं मोर करैं शोर भृंग गुंजारें ॥

गारहे गान गुणी जन हैं सकल मन में मगन ।
भक्त जन प्रेम भरे जय जय करैं धुनि सारे ॥
वाह क्या आज जनम दिन का यह दिलकश जलसा ।
सरस नयनों से निरख हर्ष के सरवस वारे ॥

॥ पद ॥

देर से हम दरे दौलत पै सदा देते हैं ।
देखें रंजीत मेरे अब मुझे क्या देते हैं ॥
अपने बन्दों को बना देते हैं दम में सुलतां ।
आप बिगड़ी हुई तक़दीर बना देते हैं ॥
सुन के मैं नाम बड़ी दूर से आया हूँ हुजूर ।
आप कर रहम नज़र प्रेम पिला देते हैं ॥
अपनी रहमत से करो मुझ पै चरण का साया ।
बनके मुहताज तेरे दरपे सदा देते हैं ॥
दस्त बस्ता तेरे दरबार में हाज़िर है सरस ।
आप निज दास को दंपति से मिला देते हैं ॥

॥ पद ॥

रंजीत जी दरस दो छबि के दिखाने वाले ।
सुंदर छबी दिखादो चित के चुराने वाले ॥
नदी के तट पे खेले लड़कों को संग लेले ।
प्रगटे थे शुक मुनी वहां पेड़े खिलाने वाले ॥

लड़की से तुमने लड़के पल में बना दिये हैं ।

पूरण की लाज रखली करज़ा चुकाने वाले ॥

तुमने जो तीन खन से देखा गिरा वह बच्चा ।

हाथों पै ले लिया तब मँहदी लगाने वाले ॥

शेरों को शिष्य बनाया शाहों ने पांव चूमे ।

आंवल के वृत्त से तुम मोहरें गिराने वाले ॥

जादू का ज़ोर तुम पर कुछ भी नहीं चला था ।

चादर बिछा कुवे पर मंतर सुनाने वाले ॥

परचा दिया मुहम्मद शाह को वह तुमने लिखकर ।

छै छै महीने पहिले ख़बरें सुनाने वाले ॥

नादिर की तुमने कलंगी कुदरत से थी उड़ाई ।

मँझधार नाव डूबी जिसके बचाने वाले ॥

नादिर ने करके गुस्सा डाली थी पांव बेड़ी ।

नादिर को देके ठोकर उसको जगाने वाले ॥

माता को तुमने पल में दंपत दरस दिखाया ।

फिर साथ उनको लेके गंगा न्हिलाने वाले ॥

मुर्दों को भी जिलाया भय भर्म से छुड़ाया ।

जयपुर नरेश के हो तुम शिष्य बनाने वाले ॥

थे दस हजार साधू भोजन तो दो ही मन था ।

दो मन बना रहा सब सब के खिलाने वाले ॥

शिष्यों की टेर सुन कर जा जा के एक दम में ।

हर एक की लाज रखली स्वामी कहाने वाले ॥

तुम्हरे शरण में आये जितने चरण के सेवक ।
जागीर सब ने पाई औ नाम पाने वाले ॥
निज साधुओं की तुमने पूरन करी है इच्छा ।
निज कृष्ण रूप बन के दरशन कराने वाले ॥
तुमको विरहमनों ने जब बैजनाथ माना ।
श्री जल चरण पखाले आनँद मनाने वाले ॥
दो पंडित आये दहली उनका भी भर्म मेटा ।
शहतूत सूखी लकड़ी जिसके लगाने वाले ॥
आतम शरण में आये जमदूत जब दिखाये ।
ऐसे विमुख जनन के हरि जन बनाने वाले ॥
केशव जो दास था निज जपता तुम्हारी माला ।
करके दया खुद उसका बंधन छुड़ाने वाले ॥
परीच्छतपुरे पधारे बरसों ही गुप्त रह कर ।
जगन्नाथ रूप में तुम दरशन दिखाने वाले ॥
वृन्दा विपिन पहुँच कर सेवा निकुंज भीतर ।
सखी रूप रास लीला आनंद पाने वाले ॥
भगवत का धर्म तुमने संसार में चलाया ।
अन्धों की आंख खोली रस्ता बताने वाले ॥
अद्भुत तुम्हारी लीला कुछ अन्त ही नहीं है ।
चोदह बरस समाधी निरभय लगाने वाले ॥
पतितों के तारने को आये हैं आप जग में ।
धन धन है तुमको भक्ती सागर बनाने वाले ॥

मैं हूं अनाथ पापी तुम हो अनाथ रक्षक ।
प्रीतम हो तुम सरस के दुख के मिटाने वाले ॥

॥ पद ॥

श्याम चरण के दास चरण की शरण गहो सब भाई रे ।
स्वयं श्याम आचार्य्य रूप धर इहर प्रगट आई रे ॥
कोटि चन्द्र सम शीतल वाणी, श्रवण करत शीतल हो प्राणी ।
कोटि भानु सम ज्ञान उदय हो, हिये तम जात नशाई रे ॥
कोटि उदधि सम है गँभीर चित,अमृत सम बोलन कारक हित ।
कोटि मातु सम प्यार करें प्रभु, आश्रित जन सुखदाई रे ॥
कोटि कुवेर समान उदारा, चार पदारथ के दातारा ।
आरत जन रक्षक हैं स्वामी, दृढ़ निश्चय मन लाई रे ॥
शिव ब्रह्मादिक तरसैं देवा, रंग महल दंपति पद सेवा ।
निज जन को निज हित कर देवें, ऐसी है प्रभुताई रे ॥
संसृत शोक हरें ततकाला, ऐसे हैं सामर्थ दयाला ।
तिनके नाम की फेरो माला, प्रीति प्रतीति बढ़ाई रे ॥
अजर अमर कर अमृत प्यावें, अमरलोक में वास वसावें ।
जहां गये जग बहुर न आवें, हरि लखि हों मगनाई रे ॥
भरम भूल में मत भटकावो, स्वामी शरण गहो सुख पावो ।
नहीं अंत में अति पछतावो, चूक दाव जब जाई रे ॥
माया दल जीतन को आये, जन्म नाम रंजीत धराये ।
सरस माधुरी के मन भाये ; छवि रही नयन समाई रे ॥

॥ पद ॥

तुम्हारी सुंदर सूरत प्यारी, श्री रंजीत लला बलिहारी ॥
प्यारे तुम कृष्ण अंश अवतारी, है प्रभुता तुम में भारी ।
लाल तेरी लीला अपरंपारी, गुण गावत रसनाहारी ॥
जगत में कीरत बहु विस्तारी, शरण में आये बहु नरनारी ।
पतित कीने अनगिन भवपारी, दया तुम्हरे उर अंतर भारी ॥
मात कुंजो के प्राण अधारी, पिता मुरलीधर के सुखकारी ।
धाम से भेजे प्रीतम प्यारी, जगत में प्रेमा भक्ति प्रचारी ॥
रसिक आचारज पदवी धारी, आप हो जीवन मूर हमारी ।
इष्ट तुम हमरे हो हिंतकारी, सरस माधुरी चरण पर वारी ॥

॥ पद ॥

बिनती मेरी सुनो तुम रंजीत मुरली नंदन ।
रसिकों के प्राण प्यारे भक्तों के चित के चंदन ॥
निज धाम से पधारे, दंपति के प्राण प्यारे ।
आचार्य्य हो हमारे, आनंद के हो कंदन ॥
भक्ती प्रचार करने, अवतार धार आये ।
अधमों के उद्धरन हो, तुमको अनंत बंदन ॥
अनुचर हमें करोगे, आवागमन हरोगे ।
परिकर में प्रभु वरोगे, मेटोगे दुःख द्वंदन ॥
है सरस खास दासी, चरणों की है उपासी ।
रस रास के बिलासी, गाये हैं गुण सु छंदन ॥

॥ पद ॥

तुमहो जन्म सुधारन हार सहा प्रभु चरणदास सरकार ॥

अमरलोक से आप पधारे आचारज अवतार ।
पतित जनन के पाप हरन को मन में कियो विचार ॥
माया के बंधन के मांही बंध्यो सकल संसार ।
बंदी छोड़ आप भये स्वामी जीव किये भव पार ॥
भर्म निशा में सोय रह्यो जो भूल गये करतार ।
दें उपदेश जगाये आपने ऐसे परम उदार ॥
माया प्रबल जीत के तुमने भक्ती करी प्रचार ।
याही तें रंजीत आपको करें नाम उच्चार ॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि आपके भरे रहैं भंडार ।
जो मांगे जाको तुम देवो ऐसे हो दातार ॥
अपने जन की आप करत हो पल पल मांहि सँभार ।
संकट काट सहाय करो तुम दीन वन्धु दुख हार ॥
अशरण शरण अधम उधारन सुनिये नाथ पुकार ।
सरस माधुरी की सुधि लीजे आन परी है द्वार ॥

॥ पद ॥

श्रीमत रंजीत लाल मुरलीधर नंदना ।
कुंजो के कुँवर आप आनंद के कंदना ॥
भेजे श्री श्यामा श्याम, प्रगट करन लीला धाम ।
नाम रूप अति ललाम भक्तन चित चंदना ॥

रसिकन की रहनि रीत, श्रद्धा विश्वास प्रीत ।
दीजिये दयाल आप मेटो दुख द्वंद्‌ना ॥
रंग महल रस विलास, होत जहां नित्त रास ।
परिकर में दीजे वास प्यारे तुम मुकंद्‌ना ॥
सरस माधुरी निहार तन मन धन दीनो वार ।
सीस को नवाय करे चरण कमल बंद्‌ना ॥

॥ ग़ज़ल ॥

जय जय रंजीत कुंवर कुंजो के नंदन प्यारे ।
मुरलीधर दास सुवन वनके आप अवतारे ॥
दास शोभन को दिया रीझ के वर जो तुमने ।
पीढी अष्टम में प्रगट होके बचन प्रतपारे ॥
होके आचार्य्य हरो भार आप भूमी का ।
तारो संसार करो पार पतित जन सारे ॥
प्रेम भक्ती का करो दान कृपा करके प्रभू ।
अपने निज दास बना रखिये चरण के लारे ॥
तुम से लग जावे लगन करदो मगन मन भावन ।
रैन दिन छवि को निरख जग में फिरें मतवारे ॥
ध्यान हिरदे में रहै नाम रटे नित रसना ।
सर्स मांगे है यही दीजे दयालू भारे ॥

॥ पद ॥

जय जय श्री महाराज जगत गुरु, चरणदास प्यारे ।
प्रभु चरणदास प्यारे ॥

रूप अचारज धारे जग जिय निस्तारे ॥

भृगुकुल में प्रभु प्रगटे पापी बहु तारे ।

लीला ललित तुम्हारी गुण गावत हारे ॥

कृष्ण अंश करुणानिधि स्वामी कलि में अवतारे ।

चर्ण शर्ण जो आये जन्म मरण टारे ॥

ज्ञान जोग वैराग भक्ति के हो देने वारे ।

चार पदारथ दाता भक्तन रखवारे ॥

अष्ट सिद्धि नव निद्धि तुम्हारी खड़ी रहैं द्वारे ।

चर्ण तुम्हारे सेवैं त्रिभुवन उजियारे ॥

संत जनन के सरवस धन हो रसिकन हितकारे ।

प्रेमिन के तुम प्रीतम नयनन के तारे ॥

दीन जनन के दुख के भंजन हो दयाल भारे ।

सब में तुम व्यापक और सब से न्यारे ॥

कुंजो मात दुलारे मुरलीधर बारे ।

सरस माधुरी तुम पर तन मन धन वारे ॥

चरणदास प्यारे ॥

॥ सोरठ कालंगड़ा व भैरवी ॥

मेरे चितमें बसे श्याम चरणदास, मैं नाम जपूं प्रति स्वास स्वास॥

निज वृंदावन रंग महल जान, तहां प्रेम मंजरी लेहु पिछान।

जग आय अवतरी करुणा रास ॥

दंपति पठई अति प्रीति ठान, निज प्रेम भक्ति को करन दान।

भृगुवंश च्यवन कुल कियो प्रकाश ॥

श्री व्यास सुवन शुक मुनि दयाल, दे गुरु दिक्षा कीने निहाल।
तिनकी कृपा भयो हिये हुलास ॥
शुक संप्रदाय जग प्रगट कीन, किये रसिक हरि भक्ति लीन।
दियो अचल अमरपुर माँहि वास ॥
नित रंग महल में रस विलास, जहां होत अखंडित नित्त रास।
निज जन पहुंचाये जुगल पास ॥
कोऊ तार दिये दै आत्मज्ञान, काहू दियो बताय जप योग ध्यान।
बहु मुक्त किये जी अनायास ॥
जाको जस देखो संस्कार, ताको कियो कृतार्थ तिहि प्रकार।
करी सब की पूरन मन की आस ॥
जो अनुरागी लीनें पिछान, तिन्हें दई भावना रस की खान।
पाई पदवी सहचरी खास ॥
कहै सरस माधुरी कर निहोर, बिनवत है दोऊ कर जोर जोर।
निज चरन निकट दीजे निवास ॥

॥ परभाती ॥

जय जय श्री श्याम चरनदास प्यारे ॥

आचारज रसिकराज मंडन संतन समाज।
भक्तन के शीश ताज इष्ट हो हमारे ॥
च्यवन वंश कियो प्रशंस, पूज्यनीय परम हंस।
शुक मुनि महाराज शिष्य जक्त के उजारे ॥

राजत श्री तिलक भाल कंठ रुचिर तुलसि माल ।
पीत वसन अति पुनीत अंग मांहि धारें ॥
छके रहत जुगल ध्यान कृपा करुणा निधान ।
सरस माधुरी के प्रान तन मन धन वारें ॥

॥ परभाती ॥

मेरे श्री श्याम चरनदास आश तेरी ।
तुमही हो गति मति मम कहौं प्रगट टेरी ॥
तुम ही हो अधमन उद्धारन भव तारन प्रभु ।
काटन को आश्रित जन कर्म वन्ध वेरी ॥
पतितन के पाप हरन मंगल आनंद करन ।
त्रिविधि ताप मेटन को करत नांहि देरी ॥
अभिमत फल करत दान भाव भक्ति लेत मान ।
सर्वगुन निधान सुमति देत हो सवेरी ॥
सरस माधुरी की वार करो ना अँवार नाथ ।
विरद को विचार रखो चरनन के नेरी ॥

॥ तमाशे की चाल में ॥

जय जय श्याम चरण के दास हमारे आचारज हो खास ॥

गौर वरण मन हरण महाप्रभु मूरत परम प्रकास ।
श्री तिलक मस्तक पर राजै पहरे पीत लिवास ॥
नख शिख सोहन विश्व विमोहन मंद मंद मृदुहास ।
प्रेम भरे नैंना हैं जिनके अद्भुत आनँद रास ॥

रसिक शिरोमणि संत जक्त गुरु हिय में हर्ष हुलास ।
मगन मानसी ध्यान रैन दिन निरखैं जुगल विलास ॥
देवें अचल बास बृंदाबन निश्चय यह मन आस ।
सरस माधुरी दंपति सेवा मिल है दृढ़ विश्वास ॥

॥ पद ॥

आचारज अवतार छो चरनदास हमारा ॥

आचारज अवतार छोसजी कलियुग में प्रगटाया ।
श्री शुकदेव संप्रदा थापी तारन तरन कहाया ॥
जो जो जन शरणागत आये दंपति तिन्हें मिलाया जी ॥च०॥
निरधनयां ने धन दियासजी, पुत्र हीन संतान ।
दुखिया सुखिया कीना सारा, महा दया की खान ॥
रंक राव कर दीना छिनमें ऐसे कृपा निधान जी ॥ चरन० ॥
चार धाम और सतपुरी में, अड़सठ तीरथ सारा ।
भक्ति प्रचारन रूप अमित धर, प्रभुजी आप पधारा ॥
जो जो इच्छा करी जिन्होंने काज सभी का सारा जी ॥चरन०॥
ज्ञान जोग वैराग भक्ति, हरि दई दया कर दान ।
करी जाचना ज्याने जैसी, सब के राखे मान ॥
प्रेम परा भक्ती प्रगटाई, कियो जक्त कल्याण जी ॥चरन०॥
चरण शरण में आपकीस जी, जो कोई चल आया ।
चार पदारथ पाय सहज में, जीवन मुक्त कहाया ॥
सरस माधुरी सुखी हुया सोइ अंत परम पद पाया जी ॥च०॥

॥ पद ॥

भक्तराज महाराज हमारे ।
श्याम चरण के दास खास तुम मुरली सुत कुंजो के बारे ॥
पूरण करो मनोरथ मन के निज जन के प्रभु हो रखवारे ।
सरस माधुरी श्याम राधिका नयनन वसें टरें नाहि टारे ॥

॥ पद ॥

चरण दास स्वामी वलिहारी ।
स्वयं श्याम नर तन धर प्रगटे प्रेम भक्ति सब जक्त प्रचारी ॥
नाना रूप धार के विचरे किये कृतारथ बहु नरनारी ।
सरस माधुरी श्याम राधिका नाम दान दे सृष्टि उबारी ॥

॥ पद ॥

डहरे जन्मे हैं महाराज जगत गुरु आचारज अवतार ॥
आये हैं हरि आप धाम से रूप संत को धार ।
प्रगट करें शुक मुनी संप्रदा हरैं भूमि को भार ॥
नवधा प्रेम परा भक्ति को जग में करैं प्रचार ।
जीव अनंत उबारें स्वामी संकट दें सब टार ॥
चरण शरण में जो जन आवे तिनको लेंहि उबार ।
जीवन मुक्त बनावें सबको कहा पुरुष कहा नार ॥
श्री हरि नाम कीर्तन कलि में करै प्रभु विस्तार ।
पहुँचावें परम धाम जनन को जहां जुगल सरकार ॥

रास बिलास दिखावें निश दिन दंपति नित्य बिहार।
सरस माधुरी इष्ट हमारे श्री रंजीत कुमार ॥

॥ पद ॥

रंजीता प्यारा कुंजो का लाला।
मुरली सुत लागो छो बाला ॥
चंद सो मुख मनहर थांको।
कमल दल नयन हैं मतवाला ॥
तिलक श्री मस्तक पर सोहे।
भौंहें सम धनुष अजब आला ॥
पीत पोशाक पहर तन में।
गले में तुलसी की माला ॥
शीश पर घूंघर वाले बाल।
सचिक्कन अति सुंदर काला ॥
नासिका है मन मोहन हार।
मंद मुसकन जादू डाला ॥
कृपा कर चर्ण शरण लीजे।
पिलादो प्रेम प्रीति प्याला ॥
मिलादो श्री दंपति सम्पत।
दिखादो दरशन छबि जाला ॥
आचारज हो श्री हरि अवतार।
सरस के हो प्रभु प्रतपाला ॥

॥ पद ॥

मेरे रंजीता प्यारे मुरलीधर वारे मो मन में अति भावत हो।
मैं तो ध्यान धरूँ और पांव परूँ मेरे स्वामी तुमही कहावत हो॥

॥ शेर ॥

लिया है मुरली के अवतार मुरली वाला है।
तुम्हारा रूप यह आचार्य्य खूब आला है॥
नुकीला भाल तिलक पीत क्या निराला है।
तन में पोशाक ज़र्द तुलसी गल में माला है॥
तुमतो नंदनदन बृज चंद दुलारे कुंजो कुंवर कहावत हो॥
तुम्हारा गौर बरण मनको हरने वाला है।
अमर नगर में यही रास करने वाला है॥
अनंत रूप जगत में यह धरने वाला है।
सुना है भक्तों का बहु दुःख हरने वाला है॥
तुम तो ललित त्रिभंगी अंग छिपाकर संतरूप धर आवत हो॥
वह सर्स माधुरी झांकी जो बांकी प्यारी है।
उसके बिन देखे मेरे दिल को बेक़रारी है॥
तुम्हारा रूप वही दूसरा बिहारी है।
दिखादो उसको ज़रा यह अर्ज़ हमारी है॥
मैं तो जान लिया तुम्हें कुंज बिहारी चरणदास दरसावत हो॥

॥ पद ॥

निरखोरी नवेली सारी, जन्मोत्सव की शोभा भारी ॥

मास भादों मुदकारी, तीज शुक्ला सुखकारी ।
भूमि चहुं दिश हरियारी, चरण गंगा बहे प्यारी ॥
नाचत मोर शोर कर बोलें घटा घुमड़ बिजली चमकारी ।
ध्वजा पताका सुंदर सोहन मंडप मनहर खूब सजाया ।
बांधी बंदन माल सुहावन जिसने देखा सोई हरषाया ।
बाजत बीन मृदंग मजीरा जिसने सबका चित चुराया ।
गुणी जन गान तान को सुन के सारा रसिक समाज छकाया ।
प्रगट भये श्री रंजीता, भया सब मन का चीता ।
कहैं यह हरि के मीता, भई मन प्रतीता ॥
कुंजो नंदन, आनंद कंदन, सब जग बंदन, पाप निकंदन ।
सरस माधुरी लख भई वारी ॥

॥ पद ॥

श्री रंजीता हरि के मीता अमरलोक से आये हैं ।
कृष्ण अंश भृगुवंश प्रगट हो आचारज कहलाये हैं ॥
धन धन जान पिता मुरलीधर धन कुंजो जिन जाये हैं ।
धन धन नारी पुर की सारी जिनने गोद खिलाये हैं ॥
धन धन दादा प्राणदास जी जक्त प्रसिद्ध कहाये हैं ।
संत रूप हरि भक्ति प्रचारन अपने दरस दिखाये हैं ॥

नींद अविद्या में जो सोये जिनको आय जगाये हैं ।
दे उपदेश दयाल कृपा कर हरि की और लगाये हैं ॥
भरतखंड के नर ओर नारी सब हरि भक्त बनाये हैं ।
सरस माधुरी दया दृष्टि कर परम धाम पहुँचाये हैं ॥

॥ पद ॥

आरती कर श्याम चरणदास की ।
जो इच्छा निज धाम बास की ॥
मुरली सुत श्री कुंजो नंदन प्रागदास के कुल उजास की ॥
शोभन वंश प्रशंस प्रभाकर सम्प्रदाय शुक जिन प्रकाश की ॥
गोर बरण मन हरण अनुपम पीत वसन मुख मृदुल हास की ॥
पतितन पावन करन दयानिधि चरण शरण नित रहो जास की
होय सहचरी पिय प्यारी की महिमा अतुलित भाग तास की ॥
पावे टहल महल मन मानी निरखे लीला नित्त रास की ॥
श्री ठाकुर बलदेवदास गुरु सुनि बानी उन हिये हुलास की ॥
तिन उपदेश लगन लहराई दंपति सेवा रहन पास की ॥
सरस माधुरी कहत जोर कर दीजे सेवा चरण खास की ॥
तिन प्रताप अनयास मिले मोहि संपति दंपति के बिलास की ॥

॥ पद ॥

श्याम चरणदासा धाम पधारे ।
मंगशिर बदी सप्तमी दिन बुध हो कर दसवे द्वारे ॥

संवत अठारह सौ के ऊपर उंतालीस विचारे ।
अरुणोदय पहिले तन तजि के स्वामी सहज सिधारे ॥
लिये बुलाय लाडली लालन जान प्रान के प्यारे ।
निज संतन के परम सनेही रखत नहीं छिन न्यारे ॥
अमरलोक अभिराम धाम निज श्यामा श्याम निहारे ।
चरन छुवा नयनन छवि निरखी हिल मिल हित विस्तारे ॥
भर निज अंक रंक के धन ज्यों भेटे भुजा पसारे ।
जो सुख भयो कह्यो नहिं जावे रसना कहा उचारे ॥
अति उपकार कियो करुणा निधि अगनित जन निस्तारे ।
सेवक संत अनंत बनाये कीने भव निधि पारे ॥
भुक्ति मुक्ति गति देंन महा प्रभु पतित उधारन हारे ।
आश्रित जीव जहां लग जग में सबके नित रखवारे ॥
मिलि है टहल महल मन मानी दृढ़ विश्वास हमारे ।
सरस माधुरी संशय परिहर सोवत पांव पसारे ॥

॥ पद ॥

गये निज धाम हमारे स्वामी ।
सबको कर कल्यान कृपा निधि निरमोही निष्कामी ॥
दे उपदेश उबारो सब जग पतित उधारन नामी ।
अविचल बास दियो सबहिन को अमरलोक निज धामी ॥
भावाधीन भक्त वत्सल प्रभु सब उर अंतरयामी ।
सरस माधुरी जोर दोऊ कर हित सों करत नमामी ॥

॥ श्रीमत प्रेम मंजरी महत्व पद मंजु छन्द ॥

श्री स्वामिनी अभिरामिनी यूथेश्वरी सुकुमारी है।
अमरलोक से आय प्रगट भई प्रेम मंजरी प्यारी है॥

प्रेमहि प्रिये प्रिया प्रीतम को वेदन कह्यो पुकारी है।
मूरति प्रेम जुगल की जीवन होत नहीं छिन न्यारी है॥

प्रेम बिबस अवतार लेत हैं युग युग प्रान अधारी है।
प्रेमी जन के रिणी कहावें श्याम सुंदर गिरधारी है॥

प्रेमहि की महिमा को भाषत वेद पुरान पुकारी है।
सोई प्रेम मूरति मन भावन निज स्वामिनी हमारी है॥

प्रथम भाद्र पद जन्म अष्टमी प्रगटन दिन बनवारी है।
भादों सुदी अष्टमी को श्री श्यामा जू अवतारी है॥

उभय अष्टमी बीच तीज तिथि जन्मी जग दुखहारी है।
जुगल लाल की परम लाड़ली रसिकन रस दातारी है॥

नंद गांव बरसाने बिच ज्यों प्रेम सरोवर भारी है।
त्योंही प्रेम मंजरी जानो सोई हम नैंन निहारी है॥

प्रेम जुगल सोइ प्रेम मंजरी यह निश्चय उरधारी है।
प्रेम इष्ट प्रिया प्रीतम के रसिकन बात विचारी है॥

प्रेम विवस अनुराग भरे रहें नित प्रत उभय खिलारी है।
दोऊ प्रेम आधीन दिवस निश ज्यों जल मीन उचारी है॥

जहां प्रेम तहां आप जांय चल लीला जग विस्तारी है।
प्रेमहि के साधक आराधक प्रेम रत्न व्योपारी है॥

उल्फत इश्क प्रेम कहलावे आशिक का हितकारी है।
योग ज्ञान वैराग सबन से इसकी पदवी भारी है॥
रति सनेह अरु प्रणय राग अनुराग रूढ़ उच्चारी है।
अधिरूढ़ा मोदन मादन उनमाद सुदस पर कारी है॥
अमित नाम गुन ग्राम जिन्हों के आचारज वपुधारी है।
सरस माधुरी तिनके ऊपर तन मन सों बलिहारी है॥

॥ दोहा ॥

प्रेम मंजरी अवतरी, भू मण्डल में आय।
भेजी श्यामा श्याम ने, रसिकन करन सहाय॥
नख शिख मूरत प्रेम की, महिमा कही न जाय।
सरस माधुरी छवि निरख, नैना लिये छकाय॥

॥ पद ॥

महल ते प्रेम मंजरी आई।
करुणा कर कलि के जीवन पर दंपति आप पठाई॥
प्रगट भई भृगुवंश च्यवन कुल सुन्दर परम सुहाई।
भादों तीज सुदी दिन मंगल घर घर भई बधाई॥
फूले फिरें रसिक रंग भीने रंक मनो निधि पाई।
रस की रीति प्रीति प्रगटावन जन्मी हैं सुखदाई॥
निज परिकर की जान सुख सखी दर्शन दे अपनाई।
सरस माधुरी चरन दासि के चरनन पर बलिजाई॥

॥ राग सारंग ॥

जय जय श्याम चरन की दासी ।
परमारथ हित भूतल प्रगटी अति करुणामय आनँद रासी ॥
प्रेम मंजरी नाम धाम में पिय प्यारी की करत खवासी ।
नित नव नेह नई नई रुचि ले सेवत युगवर कुंज बिलासी ॥
श्री शुक संप्रदाय प्रगटाई कियो कृतारथ जग अनयासी ।
पतितन पावन अधम उधारन करुणा सिंधु सहज सुख रासी ॥
कलियुग में सतयुग विस्तारो भूल विमुखता सब की नासी ।
रसिक शिरोमणि और अनन्यवर किये सकल हरिपद के वासी ॥
कर उपकार पधारे निजपुर जहां विलसत दंपति रस रासी ।
भीनी रहत जुगल छवि निधि में पुलकित अंग उमंग हुलासी ॥
मन विश्वास धार उर दृढता है तुमरो जो इष्ट उपासी ।
निश्चय मिले जुगल परिकर में पदवी पाय सहचरी खासी ॥
श्री गुरु अलि वल्देवी मो सों गुप्त रहस रस रंग प्रकासी ।
सरस माधुरी जान आपनी करो मोहि दासिन की दासी ॥

॥ राग सारंग ॥

श्याम चरन दासी जय कहिये ।
जिनको नाम जपत आनँद निधि अनयासहि अलि पदवी लहिये
श्री शुक अली प्राण प्यारी के नित नव गुन रसनां सों गइये ।
रखिये आस भरोस इन्हि को भूल भरम इत उत नहि बहिये ॥

श्री शुक सखी चरन दासी को ध्यान भजन उर अंतर गहिये ।
गौर श्याम आचारज दोऊ यातें अपर और कहा चहिये ॥
अलभ लाभ यह मिल्यो भाग सों प्रेम पुलकि हिये में हुलसइये ।
दंपति सुख संपति सर्वोपरि टहल महल मन मानी पइये ॥
दियो बताय गुरु अलि बलदेवी सार भजन सुख सिंधु समइये ।
सरस माधुरी नित्य निरंतर चरन शरन इन ही की रहिये ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

सब सुख करन श्याम चरन दासी ।
तिनकी शरन सुलभ कर पइयत प्यारी प्रीतम कुंज विलासी ॥
रसिकन की संपति श्री दंपति सरवस धन बृंदावन बासी ।
गलबैया दीने रंग भीने नित निरखे नैनन रस रासी ॥
अंग संग सेवा कर हुलसें रुख लखि लालन करें खवासी ।
सरस माधुरी सत्य समझ मन निश्चे होय निकुंज निवासी ॥

॥ पद ॥

श्याम चरन दासी बलि जाऊँ ।
ध्यान धरूँ हिय मांहि निरंतर रसना सों नित गुण गण गाऊँ ॥
नैनन सों निरखों छवि निश दिन युग पद पद्म शीश परसाऊँ ।
सरस माधुरी शरन कृपा बल अचल बास बृंदावन पाऊँ ॥

॥ राग बिलावल ॥

श्याम चरन दासी सुख रासी ।
दृढ़ कर भजे रसिक जन कोई देहि मिलाय निकुंज विलासी ॥

पावे टहल महल मन मानी रहे सदा श्री दम्पति पासी।
सरस माधुरी छके युगल छवि कुंज केलां निरखे अनयासी॥

॥ पद ॥

जय जय जय श्री प्रेम मंजरी अविचल प्रेम मया कर दीजे।
यथा नाम तुम तथा करौ बलि जुगल भाव रस में मन भीजे॥
अंग संग सेवा दम्पति की निशि दिन कर करुणा निधि जीजे।
सरस माधुरी शरण रावरी विनय कान देके सुन लीजे॥

॥ पद ॥

प्रेम मई धाम अमरलोक जहां खास है।
प्रेम सिंधु श्यामा श्याम का वहां विलास है॥
प्रेम हीं की कुंज महल प्रेम बाग पास है।
प्रेम ही के फूले फूल प्रेम की सुवास है॥
प्रेम ही की परिकर अरु प्रेम का रनवास है।
प्रेम मंजरी का जहां नित ही निवास है॥
प्रेम ही की नित्य लीला प्रेम का विकास है।
प्रेम ही के हाव भाव प्रेम ही का रास है॥
प्रेम ही पृथ्वी जहां प्रेम का आकाश है।
प्रेम ही के चंद सूर्य प्रेम का प्रकाश है॥
प्रेम सरस माधुरी का अद्भुत मिठास है।
निरखि नैंन होत हिये प्रेम का हुलास है॥

॥ पद ॥

प्रगट भई प्रेम मंजरी हेली ।
संत रूप अवतार धरयो हैं दंपति की मन मेली ॥
भादों मास पक्ष उजियारी प्रगटी सकल सहेली ।
याही हेत भाव दरशावन जन्मी नवल नवेली ॥
आज्ञा प्रिया प्रीतम की विस्तारन कल केली ।
निस्तारन सब जीव जगत के उपजी आनंद बेली ॥
नख शिख सुंदर परम मनोहर रूप चाँदनी फैली ।
सरस माधुरी छकन छकी हे सुकी रासि सकेली ॥

॥ पद ॥

बधाई प्रेम मंजरी प्यारी की ।
गावोरी हिल मिल सब हेली दंपति प्राण अधारी की ॥
रस रहस्य प्रगटावन आई अतिशय प्रिय बिहारी की ।
करो आरती प्रेम प्रीत सों परिकर की सरदारी की ॥
निरखो री छवि नयन नवेली अलबेली हितकारी की ।
सरस माधुरी जय जय बोलो यूथेश्वरी हमारी की ॥

॥ पद ॥

प्रगट भई सखी प्रेम मंजरी संत सभी अनुरागे री ॥
चरनदासि शुभ नाम नवल तन सुनत रसिक रस पागे री ॥
सुकृत उदय भये जन्मन के विरह विपति दुख भागे री ॥
निरखन को छवि छटा छवीली नयना लालच लागे री ॥

ह है सुलभ महल को मारग भाग हमारे जागे री ॥
सरस माधुरी कुंज केलि सुख मिले यही वर मांगे री ॥

॥ पद ॥

प्रेम मंजरी दंपति प्यारी, स्वामिनि हो प्रिये आप हमारी ॥
अमरलोक से आप पधारी, भेजी तुमको जुगल विहारी ॥
आचारज हो जग अवतारी, करो कृतारथ नर अरु नारी ॥
जो जन लेवे शरन तुम्हारी, रंग महल सेवा अधिकारी ॥
अष्टजाम सेवा सुख भारी, सहचरी पद पावे सुखकारी ॥
जुगल प्रेम मूरत मनहारी, तन मन धन सब तुम पर वारी ॥
अचल प्रेम दीजे हितकारी, सरस सखी जावे बलिहारी ॥

॥ पद ॥

स्वामिनी हमारी, अमरलोक से पधारी हैं ।
प्रेम मंजरी सुजान जुगल प्राण प्यारी हैं ॥
भेजी श्री श्यामा श्याम, प्रगट करन लीला धाम ।
नाम रूप अति ललाम, सुँदर सुकुमारी हैं ॥
अचारज बन के आप, जीवन के काटैं पाप ।
मेटन संताप हेत, मनुज देह धारी हैं ॥
प्रेम भक्ति को प्रचार, करैं हरैं भुव को भार ।
तारैं नर नार अमित, दया उर अपारी है ॥
इनको जो जपे नाम, प्रेम पुलक आठों याम ।
ताहि मिलें राधे श्याम, भुज भर अंक वारी है ॥

पावे निज धाम बास, दंपति युग चरण पास।
निरखे नित रास रहे, छवि में मतवारी है ॥
इनकी जो करे उपास, सहचरी बनजावे खास।
सरस माधुरी बिलास, बिलसे सुख भारी है ॥

॥ सवैया ॥

चर्ण की दासी की शर्ण गही जबतें जो लही सुख सम्पति प्यारी। दम्पति नित्य निकुंज सुधाम की सेवा मिली मुद मंगल कारी। प्रेम बिलास विहार निहारत होत नहीं छिन एक हू न्यारी। सर्स रसामृत नयनन पीवत छाई छटा हिय मांहि अपारी ॥

॥ सवैया ॥

चर्ण की दासी की चर्ण उपासन सार को सार विचार गही है। जाके प्रसाद निकुंज सुधाम की सेवा सुहावन नित्य लही है। प्रेम पयोनिधि दंपति में सुरता सम मीन समाय रही है। सर्स की माधुरी को रस चाखन मूक समान न जात कही है ॥

॥ सवैया ॥

चर्ण की दासी सदा सुख रासी निकुंज निवासी सुप्रेम मई है। प्यारी पिया जू की प्राण की बल्लभा नयनन मांहि समाय गई है। रास बिलासी के रंग रंगी नित निरखत केलि निकुंज नई है। सर्स सलोनी सुहावन सम्पति श्री गुरुदेव दयाल दई है ॥

॥ पद ॥

गई निज धाम चरन की दासी ।
श्री शुक सखी सिद्धि परिकर में पहुँची प्रेम विलासी ॥
भयो समाज सकल कुंजन में सब मन भई हुलासी ।
श्री राधा मोहन हित कीनों दी निज रीझि खवासी ॥
जुगल विहार अचल जागी री मिली महा रस रासी ।
सरस माधुरी शरण चरण की दंपति इष्ट उपासी ॥

॥ पद ॥

चरन की दासि गई निज धाम ।
दंपति आज्ञा पाय पधारी प्रेम मंजरी नाम ॥
रीझि मिले अति प्रेम प्रीति सों श्री मत श्यामा श्याम ।
सखी बनाय खवासी दीनी रंग महल अभिराम ॥
हाजिर रहत हुजूर हमेशा सुख विलसत निश जाम ।
सरस माधुरी जुगल केलि रस पाई अचल इनाम ॥

॥ राग मांड ॥

ओजी रे म्हारा रनजीता प्यारा नीका म्हाने लागो छो गुरुराज॥
गौर वरन मन का हरनजी सर पर लम्बे बाल ।
भाल तिलक श्री सोहना कोई गल तुलसांरी माल ॥
पीत वसन तन सज रह्याजी गुदड़ी अति मनहार ।
वागम्बर पर आप विराजो रसिकांरा सरदार ॥

धर कर रूप आचारज थे तो मुरलीधर घर आया।
दादा प्रयाग के परम लाड़ले कुंजो गोद खिलाया ॥
अमर नगर से श्री हरि आये धर कर संत सरूप।
भक्ति प्रचारन कारन जग में कीनो रूप अनूप ॥
जो जन शरण चरण की आये कर मन में विश्वास।
सरस माधुरी दरश करावें दें बृंदावन बास ॥

॥ ग़ज़ल ॥

तुम्हारा नाम है रनजीत रन के जीत कामिल हो।
अगर करदो महर मुझ पर तो मुशकिल सब मेरी हल हो ॥
तुम्हारा आसरा एक दीद दिलवर का वसीला है।
मयस्सर हो अगर मुझको तो जलवा ख़ास नाज़िल हो ॥
हो हासिल मुद्दआ दिलका जो कोई तुमसे हो वासिल।
अगर हो आप से गाफिल वो ग़ाफ़िल हरि से ग़ाफ़िल हो ॥
मरहमत कर दिया हरि ने तुम्हें आचार्य का मनसब।
निगाहे महर हो जिसपर उसे फिर क्या न हासिल हो ॥
यही है आरजू मेरी रहे सर पर चरन साया।
शबाना रोज़ दिल मेरा हरी के जप में शाग़िल हो ॥
सरापा जिस्म ये मेरा ख़ताओं से भरा अज़हद।
अगर करदो नज़र रहमत सरस ख़िदमत के क़ाबिल हो ॥

॥ ग़ज़ल ॥

तुम तो श्याम चरन के दास श्री रनजीत कहाने वाले।

प्रगटे आप ग्राम डहरे में, श्रीमत मुरलीधर के घर में ।
हुये जब पांच बरस की उम्र में शुकमुनि दरशन पाने वाले ॥
युगलके तुम अति मनमें भाये, जभी तो शुकमुनि हृदय लगाये ।
कुंज सेवा में दर्स कराये, अचारज पदवी पाने वाले ॥
शरन चरनों की में जो आवें, मुरादें अपने दिल की पावें ।
उन्हों की मुशकिल हल हो जावें, तुम हो पतित तराने वाले ॥
अधम जन लाखों आपने तारे, डूबते भव निधि से उद्धारे ।
मरन जीवन के संकट टारे, अमरपुर वास बसाने वाले ॥
विनय अब मेरी सुनो सरकार, नैया आन पड़ी मझधार ।
नहीं कोई तुम बिन खेवन हार, संकट विकट मिटाने वाले ॥
तुम हो दीनन के हितकारी, अरज़ी सुनिये वेग हमारी ।
मिलादो राधा सरस बिहारी, प्रेम रस पान कराने वाले ॥
स्वामी अब मेरी ओर निहारो, दिल में कुछ तो दया विचारो ।
सरस दर्शन देके दुख टारो, जुगल छवि मांहि छकाने वाले ॥

॥ राग भैरवी ॥

शरण तुम्हारे श्री महाराज ।
बिरद भरोसे स्वामी तेरे सब विधि तुमको लाज ॥
मैं हूँ पतित, पतित पावन तुम कीजे पूरण काज ।
करो पार संसार सिन्धु से बैठा कृपा जहाज ॥
स्वारथ को सब जक्त दयानिधि यह सब झूठा साज ।
सत्य सनेही हो तुम प्यारे भक्तन के सरताज ॥

नवधा प्रेम परानिज भक्ती दे सत संग समाज ।
सरस माधुरी टेर पुकारत सुनिये श्रवण अवाज ॥

॥ पद ॥

श्याम चरणदास हो आचारज अवतार,
अन्तरयामी अधम उधार ॥
तारण तरण, तुम्हारे चरण, दुख के हरन, मङ्गल करन।
पोशन भरन, मैं हूँ शरन बिनती सुनो उदार ॥
करुणा कृपा अगार, भवभीत देहु टार ।
हो इष्ट तुम हमार लीजे प्रभू सँभार ॥
अज्ञान हूँ अघखान हूँ नादान हूँ हैरान हूँ ।
तुम दयासिन्धु दीनबन्धु भक्त जन भय हार ॥
बृन्दा बिपिन दो वास प्रीतम प्रिया के पास ।
निरखूँ निकुंज रास कहे सरस दास खास ।
त्राहिमां त्राहिमां हे दयालु सुन पुकार ॥

॥ पद ॥

प्यारा प्यारा हमारा रनजीता नैनों का तारा ॥
कुंजो का नंदन है जग बंदन, मुरलीधर प्रान का आधारा ॥
प्रागदास का जीवन धन है, शोभन के वंश का उजारा ॥
कलियुग में हरि भक्ति प्रचारन, रूप आचारज धारा ॥
गौर बरन मन हरन महा प्रभू, भक्तों का है रखवारा ॥
रस निकुंज के दान करन को, भूतल आन पधारा ॥
पुरुषोत्तम परधाम निवासी, संत रूप अवतारा ॥

करुणा सागर भक्त उजागर, जन निस्तारन हारा ॥
सरस माधुरी दर्शन करके, तन मन धन सब वारा ॥

॥ पद ॥

सुनलो विनती मेरी तुम श्याम चरन के दास दयाल ॥
करके कृपाकी नज़र हुजिये मुझ पर कृपाल ॥
गुरु ने बतला दिया आपको आचार्य्य हमें ॥
आसरा एक हमें आपका प्यारे रिछपाल ॥
आपके चरणों सिवा और हमें ठौर नहीं ॥
हैं भरोसे पै कमर बांधे हुवे लीजे सँभाल ॥
दीजे युग प्रेम अचल आप हमें आठो जाम ॥
नाम रसना से रटें होके हमेशा खुशहाल ॥
काम अरु क्रोध हैं मद मोह लोभ भारी रक़ीब ॥
मेट दीजे जी इन्हों का अजी अब सारा बवाल ॥
दिल से दुनियां की हटा दीजिये अब सारी हविस ॥
चाह चित में है करा दीजे श्री कृष्ण विसाल ॥
मैं कर को जोरके करता हूँ चरण में सिजदा ॥
दास की लीजे ख़बर जल्द ही कर दीजे निहाल ॥
ध्यान दम्पति का रहे मन में शबो रोज़ मेरे ॥
सर्स को दर्श दिखा दीजिये हो दूर मलाल ॥

॥ राग बसंत ॥

हिल मिल संत महँत मगन मन खेल वसंत मचायो ।
नाना रंग गुलाल थाल भर अद्भुत साज सजायो ॥

पिचकारिन रंग बिविध भांति भर उर उतसाह बढायो ।
श्याम चरण के दास आचारज जिन को फाग खिलायो ॥
स्वामी रामरूप ले सोंधा श्री गुरु अंग लगायो ।
चोवा चंदन बूका बंदन वस्त्रन पर छिड़कायो ॥
सहजोबाई हिय हुलसाई अतर सुगंध लगायो ।
नूपीबाई पीत चमेली हार हिये पहिरायो ॥
दासी दया कटोरी रोरी लेकर हिये सरसायो ।
चुटकी भर भर श्री गुरु ऊपर ललित रंग बरसायो ॥
आतमराम अरगजा लेकर श्री गुरु शीश चढ़ायो ।
गुरु छौना ने गोरोचन को तिलक ललाट करायो ॥
जोग जीत ले चंवर चाव कर श्री गुरु शीश ढुरायो ।
जुगतानंद करे मोरछल छबि लखि हिये छकायो ॥
श्याम शरण बड़भागी सुरभर राग बसंतहि गायो ।
मुक्तानंद मगन हो मन में मधुर मृदंग बजायो ॥
रसिक शिरोमणि राम सखी ने नाचत भाव बतायो ।
नाना गति ले ले अति लोनी श्री गुरुदेव रिझायो ॥
श्री डंडोती राम शिष्य ने अबीर गुलाल उड़ायो ।
संत सुघर घनश्याम दास ने जय जय शब्द सुनायो ॥
फिकन लगीं झोरी रोरिन की मनहु रंग बादर नभ छायो ।
धूंधर भई बहुत मंदिर में रस समुद्र उमगायो ॥
सारंगी सुर भरी बाज रही बीन सितार सुहायो ।
झांझन झुनक मोचंग मँजीरा चंग सुरंग जमायो ॥

डफ ढोलक की गत अति अद्‌भुत मुरली सुत मन भायो ।
तरंग रवाब बहु रस की दाता सुन कर मन मगनायो ॥
त्रिभुवन को आनंद सिमट कर इन्द्र प्रस्थ में आयो ।
जहां बिराज रहे रंजीत गुसाई प्रेम प्रीत कर भाव बतायो ॥
संत अनंत रहै छक आनंद परमानंद प्रगटायो ।
उज्जवल जुगल निकुंज पुंज रस श्री महाराज छकायो ॥
मदन मोहन छबि मन की भावन नयनन मांहि समायो ।
सरस माधुरी सिंधु मीन मन ताके माहिं डुबायो ॥

॥ राग बिहाग श्याम कल्याण ॥

डहरे में बधाई माई छाय रही ।
मुरलीधर घर श्रीहरि प्रगटे शोभा अति सरसाय रही ॥
कुंजो माता कौख सिरानी लखि लालन पुलकाय रही ।
गुणीजन आवें गावें बजावें सभा सकल हरषाय रही ॥
बंशावली सुनावें ढाढी ढाढन नाच रिझाय रही ।
जित देखो जित ध्वजा पताका बंदनवार बंधाय रही ॥
भादों मास सुदी तिथि त्रितिया अद्‌भुत छबि उपजाय रही ।
हरी हरी भूमि चहूँदिश दीखत सरिता उमंग बहाय रही ॥
सरस माधुरी रंजीता लखि सुख के सिंधु समाय रही ।

॥ राग माँढ ॥

सखीरी श्याम चरण के दास प्रगटे आनन्द मंगल रास ॥

शुक्ला तीज सुहावन पावन उत्तम भादों मास ।
पहर चढ़े दिन प्रकटे प्रभूजी भक्ति करन प्रकाश ॥
माता कुंजो कोख सिरानी हिये में हर्ष हुलास ।
मुरलीधर घर बजत बधाई पूरण प्रेम प्रकाश ॥
शोभन भक्त कियो वर पूरण आये श्री हरि खास ।
संतरूप आचारज ह्वै के मेटे भव भय त्रास ॥
शरण चरण चलि आवें जो जन पावें श्रीबन वास ।
"सरस माधुरी" सेव जुगल कर निरखैं रास बिलास ॥

॥ राग कल्याण ॥

मंगल मूरत मुरली नन्दन, श्री कुंजो सुत सब जग बन्दन ।
सन्त जनन के सदा सहाई, सुखदाई आनन्द के कन्दन ॥
भक्ताचारज भगवत प्यारे, भरम भूल नाशत भव फन्दन ।
"सरस माधुरी" के सर्वस्वधन, बेग मिलाय देत दोऊ चन्दन ॥

॥ पद ॥

करत आरती सब पुर वासी ।
कंचन थार संजो घृत बाती जग मग जोति बहुत परकासी ॥
बार बार मुख निरखत लालन तन मन की सब पीड़ा नासी ।
राई नोन उसारत हितसों सरस माधुरी उमंग हुलासी ॥

॥ पद ॥

पुत्र तेरो राजी रहो जिजमान ।
दिन दिन भाग बढ़ो या सुत को निशि पति कला समान ॥

नित प्रति प्रेम भाव प्रगटावें जुगल ध्यान गलतान ।
जुग जुग जीवो जग के माहीं तब लग ससि अरु भान ॥
वार न बांको होय लाल को कृपा करैं भगवान ।
सरस माधुरी खुशी रहैं यह मेरे जीवन प्रान ॥

॥ पद ॥

जुग जुग जीयो कुंवर रनजीत ।
बढ़ो रेन दिन वयस लाल की हरिपद में हो प्रीति ॥
सूरज सम जग सुजस प्रगट हो उपजे हिये रसरीत ।
चंद कला सम भक्ति उदय हो निश्चय भई प्रतीत ॥
कुंजो मात दुलारे प्यारे कृष्ण चंन्द्र के मीत ।
सरस माधुरी मुरली सुत के गावत मंगल गीत ॥

॥ पद बरस गांठ ॥

बरस गांठ रनजीत लाल की एसे ही नित आवो ।
पुर नारी हिल मिल के सारी रंग बधाई गावो ॥
नाच गाय नाना गति लेके लालन लाड लड़ावो ।
दरशन कर श्री मुरली सुत के अपनें नैन सिरावो ॥
प्रेम सहित पलना में ललना लालन झमक झुलावो ।
किलकन हंसन निहार प्यार कर परमानँद प्रगटावो ॥
अपनो तन मन धन अरपन कर छबि लखि बलि बलि जावो ।
सरस माधुरी आनँद मंगल अमर लोक पद पावो ॥

॥ पद मलार ॥

मास भादों मन भावन आयो ।
जन्मोत्सव रंजीत लाल को उहरे घर घर छायो ॥
नारि नवेली सकल नगर की हिल मिल सो हिल गायो ।
द्वार द्वार पर ध्वजा पताका सुंदर सदन सजायो ॥
पुर वासी सब ही सुखरासी भाग भलो कर पायो ।
जहाँ नर तन धर श्री पुरषोत्तम संतरूप प्रगटायो ॥
परमानंद मगन नर नारी प्रेम अंग पुलकायो ।
सरस माधुरी ले निज गोदी लालन कंठ लगायो ॥

॥ बरस गांठ पद राग विलावल ॥

वरस गांठ रंजीत लाल की मुरली धर हरषाये हो ।
ब्राह्मण छत्री वैश्य भारगव निज घर न्योत बुलाये हो ॥
अँग उबटन कर वा न्हवायके कुंवर वस्त्र पहराये हो ।
पीत रंग पोशाक विभूषन कंचन अंग सजाये हो ॥
चोक पूर चंदन चोकी पर शुचि आसन बिछवाये हो ।
कुंजो नंदन ले गोदी में प्रेम सहित पधराये हो ॥
कुंभ कलश अस्थापन कर द्विज पुनि संकल्प कराये हो ।
धूप दीप नैवेद्य अरप के हरि के भोग धराये हो ॥
केसर चंदन लाल भाल पर सुंदर तिलक रचाये हो ।
स्वस्ति बचन बोलत भये सबही नारिन मंगल गाये हो ॥

दान गुरू दीने विप्रन को आदर सहित जिमाये हो ।
दई दच्छना मन प्रसन्न ह्वै किये सबन मन भाये हो ॥
भूवा बहिन भतीजी जिनहूको भूषण वस्त्र दिवाये हो ।
कुल की रीत करी सब विधि सों तन मन में पुलकाये हो ॥
नोछावर कर नवल कुंवर पर नेगिन नेग चुकाये हो ।
सरस माधुरी निरख ललन छवि अपने नैंन सिराये हो ॥

॥ छटी के पद ॥

॥ राग जंगला ॥

उत्सव छटी आज सुखदाई ।
भये दिना छै के छविराशी मुरली सुत मन हरण महाई ॥
नायन चोक पूर तन पुलकित चंदन चोकी दई बिछाई ।
गोद लिये लालन श्री कुंजो सहित सनेह दई वैठाई ॥
संध्या समय महा मन भावन आठें तिथि उत्तम मन भाई ।
उमंग रह्यो आनंद सदन में जसोदा दादी हिय हरषाई ॥
घर घर से पुर की सब नारी भूषण वसन अंग सज आई ।
प्राणदास के पहुँच महल में गावत मंगल गीत वधाई ॥
रोली मोली अच्छत चंदन ऋतु फल श्रीफल थाल भराई ।
धूप दीप नैवेद अरप के अलियन कुल देवी पुज वाई ॥
छात आरतो करत सवासनि अर्घ बढाय करी मन भाई ।
देत असीस पसार गोद निज चिरंजीवो रंनजीता माई ॥

कुल की बधू प्रेम सों सब मिल बांटत हैं पकवान मिठाई।
मेवा मिश्री सों नारिन की मोद सहित ले गोद भराई ॥
नोबत बजत द्वार पर नीकी झांझन झनक और सहनाई।
सरस माधुरी लखि लालन छबि वार दोउ कर लई बलाई ॥

॥ छटी पद गजल ॥

छटी उत्सव का सुंदर दिन ललन रंजीत का आली।
नृत्य कर गावें पुरनारी बजावें प्रेम कर ताली ॥
बतावें भाव बहु विधि से करैं रस रंग मिल सारी।
ललन की जावें बलिहारी निरख नैनन अदा वाली ॥
लिये सुत गोद में बैठी मगन मन मात श्री कुंजो।
पिलावें पय परम हित से भई लख रूप मतवाली ॥
च्यवन कुल की नवल नारी करैं नोछावरें सारी।
उतारें आरती हिल मिल उछालें फूल भर डाली ॥
सरस सोहन है मन मोहन सलोना छोना मुरलीधर।
छटा छवि में छकी अंखियां टलें नहिं एक छिन टाली ॥

॥ गजल ॥

छटी के दिन सकल नारी कहैं हिल मिल बचन सारी।
लला रनजीत ओतारी श्री कुंजो ने जाया है ॥
जनम से एक दिन पहिले दिये माता को निज दरशन।
खुशी हो निरख नट नागर नैन जल प्रेम छाया है ॥

हुए पैदा जभी लाला हुआ सब घर में उजयाला ।
बजे बाजे हैं अनहद धुन अजब आनंद पाया है ॥
महक छाई थी महलों में अतर काफ़ूर चंदन की ।
भई बिरती मगन मन की महोत्सव शुभ रचाया है ॥
जनम की कुंडली लिख के मगन हो जोतशी बोला ।
ग्रह और लग्न से साबित हरी नर बन के आया है ॥
नगर डहरे के नर नारी हैं सुकृती सब धरम धारी ।
परम पावन हुआ भृगु कुल सुजस जग में सवाया है ॥
सफल सबने जनम माना ललन को अंश हरि जाना ।
सरस मुख बोल जय जय धुन चरन में चित लगाया है ॥

॥ आशीर्वाद पद ॥

॥ राग भैरवी तथा पीलू बरवा ॥

तिहारो कुंजो जुग जुग जीवो लाल ।
रनजीता हरि को मीता संतन को प्रतपाल ॥
बढो वयस दिन ही दिन दूनो न्हात खसो नहिं बाल ।
मुरलीधर को मन बांछित फल सदा रहो खुशहाल ॥
पद्धति प्रेम प्रकाश करन को जनमे आन दयाल ।
सरस माधुरी रस बरषा कर रसिकन करैं निहाल ॥

॥ पद ॥

होवे तुम्हारे घर में मैया कुंजो नित नित शादियां ।
पुत्र जनम सम और न आनंद सुनो यशोदा दादियां ॥

पुर घर घर से नारी सारी देन बधाई आदियां।
नाचें गावें भाव बतावें मन मैं अति मगनादियां॥
कुल कुटम्ब की सखी सहेली फिरें प्रेम उदमादियां।
सरस माधुरी हिये हरष निज रंग बधाई गादियां॥

॥ पलना राग मलार ॥

ललन रनजीता पलना झूलें।
श्रीमत कुंजो मात झुलावत झोटा दें अनुकूलें॥
झूल रहे ललना पलना में,
पौढे आनँद मूलें॥
मंद हँसन किलकन लखि सुत की मैया सुधि बुधि भूलें॥
कुल की नारि निरखि शिशु लीला करत केलि कौतूलें।
सरस माधुरी देख दृगन छबि तन मन में अति फूलें॥

॥ पलना ग़ज़ल ॥

पालने झूलें सखीरी आज मुरली नंद हैं।
मान लो निश्चय यही तुम ख़ास ये गोविन्द हैं॥
है सरापा नूर की मूरत मनोहर आपकी।
च्यवन ऋषि महाराज कुल में प्रगटे पूरन चंद हैं॥
है अदा इनकी निराली निरखो आली नैंन भर।
रस की चितवन चित्त चोरे अरु हँसे अति मंद हैं॥
भक्त शोभन वंश में हरि अंश आके अवतरे।
भक्ति जो इनकी करे कट जावें जम के फंद हैं॥

जो भजन इनका करे और ध्यान हिरदे में धरे ।
चाव से चितन करे प्रगटावें परमानंद हैं ॥
निज हरी ने धारा नर तन जगत के उद्धार को ।
शरन में जो आये इनकी सब कटैं दुख द्वंद हैं ॥
सर्स तन को मन को धन को वारो छवि रनजीत पर ।
श्रुति कहैं परिब्रह्म जो ये कुंजो के फरजंद हैं ॥

॥ मंगला आरती दोहा ॥

प्रातहि सैया से उठे, श्री रणजीता लाल ।
कुंजो माता प्यार कर, गोद लिये तत्काल ॥
चिबुक प्रलोवत प्रेम सों, मस्तक फेरत हात ।
ललित कपोलन चूम मुख, मन में अति हरषात ॥

॥ राग प्रभाती ॥

प्रात समय श्री रनजीता को कुंजो मात जगावें ।
उठो तात निज बदन दिखावो लख मम नैन सिरावें ॥
मित्र मंडली बालक आये खेलन हेत बुलावें ।
दरस करन को खड़े द्वार पर तुम्हें देख हरषावें ॥
कुल कुटुम्ब के सब नर नारी देख दरस मगनावें ।
मोद सहित ले गोद प्यार कर बहु बिध लाड लड़ावें ॥
सुनत वचन मुरली सुत जागे मंद मंद मुसकावें ।
हरष हृदय हरि सुमरन लागे श्री गुराज गुन गावें ॥

मैया धोय कमल मुख लालन कुंवर कलेउ करावें।
सरस माधुरी करत आरती जय जय कहि बलिजावें ॥

॥ पद भैरवी ॥

अरी हां रनजीता जागे ॥
मुरली सुत कुंजो के नंदन मन में अति अनुरागे ॥
माता गोद मुदित लिये लालन,मुख मृदु चूम खिलावत ख्यालन
प्रेम प्रति में पागे॥
सखा मंडली हिलमिल आई, मैया ने लिये भवन बुलाई।
मेवा मिसरी कुंवर कलेऊ। हँस हँस करत सुभागे ॥
आंगन महल पुलक तन खेलत, सखा कन्ध पर भुज निज मेलत
सज अंग पियरे बागे ॥
सिर चौतनी बार घुंघरारे, नैंन विशाल प्रेम मतवारे।
मन्द हँसन कर मनको मोहत निरतत माता आगे ॥
आचारज श्री हरि बन आये, च्यवन वंश के भानु कहाये।
सरस माधुरी चरण वसे चित बार बार वर मांगे ॥

॥ पद परभाती ॥

जागे श्याम चरणदास सन्तन प्रतिपाला।
भक्तन के प्राण प्रिय मुरलीधर लाला ॥
श्रीमत शुकमुनि शिष्य परम हैं कृपाला।
शरणागत रक्षक प्रभू दीन के दयाला ॥
दरशन कर मुदित भये वृद्ध तरुण बाला।
जै जै बलिहार बोल निरख छबि निहाला ॥

गावें गुण साधु सकल राग अति रसाला।
सारंगी अरु मृदंग ले मिलाय ताला॥
आरती उतार करें स्तुति तत्काला।
सरस माधुरी के स्वामी सर्वस धन माला॥

॥ मंगल आरती पद ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

मंगल आरती करो रणजीता।
जो हैं श्री हरि जी के मीता॥
चो मुख चित कर भाव को घृत भर।
अङ्ग अङ्ग वार प्रकट करो प्रीता॥
नैन नेह जल अरगा अरपो हरष निरख गुण गावो गीता॥
पहुँचो जाय परम पद मांहि मन में करिये सत्य प्रतीता॥
सरस माधुरी कृपा गुरुन सों निश्चय शिष्य हो परम पुनीता॥

॥ पद ॥

श्रीमत रणजीत लाल उठत नित्य प्रातकाल।
श्री गोपाल श्री गोपाल नाम धुनि लगावें॥
राधेश्याम राधेश्याम श्यामा श्याम श्यामा शयाम।
अति ही अभिराम रसिक कह कह हरषावें॥
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण बोलत सुख पावें॥
मधुसुदन मदन मोहन नंदलाल नटनागर।
गिरवरधर श्री गोविन्द गोपीनाथ गावें॥

गोकुल के चन्द चीर चोर चपल यशोदा नन्द ।
नन्द के किशोर कान्ह बोलत बलिजावें ॥
मुरली के धरन हरन मनके माधव मुकुन्द ।
आनँद के कन्दन को हेतकर लड़ावें ॥
नैंन मूंद धरें ध्यान करें रूप रस को पान ।
छबि में ग़लतान दरस देखकर छकावें ॥
तात मात मन आनन्द निरख के मुखारविन्द ।
सरस माधुरी स्वरूप लख लख मगनावें ॥

॥ शृङ्गार पद आसावरी ॥

कुंजो मैया करन लगी शृंगार ।
ले निज गोद मोद सों लालन कर फेरत पुचकार ॥
कुरता टोपी पीत सजाये अद्भुत अति मनहार ।
जगमग गोटा ज़री छबि भरि चहुँ दिशि कोर किनार ॥
सिर घुंघरारे बार सुहावन बैनीं पीठ बनी रुचकार ।
भाल डिठोना दियो दृष्टि डर राई नोंन उसार ॥
कजरा नैंन लगाय नेह कर पहराये गलहार ।
कठुला कंठ मांहि धारन कर कियो अधिक ही प्यार ॥
कानन मोती करा कनक कर कटि कौधनि झुनकार ।
पायन में घुंघरू पहराये जिनकी अजब बहार ॥
सिख सो नख लों सज सुंदर तन मुख चूम्यो चुचकार ।
सरस माधुरी मगन भई लख बोलत मुख बलिहार ॥

॥ सखान को पद ॥

॥ राग बिलावल ॥

मुरली नंन्दन हम ढ़िग आवो ।
तरस रहीं अंखियां दरशन को चन्द्र वदन निज हमें दिखावो ॥
मिलो आन प्रिय प्रान हमारे अब नहिं नैंक बिलम्ब लगावो ॥
हँस भेटो भुज सरस माधुरी अमृत सम मुख बचन सुनावो ॥

॥ कलेऊ कों पद राग तोड़ी ॥

कलेऊ करत श्री रनजीत ।
हँसत हिलमिल बालकन संग, परस्पर अति प्रीत ॥
मधुर मांखन और मिश्री, पात हिल मिल मीत ।
देत लेत सहेत सबको बोल वचन बिनीत ॥
बिबिध बिध पकवान अरु मिष्टान परम पुनीत ।
हरष खात खवात सबको सख्य रस की रीत ॥
नारि पुर की परम सुन्दरि गात मंगल गीत ।
सरस को दीनों कृपा कर कुंजो कनिका सीत ॥

॥ मैया कुंजो के गाने का पद ॥

॥ राग बिलावल ॥

दूर खेलन जिन जाहु ललारे ।
बाहर चौक बैठ बालन संग, केलि करौ मम प्राण पियारे ॥
चकई भौंरा गेंद झुन झुना, जो चहिये लेजैये सारे ।
मैं हूँ महल झरोखन झांखूं निरखूं बाल बिनोद तुम्हारे ॥

सुन माता के बचन लाड़िले, बाहर हँस मुसकाय सिधारे ।
निरखि छकी छबि सरस माधुरी, रनजीता पर तन मन वारे ॥

॥ श्री रनजीत पद ॥

दे माता मोको हरि जप माला ।
या सम और खिलोना नाहीं, जपूं निरन्तर नाम गुपाला ॥
और खेल मन में नहिं भावे, श्री हरि जप है सबसे आला ।
हरि हरि जप से प्रेम प्रगट है, कटै करम बन्धन ततकाला ॥
जनम मरण हरि जप से नाशें, रीझ दरस दें श्री नंदलाला ।
सरस माधुरी रस सुमिरन में, ओर बात सब जग जंजाला ॥

श्री प्रेम मंजरी अवतार लीला ।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ॥

॥ आरती ॥

आरती करो राधावर की श्रीवंशीधर की ॥

देखो पृष्ठ २१७

श्री राधिकावर श्याम अति अभिराम युग सरकार हो ।

देखो पृष्ठ २१८

॥ पद ॥

जय कुंज विहारनि श्री राधे जै श्रीमत कुंज बिहारी की ।
जय गौर श्याम अभिराम रसिक जय नील पीत पटधारी की ॥
जय शीश चन्द्रका मुकट सजे जय चन्द्र बदन सुखकारी की ।
जय भृकुटी काम कमान कसी जय नैंन बान अनियारी की ॥
जय वेसर नाक बुलाक लसे जय मंद हसन मनहारी की ।
जय गोल कपोलन अलक छुटी अलवेली नागनि कारी की ॥
जय नख सिख भूषन अंग सजन सुंदर जोरी सुकुमारी की ।
जय रास विलासी सुख रासी इक प्रान देह दो धारी की ॥
जय रसिकन की संपति दंपति हरि भक्तन के हितकारी की ।
जय कुँवर किशोर किशोरी जोरी सरस माधुरी प्यारी की ॥

॥ दोहा ॥

श्री प्रियाजी वचन प्रीतम सें-

चित्त कहाँ है आप को चतुर शिरोमणि राय ॥
मो सों कुछ अंतर नहीं खोल कहो समझाय ।

॥ दोहा ॥

श्री लालजी वचन—

मेरे मन की वारता तुम सब जानन हार ।

कहा कहूं में आपसों, लीजे समझ विचार ॥

॥ दोहा ॥

श्री प्रियाजी वचन—

जान गई गति आपकी, जीवन प्रान आधार ।

लेंन चहो अब अवनि में, तुम अंशा अवतार ॥

॥ दोहा ॥

सखी वचन—लेंन अंश अवतार को, कारन कहो सुनाय ।

कोन हेत कहां अवतरो, सो कहिये समझाय ॥

॥ दोहा ॥

श्री लालजी वचन—

सुनो सखी मम भक्त इक, शोभन जाको नाम ।

भयो प्रगट भूतल विषे, भक्ति करी निषकाम ॥

दे दरशन निज भक्त को, मैं दीनो वरदान ।

अष्टम पीढ़ी अंत में, प्रगटूं तव कुल आन ॥

भक्ति प्रचारूं जक्त में, धर आचारज रूप ।

करूँ प्रगट शुक संप्रदा, अदभुत अधिक अनूप ॥

॥ सोरठा ॥

सखी वचन--

भिन्न भिन्न समभाव, लच्छण शोभन भक्त के ।
हमें सुनन को चाव, चतुर शिरोमणि सांवरे ॥

॥ पद ॥

श्रीकृष्ण वचन-- नृत गान करके
शोभन भक्त कहूँ गुन गाई ।
सुनो सखी हित चित दे सब ही कथा परम शुचि मो मन भाई
भक्ति भक्त भगवंत गुरुन में मन कर सांची प्रीत लगाई ।
तन मन धन अरपन कर दीनों श्रद्धा अरु विश्वास बढ़ाई ॥
नाम धाम लीला सरूप में निश्चल अपनी लगन लगाई ।
मगन मानसी सेवा में नित सहचरि भाव करी सिवकाई ॥
दृढ़ अनन्यता धार हिये में जुगल ध्यान में सुरत समाई ।
तन जग में मन रंग महल में देह दशा सब ही बिसराई ॥
दृगन चट पटी चाह दरस की विरह विकल दिन रैंन विहाई ।
हा प्रीतम कब मोहि मिलोगे प्रान रहे तुम बिन अकुलाई ॥
प्रगट होय हम दरशन दीने करी भक्त के मन की भाई ।
सरस माधुरी उनके कुल में लेहुँ अंश अवतारहि जाई ॥

सखी बचन--बलिहार ! बलिहार !! प्रीतम प्राण आधार ।
आपके शोभन भक्त को प्रसंग सुनकर हम

परम प्रसन्न भई। अब अंश अवतार कौन प्रकार प्रगट करोगे सो श्री मुख सों आज्ञा करनी चाहिये।

॥ दोहा ॥

श्री कृष्णः--हम अंशी तुम अंश सब, सुनो सखी चितलाय।
प्रेम मंजरी को अभी, लीजे यहां बुलाय॥

सखी--हे प्यारे मैं प्रेम मंजरी जी के पास जाती हूं और अभी उनको बुलाकर लाती हूं॥

श्री कृष्णः--प्यारी सखी तुम जावो और प्रेम मंजरी जी को लावो।

॥ दोहा ॥

श्री ललिताजीः-मन भावन हो जुगल की, प्रेम मंजरी वाम।
संग चलो अब वेग तुम, याद करत श्री श्याम॥

प्रेम मंजरीः-(हाथ जोड़ कर) हे श्री ललिता जी दासी आपके संग चलने को तैयार है। पधारिये॥

दोनों श्री कृष्ण सन्मुख जाती हैं।

॥ दोहा ॥

प्रेम मंजरीः-जय जय प्रीतम परम प्रिय, जीवन प्रान आधार।
जो आज्ञा कह दीजिये, निज मुख वचन उचार॥

श्री कृष्ण:--

जुगल प्रेम की मूर्ति तुम, प्रेम मंजरी नाम।

वसत निरंतर हम निकट, निज वृन्दावन धाम ॥

हम अंशी तुम अंश हो, सब शुभ गुन गन ग्राम।

तुमको करनो उचित है, ख़ास एक निज काम ॥

शोभन भृगुकुल विदित जग, च्यवन ऋषीश्वर वंश।

तामें तुम जा अवतरो, हो तुम मेरी अंश ॥

(ममैवांशो जीवलोके जीव भूत सनातन)

या प्रकार से हम और तुम एक ही रूप हैं।

॥ दोहा ॥

कुंजो! सम श्री देवकी, मुरलीधर वसुदेव।

तिनके प्रगटो पुत्र ह्व, समझो मम निज भेव ॥

प्रेम मंजरी--प्यारे प्रीतम लाडले, मेरे जीवन प्रान।

लेंन अंश अवतार को, कारन करो बखान ॥

श्री कृष्ण:--होत धर्म की हानि जब, पाप बढ़त संसार।

तब ही में सखी लेत हों, पृथ्वी पर अवतार ॥

साधुन की रच्छा करों, पापी डारों मार।

थापूँ रीत सुधर्म की, युग युग मांहि विचार ॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

अंशकला अवतार धरूँ मैं ।

जब जब होय धर्म की हानी निज आचारज रूप करूँ मैं ॥
अकरम करत जीव संसारी सुकरम उनके हिये भरूँ मैं ।
प्रेमा भक्ति प्रचारूँ जगमें सकल भूमि को भार हरूँ मैं ॥
विश्व चराचर में मैं व्यापक काल कर्म से नांहि डरूँ मैं ।
सरस माधुरी निज भक्तन को कर गहि परिकर मांहि वरूँ मैं ॥

प्रेम मंजरी-हे प्राननाथ अभी तो आप श्री कृष्ण अवतार धारण करके भू को भार उतार ही चुके हैं । अब फिर अंश कला अवतार धारन करने की कहा आवश्यकता है सो आज्ञा करें ।

श्री कृष्ण-

यवन अवनि में बढ़ गये, किये अधर्म प्रचार ।
हिंसक निंदक धर्म के, अनगिन दुष्ट अपार ॥
कर्म कथा जगमें चली, धर्म कथा कहुँ नांहि ।
ताते सब जिय पर गये, काल चक्र के मांहि ॥
वेदन को उलटो अरथ, प्रगट कियो संसार ।
मत अनंत प्रगट भये, भूल गये करतार ॥

हे प्रेम मंजरी प्यारी इन कारण सों अंश अवतार लेने की अत्यंत आवश्यकता है सो अब तुम भूतल में जावो और अंश अवतार प्रगट कर कलियुग के जीवन को चितावो ।

प्रेम मंजरी--

हे प्रान प्यारे! जक्त के जीवन के कल्याण करन के निमित्त आपने ज्ञान जोग वैराग त्याग प्रगट कर राखे हैं। ये तीनों जीवन को जीवन मुक्त प्राप्त कर रहे हैं। मेरे विचार में तो अंशा अवतार प्रगट करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

॥ दोहा ॥

श्री कृष्ण वचन--

ज्ञान जोग वैराग सब, तीनों पुरुष सरूप।
प्रकृति प्रेम भक्ती बिना, करले अपने रूप ॥

हे प्रेम मंजरी तुम साक्षात प्रेम भक्ति की मूर्ति हो ज्ञान जोग वैराग तो तुम्हारे पुत्र हैं तुम इनकी रक्षा करने को सामर्थ हो तुम्हारी कृपा विना ये तीनों स्वतंत्र जीव के उद्धार करने में समर्थ नहीं हैं।

॥ दोहा ॥

ज्ञान योग वैराग गण, प्रेम बराबर नांहि।
प्रेम भक्ति वश हम सखी, समझ लेहु मन मांहि ॥

रति स्नेह अरु प्रणय पुनि, राग और अनुराग।
रूढ़ और आधिरूढ़ है, मोदन है बडभाग ॥

मादन उनमादन सहित, ये दस नाम तुम्हार।
प्रेम मंजरी तुम सुनो, प्रानन की आधार ॥

जो जन प्रेमा भक्ति को, करें प्रपंच विसार।
ऐसे प्रेमी भक्त को, करूं हिये को हार॥

॥ पद काफ़ी हरि प्रिया तिताल॥

प्रेम मंजरी वचन–

सुनहु विनय मेरी राधावर।
तुम सम नहिं कोई मोको प्रियवर॥
जाऊं अब मैं भू मगडल पर।
प्रेमा भक्ति प्रचारूं घर घर॥
कुंजो मातु पिता मुरलीधर।
तिनके जन्म लेहुं सर्वेश्वर॥
शरण लेहुं में जो नारी नर।
तिन्हें लीजियो परिकर में वर॥
सरस माधुरी कहत जोरे कर।
सीस नवाय नेह जल दृग भर॥

॥ दोहा॥

श्री लालजी वचन–

प्रेम मंजरी जक्त में, जावो जीवन प्रान।
शरणागति कर जियन को, करो नाम निज दान॥
स्वरूप पर रूप को, सबको दीजे ज्ञान।
रस रहस्य समझाइयो, और मानसी ध्यान॥

मंत्र सुनावो जाहि तुम, जीवन मुक्ता होय।
जन्म मरण वाके मिटैं, धाम बास लहे सोय ॥

प्रेम मंजरी - ॥ पद विहाग ॥

जुगल लाडले भूल न जाना परम धाम में वेग बुलाना।
रचूं नहीं जंजाल जगत में शरण गहे की लाज निभाना ॥

॥ अंतरा ॥

विरह वियोग वनोरहै निशदिन लगन अगनहिये में प्रगटाना॥
हा हा प्यारी कुंज विहारी ध्यान मानसी में तुम आना ॥
राधे श्याम नाम रसना सों नितही जीवन प्रान जपाना ॥
रहै चट पटी दृगन दरस की पद पंकज मस्तक पर साना॥
सेवा कुंज धाम वृंदावन तहां प्रिया पिय दरस दिखाना ॥
रास विलास प्रगट कर अपनो निज छवि अपनी मांहि छकाना॥
बांकी झांकी अजब अदा की दंपति हियें निकुंज बसाना ॥
सरस माधुरी की सुधि रखना अन्त नहीं कहीं और ठिकाना ॥

श्री प्रियाजी वचन--

हे प्यारी प्रेम मंजरी मेरे निकट आ और हिये से लगजा। (ऐसा कह कर श्री प्रियाजी प्रेम मंजरी को अपनी दोनों भुजाओं में भर कर परम प्यार करती हैं और प्रेम मंजरी के मस्तक पर अपना अभय हस्त धरती हैं। प्यारी जी के गले लग के प्रेम मंजरी रोती है और दोहा रोती हुई बोलती है)।

॥ दोहा ॥

बिछुरन विरह वियोग दुख, श्यामा सह्यो न जाय ।
हाय हाय कैसी करूं प्रान रहै अकुलाय ॥

श्री प्रियाजी--

हे प्रेम मंजरी तुमको मैं अपने चित्त से कभी भी नहीं भुलाऊंगी और निज धाम में अपने निकट वेग ही बुलाऊंगी ॥
प्रेम मंजरी "जो आज्ञा प्यारी"–

श्री लालजी वचनः–
जो जो वर तुमने चहे; सब हम दीने दान ।
प्रेम मंजरी वचन मम, सत्य करो परमान ॥

प्रेम मंजरी वचन–

जो आज्ञा प्राण प्यारे । ऐसा कह कर हाथ जोर प्रणाम कर जाती है । परदा गिरता है ॥

॥ पद ॥

(अंगना मंगना की चाल में सखियों के गाने का)

स्वामिनी हमारी अमरलोक से पधारी हैं ।
प्रेम मंजरी सुजान जुगल प्रान प्यारी हैं ॥

॥ अंतरा ॥

भेजी श्री श्यामा श्याम, प्रगट करन लीला धाम ।
नाम रूप अति ललाम सुंदर सुकुमारी है ॥

आचारज बनके आप, जीवन के काटैं पाप ।
मेटन संताप त्रिविधि मनुज देह धारी है ॥

प्रेम भक्ति को प्रचार, करैं हेरें भुव को भार ।
तारें नर नारी अमित दया उर अपारी है ॥

इनको जो जपै नाम, प्रेम पुलक आठों जाम ।
ताहि मिलें राधे श्याम भुज भर अंकवारी है ॥

पावें निज धाम वास, दंपति युग चरण पास ।
निरखें नित्त रास रहैं छवि में मतवारी है ॥

इनकी जो करै उपास, सहचरि बन जावें ख़ास ।
सरस माधुरी विलास बिलसें सुख भारी है ॥
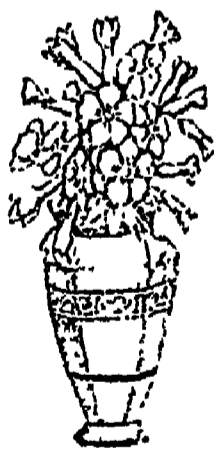
श्री शुकमुनि श्याम चरणदासाचार्य
प्रथम मिलन लीला ।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ॥

श्रीमत श्याम चरणदास शुकाचार्य्य प्रथम मिलन

॥ मंगला चरण ॥

॥ दोहा ॥

जै जै जै श्री जक्त गुरु, वेदव्यास भगवान ।
तासु तनय मुनिराजवर, श्री शुक कृपा निधान ॥
वरनों बाल विनोद कछु, श्री रनजीत दयाल ।
मुरली सुत मंगल करन, कुंजो माता लाल ॥
सम्वत सत्रह सौ गिनों, अरु ऊपर पुनि साठ ।
श्री शोभन की जानिये, पीढी भई जु आठ ॥
वर पूरन कीनों हरि, लियो अंश अवतार ।
प्रगटे डहरे ग्राम में, रूप संत को धार ॥
पांच वर्ष की वेस सें, उठें प्रात ही काल ।
गावें गुन गोविंद मुख, अरु फेरें कर माल ॥

॥ राग कालंगड़ा और प्रभाती ॥

श्री मत रनजीत लाल, उठत नित्य प्रातःकाल ।
श्री गोपाल श्री गोपाल नाम धुनि लगावें ॥

देखो पृष्ठ ४७६

कुंजो मैया करन लगी शृंगार ।

देखो पृष्ठ ४७७

॥ दोहा ॥

मेवा मिश्री बिबिधि बिधि, अरू पकवान रसाल ।
करन कलेऊ लाल हित मा लाई भर थाल ॥
आय गये ताही समय पुर के बालक बृंद ।
कुंजो माता निरख तिन पायो परमानंद ॥
प्रथक २ दोनान में मोदक मेवा दीन ।
करत कलेऊ सखन संग, रनजीता परवीन ॥

॥ पद भैरवी ॥

कलेऊ करत श्री रनजीत ॥

देखो पृष्ठ ४७८

॥ दोहा ॥

सीतल जल पुनि पान कर, ले अचवन ततकाल ।
सखन संग खेलन चले, श्री मुरलीधर लाल ॥

॥ राग विलावल ॥

श्री कुजो मैया वचन--

दूर खेलन जिन जाहु ललारे ॥

देखो पृष्ठ ४७८

॥ पद चाल थियेटर ॥

(भरके जाम भरके जाम इसके वजन पर)

महाराज–

राधे श्याम श्यामा श्याम यही रटे जावो ॥

याही से मन लावो। बालक वृंद॥ ज्योंज्यों जपो प्यारे करके उमंग।

प्रेम की भक्ती की बाढे तरंग । कृष्ण के ध्यान में हो जाना

ग़लताना छब में छकानां याही में आनंद् । सतचित घन।

नंद् नंद्न । करिये मनन । धन धन हो हरि कीरतन।

करिये सज्जन। सर्वस धन प्रभु को भजन ॥ किये जा ॥राधे॥

॥ अन्तरा ॥

रैंन दिना रटो मनको लगाय, बांकी झांकी बसे नैनों मैं आय।

सर्स की माधुरी मोहनी मूरति, सदा रहै हिय मांही छाय ॥

छवि में छकाय, बलिबलि जाय, तन मन हो। चंद् सो वद्न।

सोभा को सद्न। मोहन मद्न। वाही को मनन। किये जा ॥

॥ दूसरी तरह धुनि थियेटर ॥

सखा गण–

प्रान प्यारे रनजीत कुमार, नद्ी पै चलें देखें बहार ॥

हो देखें बहार ॥

हिलमिल के चलें संग, मनमें येही उमंग ।

प्रगटावें प्रेम रंग, पुलकें हमारे अंग ॥

जीवन प्रान ॥

चुबकी लेकर ग़ोता मारे, नीर उछालेंगे हम यार ।

पैरेंगे बद् होड़ परस्पर करें केलि बहु विधि मनुहार ॥

कूदेंगे ऊपर सैं इक इक, हँसिके हरदम बारंबार ।
जल छींटा छिरकें मन भर के प्रगट करें अनुराग अपार ॥
सुनों कान दिलाजान महरवान ॥
सरस के हो सर के सरदार हो सर के सरदार ॥
प्राण प्यारे ॥

॥ पद ॥

(हिलमिल रूम भूम करो जी सेल के वजन पर)

महाराज–
हिलमिल चलोरे सखा सब मेरे संग ॥
खेलना कूदना नई प्रकार हो प्यारे प्यारे । मनमानी लासानी लीला अपार करेंगे सारे ॥ रंग ॥

पर्म सुजान हो, जीवन प्रान हो, गुन के निधान हो दिल में उमंग । मोहनि मूरति मित्र तुम्हारी, वलिहारी छवि ऊपर वारी ॥ अंग ॥

नंद के लाल के, प्यारे गुपाल के ॥ नाम जपें करें केलि अभंग । सरस माधुरी मोहन बांके ॥ अलबेले अति अजब अदा के ॥ ढंग ॥

॥ समाजी दोहा ॥

बाहर निकसे भवन के, श्री मुरलीधर नंद ।
तारा गन सम सखन में, सोहत हैं ज्यों चंद ॥

सेठी

॥ पद राग लावनी ॥

श्री रनजीत दयाल, बाल गोपाल संग निज लीनें ।
मंडली मनोहर सखन सहित तब गवन नदी तट कीने ॥

॥ अन्तरा ॥

ब्राह्मण अरु वैश्य पुनीत मित्र मिल मारग मांही जावें ।
हरि नाम जपें हरषें हिय में हरि गुण निज मुख से गावें ।
कर प्रेम परस्पर प्यार सबहि हिल मिल के हित सरसावें ।
हँसि हँसि हरषें हरि रंग रंगे तन मन प्रमुदित पुलकावें ॥
पहुंचे जब नदी किनारे निज निज अंग बस्त्र उतारे ।
पैठे निरमल जल धार सकल मिल पैरन लगे प्रवीनें ॥१॥
चुबकी लेवें जल मांहि कोई कर भरके नीर उछालें ।
कोई पार जांय बद होड उलट कर आवें अति ही उतालें ॥
आनंद सिंधु में केलि करि रहे ज्यों हंसन के बाले ।
कोतूहल करें अनंत लखें जो जन हों मन खुशहाले ॥
न्हा कर नदिया तट आये निज बसन अंग पहराये ।
कंकर घस के कियो तिलक जपन लगे मुख हरिनाम नवीनें ॥२
ज्यों ग्वालन संग गुपाल सजें त्यों बालन में रनजीता ।
कहें हरे राम श्री कृष्ण कृष्ण प्रगटाय परस्पर प्रीता ॥
पूनों तिथि पावन सरद पहर दिन चढ़ो सु परम पुनीता ।
गुरु वार महा मन हार प्रगट भये तहां इक आय अतीता ॥
लख बाल वृंद मगनाये मुख मंद मंद मुसकाये ।
कर कृपा दृष्टि शुकदेव मुनी कुंजो सुत हितकर चीनें ॥३॥

लीला बालन की निरख मुनिश्वर मन मांही हरषाये ।
सब ही लड़कन दिसि देख दृगन मुरली सुत और लगाये ॥
झाला कर दे लिये निकट बुला गोदी ले कंध चढ़ाये ।
वट की छाया तर बैठ गये मुनिवर मन में मगनाये ॥
हिये लगा प्यार बहु कीने दो पेड़े कर में दीने ।
मुख सरस माधुरी वचन कहे किये शिष्य तुम्हें रंग भीनें ॥४

॥ राग भैरवी ॥

कहन लगे बचन व्यास के नंदन ॥
कर धर शीश असीसत सत गुरु सुन शिशु मम चित चंदन ॥
है हो तारन तरन जगत में काटोगे भव फंदन ।
अमित उवार जीव लै जेहो करि हो पाप निकंदन ॥
मंत्र लेई शरण गति है तुम और करे पद वंदन ।
सरस माधुरी बसे धाम गुन गावे जुगल सु छंदन ॥

॥ दोहा ॥

प्रगट करो शुक सम्प्रदा, जग में परम पुनीत ।
प्रेमा भक्ति प्रचार कर, दो जनाय रस रीत ॥
बादशाह राजा अमित, चरण परेंगे आय ।
सुफल कामना होंहि तिन, रहे जक्त जस छाय ॥
श्री शुकमुनि के बचन सुन, हरषे मन रनजीत ।
उतर गोद तै दण्डवत, करी चरण सह प्रीत ॥

बालक जो रनजीत संग, भय खा भागे जाय ।
प्रागदास जी सों कह्यो, सब वृतांत समझाय ॥
श्याम वरन इक पुरुष ने, पकर लियो ततकाल ।
गोदी ले वट छांह में, बैठो उत ही हाल ॥

(यह दोनों दोहे हिलमिल के सखा सब आवोरे
पृष्ठ ५०३ के बाद बोले जावें)

॥ पद ॥

श्री शुकमुनिराज वचन--
(तेरी बंसियां ने मोह लियो श्याम रे । इसके वज़न पर)

प्यारे रनजीता तुम मेरे प्रान हो ।
तेरी सूर सलोनी लगे प्यारियां हो ।
वारी वारी जाऊँ लेऊँ बलिहारियां हो ।
बुद्धवान हो ॥

श्री कृष्ण के अंश तुम, आचारज अवतार ।
प्रेम भक्ति विस्तार जग, हरि हो भू को भार ।
सुनो कान हो ॥

कुंजो माता लाडिले, मैं तोहि शिष्य कियो ।
जग जीवन निस्तार हो, यह वरदान दियो ।
सांची मान हो ॥

सम्प्रदाय संसार में, मेरी प्रगट करो ।
भगवत धर्म प्रचार के, कलिमल सकल हरो ।
देवो ज्ञान हो ॥

शरण तुम्हारी से मिले, परम पदारथ चार ।
रिद्धि सिद्धि नव निद्धि के, भरे रहैं भंडार ॥
देवो दान हो ॥
जाको मंत्र सुनावोगे, सो पारायण होय ।
जनम मरण मिट हरि मिलें, संशय नांही कोय ।
राखो ध्यान हो ॥
बादशाह नृप जगत के अरु अमीर उमराव ।
शरण परेंगे आयके, पूजें तुम्हरे पांव ।
रस खान हो ॥
सरस माधुरी छबि छटा, हरि में छके रहो ।
धर्म सनातन आपनो, हठ कर ताहि गहो ।
सुनो सुजान हो ॥

बालक— ॥ पद ॥

(पल पल तन मन धन वारूँरी के वज़न पर)

हिल मिलके सखा सब आवरे ।
रनजीता की बतियां सारी । गोद में अतीत लिये बैठो बट छाया मांही । कुंजो मात सुनावरे ॥ हिल मिल के ॥
सांवरी सूरत प्यारी । सीस जटा घुंघरारी ॥
यह सब चिह्न बतावरे ॥
लाड प्यार बहु कीने । पेडे कर मांही दीने । लाल प्यारो पुचकारो । सीस निज कर धारो । सरस दरस दियो जनम सफल कियो ॥ पल पल ध्यान लगावरे ॥

॥ ग़जल ठेका कौव्वाली ॥

लड़के कहन लगे यों सुन लीजे कुंजो माई ।
रनजीत को गया ले अवधूत इक उठाई ॥
हम न्हाये नद्दी मांही बेठे तिलक लगाई ।
मुनि राज श्याम सुंदर आये अचक वहांई ॥
लीना बुलाय सुत तब आये भाग हम यहांई ।
तन पै न वस्त्र तिनके कोपीन एक लगाई ॥
सुंदर सरूप सोहन सनमुख लखा न जाई ।
घुंघरारे बाल सर पर नैनों में अति लुनाई ॥
मधुरी सी प्यारी मूरत मुख मंद हँसन छाई ।
सुन बाल वचन नर नारी रहे हिराई ॥
हे कृष्ण तुम कृपा कर दीजे कुंवर मिलाई ॥
पा जाय प्रान जीवन बांटे सरस मिठाई ॥

॥ दोहा ॥

बाप ददा भ्राता सकल, अरु पुर जन ले लार ।
रनजीता खोजन चले, वट तट नदी किनार ॥
देखे आवत दूर तें, पुरके बहु नर नार ।
अंतर ध्यान हुये मुनी शिशु को कर बहु प्यार ॥

॥ पीलू बरवा ॥

वट वृक्ष समीप सकल मिल बाप ददा आतुर चलि आये ।
अति प्रसन्न आनंद मगन मन रनजीता तहां बैठे पाये ॥

अचक उठाय लाल गोदी ले नैंन सजल है हृदय लगाये।
कहन लगे वह कौन पुरुष कहां जिन्हैं तुम्है इत ला बैठाये॥
दुख कहा दियो सकल कहि दीजे मारे या तुमको डरपाये।
कैसो रूप चिह्न कहा तिनके अब वह कहां कवन दिसि धाये॥
कहन लगे मुख बचन लाडले श्याम वरन मुनिवर दरसाये।
कर मन मोद गोद मोहि लेके अमृत सम मुख वचन सुनाये॥
सिर कर फेर मोहि पुचकारा कहि हम तुमको शिष्य वनाये।
तारन तरन जगत में है हो मम दिसि देख मंद मुसकाये॥
दो पेड़े कर प्यार दिये मोहि प्रीत सहित प्रभु कंठ लगाये।
मैं दण्डवत करी चरणन मैं अभै हस्त मो सीस धराये॥
सरस माधुरी रूप मनोहर मैं कर दरशन नैन छकाये।
तुमको आवत देख अब हि इत तरु की ओट मुनि जाय छिपाये॥

॥ दोहा ॥

वट के चारों ओर ही, फिर ढूंढे ऋषिराय।
इत उत खोजे दूर लों, कहीं नहीं दरसाय॥
पुनि गोदी ले बाल निज, बाप ददा मन मोद।
घर ला दीने तुरत ही कुंजो माता गोद॥
नैंन नीर भर प्रेम सों माता हृदय लगाय।
प्राण गये मनु देह तें, पुनि घट पहुंचे आय॥
दादी भूवा कुल बधू, पृथक पृथक ले गोद।
पुचकारे दी आशिका मन में कर बहु मोद॥

॥ राग भैरवी ॥

जुरे गांवके नर अरु नारी रनजीता देखन को आये ।
भली भई प्रभु कृपा करी अति सुत तुम्हार फिर तुमने पाये ॥
भये सहाय पुन्य पूरब ले हित मय कहि मुख बचन सुनाये ।
श्री मुरली सुत सुखी रहो नित देत अशीश विप्र हरषाये ॥
प्रागदास ने आधा पेड़ा लालन को निज हाथ पवाये ।
कनिका सम सु प्रसाद सबन को देकर हियमें हर्ष बढ़ाये ॥
बाल अवस्था मिले शुकमुनि चरण दास जू को अपनाये ।
सरस माधुरी मुदित होय मन चरितामृत निज मुख सों गाये ॥

युग्म दर्शन लीला।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ॥

श्रीमत वृंदावन सेवा कुंज श्री युग्म दर्शन लीला।

॥ श्री मत श्याम चरणदास वचनिका ॥

आज का दिन अत्यंत आनंद कारी है श्रीमत वृंदावन धाम की अनुपम शोभा चित के चुरावन हारी है मध्य में श्री सेवा कुंज आनंद पुंज शोभायमान है लता पता सघन हरी भरी फूली हुई पर भौंरन की गुंजान है।

॥ दोहा ॥

वृंदावन सबसे बड़ो, यथा दूध में घीव ।
सब धर्मन हरि भक्ति ज्यों, यथा पिंड़ में जीव ॥
सब तीरथ जगमें बड़े, जिनहूं में है ईश ।
उन तीरथ फल कामना, इह सेवन जगदीश ॥
सदा कृष्ण बृज में रहैं, मोहि मिलत है नांहि ।
लहर महर कबहूं करें, आन गहैं मम बांहि ॥

आहा मुझे श्री शुक मुनिराज महाराज के श्री मुख का मुझको वरदान है जिसका मुझे पूर्ण रूप से संधान है।

॥ चोपाई ॥

एक समय बृन्दावन जय हो। श्री कृष्ण का दर्शन पय हो॥
श्याम सुंदर मिलि हैं तहां प्यारे। तोहि दिखावें नित्य बिहारे॥

श्रीजी की कृपा से अब वह अवसर आया है जिसका पूर्ण विश्वास मेरे मन में समाया है तो अब मैं यहां बैठ कर विनय पद गाऊं ॥

॥ पद सीठना ॥

टुक दर्शन दे हरि प्यारे ।
बिनदेखे मोहि कल न परत यह देह जरतहै व्याकुल प्रान हमारे
तेरी भोंह मटक और प्रेम लटक हिय अटकी नंद दुलारे ।
तेरी सुंदर सूरत मोहनी मूरत नैंना अति रतनारे ॥
तुमसो को छैला सदा नवेला अलबेला बांकारे ।
मैं हूं चरन्दासा तुम सुख रासा आशा पुरवो आरे ॥

॥ पद ॥

तुम बिन कैसे जीऊँ प्यारे नँद लाल ।
भूख प्यास कुछ लागत नांही तन की सुध न सँभाल ॥
कल न परत पलक अकुलावत छिन छिन छिन बेहाल ।
विरह विथा को रोग बढ़ो है पीर महा विकराल ॥
कहा करूँ कित जाऊँरी सजनी को मेटे जंजाल ।
लटक चलन बांकी चितवन की चुभत कलजे भाल ॥
भई ऐसे यह देह दूबरी सूझ परो नस जाल ।
तरफत हूं हिय में दौं लागी नैंन रोय भये लाल ॥
चरनदास यह सखी तिहारी श्री शुकदेव दयाल ।
आप कृपा कर दरशन दीजे कीजे वेगि निहाल ॥

॥ समाजी दोहा ॥

श्याम चरण के दास की, विनय सुनी हित मान ।
ता छिन से वा कुंज में, प्रगटे श्यामा श्याम ॥
चरनदास नैनन लखे श्यामल गौर किशोर ।
उठ सादर चरनन परे, अंक भरे हरि दौर ॥

॥ श्याम चरन दास स्तुति छन्द ॥

जै गौर श्याम सरूप परम अनूप त्रिभुवन नायकं ।
कंदर्प कोटि लजात लख छवि भक्त जन मन भायकं ॥
आरत हरन मंगल करन निज संत जनन सहायकं ।
महिमा अपार अनंत गुन गन नेति वेद सु गायकं ॥
विधि महेश सुरेश शेशहु चरण चारु सु ध्यायकं ।
सेवत सदा आनंद प्रमुदित भजत मन वच कायकं ॥
जुगल मूरति मन हरन चित रसिक जनन लुभायकं ।
सप्त सुरन उचार अधरन धार बेणु बजायकं ॥
रस तान सुर बंधान कर गो गोपि ग्वाल रिझायकं ।
विरह ताप निवार कर बहु प्यार हृदय लगायकं ॥
दीन जन उद्धरन पोषन भरन पाप नसायकं ।
अष्ट सिधि नव निद्धि मुक्ती देत सहज सुभायकं ॥
करुणा निधान सुजान प्रीतम प्रान मृदुल सुभायकं ।
सरस माधुरी शरण भय भय हरण जन सुख दायकं ॥

॥ दोहा ॥

रहूं शरण युग चरण की, सेऊं पद अभिराम ।
रीझ मोहि दीजे यही, श्री मत श्यामा श्याम ॥

॥ दोहा ॥

श्री कृष्ण बचन--

बचन सुनो मम चित लगा, भक्तराज सिरताज ।
भेजे भक्ति प्रचार हित, सो नाहिं कीने काज ॥
परमारथ के कारनें, करनें को उपदेश ।
भक्ति प्रचारन को दिया, तुम्हें साधु का वेश ॥
जोग ध्यान को छोड़ कर, नौधा भक्ति सँभार ।
यही करो अस्थापना, यही धारना धार ॥

॥ दोहा ॥

श्याम चरनदास बचन--

हाय हाय हरि चरण सें, नेंक न कीजे दूर ।
सेवा करहुं संग नित, यह मम जीवन मूर ॥
महा त्रास हिये होत है, जुदे करन सुन बैंन ।
तुमसूं कुछ नाहीं दुरी, सुनो कमल दल नेंन ॥

॥ चौपाई धुनि पीलू बरवा ॥

तुम चंदा मोहे जान चकोरा । मुदित भया कर दरशन तोरा ॥
तुम परवत में तुमरा मोरा । खुशी भया ज्यों सुन घन घोरा ॥

तुम हो कमल भँवर मैं तोरा। तुम ठाकुर मैं तुमरा चेरा ॥
स्वांति बूंद तुम चातक मैं हूं। तुमको छोड़ कहां अब जै हूं॥
तुम परधी मैं मृगा तुम्हारो। भावे छोड़ो भावे मारो ॥
तुम गंगाजल गहर नवीनां। मोको जानों अपनी मीना ॥
तुम माता मैं सुत हूं बारा। क्यों कर जीऊं जो हूं न्यारा ॥
तुम सुरभी मैं तुमरा बछरा। कैसे मोहि सुहावे निछुरा ॥
तुम दीपक मोहे जान पतंगा। तुम पै वार भसम करूं अंगा ॥

॥ दोहा ॥

श्री कृष्ण वचन—

धन्य धन्य चरनदास तुम, धन्य तुम्हारो भाव।
काज भक्ति जब कर, चुको बेगहि लेहुं बुलाय ॥

चरनदास वचनिका—

जै जै श्री प्राननाथ आज्ञा अनुसार भक्त को विस्तार अवश्य करना है परन्तु रास विलास दर्शन करने की अत्यंत अभिलाषा लग रही है यह मेरो मनोरथ कृपा कर पूर्ण करिये।

॥ दोहा ॥

श्री कृष्ण वचन—

नैंना मूंद कर ध्यान धर, मेरे जीवन प्रान।
मैं आज्ञा देऊँ तभी, खोलो चक्षु सुजान ॥

॥ समाजी दोहा ॥

चरनदास ताही समय, मूंदे दोऊ नैन ।
खोल कही तब श्री हरि, तन मन पायो चैन ॥
निज वृंदावन लख परो, गोल चौंतरा खास ।
चौंसठ खम्भा सोहना, जहां नित्य रस रास ॥
चरनदास तहां हो गये, नख सिख सखी सरूप ।
नव किशोर शृंगार तन, अद्भुत अधिक अनूप ॥

॥ पद चाल नाटक ॥

श्री प्रियाजी बचन सखियों से—

सखी आवो हमारे पास सकल मिल रास करो । हो रास करो ॥

॥ अंतरा ॥

ललिता विशाखा संग । बीना बजा मृदंग । निरतो नवेले ढंग ।
प्रगटावो प्रेम रंग ॥ प्यारी प्रान ॥
सबही मंडल गोल बनाओ । गावो सरगम सुंदर तान ।
सोरठ और विहाग सोहनी सप्त सुरन सुरभर सुखदान ।
ता ता थेई थेई बोल भली विधि हस्तक भेद रचो रसखांन ।
पदन्यास मृदुहास सहित कर भृकुटी विलास हरष हित मान
सुनो कान, हो सुजान, रस निधान, सरस रस रंग ढरो ॥

सखी बचन—

जै जै श्री जुगल सरकार प्राणाधार, आपकी आज्ञा अनुसार रास विलास अभी आरंभ करती हैं ॥

सांगीत करे पीछे श्याम चरन दासी सखी का
सखियों सहित नृत्त गान

॥ पद ॥

कृष्णचन्द्र कमल नैंन नंद के हो नंदना ।

॥ अंतरा ॥

गोकुल में अवतरे, श्याम रूप छवि धरे ।
यशोदा दुलारे प्यारे, आनँद के कंदना ॥

नटवर छवि कर शृंगार, मोर मुकट शीश धार ।
रास करत मनको हरत, रसिकन चित चंदना ॥

श्री राधे सखिन साथ, नृत्तत श्री प्राननाथ ।
हिल मिल सब गहै हाथ, मुख से हँसत मंदना ॥

ता ता थेई थेई उचार, लेत चपल गति अपार ।
बांकी चितवनि निहार, डारें प्रेम फंदना ॥

सुर समूह चढ़ विमान, निरख हरष वारें प्रान ।
जै जै मुख कहैं बखान, करें सरस बंदना ॥

॥ दूसरा पद चाल नाटक ॥

॥ चरनदास वचन सखियों सहित ॥

राधे श्याम श्यामा श्याम आपको प्रनाम ।
प्यारी प्रीतम प्रभु गुन धाम ॥

॥ अन्तरा ॥

संकट हरन। मंगल करन। तारन तरन।

पोषन भरन। सुन्दर चरन तुम्हार ॥

ब्रज में लियो अवतार। भूमी का हरन भार।

स्वामी हो तुम हमार। बेड़ा करोरो पार ॥

अज्ञान हूं। अनजान हूं। अघ खान हूं। नादान हूं। तुम दीन बन्धु। दीनानाथ। प्रान के आधार। मेरे हो आप प्रान। मनमें तुम्हारा ध्यान। दर्शन दिया हैं दान। सेवक सरस पिछान ॥

हे दयाल हे कृपाल पूरे किये मन के काम। प्यारी प्रीतम गुन धाम ॥

॥ श्री श्याम चरनदास सखी पद ग़ज़ल ॥

फरजंद नंदजु का दिल बीच भावंदा।

बर पाय खूब नूपुर सुन्दर सुहांवदा ॥

॥ अन्तरा ॥

वह सांवला सलोना महबूब यार मन।

आहिस्ता लटक चाल मटक मेरे आंवदा ॥

टीका संदल का खेंच के माथे पै अदा से।

बर सर बिराजे अफ़सरे हीरे जड़ावदा ॥

कुंडल झलकते हैं दर हर दो गोश में।

आवाज बांसुरी की शीरी बज़ावंदा ॥

नीमा ज़रीका का गल में कटि काछनी बनी ।
पीरे दुपट्टे वाला बीड़े चबावन्दा ॥
करता है नृत्तनादिर घुंघरू की झनक से ।
ता ता थेई थेई गति लगांवदा ॥
नैनों की आन तान के अबरू कमान से ।
पलकों के प्रेम तीर कलजे चुभावंदा ॥
घायल किया है मेरे तईं इसके इश्क नें ।
शुकदेव चरनदास के हिय में समावंदा ॥

॥ पद राग सोरठ ॥

रास में रंग आज बरसे, सलोनी सुंदर छवि दरसे ॥
नागरि नवल छैल पिय प्यारी, घन दामिनी दुति तिन पर वारी
निरतत बोलत मुख ताथैया । जोरे कर करसे ॥
बीन मृदंग बजावत नारी, सारंगी सरगम सुखकारी ।
ताल तमूरा की गति न्यारी । आनंद अति दरसे ॥
चहूं ओर नाचत सहचारी, लै सुरताल मिली इक सारी ।
छुम छुम छनन बजत घूंघरू । गावत मिल स्वर से ॥
नाचत भाव बतावत प्यारी, रीझ रहे पिय सरस विहारी ।
बोलत मुख जैजै बलिहारी । अंग अंग परसे ॥
सरद चांदनी रैन उजारी, भूषन वसन दमक चमकारी ।
सरस माधुरी लाल बिहारी । लिपट लगें गरसे ॥

॥ सवैया ॥

चरनदास सुनो प्रिय वात यही जग जीवन को तुम जाय चितावों । उपदेश करो अज्ञान हरो अरु प्रेम की भक्ति को रंग लगावो । भव सिंधु से तार के आनिन को पर धाम हमारे में वेग पठावो । करके उपकार यही अब ही फिर नित्य निकुंज हमारी में आवो ॥

॥ दोहा ॥

चरनदास वचन—

आज्ञा श्री हरि हिय धरी, भक्ती करूं प्रचार ।
विनय करूं पैंया परूं, सुनो जुगल सरकार ॥

॥ पद ॥

तर्ज (हमारी सुध राखियो हम लीनी शरन तुम्हारी)

हमारी सुधि राखियो राधा सरस विहारी ॥

भक्ति प्रचार करूं जग मांही उपदेसूं नर नारी ।
जिनको कृपा कर अपनैयो जीवन प्रान अधारी ॥
प्रेम भक्ति जो करें तुम्हारी धार भाव सहचारी ।
उन्हें वसैयो कुंज महल में कर सेवा अधिकारी ॥
मंत्र सुनाऊं मैं जिन जिनको तुमरो प्रीतम प्यारी ।
तिनको तुम दर्शन निज दीजो करके कृपा अपारी ॥
परम धाम में वेग बुलैयो विनवत वारंवारी ।
सरस माधुरी चरन शरन रख करो न पल छिन न्यारी ॥

श्री कृष्ण वचनिका—

प्यारे चरनदास जो तुमने विनय करी उसही अनुसार तुम्हारे सब मनो वांछित सिद्ध होंगे अब तुम नेत्र मूंदो हम आज्ञा देवें तब खोलो।

॥ समाजी दोहा ॥

चरनदास ताही समय मूंद लिये निज नैंन।
खोलत ही निरखन लगे, वंसी बट सुख दैंन॥
साधु रूप आपन लखे, हरि बिछुरन सुध आय।
भई मूरछा विरह वस, गिरे धरन मुरझाय॥

॥ शुक प्रगटन समाजी दोहा ॥

श्री शुक मुनि ताही समय, प्रगट भये प्रभु आन।
चरनदास गोदी उठा, बोले कृपा निधान॥

श्री शुक वचनिका—

ठोडी के हाथ लगाकर। प्यारे चरनदास चेत करो, धीरज धरो, नेत्र खोलो, मुख से बोलो।

॥ समाजी दोहा ॥

गुरु वचनामृत श्रवन सुन, जागे चरनहिदास।
निरख नैंन चरनन परे, रोकर भये उदास॥

चरनदास वचनिका—

दर्शन जुगल कराइये श्री गुरु कृपा निधान।
नहिं तो तन तज जायगो तातकाल मम प्रान॥

विरह दसा शिष्य देख के, धरो शीश निज हाथ ।
दर्शन कर प्रीतम प्रिया, अति ही हुवे सनाथ ॥

॥ पद ॥

चरनदास वचन–

लाल लाडिली में लखें बन्सी वट की छांह हेली ।
दोऊ खड़े पांव हँसेरी और डारे गल बैंया हेली ॥
मोर मुकट मांथे दियेरी सुंदर नैंन विशाल हेली ।
पीतांबर पट सोहनोरी और फूलन के हार हेली ॥
गुरु शुकदेव बताईयारी जब हम लिये पिछान हेली ।
चरनदास तिनकी भईरी लगो रहै वही ध्यान हेली ॥

॥ समाजी दोहा ॥

जुगल दरस कर छवि छके, चरनदास सुख मान ।
गुरु सिर कर लीनो उठा, हुवे हरि अन्तर ध्यान ॥

श्री राम सखी जी की लीला ।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ॥

॥ श्री जुगल सरकार की स्तुति ॥

जय जय राधा सरस विहारी, श्री प्रीतम प्यारी ।
छैल छबीली जोरी, सुन्दर सुकुमारी ॥
श्री प्रीतम प्यारी ॥१॥

गौर श्याम छवि धाम रसिकवर मूरत मतवारी ।
दीने दोऊ गल बैंया घन-दामिनि वारी ॥
श्री प्रीतम प्यारी ॥२॥

सीस चन्द्रिका लटक मुकुट की मन हरने हारी ।
नील पीत पट सोहत बनमाला धारी ॥
श्री प्रीतम प्यारी ॥३॥

नख शिख भूषण रतन जटित हैं अति आनँद कारी ।
पायल घुंघरू पग में बन माला धारी ॥
श्री प्रीतम प्यारी ॥४॥

मंद हसन मन मोहन सब की, कर मुरली धारी ।
श्यामा के कर कमल बिराजे, चितवन अनयारी ॥
श्री प्रीतम प्यारी ॥५॥

रास बिलासी प्रेम प्रकाशी, रसिकन रिझवारी ।
रङ्ग रंगीले रसिया, मदन मान हारी ॥
श्री प्रीतम प्यारी ॥६॥

दंपति दोऊ सखिन की सम्पति, वृंदावन चारी।
सरस माधुरी शरण चरण की, वलि वलि वलिहारी ॥
श्री प्रीतम प्यारी ॥७॥

॥ पद ॥

राधे रानी रंगीली सरकार तुम्हारी महिमा अपार ॥

॥ अन्तरा ॥

प्यारी दया निधान, तुम सम न कोई आन।
दीजे जी प्रेम दान, विनती सलोनी मान ॥ शोभा खान ॥
रूप उजारी, भोरी भारी, प्रान प्यारी बेटी वृषभान।
अति सुकुमारी, मैं बलिहारी, चरण शरण विन गति नहिं आन
सेऊँ मैं पद कमल स्वामिनि, रहूं कुंज रस में ग़लतान।
धर ध्यान, सुन कान, महरबान, सरस की हो प्राण अधार ॥
हो प्राण अधार ॥

॥ पद ॥

श्री ठाकुरजी बचन–

मम प्रान। मम प्रान। मम प्रान प्यारी। तुम पर वारी, रास रचो श्री श्यामा। मम प्रान।

॥ अन्तरा ॥

हो रासेश्वरी सुकुमारी, जीवन धन सदा हमारी।
मुख छबि पर मैं बलिहारी, मधुरी बोलन मनहारी ॥

॥ चलन ॥

नाचत हैं वनमें मोरा, सुन सुन के घन की घोरा।
कोयल है करती शोरा, गुंजत हैं भौंरी भौंरा ॥
हो सरस माधुरी की तुम स्वामिनि रूप राशि गुण धामा॥
मम प्राण ॥

॥ दोहा ॥

श्री ठाकुरजी वचन--
रस रूपा रस मंजरी, मेरी जीवन प्रान।
कहूं प्यार करके बचन, सुनो श्रवण हितमान ॥

॥ सवैया ॥

१

रस मंजरी प्यारी हमारी तुम्ही, बलि भारत भूमिमें जा प्रगटावो
प्रेम की मंजरी पहिले गई, तिनकी सिवकाई करो सुख पावो॥
रास बिलास रचो सजनी, पुनि प्रेम अरु भक्ति को रंगलावो।
सरस रसामृत पान करो, पुनि जग जीवन को पान करावो॥

२

कलि कीर्तन के नहिं आन समान, करे जो कोई मम प्रान को प्यारो
कीर्तन सों मैं होउं प्रसन्न, येही निश्चय मन मांहिं विचारो ॥
कीर्तन होय जहां चलि जाऊँ, करूँ उनसे हित हेत अपारो।
सरस माधुरी झांकी दिखाय, रहूं तिनसों नहिं नेकहु न्यारो॥

श्री राम सखी बचन--

प्राण के प्यारे हो नाथ हमारे, तुम्हारे पदाम्बुज में शिरनाऊँ।
आज्ञा तुम्हारी लई उर धारके भूतल में अब जा प्रगटाऊँ॥
प्रेम की मंजरी शर्ण गहूं शुचि, रास विलास रचूं हुलसाऊँ।
सरस बना जग जीवन को, तुम्हरे निज धाम तिन्हें पहुंचाऊँ॥

॥ दोहा ॥

दासी की सुधि राखियो, प्रिय प्रीतम घन श्याम।
याद करूँ तव दरस दे, ले अइयो निज धाम॥

॥ पद ॥

श्री ठाकुरजी बचन--

रस मंजरी प्यारी सुनाऊँ तुम्हें। मेरे मन की जो बातें बताऊँ तुम्हें
तुम याद करो मैं वहां आऊँ। निज अपने दरस को दिखाऊँ तुम्हें
आवो आवो प्यारी हमारे निकट। हित करके हिये से लागाऊँ तुम्हें
मेरे सरस बचन हैं प्रतीत करो। सँग धाम में अपने ले आऊँ तुम्हें

॥ दोहा ॥

समाजी बचन--

जो आज्ञा कर कह गई, रस मंजरी सुख रास।
प्रगटी दिल्ली शहर में, जहां श्याम चरनदास॥

॥ दूसरा प्रकर्ण ॥

॥ दोहा ॥

समाजी बचन--

शुभ दिल्ली स्थान में, राजें श्री महाराज ।
होत रहत आनंद मय, नित सतसंग समाज ॥

संग लिये निज पुत्र को, शिष्य करावन हेत ।
सतगुरु शरण पुनीत शिष्य, आयो प्रेम समेत ॥

॥ सवैया छन्द ॥

सतगुरु शरण कायस्थ बचन--

यह बालक भेट करूँ हित सों, गुरुदेव दयानिधि दीक्षा दीजे ।
गृहस्थाश्रम साधन योग नहिं, प्रभु संत बनाय अनुग्रह कीजे ॥
हरि सेवा करै नित ही चित दे, मन याको निरंतर प्रेम में भीजे ।
सरस सलोनी करे हरि भक्ति को, जक्त के मांहि यही यश लीजे ॥

॥ सवैया छन्द ॥

श्री श्याम चरणदासजी बचन--

प्रिय सेवक सतगुरु शर्ण सुनो, तुमसों हम बात कहत समझाई ।
तव पुत्र को शिष्य बना करके, गुरु मंत्र अभी हम देंय सुनाई ॥
सेवक शिष्य हमारे सभी, तिनकी तिय आये होंय शर्णाई ।
हरि भक्ति करें रस रास रचें, यह सर्स विधी हमरे मन भाई ।

श्री महाराज बचन--

प्यारे सतगुरु शरण तुमने जो अपने पुत्र को हमारे भेंट करके दीक्षा देने की प्रार्थना करी वह हमें अत्यंत प्रिय मालूम हुई। अब हम अंदर मन्दिर में जाकर विधि पूर्वक मंत्र उपदेश करते हैं और इनका नाम राम सखी रखकर नृत्त गान की तालीम दिला कर श्री राधे श्याम की परम प्रिय बनाकर सखी भावना में मग्न कर देते हैं तुम प्रसन्न रहो।

॥ तीसरा प्रकरण ॥

॥ समाजी दोहा ॥

राम सखी सखियन सहित, करत वारतालाप।
श्री कृष्ण के मिलन हित, कर रहीं पश्चाताप ॥

राम सखी–

मेरी प्यारी सखियो अबतो श्री कृष्ण प्राण प्यारे के दरशनों को मेरे प्राण अकुलाते हैं। कैसी करूँ धीर कैसे धरूं। तुम हिल मिल के प्राणनाथ के दरशन देने के निमित्त प्रार्थना पद गावो और मुझे सुना कर मेरी धीरज बंधाओ।

सखियां--

बलिहारी श्री राम सखी प्यारी। अब हम विनय का पद गाती हैं तुमको सुनाती हैं तुम सुनो।

राम सखी--

अरी सखियो तुम प्यारे के गुणवाद गावो मैं सुनती हूं।

॥ सखी पद गाती हैं ॥

॥ ठुमरी ॥

मिलोजी आन रसखान मोहनवा ॥
तरस रही तुम्हरे दरशन को दिखलादो छबि श्याम सोहनवा ॥
लोकलाज कुल कान त्यागके लगी फिरत तेरे गोहनवा।
सरस माधुरी रसिक शिरोमणि विरह विपति के तुमही खोवनवा॥

राम सखी--

प्यारी सखियो जो पद तुमने मुझे गाकर सुनाया यह मेरे मनको अत्यंत भाया अब मैं एक पद तुमको गाकर सुनाती हूं तुम श्रवण करो।

सखी--हां प्यारी राम सखीजी आप गाइये हम सुनती हैं।

राम सखी--

सुनो बिनती मेरी धर ध्यान मोहन कान थोड़ीसी।
दिखादो सांवरी सूरत अजी दिलजान थोड़ीसी॥

तुम्हारी याद करती हूं न जीती हूं न मरती हूं ।
जिलावो मुझको आ जानी करो मुसकान थोड़ीसी ॥
न मेरे घर पै आते हो न तुम मुझको बुलाते हो ।
तजो दिलसे अजी दिलवर निठुरता वान थोड़ीसी ॥
लगाई प्रीति क्यों हम से छुड़ाते क्यों नहीं ग़म से ।
निभाया कीजिये कुछ तो पिया पहिचान थोड़ीसी ॥
हमेशा रहते थे हमदम मुहब्बत क्यों करी अब कम ।
न भूलो रस्म मिलने की मेरी लो मान थोड़ीसी ॥
अदा से देखलो जानी मधुर मुख बोलिये बानी ।
मेरी सुध लीजिये प्यारे अजी अब आन थोड़ीसी ॥
सरस यह माधुरी दासी अधर अमृत की है प्यासी ।
करो मन कामना पूरण अजी रसखान थोड़ीसी ॥

प्यारी सखियो मुझको अनुभव हुआ है कि इस आसौज सुदी १५ की रात्रि को श्री कृष्ण रसराशी खास दासी को अपने नटवर रूप का दरशन करावेंगे और अपने संग ही लेजावेंगे ।

॥ दोहा ॥

श्री सतगुरु दरबार में, एक सखी जाओ धाय ।
विनती मोर सुनाय के, लावो प्रभुहिं लिवाय ॥
जाऊँगी निज धाम में, श्यामं सुंदर के संग ।
परमानंद प्रगट हुओ, पुलकित हैं सब अंग ॥

समाजी वचन—

जो आज्ञा कहकर गई, सखी गुरुन दरबार।
शीश नवा कर जोर के, विनय करी उच्चार॥

सखी—जय जय श्री महाराज जी, विनय सुनो चितलाय।
राम सखी को कृपा कर, निज दरशन दो जाय॥
विरह व्यथा छाई महा, रही अधिक अकुलाय।
बिन दरशन श्री कृष्ण के, सुध बुध गई भुलाय॥

श्री महाराज—

संग चलें तेरे सखी, राम सखी के पास।
धीरज दे बहु भांति से, करें विरह दुखनास॥

समाजी—आये श्री महाराज जी, राम सखी के धाम।
उठ सादर सनमुख खरी, करी चरण परनाम॥

॥ पद राग सारंग ॥

राम सखी—

अरज सुनो श्री गुरु चितलाई।
बिन हरि दरशन चैन नहीं है विरह व्यथा तन मन में छाई॥
भूख प्यास व्यापत नहीं तनमें निशि की निद्रा सकल गंवाई।
हाय हरी रसना रट लागी श्याम सुंदर सों देहु मिलाई॥
तलफत प्राण पिया बिन देखे पीर वियोग सही नहीं जाई।
सरस माधुरी छबि मोहन की राम सखी को देहु दिखाई॥

॥ पद राग सोरठ ॥

श्री महाराज--

राम सखी तुम परम सयानी ।
धीरज धरो करो हरि भक्ती उपदेशो जग भूले प्रानी ॥
शिष्य सेवक जिनकी जो नारी तिन हुन तुम कह गुरुकर मानी ।
तुम जावो अब धाम श्याम संग सत संगत में हो वडि हानी ॥
कछु दिन और रहो या जगमें मानो यही हमारी बानी ।
चरनदास कहैं करो कीरतन कालि में प्रेम भक्ति सुखदानी ॥

राम सखी—अंतरयामी आप हो, सो अनाथ के नाथ ।
उचित होय सो कीजिये, लज्जा तुम्हरे हाथ ॥

श्री महाराज--

जावो सुंदर श्याम संग, अमरलोक निज धाम ।
दंपति की सेवा करो, हित सों आठों जाम ॥

समाजी--लगन हिये की जानके, आरत अधिक पिछान ।
शिर पर फेरो हाथ निज, दियो प्रसादी पान ॥
रहियो सुख आनंद में, यो कहि श्री महाराज ।
मन्दिर पहुंचे आय निज, जहां सत संग समाज ॥

॥ चौथा प्रकर्ण ॥

राम सखी--

प्यारी मेरी सब सखी, करो अंग श्रृंगार ।
बसतर पहिरो सोहने, भूषण विविधि प्रकार ॥

आश्विन शुक्ला सुखमई, पूनों परम पुनीत।
आवो गावो हे सखी, हिल मिल गोपी गीत॥

॥ पद ॥

अहो नवल लाल पिय विनय सुन लीजिये।

बास बृन्दा विपिन टहल श्री कुंज की,
सोहिनी आदि मोहिं कृपाकर दीजिये॥
और कछु ना चहों मुक्ति बैकुण्ठ लों,
रूप रस माधुरी पान कर जीजिये॥
परी भव जलधि में पार पावत नहीं,
धुनत शिरनाथ वलि दया टुक कीजिये॥
राम सखी शरण पे दृष्टि करुणा करो,
भई अति विकल सब गयो बल छीजिये॥

समाजी–सखी संग तजके तभी, राम सखी सुकुमार।
मन्दिर से बाहिर निकस, बन को भई तयार॥
पकर लई बैंया गही, और आलिन ततकाल।
भीतर लाई भवन में, सब ही संग की बाल॥

॥ राग कालंगड़ा ॥

राम सखी–

बृजराज बिहारी आइये।
मैं व्याकुल तुम्हरे बिन प्रीतम निज छबि छैल दिखाइये॥

धीरज रह्यो नेक नहिं जिय में दे निज दरस जिवाइये ।
राम सखी दासी चरनन की श्याम संग ले जाइये ॥

समाजी--राम सखी को ता समय, कोठे में वैठाय ।
जुड़ किवाड़ सांकल दई, ताला दियो लगाय ॥
प्रगट भये ताही समय, कुंज बिहारी लाल ।
भक्तन के मन भावने, प्रेमिन के प्रतपाल ॥
कोठे के पट खुल गये, भीतर पहुंचे आन ।
राम सखी निज संग ले, बोले कृपा निधान ॥

॥ राग कान्हरा ॥

श्री कृष्ण--
सुनो राम सखी सुखदानी ।
मूरति प्रेम प्राण धन मेरी, यह निश्चय कर जानी ॥
निज बृन्दाबन से चलि आयो, आरत बचन सुनत उठ धायो।
रास रंग मोहि नाहिं सुहायो, सत्य समझ मम बानी ॥
गोपिन कीसी प्रीत तुम्हारी, मैंने निज उर अन्तरधारी ।
प्राण बल्लभा हो तुम प्यारी, मेरे अति मन मानी ॥
प्रेमिन को मोहि ऋणिया चीनो, मैं निज सर्वस उनको दीनो ।
रहों सदा उनके आधीनो, यह प्रसिद्ध नहिं छानी ॥
प्रेमिन से जीवन है मेरो, उनके चरण कमल को चेरो ।
सरस माधुरी हेत घनेरो, वार पिऊँ नित पानी ॥

॥ दोहा ॥

राम सखी सह वपु चलो, निज वृन्दावन धाम ।
रास रंग आनंद रस, बिलसो आठों याम ॥

॥ समाजी दोहा ॥

सखी सकल सनमुख खड़ी, कर जोरे शिरनाय ।
छकी निरखि छबि कृष्ण की, आँनंद उर न समाय ॥
राम सखी निज संग ले, श्री कृष्ण रस खान ।
सब सखियन के देखते, भये जो अंतरध्यान ॥

(सखियों का हिलमिल के गाना और आनंद मनाना)

॥ गजल ॥

परम आनंद का दिन यह, महा आनंदकारी है ।
श्रीमत श्याम सुंदर संग, सखी राम सिधारी है ॥
जहां योगी नहीं जावें, पता ज्ञानी नहीं पावें ।
वहां पर रास मंडल में, रमी जाके वह प्यारी है ॥
श्री सतगुरु हुवे साई, मिले श्री कृष्णजी आई ।
महा दरशन की निधि पाई, सखी बड़ भाग वारी है ॥
हजारों जीव निस्तारे, चरण के दास सतगुरु ने ।
जगत में सब जगह जिनकी, है छाई महिमा भारी है ॥
किया कलि में प्रगट सतयुग, प्रचारा प्रेम भक्ती को ।
भजन भारत में विस्तारा, भई कीरत अपारी है ॥
निरस जो जन थे संसारी, बनाया सर्स सबही को ।
उन्ही रनजीत लालन को, सखी लज्जा हमारी है ॥

फुटकर पद ।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ॥

॥ पद ॥

(प्रात समय व संध्या समय व राज भोग समय गायबे को)

नमो नमो जय श्री शुकदेव, चरणदास जय श्री गुरुदेव ॥

नमो नमो वृन्दावन धाम, सेवा कुंज नमो अभिराम ।
नित्य बिहार जहां आठों जाम, बिलसत हैं श्री श्यामा श्याम ॥
श्री शुक सखी नमो चरन दासी, सेवत सेवा कुंज विलासी ॥
नित निरखत दंपति रस रासी, जुगल राधिका श्याम उपासी ॥
नमो नमो जय जमुना प्यारी, दरश परस अचवन अघहारी ।
रस रूपा रस की दातारी, परा भक्तिदा कृष्ण पियारी ॥
नमो नमो रावलि बलिहारी, जहां प्रगटी श्री राधे प्यारी ।
नमो नमो गोकुल सुखकारी, प्रगट भये जहां सरस बिहारी ॥
नमो नमो जय श्री बरसाना, रसिक जनन को ठौर ठिकाना ।
नंद ग्राम सुंदर मन माना, गोपी ग्वाल बसै जहां नाना ॥
नमो नमो जय बन संकेत, जासों अधिक जुगल को हेत ।
प्रेम सरोवर परम निकेत, नहावें प्रेम जुगल रस देत ॥
नमो काम बन पूरन काम, नित क्रीड़त जहां श्यामा श्याम ।
विमल कुंड आदिक शुभ ठाम, करें संत सुख सों विश्राम ॥
नमो नमो गोवर्धन गिरिवर, सुभग तरहटी नाना सरवर ।
लता कुंज अगनित जित तरुवर, लीला ललित करत जहां गिरधर

नमो नमो जय मानसी गंगा, नहाये मिले जुगल रस रंगा।
कुसुम सरोवर उठत तरंगा, निरख नयन मन होत उमंगा ॥
नमो राधिका कुंड सुहावन, कृष्ण कुंड संतन मन भावन।
प्रेमानंद हिये सरसावन, रस निकुंज लीला दरशावन ॥
प्रणमो बृज मंडल चौरासी, बन उपवन सबही सुखरासी।
बृज रज रसिक सदा रस रासी, नमो नमो जय बृज के वासी ॥
नमो समस्त संत चरणदासी, रसिक शिरोमणि प्रेम विलासी।
भजनानंदी हिये हुलासी, पराभक्ति जग मांहि प्रकासी ॥
प्रेम सहित इनके गुन गावे, जग बंधन तिनको छुट जावे।
चौरासी जम दंड नसावे, अमरलोक निज धाम बसावे ॥
जो हित चित सों पढ़े पढ़ावे, अनमोदन कर हिये हरपावे।
हुलस हुलस तन मन पुलकावे, प्यारी प्रीतम के मन भावे ॥
नित उठ जो जन ध्यान लगावे, कुंज महल सहचरि पद पावे।
श्री सतगुरु बलदेव बतावे। सरस माधुरी बलि बलि जावे ॥

॥ छप्पै ॥

श्रीमत शुकमुनि के रटें कटें कर्म जग जाल।
श्याम चरण के दास भज भय छूटे ततकाल ॥
भय छूटे ततकाल लाडली लाल निहारे।
छके रूप को निरख विश्व सुख सकल विसारे ॥
रहै सदा लवलीन रूप के सिंधु अगाधा।
सरस माधुरी मगन मीन मन तज भव बाधा ॥

॥ मांझ ॥

महा भाव रस राज रूप शुक चरनदास प्रगटाये हैं ।
जुगल नाम दे दान जक्त के जीव अनेक चिताये हैं ॥
पात्र अपात्र विचार न रंचक हरि रस सकल छकाये हैं ।
सरस माधुरी आचारज जग महाप्रभु कहिलाये हैं ॥

॥ सोरठ ॥

कहो मन श्री शुक मुनि शरणम् ।
श्याम चरण के दास दयानिधि हैं दुख के हरणम् ॥
स्वामी राम रूप रस दाता आनंद के करणम ।
रामकृपाल कृपा के सागर सब सुख विस्तरणम ॥
विहारीदास निज रस निकुंज के हैं पोषण भरणम ।
ठाकुरदास दीन के रक्षक निज जन निस्तरणम् ॥
श्री सतगुरु वल्देवदास प्रभु अधमन उद्धरणम् ।
सरस माधुरी शरणागत के हैं तारण तरणम् ॥

॥ दोहा ॥

(श्री रास लीला के आरंभ में अलापचारी के धुनि ।)

श्रीमत महा प्रभो शुकमुनि राज रसिकाधिराज वर गाइये ।
श्रीमत श्याम चरणदासाचार्य चरण कमल उर ध्याइये ॥
श्रीमत स्वामी रामरूप गुरुभक्तानंद भूप मनाइये ।
श्रीमत गुरु वलदेवदास करुणा रास दुलराइये ॥

इनकी कृपा निकुंज महल की सेवा संपति पाइये ।
सरस माधुरी महा मधुर रस पीकर प्रेम छकाइये ॥

॥ राग कल्याण व काफी ॥

शुकमुनि चरनदास वलिहारी ।
कियो भजन रस सुगम कृपाकर दरशाये श्री कुंज विहारी ॥
मुदित भये भज चरन लड़ेती हिये में झलकी प्रेम छटारी ।
उमड़ी घटा नयन जल धारा सरस माधुरी रस अधिकारी ॥

॥ दोहा ॥

श्री शुकमुनि मंगल करन, मनमें करो प्रतीत ।
अष्ट सिद्ध नव निद्ध के, दाता श्री रनजीत ॥
श्याम चरन के दास प्रभु, आचारज शिरमौर ।
सरस माधुरी विश्व में, व्याप रहे सब ठौर ॥
श्री स्वामी महाराज जी, रामरूप रसखान ।
चरनदास गुरु लाड़ले, सर्वस जीवन प्रान ॥
श्रीमत रामकृपालजी, महाराज गुणवंत ।
गुन निधान गलतान हरि, मनके हरन महंत ॥
सेवत श्यामा श्यामा श्याम नित, संत बिहारी दास ।
श्रीमत नवल निकुंज में, जहां नित्त रस रास ॥
श्रीमत ठाकुरदास प्रभु, दादा गुरु शिरमोर ।
सरस माधुरी चरन में, नमन करत कर जोर ॥

श्रीमत सतगुरु कृपानिधि, श्री बलदेव जु दास ।
सरस माधुरी हिये में, निशि दिन करत निवास ॥

॥ दोहा ॥

विघन हरन सुख के करन, श्री शुकदेव दयाल ।
श्याम चरन के दास प्रभु, सदा रहैं प्रतिपाल ॥
वंदन कर सतगुरु चरन, श्री बलदेव जु दास ।
सब विधि मङ्गल के करन, पूरन करता आस ॥

॥ दोहा ॥

भली करैं भगवान शुक, भय चिंता तज चित्त ।
सुमर श्याम चरनदास को, सुन मेरे मन मित्त ॥
श्रद्धा अरु विश्वास दृढ, हृदय धारिये नित्त ।
सरस शरण रक्षक गुरू, करिये तिनसों हित्त ॥

॥ दोहा ॥

सुख देवें दुख सब हरें, श्री शुकदेव दयाल ।
ब्रह्म रूप व्यापक सकल, वेदव्यास के लाल ॥
श्याम चरन के दास की, चरण शरण ले आय ।
शरणागत वत्सल प्रभू, दंपति देहिं मिलाय ॥
छांड सकल छल चतुरता, दृढ़ धर उर विश्वास ।
सरस माधुरी गुरु कृपा, मिले धाम में बास ॥
निश्चय बिन निरफल सकल, जोग जज्ञ तप दान ।
संशय जिनके चित्त में, सरस न हो कल्यान ॥

॥ दोहा ॥

जय जय जय श्री शुकमुनी, श्याम चरन के दास ।
आश्रित जन रक्षा करण, आनँद मङ्गल रास ॥

श्रीमत स्वामिनी राधिका, सरस विहारी लाल ।
मङ्गल मूरति मन हरन, निज भक्तन प्रतिपाल ॥

॥ पद ॥

नमो शुक श्याम चरन के दास ।
दंपति इष्ट मिष्ट उज्वल रस उन्नत अधिक अनन्य उपास ॥
सरस विहार सार निगमागम गायो अद्भुत रास विलास ।
कीनों प्रगट प्रेम को मारग परा भक्ति को कियो प्रकास ॥
भीने रहत युगल छवि निधि में लीन मीन ज्यों और न आस।
सेवा सुख पर्यंक पुलक तन तत् पर टहल महल की खास ॥
निरखत रहत रंक के धन ज्यों तजत न पल छिन तिनको पास ।
लिये रिझाय रसिक चूड़ामणि शुभ्म चंद्र करुणा की रास ॥
आश्रित जन जितने जग मांही दीनों निज वृंदावन वास ।
परिकर निकर निरंतर निश दिन सिंचित कृपा दृष्टि अनयास ॥
लीला ललित निकुंज पुंज रस अनुदिन आनँद सिन्धु हुलास ।
सरस माधुरी शरन हिये की पूरन करन सकल अभिलास ॥

॥ दोहा ॥

आचारज भूतल प्रगट, श्री शुकमुनि चरनदास ।
कुंज महल में सखी वपु निरखत रास विलास ॥

अष्ट याम सेवा करें, षट ऋतु बारह मास।
मगन रहें लखि छबि युगल, दंपति खास खवास॥
मिले टहल रंग महल की, निश्चय दृढ़ विश्वास।
सरस माधुरी शरन के ये दोउ इष्ट उपास॥

॥ राग कालंगड़ा व श्याम कल्याण॥

जय श्री शुकदेव चरण शरणम्। श्री चरनदास भव भय हरनम्॥
स्वामी राम रूप रसदाता। राम कृपाल कृपा करनम्॥
विहारीदास दया के सागर। ठाकुरदास तारन तरनम्॥
श्री बलदेव दीन दुख भंजन। सरस माधुरी उद्धरनम्॥

॥ राग विहाग॥

श्री शुकमुनि करो चरण को चेरो।
श्याम चरन के दास दयानिधि लखो न अवगुण मेरो॥
काटो कर्म कलेश दास के भव बन्धन उरभेरो।
लेहु लगाय शरण अपनी में जासों होय नवेरो॥
सेवहुँ संतत युगल विहारी वृन्दा बिपिन बसेरो।
निरखों केलि कुंज दंपति की रहों निरंतर नेरो॥
यह अभिलाषा पुरवहु जन की दृष्टि अनुग्रह हेरो।
सरस माधुरी मन को स्वामी ओर आपनी फेरो॥

॥ राग॥

श्री शुकमुनि मोकों निजकर जानों।
श्याम चरन के दास खास बिन मूल और नहि मानों॥

शरण गहे की लाज राज कों यह निश्चय उर आनों।
शरणागति पालन प्रण तुमरो लोक प्रसिद्ध वखानों ॥
और ठौर की त्याग भर्मना तुमरे ही हाथ विकानों।
सरस माधुरी चरण कमल तज नाहिन आन ठिकानों ॥

॥ दोहा ॥

महा प्रभो श्री शुक मुनी, श्याम चरन के दास।
प्रणमों तिनके पद कमल, आनंद मंगल रास ॥
स्वामी रामहि रूप जू, स्वामी राम कृपाल।
विहारिदास पद वंदि के, पुनि पुनि होंहु निहाल ॥
श्रीमत ठाकुर दास जू, परम गुरू शिर मोर।
तिनके पद वंदन करों, दोउ कर संपुट जोर ॥
श्री सतगुरु करुणा यतन, श्री वलदेव जु दास।
सरस माधुरी पद्म पद, वन्दित सहित हुलास ॥
आचारज निज संप्रदा, अनगिन संत महंत।
सरस माधुरी करत हैं, वन्दन वार अनंत ॥

॥ दोहा ॥

महा प्रभो मन के हरन, मंगल करन कृपाल।
वन्दो वेदव्यास सुत, श्री शुकदेव दयाल ॥
अभय करन भव भय हरन, श्याम चरन के दास।
आचारज शिर मौर प्रभु, आनंद निधि सुख रास ॥
समरथ सव विधि कृपानिधि, स्वामी रामहिरूप।
पगे प्रेम प्रीतम प्रिया, रसिक शिरोमणि भूप ॥

रंगे रहत अनुराग में, स्वामी राम कृपाल ।
जो जो जन आये शरण, हरि धन किये निहाल ॥
सेवत दंपति महल में, स्वामि बिहारी दास ।
जुगल विहार निकुंज रस, बांटत सहित हुलास ॥
मगन मानसी ध्यान में, निरखत जुगल विलास ।
दाता प्रेमा भक्ति के, जै श्री ठाकुर दास ॥
रहत छके रस रास में, पगे निकुंज विलास ।
सरस माधुरी सतगुरू, श्री वलदेव जु दास ॥
श्री गुरु को सुमिरन भजन, धरूँ हृदय नित ध्यान ।
मनसा वाचा करम कर, श्री गुरु अनुसंधान ॥
एक भरोसो एक वल, एक आस विश्वास ।
सरस माधुरी दें मिला, गुरु दंपति अनयास ॥

॥ सवैया ॥

श्री शुकमुनि के परम प्रिय शिष्य चरनदास गुन गन नित गइये ॥ तिनकी कृपा निकुंज महल की सेवा सुख सर्वोपरि पइये ॥ उज्ज्वल रस उन्नति अति अद्‌भुत निरखि केलि दंपति हुलसइये ॥ सरस माधुरी रस आचारज चरन शरन इन ही की अइये ॥

॥ राग सारंग ॥

श्याम चरनदासी जय कहिये ।
जिनको नाम जपत आनँद निधि अनयास अलि पदवी लहिये

श्री शुक अली प्रान प्यारी के नित नव गुन रसना सों गइये ।
रखिये आस भरोस इन्हीं को भूल भरम इत उत नहिं वहिये ॥
श्री शुक सखी चरन दासी को ध्यान भजन उर अन्तर गहिये ।
गौर श्याम आचारज दोऊ यातें अपर और कहा चहिये ॥
अलभ लाभ यह मिल्यो भाग सों प्रेम पुलकि हियमें हुलसइये ।
दंपति सुख संपति सर्वोपरि टहल महल मन मानी पइये ॥
दियो बता गुरु अलि बलदेवी सार भजन सुख सिंधु समइये ।
सरस माधुरी नित्य निरंतर चरन शरन इनही की रहिये ॥

॥ राग सारंग, विहाग ॥

मो मन जुगल अली दृढ़ आसा ।
श्री शुक सखी श्याम चरनदासी पद पंकज में बासा ॥
इनको सुमरन भजन भावना नाम जपूँ प्रति स्वांसा ।
करत सहाय सकल विधि येही रहा न कोई सांसा ॥
शरनागति प्रतिपाल दयानिधि भूल शूल भ्रम नासा ।
संकट हरन करन मुद मंगल मेटन भव भय त्रासा ॥
प्रेम परा पद में पहुंचावन दरशावन रस रासा ।
कुंज महल सेवा दंपति की संपति दें अनयास ॥
श्री बलदेवी दया कृपा बल भयो अचल विश्वासा ।
सरस माधुरी विरद भरोसे नित आनंद हुलासा ॥

॥ राग सोरठ, विहाग ॥

मोहे शुक स्वामिनी की आस।

श्याम चरनदासी दयानिधि उभय इष्ट उपास ॥

श्याम गौर सरूप जिनको जुगल अंग प्रकास।

प्रिया प्रीतम सखी वपु दोउ अति सुमंगल रास ॥

है जु भेदा भेद को सिद्धांत निगम सुभास।

प्रगट रसिकन कों जनायो धन्य करुणा रास ॥

कुंज रस की पुंज में जहां होत रास विलास।

सरस रस की माधुरी को दीजिये जहां बास ॥

॥ राग सोरठ ॥

मेरी मन भावन शुक चरन आली री।

तिनकी हैं जीवन धन भान लली री ॥

॥ अन्तरा ॥

दंपति को सेवत दोऊ भांति भली री।

निरखि नैन खिलत मनों कमल कली री ॥

बृंदावन विहरत नित छैल छली री।

रहत सदा संग संग कुंज गली री ॥

बिलसत हैं रस विलास रास थली री।

सरस माधुरी उमंग रंग रलीं री ॥

॥ राग विहाग ॥

जय शुक सखी श्याम चरनदासी नित रसना यह नाम कहो।
श्रुति सिद्धांत सार निगमागम परम भजन हिय हरष गहो ॥
टहल महल की जो चित चाहत यातें अपर न साध्य अहो।
निस्संदेह दयानिधि दंपति यही भजन विधि सिद्धि लहो ॥
कहें गुरु अलि बलदेवी जू निश दिन चिंतत चरन रहो।
सरस माधुरी परम मंत्र यह सुमरि सकल भव ताप दहो ॥

॥ राग विहाग ॥

रावरो मोहि भरोसो भारी।
श्री शुक सखी श्याम चरनदासी आस तिहारी धारी ॥
मेरे पूज्य प्रान धन दोऊ इष्ट मिष्ट सुखकारी।
सब विधि करन सहाय हमारी प्रेम दान दातारी ॥
प्रगट करी शुकदेव संप्रदा परा भक्ति विस्तारी।
धर निज हाथ सनाथ कियो जग अभय किये नर नारी ॥
लिये उवार पतित छाया कर कीने भव निधि पारी।
दै निज नाम दान दंपति को किये धाम अधिकारी ॥
जिन जिन शरन लई चरनन की प्रीति रीति उर धारी।
पायो अचल बास बृंदावन जहां विहरत पिय प्यारी ॥
बलदेवी गुरु अली मयाकर तुम चरनन में डारी।
शरन गहे की लाज कृपा निधि सरस माधुरी वारी ॥

॥ सांझ ॥

जय शुक सखी श्याम चरनदासी तुम पद पंकज ध्याऊँ ।
रास रसिक दंपति सुख संपति तुम कृपा तें पाऊँ ॥
ये उत्कंठा मन में मेरे रस की माँझ बनाऊँ ।
सरस माधुरी नित्त श्याम गुन हिये हुलस के गाऊँ ॥

॥ वंदना पद ॥

नमो नमो जय शुक अलि प्यारी ।
श्याम चरणदासी सुखरासी रासविलासी प्राण अधारी ॥
नित्य निकुंज धाम बृन्दावन उज्ज्वल रस लीला विस्तारी ।
सेज सुदेस सुखद सुंदर पर बिलसावन नित रसिक बिहारी ॥
निरखत नवल विहार हरष हिय नयनन छाई प्रेम खुमारी ।
श्री दंपति संपति सुख लूटत तन मन प्राण करत बलिहारी ॥
नेह युगल निधि लीन मीन मन एकहु पल छिन होत न न्यारी ।
सरस माधुरी दान देन को प्रगट भई भूतल सुकुमारी ॥

॥ दोहा ॥

"जय जय जय श्री शुक सखी सुखदा हित की रूप ।
अहलदनि कलबेनिका आनंदा जु अनूप ॥
रस पुंजा रस रूपिनी प्रेम प्रभा अभिराम ।
अष्टम प्रमुदा नाम सुख तिनको कोटि प्रनाम" ॥
जयति चरनदासी सखी गंधर्वा गुण ग्राम ।
प्रमोदनी चूड़ामणी मधुर सुरा वर वाम ॥

सहजानंदनि स्वामिनी गुण प्रकाशिका नाम ।
जुक्तानंदनि प्रमुद मंगला जन मन पूरन काम ॥
नाम अष्ट जो जन जपे लहे जुगल अनुराग ।
सरस माधुरी महल सुख अविचल मिले सुहाग ॥

॥ राग विहाग ॥

प्रगटें हैं सखि श्री शुकदेव ॥
सहचरि रूप महल के मांही भाविक जन जानत यह भेव ॥
गइये हरष बधाई इनकी प्रीति सहित पद पंकज सेव ।
तन मन धन करिये न्यौछावर दोउ कर जोर बलैयां लेव ॥
नैंन निहार ध्यान हिय धरिये रख दृढ़ सेव करन की टेव ।
सरस माधुरी मूरति सुंदर श्याम वरन सों करिये हेव ॥

॥ राग कान्हरा ॥

सखी सुन लगत बधाई प्यारी ।
श्री वेदव्यास ग्रह शुकमुनि प्रगटें स्वयं कृष्ण अवतारी ॥
सुंदर श्याम सरूप सुहावन, चंद्र वदन छवि मदन लजावन ।
वय किशोर चित चोर सलोने, मृदु मुसकन पर वारी ॥
ऋषि मुनिराज सबही हरषाये, निरखन लालन मुख मिल धाये
देव दुंदभी हरष बजाये, नचत अप्सरा नारी ॥
दसों दिशा जय जय धुनि छाई, जन्म लियो रसिकन के राई ।
सरस माधुरी नव निकुंज रस कृपा करें सुखकारी ॥

॥ राग कन्हरा ॥

प्रगटे शुकमुनी सयानी ।
श्री वेदव्यास भगवान प्रान धन प्रेम भक्ति के दानी ॥
सुंदर श्याम सलोने दरसन, निरखि सरूप सबही भये परसन ।
रसिकन के चित को आकरसनं, मृदु मुसकन सुख खानी ॥
कलि कलेश सब जग को हरि हैं, रस निकुंज की वरषा करि हैं ।
अनगिन जीवन कों निस्तरि हैं, यह निश्चय हम जानी ॥
रंग महल मारग दरसावन, प्रेम परा पद में पहुंचावन ।
या कारन इनको भयो आवन, सरस माधुरी बानी ॥

पुर नारी पाठ ।

॥ श्री राधा सरस विहारिणे नमः ॥

॥ पुर नारियों के गाने के पद ॥

॥ दोहा नवीन ॥

जुगल लाल की लाडिली, अति ही जीवन प्रान ।
प्रगट भई भृगुवंश में, प्रेम मंजरी आन ॥
रसिक जनन को करेंगी, रस निकुंज को दान ।
रस आचारज रूप धर, प्रेम करावें पान ॥

॥ समाजी दोहा ॥

जन्म लाल रनजीत सुन, सब डहरे की नार ।
पुलक प्रेम सों सकल मिल, कियो अंग शृंगार ॥
कुरता टोपी पीत रंग, भूषन बिविधि प्रकार ।
कंचन थारन सज चली, प्रागदास दरबार ॥
मंगल समय विचार मन, हरष हृदय में आन ।
करन लगी हिलमिल अली, आनँद मंगल गान ॥
रंग बधाई रस भरी, गावत सुन्दर गीत ।
हँस मुसकावत मन मुदित, करत परस्पर प्रीत ॥
चाव भरी चित चटपटी, मन में अति ही मोद ।
सरस माधुरी प्रेम सों, सखि जन करें विनोद ॥

॥ राग बधाई कहरवा ॥

चलो हिल मिल दरशन काज जनम रनजीत लियो ।
कुंजो कूख कृष्ण नर तन धर,
भक्ति प्रचारन काज दरशन आन दियो॥
भये मनोरथ पूरन सारे,
मुरलीधर मन मुदित महा हुलसात हियो॥
चाव चावसों लेकर चलिये,
सज कर कंचन थाल विधाता शुभ दिवस कियो॥
सरस माधुरी महा महोत्सव,
लख लोचन मुख लाल चरन कर प्रेम छियो॥

॥ पद ॥

॥ राग भैरवी ॥

पुर नारी हिल मिल के सारी मुरलीधर घर आई हैं ।
जन्म होन रनजीत लला सुन झुंड झुंड उठ धाई हैं ॥
नख शिख सज शृंगार सलोनी तन मन में मगनाई हैं ।
कंचन थाल करन में धर के कुरता टोपी लाई हैं ॥
खेल खिलौना सोना चांदी मेवा बिबिधि मँगाई हैं ।
तिल चांवरी बताशे ऋतु फल लाई गात बधाई हैं ॥
रंभा शची शारदा सी सब वय किशोर समुदाई हैं ।
नवल नवेली अति अलबेली चंचल मृदु मुसिकाई हैं ॥

प्रागदास के पहुंच महल में उत्सव लख पुलकाई हैं।
सरस माधुरी लाल दरस हित ललना अति ललचाई हैं॥

॥ बधाई चाल नाटक ॥

लीजे माता जी कुंजो बधाई री॥

॥ अन्तरा ॥

पैदा हुवा आपके रनजीत लाल है,
सुंदर सलोना अति ही इसका जमाल है।
प्यारा है ये दुलारा जैसा गोपाल है,
छवि देखता है जोई होता निहाल है॥
याकी झांकी हमारे मन भाई री॥

डहरे में शादियांनें घर घर में बजर हैं,
सोहन पताका तोरन हर तर्फ़ सज रहे।
शोकत को देख देव और भूप लज रहे,
होकर आधीन हाथ जोर गर्व तज रहे॥
जन्म उत्सव की कीरत है छाई री॥

नारी नगर की गाती हैं सब मंगलीक गान,
हिल मिल के मन मुदित हो बांटें मिठाई पान।
रतनों को कर निछावर देती हैं कोई दान,
चिरजीवो मुरली नंदन मुख कर रहीं बखान॥
नांचैं आंगन में सारी मगनाई री॥

आये हैं अमरलोक से आचार्य रूप धार,
श्री कृष्ण अंश भक्ती जगमें करन प्रचार।
जो आवें शरन इनकी जिनका हो वेड़ा पार,
पोंहचेंगे जा परम पद निरखेंगे नित विहार॥

सरस माधुरी रहै ह्वां सदाई री॥

॥ बधाई राग जंगला ॥

गावोरी आली हिल मिल आज बधाई।
जो फल दुरलभ सुर मुनियन को सो पायो श्री कुंजो माई॥
कृष्ण कला मुरलीधर जू के प्रगट भये श्री सतगुरु आई।
जूथ अनेकन नारि नवेली घर घरतें उठ उठ के धाई॥
जन्मोत्सव डहरे में छायो छबि ताकी कुछ कही न जाई।
प्रागदास पुलकत भये मन में रंकन मनों नवों निधि पाई॥
जसोदा दादी प्रेम मगन मन लालन दोउ कर लेत बलाई।
सरस माधुरी दरस परस कर परमानंद हिये न समाई॥

॥ गजल ॥

बधाई छाई डहरे में हुवा कुंजो के लाला है।
प्रगट भये कृष्ण नर तन धर करें जग को निहाला है॥
निहारा जिसने रनजीता समाया रूप नैनों में।
जगत के बालकों से इसका कुछ रंग ढंग निराला है॥

सहस्त्रों संत सुन शोभा हुवे शामिल महोत्सव में ।
दरस कर परस चरनो को कहैं ये जग उजाला है ॥
बजे बाजे बिबिध सुन्दर नफ़ीरी नौबतें गाजें ।
गुनीजन गान सुन उस दम हुआ आनन्द दुबाला है ॥
कोई आ बोल मुख जै जै करें कर जोर के अस्तुत ।
सरस सोहन मदन मोहन लला क्या भोला भाला है ॥

॥ बधाई सारंग ॥

श्री कुंजो सुंदर सुत जायो ।
जाकी जोति जगत में जगमग वेद भेद जिसको नहि पायो ॥
शोभन भक्त करन पूरन वर श्री हरि सुत जिनके प्रगटायो ।
आचारज हो जीव उबारे यह निश्चय हमरे मन आयो ॥
जग में भक्ति प्रचारें प्यारे फैले तिनको सुजस सवायो ।
सुर नर नृप पूजें पग इनके हमरे मन मांहीं अति भायो ॥
भादों मास सुदी तिथि त्रितिया बार सु मंगलवार सुहायो ।
सरस माधुरी जन्म महोत्सव ठहरे सब घर घर में छायो ॥

॥ चौथी धुन नाटक की बधाई ॥

दरशन हमें कराय कुंजो मैया दरशन हमें कराय ।
तुम्हारे सुत हरि प्रगटे आय कुंजो मैया दर्शन हमें कराय ॥
एक तो ये हैं भक्ताचारज दूजे रसिकन राय ।
तीजे जग के जीव उधारे पार न कोई पाय ॥

पंच बरस की वयस होय जब शुकमुनि दरस दिखाय।
ले निज गोद मोद सिर कर धर पेडा देंहि पवाय॥
प्रगट करें शुक सम्प्रदाय को भगवत धर्म चलाय।
तारन तरन होहिंगे स्वामी संतन सदा सहाय॥
शरण आय जो चरण कमल की ताहि लेंहि अपनाय।
मंत्र सुनाय मिटाय तापत्रय देंवें युगल मिलाय॥
वैष्णव धर्म सनातन ताको जग में दें फैलाय।
प्रेम भक्ति को डंका स्वामी दस दिस देंहि बजाय॥
कलियुग में सतयुग कर देवें भय भ्रम सकल मिटाय।
घर घर नौधा भक्ति करें नर तन मन सुरत लगाय॥
ज्ञान योग वैराग भक्ति की नौका लेंहि बनाय।
पतितन को ता मांहि चढ़ा कर हरिपुर दें पहुंचाय॥
गुण अनंत वरणे नहिं जावें कहँ कहां लगगाय।
सरस माधुरी जोर दोउ कर चरनन शीश नवाय॥

॥ पद चाल नाटक ॥

नाचोरी नारी मिल सारी बजाओ गाओ दे दे कर तारी।
लेवो कुंजो कूँ (की वलिहारी ॥बजाओ०॥
है सूरत रनजीता की प्यारी ॥ बजाओ०॥
याकी सुंदर है सोहनी छटारी ॥ बजाओ० ॥
प्यारेलाल की छबीली छबि भारी ॥ बजाओ०॥

याकी मोहनी है मूरत म्हारी ॥ बजाओ० ॥
थाकी अँखियां अनोखी कजरारी ॥ बजाओ०॥

डहरे की भूमि सुखकारी हरियारी वहारी को धारो ध्यान
सर्स चंमन। गुले गुलशन है।
सलोने मंदर अतिसुंदर छाई है घटा कारी।
बजाओ गावो दे दे कर तारी।

॥ पुरानी चाल का पद ॥

॥ अन्तरा ॥

रनजीतलला लगे प्यारा री नैंनों का है तारा।
कुंजो का बारा है भोरा भारा, ऐसा न और निहारा री ॥ नैंनों०॥
सुंदर सोहन, विश्व विमोहन, है त्रिभुवन उजियारा री ॥ नैं०॥
मुरली का नंदन, है जग बंदन, तापर तन मन वारा री ॥ नैं०॥
आचारज सिरमौर, जगत गुरु, रसिकन प्रांन अधारा री ॥ नैं०॥
सर्वस धन है संत जनों का है निज इष्ट हमारा री ॥ नैं०॥
प्रेम भक्ति, जग में विस्तारन, लियो है आन अवतारा री ॥ नैं०॥
स्वयम् कला निधि कृष्ण कुंवरनें, अद्भुत नर तन धारा री ॥ नैं०॥
माधुरी मूरत मन में बसी है ध्यान टरत नहिं टारा री ॥ नैं०॥
सोवत जागत, सुरत लगी है, बिसरत नाहिं बिसारा री ॥ नैं०॥
सोवत जागत सुरत लगाई है विसरत ऊाहि विसारा री ॥ नैं०॥
देवेंगे वास महल बृंदावन यह निश्चय उर धारा री ॥ नैं०॥
परि कर में पोंहचावें प्रांन धन जुगल मिलावन हारा री ॥ नैं०॥
सरस माधुरी सोंपें सेवा, सदा करें प्रति पारा री ॥ नैं०॥

॥ बैठ रेल मैं . . . न वधाई ॥

श्री आचारज अवता: प्रभु पतित उधारन हार।
डहरे में प्रगटे अधम उधारन श्री रनजीत कुमार॥

॥ अंतरा ॥

आये हैं हरि आप धाम से रूप संत को धार।
श्री कुंजो माता के गर्भ से प्रगटे कृष्ण मुरार॥
श्री शोभन जी को वर पूरन कियो आप करतार।
श्री मुरलीधर के सुत होके आये अवनि मझार॥
प्रेम भक्ति बिस्तार करेंगे हरि हैं भू को भार।
सुमरन भजन करेंगे सारे संसारी नर नार॥
चरन शरन में जो जन आवें जिनको लेंहिं उवार।
पहुँचावें पर धाम अमरपुर जहां युगल सरकार॥
जन्म मरन जम दंड नरक दुख संकट मेटन हार।
सुख संपत के दाता स्वामी संतन के सरदार॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि सदां ही सेवत सतगुरु द्वार।
चार पदारथ देंन दयानिधि ऐसे परम उदार॥
कलियुग में सतयुग बिस्तारें करें हरि धर्म प्रचार।
सरस माधुरी जै जै बानी निज मुख करत उचार॥